CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दक्खिनी मिर्च तो. १

कलौंजी तो. २

मरुवे के पत्ते तो. ४

नीम की गिद्दी तो. ४

इन सब को पीस कर गोली बनाकर मूंग बराबर खिलावै ताजी पानी के साथ ताऊन में त्रिदोष ज्वर में १० मिनट में

कुदुगोपाल शर्मा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

मुहूर्तचिन्तामणिः।

पण्डित-महीधरशर्मधर्माधिकारिटीहरीगढवालनिवासिकृत-

भाषाटीकासमेतः।

उसकी यह

पंचमावृत्ति शुद्धतापूर्वक

श्रीकृष्णदासात्मज गंगाविष्णुने

अपने "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापेखानेमें

छापकर प्रसिद्ध किया।

संवत् १९६२, शके १८२७.

कल्याण-मुंबई.

Registered under Act XXV of 1867.

...यह शास्त्र किसने आरंभमें बनाया और कब

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ ❀ ॥ श्रीगणेशाय नम ॥ ❀ ॥

इस पुस्तकका रजिष्टरी सब हक्क १८६७ के ऑक्ट २५ के
बमुजब यन्त्राधिकारीने अपने स्वाधीन रक्खा है.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना, कल्याण—मुंबई.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना.

सिद्धान्तसंहिताहोरारूपं स्कन्धत्रयात्मकम् ॥
वेदस्य निर्मलं चक्षुर्ज्योतिश्शास्त्रमकल्मषम् ॥ १ ॥
अप्रत्यक्षाणि शास्त्राणि विवादस्तेषु केवलम् ॥
प्रत्यक्षं ज्योतिषं शास्त्रं चन्द्रार्कौ यत्र साक्षिणौ ॥ २ ॥
विनैतदखिलं श्रौतस्मार्त्तकर्म न सिद्ध्यति ॥
तस्माज्जगद्धितायेदं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥ ३ ॥

वेदके छः अंग शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष हैं इनमेंसे सर्वोत्तम अंग नेत्रसंज्ञक निर्मल निष्कलंक ज्योतिषही है जिसको प्राचीनऋषियोंने सिद्धांत (गणित ग्रन्थ) संहिता (मुहूर्त्त आदि) होरा (जातक, ताजिक आदि फलादेश) इन तीन स्कंधोंमें प्रगट किया, इसके विना समस्त श्रौतस्मार्त (वैदिक एवं धर्मशास्त्रोक्त) कर्म सिद्ध नहीं हो सकते इससिये संसारके उपकारार्थ ब्रह्माजीने इसे वेदनेत्रकरके कहा इसी हेतु यज्ञादि वैदिक कर्म करनेवाले द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यों) को इसे यत्नसे पढनेकी आज्ञा है. अन्य शास्त्रोंमें विवाद बहुत हैं प्रत्यक्ष फलोदय ऐसा नहीं है, जैसा प्रत्यक्ष चमत्कृत ज्योतिष है, जिसके साक्षी सूर्य, चन्द्रमा, उदयास्त शृंगोन्नत्यादिमें हैं. शिक्षामेंभी लिखा है कि, " शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् । ज्योतिषामयनं चक्षुर्निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ॥ छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पान् प्रचक्षते । " इति । समस्त अंग प्रत्यंग परिपूर्ण हुएमेंभी जैसे नेत्रोंके विना समस्त अंधकार ज्ञान होता है तैसेही इसके विना समस्त साधन निरर्थक हैं । वसिष्ठसिद्धांतकाभी वाक्य है कि " वेदस्य चक्षुः किल शास्त्रमेतत् प्रधानताङ्गेषु ततोऽर्थजाता । अङ्गैर्युतान्यैः परिपूर्णमूर्तिश्चक्षुर्विहीनः पुरुषो न किंचित् ॥ " इत्यादि बहुत प्रमाणवाक्य हैं तथापि वर्त्तमानसमयमें बहुधा वर्त्तमान सामयिक महाशय कहते हैं कि, ज्योतिष कुछ वस्तु नहीं है. भूतकालमें ब्राह्मणही विद्यावान् रहे सुज्ञ होनेसे उन्होंने यह पारिणामिक (दूरदर्शी) विचार किया कि, यदि हमारी संतानविद्या पराक्रमादियोंसे अल्पसार हो जायगी तो क्या वृत्ति (आजीवन) करेंगी इसलिये ज्योतिष शास्त्र बनाया कि, जिससे सबको प्रतीत हो एवं ब्राह्मणोंकोही माने इत्यादि बहुतसे वाद करते हैं तथापि जानना चाहिये कि, यह शास्त्र किसने आरंभमें बनाया और कब

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बना ? यह तो सर्वसाधारण जानतेही हैं कि, जो खगोल भूगोल भूमिमान (पैमायश) सूर्य चन्द्रग्रहण आदि गणित एवं दिनरात्रि पक्ष मास वर्ष आदि काल सब ज्योतिषहीसे तों प्रकट है, रहा फलादेश पक्ष यह प्राचीनग्रन्थकर्त्ता आचार्योंकी बुद्धिमत्ता है कि सब जीवमात्र अपने २ कर्मानुसार फल पाते हैं यह तो प्रकटही है. परंतु वह कर्म एवं उसका परिणाम अदृश्य है इसे दृश्य करनेके लिये उन महात्माओंने ऐसे २ हिसाब (गणित) नियत किये कि जिनकी संज्ञायें सूर्यादिग्रह और तिथि वार नक्षत्र योग करण लग्न मुहूर्त्त आदि नियत कर दिये हैं जिनके द्वारा सद्विचारशील पाठक भूत भविष्य वर्त्तमान फल कह सकते हैं जैसे बहुतसे गणितादि कार्योंमें कोई करण (इष्ट) मानके आगे कार्य संपादित होते हैं ऐसेही ज्योतिष फलादेशमें करण (इष्टकाल) एवं मुहूर्त्त हैं इनसे सभी कार्य होते हैं तथा च यह वेदमूर्त्ति (ईश्वर) का एक मुख्य अंग नेत्र है. वेद इसको प्रणाम करता है इसके विना कोईभी यज्ञादिकृत्य (श्रौत-स्मार्त कर्म) नहीं होते और प्रत्यक्ष चमत्कृतभी है वे० प्र० " विद्याहवैब्राह्मणमाजगामगोपायमासेवधिष्टेयमास्मि। असूयकायानृजवेयतायनमांब्रूयावीर्य्यवतीतथास्याम् ॥ " इत्यादि हैं इसमें ज्योतिषकी मुख्यता इस प्रकार है कि " अन्यानि शास्त्राणि विनोदमात्रं न किंचिदेषां तु विशिष्टमस्ति । चिकित्सितं ज्योतिषमंत्रवादाः पदे पदे प्रत्ययमावहंति ॥ १ ॥ " और शास्त्र तो विनोद (दिलबहलाव वा मनोरंजक) मात्र हैं वैद्यशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र, मन्त्रशास्त्र, धर्मशास्त्र प्रत्येक पद पदमें प्रत्यय (विश्वास) देते हैं जैसे ज्योतिषमें प्रत्यक्ष ग्रहगणित है कि चन्द्रमाके शृंगोन्नति, ग्रहण ग्रहयुति तुरीयादि यन्त्र वा नलिकादियोंसे ग्रहच्छाया, ग्रहोंका उदयास्त, ठीक समयपर मिल जाते हैं तथा जन्म, वर्ष, प्रश्न आदि विचारमें यदि इष्टशुद्ध हो एवं विचारवालाभी सुपठित हो तो भूत भविष्य वर्त्तमान फल ठीकही मिलते हैं इसे संसारके शुभार्थ ब्रह्माजीने वेदविभागानंतर अंगोंमें स्थापन किया. " अष्टवर्षं ब्राह्मणमुपनीये १ दर्शपूर्णमासाभ्यां यजतः २ " इत्यादि श्रुति हैं आठ वर्षकी गणना सूर्यचारवश गणितहीसे है तथा दर्शपौर्णमासादि ज्ञानभी विना ज्योतिष होही नहीं सकता लिखाभी है कि, " वेदा हि यज्ञार्थमभिप्रवृत्ताः कालानुपूर्व्या विहिताश्च यज्ञाः। तस्मादिदं कालविधानशास्त्रं यो ज्योतिषं वेद स वेद यज्ञान् ॥ १ ॥ " यज्ञ ईश्वरही है इसके उपयोगी वेद हैं कालमान समयका है कालस्वरूप परमात्मा होनेसे " कालात्मा " यज्ञपुरुषकोही कहते हैं वही तो ज्योतिष है जिसके विना कालज्ञान नहीं होता विना कालज्ञान यज्ञादि कुछ नहीं हो सकते, अन्योन्य प्रमाणही बहुत हैं किंतु इस समय बहुत व्याख्यानको छोडकर प्रयोजन लिखनाही प्रयोजन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है कि श्रुतिनेत्र ज्योतिषशास्त्र ऐसा अद्वितीय एवं प्रत्यक्ष चमत्कृत होनेपरभी सहसा सर्व साधारणके हृदयकमलोंमें विकासमान नहीं होता परंच विपरीतताका आभास स्वतः कालानुसार उत्पन्न होने लगता है इसका हेतु सामयिकी महिमासे मूल भाषा (संस्कृत) का ह्रास होनाही है इसी कारण यह प्रत्यक्ष शास्त्र क्रमशः लोप होता जाता है. द्वितीय यह है कि इस संस्कृतालपपरिचयसमयमें बहुतसे मनुष्य कुछ सामान्य फलादेश देख सुनकर यद्वा कियत्प्रकार मूतादि विद्याका अभ्यास करके तत्काल मनोहर बातें चमत्कारी दिखलाकर लोगोंके मन मोहन करके अल्प श्रमसे अपना लाभ उठाय लेते हैं उस समय यह वे पाखण्डी पंडितजी तो कहाते हैं परंतु परिणाममें उनके कहे हुए फल अविश्वास्य प्रगट हो जाते हैं इसपर जनश्रुति हो बैठती है कि ज्योतिषही पाखण्डी है उन पाखण्डियोंकी चातुर्यताको कोई नहीं कहता इत्यादि व्यवस्था होनेमें सर्वसाधारणको ज्योतिषशास्त्रमें सुबोध होने निमित्त प्रचलित ग्रन्थों (जिनका अर्थ सर्वसाधारणके बोध नहीं हो सकता) की भाषाटीका करनाही एकमात्र उद्धार समझकर " गढवालदेशाधीश महामहिम क्षत्रियकुलभास्कर श्रीबदरीशमूर्ति श्रीमन्महाराजाधिराज प्रताप शाहदेव बहादुरके आज्ञानुसार कुछ काल पहिले तथा उनके सत्पुत्र श्री ५ श्रीमन्महाराजाधिराज सत्कीर्तिमान् कीर्तिशाहदेव बहादुरकी आज्ञासे सांप्रतमेंभी मैंने पूर्वश्लोकोक्त तीन स्कंधोंमेंसे होरा फलादेश ग्रन्थ जातकोंमें मुख्य बृहज्जातक एवं ताजिकोंमें मुख्य तन्त्रत्रयात्मक नीलकंठी समस्त प्रश्नविचारसहित और चमत्कारचिंतामणि भावकुतूहल आदि ग्रन्थोंकी भाषाटीका प्रकाश करके कुछ संहिता वैशेषिक सारणी सदृश मुहूर्त्तग्रन्थके भा० टी० प्रकाश करनेका विचार हुआ कि मुहूर्त्त सभी कामोंमें सभीको आवश्यक होते हैं और सुमुहूर्त्तका फल शुभही होता है इसके संहिता आदि बडे ग्रन्थ पाठ बहुत हैं जो जो कोई छोटे हैं तो उनके प्रयोजनभी स्वल्पही हैं इसलिये यह मुहूर्त्तचिंतामणि नामक ग्रंथ जो पाठमें थोडा सरस कविता अनेक प्रकार छन्दोंसे सुशोभित और अर्थ बहुत है तथा औरभी विशेषता है कि अन्य मुहूर्त्तग्रन्थ रत्नमाला आदियोंमें तिथि वार नक्षत्र आदियोंके पृथक् २ प्रकरण हैं एक कार्यके निमित्त मुहूर्त्त देखनेमें अनेकप्रकरण देखने पडते हैं इसमें जो कुछ कार्य देखना हो तो एकही स्थलमें तिथ्यादि लग्न लग्नांश पर्यंत एवं धर्मशास्त्रीय निर्णयभी मिल जाते हैं इनही शुभलक्षणोंसे इस आधुनिक ग्रन्थकी प्रचलता एवं सर्वत्र प्रमाणता हो रही है परंतु अर्थ इसका स्फुरण नहीं होता इसलिये इसीकी भाषाटीका करना योग्य समझ इसे देख पंचांगमात्र जाननेवालेभी मुहूर्त्तका विचार उत्तम प्रकारसे जान लेंगे तथा पाठक पाठयिताओंकोभी सुगमता हो जायगी.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यद्यपि इस ग्रन्थकी भा० टी० मुद्रितभी हो गई है तथापि पुनः प्रयास करनेका प्रयोजन द्विज्जन सुज्ञ पाठकवृंद इस टीकाका सारांश देख विचारकर जान जांयगे कि कैसा सरल, स्वच्छ एवं निरर्गल अर्थ ग्रंथकर्ता आचार्यके आशयानुमत प्रकट किया गया है. इसके विचारशील सज्जन इस परोपकारार्थ परिश्रमको चरितार्थ प्रसन्नतासे करेंगे.

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण—मुंबई.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

अथ मुहूर्त्तचिन्तामणिस्थविषयाणामनुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
मङ्गलाचरणम्....	१६	दुष्टयोगानां देशभेदे परिहारः	२८
ग्रन्थप्रयोजनम्	,,	समस्तशुभकृत्ये वर्ज्यपदार्थाः	,,
ज्योतिःशास्त्राध्ययनफलम्....	,,	ग्रासभेदेन कियत्संख्याकेषु मासेषु	
नक्षत्रसूचकस्य श्राद्धभोजने निषेधः....	,,	ग्रहणीयनक्षत्रनिषेधः	२९
मुहूर्तप्रयोज..प	,,	सामान्यतोऽवश्यवर्ज्यानि पञ्चांग-	
तिथीशाः	,,	भूषणादीनि	,,
तिथीनां संज्ञाफलम्	१८	पक्षरन्ध्रतिथीनां वर्ज्यघटिकाः	३०
अथ सिद्धियोगाः	,,	कुलिकादिदोषाः	,,
रव्यादिवारेषु यथाक्रमं निषिद्धतिथयः.	,,	सूर्यादिवारे दुर्मुहूर्ताः	३१
निषिद्धनक्षत्राणि च	,,	विवाहादिशुभकृत्यहोलिकाष्टकनिषेधः	,,
क्रकचादिनिन्द्ययोगाः	१९	मृत्युक्रकचादीनामपवादः	३२
कृत्यविशेषेषु निषिद्धतिथयः	२०	तेषां पुनरपवादः	३३
दग्धादियोगचतुष्टयम्	,,	भद्रानिषेधः	,,
चैत्रादिशून्यतिथयः	२१	भद्राया मुखपुच्छविभागः	,,
तिथिनक्षत्रसंबन्धिदोषाः	२२	भद्रापरिहारः	३४
चैत्रादिमासेषु शून्यनक्षत्राणि	,,	भद्रानिवासस्तत्फलं च	,,
चैत्रादिशून्यराशयः	,,	कालाशुद्धौ गुरुशुक्रास्तादिके निषेध्य-	
विषमतिथिषु दग्धलग्नानि	२३	वस्तूनि	,,
दुष्टयोगानां शुभकृत्यावश्यकत्वे परिहारः	,,	सिंहस्थगुर्वादिदोषः	३६
शुभकार्येषु सिद्धिदानामपि हस्तार्कादि-		त्रयोदशादिनात्मकपक्षनिर्णयः	,,
योगानां निन्द्यत्वम्	,,	सिंहस्थगुरोः प्रकारत्रयेण परिहारः....	,,
भौमाश्विनीत्यादिकानां कार्यविशेषेऽति-		सिंहराशिगतगुरुनिषेधवाक्यानां प्रति-	
निन्द्यत्वम्....	२४	प्रसववाक्यानां च निर्गलितार्थः	,,
आनन्दाद्यष्टाविंशतियोगाः	,,	मकरस्थितगुरोः प्रकारद्वयेन परिहारः.	३७
ते योगाः कथं ज्ञेयाः	,,	लुप्तसंवत्सरदोषापवादः	३८
आनन्दादिषु कियतां दुष्टयोगानाम्		ग्रहाणां होरावारप्रवृत्तिः....	,,
आवश्यककृत्ये परिहारः	२६	वारप्रवृत्तिप्रयोजनपुरस्सरा होरा	३९
दोषापवादभूता रवियोगाः	,,	कालहोराप्रयोजनमन्यच्च....	,,
सूर्यादिवारेषु नक्षत्रविशेषैः सिद्धियोगाः	,,	मन्वादियुगादीनां निर्णयस्तन्निषेधश्च....	४०
उत्पातमृत्युकाणसिद्धियोगाः	२७		

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.
प्रसूतिकाजलपूजामुहूर्त्तः दुग्धप्राशनमुहूर्त्तः	८१
अन्नप्राशनमुहूर्त्तः	,,
लग्नबलं ग्रहाणां स्थानवशात्फलानि च	८२
भूम्युपवेशनमुहूर्त्तः	,,
जीविकापरीक्षा	८३
शिशोस्ताम्बूलभक्षणमुहूर्त्तः	,,
कर्णवेधमुहूर्त्तः	,,
कर्णवेधे लग्नशुद्धिः	,,
चूडाकर्मनिषेधकालः	,,
तत्प्रसंगतोऽन्यकर्मनिषेधकालश्च	८४
गुरुशुक्रयोर्बाल्यवार्द्धकादिनसंख्या	,,
परमते बाल्यवार्द्धकादिनसंख्या	,,
चौलमुहूर्त्तः	८५
मातरि सगर्भायां चौले मुहूर्त्तः	,,
चौले दुष्टतारापवादः	,,
चौलादिकृत्ये कालविशेषनिषेधः	,,
सामान्यक्षौरादिमुहूर्त्तस्तन्निषेधकालश्च	८६
क्षौरस्य विधिनिषेधौ	,,
राज्ञां क्षौरे विशेषः वर्ज्यनक्षत्राणि	८७
अक्षरारम्भमुहूर्त्तः	,,
विद्यारम्भमुहूर्त्तः	,,
अथ व्रतबन्धः	,,
तस्य कालत्रयं नित्यकाम्यगौणभेदेन व्रतबंधे नक्षत्राणि	८८
व्रतबंधे सामान्यतो लग्नभंगयोगः	,,
व्रतबंधे लग्नशुद्धिः	,,
वर्णाधीशाः शाखेशाश्च	८९
वर्णेशशाखेशप्रयोजनम्	,,
सामान्यतो निषिद्धजन्ममासादेरपवादः	,,
गुरुबलम्	८९
गुरुदौष्ट्यापवादः	,,
व्रतबंधे वर्ज्यपदार्थाः	,,
व्रतबंधे रव्याद्यंशफलम्	,,
चंद्रनवांशफलं सापवादम्	,,
केंद्रस्थसूर्यादिग्रहाणां फलम्	९१
चंद्रगुरुशुक्राणां ग्रहयुतौ फलम्	,,
चंद्रवशेन शुभाशुभयोगौ....	,,
व्रतबंधे अनध्यायाः	,,
प्रदोषलक्षणम्	,,
बह्वृचां ब्रह्मोदनसंस्कार	९२
वेदपरत्वेन नक्षत्रविशेषः	,,
धर्मशास्त्रीयविशेषः	९३
छुरिकाबंधनमुहूर्त्तः	,,
केशांतसमावर्तनमुहूर्त्तः	,,
अथ विवाहप्रकरणम् ६ ।	
प्रश्नलग्नाद्विवाहयोगद्वयम्	९६
अन्यद्विवाहयोगद्वयम्	,,
प्रश्नलग्नाद्वैधव्ययोगत्रयम्....	,,
प्रश्नलग्नात्कुलटामृतवत्सायोगाः	९६
विवाहभंगयोगः	,,
प्रश्नलग्नाद्वैधव्यमृतापत्यादियोगः	,,
बालवैधव्ययोगे परिहारः	,,
सावित्रीव्रतम्	,,
पिप्पलव्रतम्	,,
कुंभविवाहः	,,
अश्वत्थविवाहः	,,
विष्णुप्रतिमादानविधिः	,,
अस्याः कन्यायाः कीदृशं प्रथमापत्यं भवितेति प्रश्ने उत्तरम्	,,
कन्यावरणमुहूर्त्तः	९७
वरवरणमुहूर्त्तः	,,
कन्याविवाहकालः ग्रहशुद्धिश्च	,,
विहितमासाः	९८

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
मासप्रसंगाज्जन्ममासादिनिषेधः	९८	उत्तरार्द्धोक्तः स्पष्टार्थः	१११
ज्येष्ठमासप्रत्युक्तविशेषः	,,	अन्यदपि	,,
अन्यविशेषः....	,,	विषघटीदोषः	,,
प्रतिकूलनिर्णयः	,,	दिवामुहूर्त्ताः	११२
विवाहानंतरं पुरुषत्रये चूडादि-		रात्रिमुहूर्त्ताः	११३
निषेधः	,,	वारभेदेन मुहूर्त्ताः	,,
मूलादिदुष्टनक्षत्रोत्पन्नयोर्वधूव-		वेधदोषं विवक्षुर्विहितनक्षत्रादि-	
रयोः श्वशुरादिपीडकत्वम्	,,	क्रमाभिज्ञिन्मानं च	,,
तदपवादः	१००	वेधदोषः	,,
राशिकूटानां नामानि	,,	पंचशलाकाचक्रम्	११४
वर्णकूटं वश्यकूटं ताराकूटं योनिकूटम्.	,,	सप्तशलाकावेधः	,,
ग्रहमैत्री	१०२	क्रूराक्रांतादिनक्षत्रदोषः साप-	
गणकूटं तत्फलं च.	१०३	वादः	११५
राशिकूटं तत्फलं च	,,	लत्तादोषः	,,
दुष्टभकूटस्य परिहारः	,,	पातदोषः	,,
दुष्टानां गणकूटभकूटग्रहकूटानां		सूर्यचंद्रकांतिसाम्यापरपर्या-	
परिहारः	१०४	यो महापातदोषः	,,
नाडीकूटं तदपवादश्च	,,	खार्जूरदोषः....	११६
प्राच्यसंमतं वर्गकूटं	१०८	उपग्रहदोषः....	,,
नक्षत्रराश्यैक्ये विशेषः	,,	पातोपग्रहलत्तास्वपवादः	,,
षड्वर्गदोषः	,,	वारदोषभेदकुलिकाः	११७
राशिस्वामिनः	,,	दग्धतिथ्यादिदोषः	,,
होराविधिः	,,	जामित्रदोषः	११८
त्रिंशांशाः	१०९	केषांचिद्दोषाणां देशभेदेन परिहारः	,,
द्रेष्काणकांशाः	,,	एकार्गलदोषाणामपवादः	,,
द्वादशांशाः....	,,	दशदोषाः दशयोगानां फलं तद-	
त्रिंशांशकाः	,,	पवादश्च	११९
गंडांतदोषः	,,	बाणपंचकाख्यदोषः	,,
नक्षत्रगंडांतः....	,,	प्राच्यमतेन बाणः सापवादः	,,
लग्नगंडांतः	,,	समयभेदेन त्रिविधो बाणपरिहारः....	१२०
तिथिगंडांत	,,	अथ ग्रहाणां दृष्टिः	,,
कर्तरीदोषः	११०	उदयास्तशुद्धिः	१२१
संग्रहदोषः	,,	सूर्यसंक्रमणाख्यलग्नदोषः	१२२
अष्टमलग्नदोषः सापवादः	,,	सर्वग्रहाणां संक्रातिघट्यः	

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.
पर्वबंधकाणबधिराख्यलग्नदोषः	१२२
अथैषां प्रयोजनं सापवादम्	,,
विहितनवांशाः	१२३
विहितनवांशे क्वचिन्निषेधः	,,
सर्वथा लग्नभंगयोगः	,,
रेखाप्रदग्रहाः	१२४
कर्तर्यादिमहादोषापवादः	,,
अथ विवाहे अब्ददोषाद्यपवादः	,,
उक्तानुक्तदोषपरिहारः....	१२५
सामान्यतो दोषसमूहपरिहारः	,,
लग्नविंशोपकाः	,,
ग्रहवशेन श्वशुरादिविभागज्ञानम्	,,
संकीर्णजातीनां विवाहे विशेषः	१२६
गांधर्वादिविवाहे विशेषः	,,
विवाहात्प्राक् कर्त्तव्यानामावश्यक- कृत्यानां दिनशुद्धिः	,,
वेदीलक्षणं मंडपोद्वासनदिननियमः	१२७
मंडपादौ स्तंभनिवेशनम्	,,
गोधूलिप्रशंसा	,,
गोधूलिभेदाः	१२८
गोधूलिसमयेऽवश्यवर्ज्यदोषाः	,,
सूर्यस्पष्टगतिः	,,
सूर्यस्य तात्कालिकीकरणम्	,,
इष्टकालिकलग्नानयनम्....	१२९
रविलग्नाभ्यां इष्टघटिकानयनम्	,,
घटिकानयनविशेषः	,,
विवाहादौ आवश्यकवर्ज्यदोषाः	,,
अथ वधूप्रवेशप्रकरणम् ७ ।	
वधूप्रवेशमुहूर्तः	१३०
वधूप्रवेशनक्षत्रशुद्धिः	,,
अथ द्विरागमनप्रकरणम् ८ ।	
द्विरागमनमुहूर्त्तः	१३१
सन्मुखशुक्रदोषः	,,
प्रतिशुक्रापवादः	१३२

विषय.	पृष्ठांक.
अथाग्न्याधानप्रकरणम् ९ ।	
अग्न्याधानसोमयागादिमुहूर्त्तः	१३२
अग्न्याधानलग्नशुद्धिः	१३३
यागकर्तृत्वयोगाः	,,
अथ राज्याभिषेकप्रकरणम् १० ।	
राजाभिषेकमुहूर्त्तः	१३३
राजाभिषेकनक्षत्राणि लग्नशुद्धिश्च....	१३४
अथ यात्राप्रकरणम् ११ ।	
यात्राधिकारिणः	१३५
शुभफलयात्रावेदकप्रश्नः....	,,
अन्यप्रश्नः	,,
ज्ञाताज्ञातजन्मनां पुंसां अशुभफल- दप्रश्नः	१३६
याता कस्यां दिशि गमिष्यतीति प्रश्ने लग्ननिर्णयः	,,
योगांतरम्	,,
यात्राकालादि	१३७
तिथ्यादिशुद्धिः	,,
प्रत्येक तिथिफलानि	,,
वारशूलं नक्षत्रशूलं च	,,
वारशूलनक्षत्रशूलापवादः कालशूलश्च. मध्यमानां निषिद्धानां च कियतां भानां वर्ज्यघटिकाः....	१३८
मतांतरेण वर्ज्यघटिकाः	,,
भानां जीवपक्षादिकाः संज्ञा	,,
जीवपक्षादीनां विशेषफलम्	,,
सफलं अकुलकुलाकुलकुलचक्रम्	१३९
पथि राहुचक्र	१४०
पथि राहुचक्रफलम्म्	,,
तिथिचक्रं सफलम्	१४१
सर्वीकज्ञानम्	१४२
अडलभ्रमणदोषौ	१४३
हिंसराख्ययोगः	,,
घबाडंटेलकम्	,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.
घातचंद्रस्तत्परिहारश्च	१४३
घाततिथयः घातवाराश्च	,,
घातनक्षत्राणि	१४४
योगिनीदोषः	,,
कालपाशाख्ययोगो	,,
कालपाशप्रसंगात्खंडराहुः	,,
अर्द्धयामकालः	,,
अर्द्धयामराहुः	,,
मुहूर्त्तराहुः	,,
पारिघदंडदोषः	१४५
विदिक्षुगमने नक्षत्राणि परिघदंडापवादश्च	१४६
अन्यदपि	,,
अयनशूलः	१४७
संमुखशुक्रदोषः तत्परिहारदानं शांतिश्च.	,,
शुक्रस्य वक्रास्तादिदोषः सापवादः	,,
प्रतिशुक्रापवादः अनिष्टलग्नं च	,,
अन्यदनिष्टलग्नं शुभलग्नं च	१४८
अन्यदनिष्टलग्नम्	,,
अथान्यच्छुभलग्नम्	,,
शुभलग्नानि दिक्स्वामिनश्च	,,
दिगीशप्रयोजनम्	१४९
लालाटिकयोगाः	,,
पर्युषितयात्रायोगचतुष्टयम्	,,
समयबलं लग्नादिभावानां संज्ञारेषा- प्रदा ग्रहाः	,,
यात्रालग्ने लग्नादिद्वादशभावस्थित- ग्रहफलानि	१५१
योगयात्रातदारंभप्रयोजनं च	,,
योगयात्रा	१५२
अन्ययोग्ययात्रालग्नम्	,,
पंचपंचाशत्तमपद्यमारभ्य त्रिसप्ततितम- पद्यपर्यंतं योगयात्रालग्नानि	,,
विजयादशमीमुहूर्त्तः	१५६
अन्यदपि	,,

विषय.	पृष्ठांक.
यात्रायामवश्यनिषिद्धनिमित्तानि.	१५६
एकदिनसाध्यगमनप्रवेशविशेषः	,,
प्रयाणे नवमीदोषः	१५७
यात्रादिनियमविधिः	,,
नक्षत्रदोहदः	,,
दिग्दोहदः	१५८
वारदोहदः	,,
तिथिदोहदः	१५९
गमनसमयबलविधिः	,,
दिश्ययानानि	,,
निर्गमस्थानानि	,,
गमनविलंबे वर्णक्रमेण प्रस्थानवस्तूनि	१६०
प्रस्थानपरिमाणम्	,,
मुनिमतेन प्रस्थानपरिमाणम्	,,
प्रस्थानदिनसंख्यामैथुननिषेधश्च	,,
प्रस्थानकर्तुर्नियमाः	१६१
अकालवृष्टिदोषः	,,
दुष्टशकुनशांतिः दानं च	,,
शुभसूचकशकुनाः	१६२
अशुभसूचकशकुनाः	,,
अन्यशकुनाः....	१६३
कोकिलादीनां वामांगभागेन शकुनाः.	,,
दक्षिणभागावस्थितशकुनाः	१६४
उक्तव्यतिरिक्तानां सामान्यतः प्राद- क्षिण्येन शकुनाः	,,
विरुद्धशकुने किं कार्यम्	,,
यात्रानिवृत्तौ गृहप्रवेशमुहूर्तः	,,
विवाहप्रकरणोक्तदोषा यात्रायां वर्ज्याः.	,,
अन्यदोषाः	,,

अथ वास्तुप्रकरणम् १२ ।

ग्रामपुरादिषु गृहनिर्माणे स्वस्य शुभाशुभम्	१६६
राशिपरत्वेन ग्रामनिवासे निषिद्धस्थानानि.	,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषय.	पृष्ठांक.
इष्टनक्षत्रेष्टायामाभ्यां इष्टभूम्या विस्तरायामौ	१६७
आर्थैः वर्णपरत्वेन च द्वारनिवेशनम्	,,
गृहारंभे विशिष्टकालनिषेधः	१६८
व्ययकथनपुरःसरमंशकज्ञानं सफलम्	,,
विवक्षितशालाध्रुवांकानयनम्	,,
ध्रुवादीनां नामाक्षरसंख्या	,,
गृहस्यायादिनवकम्	१६९
शुभाशुभसूचकं नामसदृशफलम्	,,
गृहारंभे वृषवास्तुचक्रम्	१७०
सौरचांद्रमासैक्येन प्राच्यादिदिक्षु द्वाराणि गृहनिर्माणनक्षत्राणि सूतिकागृहनिर्माणमुहूर्तौ च	,,
प्रागभिहितसौरचांद्रमासानां प्रकारांतरेणैकवाक्यता	,,
तिथिपरत्वेन द्वारनिषेधः	,,
गृहारंभे पंचांगशुद्धिः	१७१
देवालये गृहारंभे जलाशये च दिगवस्थितराहुमुखं सफलम्	,,
गृहकूपनिर्माणे दिगवस्थित्या फलम्.	१७२
कूपे कृते गृहमध्ये करिष्यमाणानां उपकरणगृहाणां दिक्परत्वेन करणम्.	,,
गृहस्य आयुर्दाययोगद्वयम्	१७२
अन्ययोगद्वयम्	१७३
लक्ष्मीयुक्तगृहयोगत्रयम्	,,
गृहस्य परहस्तगामित्वे योगः	,,
फलविशेषाच्छुभसूचकं योगद्वयम्	,,
अन्ययोगद्वयं अशुभम्	१७४
द्वारचक्रं सफलम्	,,
अथ गृहप्रवेशप्रकरणम् १३ ।	
तत्र प्रवेशश्चतुर्विधः	१७४
कालशुद्ध्यादिकम्	१७५
जीर्णगृहप्रवेशे विशेषः	,,
गृहप्रवेशादिनात् प्राग्वास्तुपूजाविधिः	,,
लग्नशुद्धिस्तिथिवारशुद्धिश्च	,,
वामरविः	१७६
प्रवेशकलशवास्तुचक्रम्	,,
प्रवेशोत्तरकर्तव्यकालीनविधिः	१७७
ग्रंथसमाप्तौ पितामहवर्णनम्	,,
क्रमप्राप्तं स्वपितृवर्णनम्	१७८
स्वनामकथनपूर्वकं ग्रंथसमाप्तिः	,,

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,

"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना,

कल्याण—मुम्बई.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ

भाषाटीकासहितः

मुहूर्तचिन्तामणिः।

श्रीनाथपादाम्बुजदीर्घनौकामाश्रित्य तर्तुं विबुधैरपार्यम् ॥
श्रीरामदैवज्ञकवेः कवित्वसिन्धुं प्रवृत्तोस्मि कियद्वराकः ॥ १ ॥
निजतातपदाम्बुजाप्तबोधो मौहूर्तं वितनोमि बालतुष्टयै ॥
विवृतिं नृगिरा महीधराख्यः क्षन्तव्यं विबुधैर्यदत्र मेऽघम् ॥२॥

भाषाकार विघ्नविघातार्थ मंगलाचरणरूप निज गुरुको प्रणामपूर्वक भाषारचनाका प्रयोजन कहता है कि सत्कवि रामदैवज्ञके कवितारूपी समुद्र जो कि विद्वानोंसेभी सहसा पार नहीं उतरा जाता अर्थात् एकाएकी कविके आशयको विना कुछ आधार नहीं पाते इसको मैं एक छोटासा वराक (अल्पसार) श्रीनाथ (लक्ष्मीनाथ विष्णु अथवा श्री शोभा) युक्त नाथ आदिनाथ शिव, विशेषतः आनंदानंद नाथ आदि गुरुपंक्तित्रिकमेंसे प्रथम श्रेण्यधीश श्रीनाथ परब्रह्मरूप सच्चिदानंदमय गुरु) के चरणकमलही एक वडी नौका (नाव) के आश्रय पायके उक्त कवितासमुद्र तरनेको उद्यत हुआ हूं अपने जनकके चरणकमलोंके प्रसादसे पाया है मुहूर्त्तादिकका बोध (ज्ञान) जिसने ऐसा मैं महीधरनामा (ब्राह्मण राजधानी टीहरी जिला गढवाल निवासी) मुहूर्त्तग्रंथोंसे अनभिज्ञोंके प्रसन्नतार्थ इस मुहूर्त्तचिंतामणिनामक ग्रंथकी सरल हिन्दीभाषाटीका करता हूं. तथा प्रार्थनाभी करता हूं कि इसमें जो कुछ मेरी दुष्कृत (अयोग्यता) हो तो विद्वज्जन क्षमा करें ॥१॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आचार्य प्रथम मंगलाचरण इंद्रवज्रा छंदसे करता है ।

इ०व०—गौरीश्रवःकेतकपत्रभङ्गमाकृष्यहस्तेनददन्मुखाग्रे ॥
विघ्नंमुहूर्त्ताकलितद्वितीयदन्तप्ररोहोहरतुद्विपास्यः ॥ १ ॥

श्रीगणेशजीने निजमाता गौरी (पार्वतीजी) के कानमें पहिरे हुए केतकी के पत्र (पुष्प) के एक भागको अपने शुंडादण्डसे बाललीला अपनी माता-को दिखलानेके लिये बलात्कारसे ग्रहण कर (खैंचकर) अपने मुखमें एक ओरसे भक्षण निमित्त धारण किया जितने भक्षण न हो सका इतने मुहूर्त्त (क्षण) पर्यंत द्विदंतकी शोभा देखनेमें आई क्यों कि गणेशजी एकदंत हैं दूसरे और थोडे समय केतकीपुष्पके टुकडे रखनेसे द्विदंत जैसे प्रतीत हुए. यह अद्भुतोपमालंकार है और द्विपास्य (एक वार शुंडासे पुनः मुखसे पीनेवाले हाथी) का है मुख जिसका ऐसा गणेश विघ्नको हरण करे ॥ १ ॥

उ०जा०—क्रियाकलापप्रतिपत्तिहेतुंसंक्षिप्तसारार्थविलासगर्भम् ॥
अनन्तदैवज्ञसुतःसरामोमुहूर्तचिन्तामणिमातनोति ॥२॥

क्रिया (जातकर्म आदि समस्त) कार्यसमूहकी प्रतिपत्ति (यह कार्य अमु-क दिन शुभ अमुकमें अशुभ) का हेतु (कारणभूत) एवं संक्षेप (थोडे) शब्दोंमें सार (निकृष्ट) अर्थका विलास प्रकाश है गर्भ (अंतर) में जिसके अर्थात् मुहूर्तग्रंथ प्राचीन अनेक हैं परंतु उनमें पाठ बहुत और तिथ्यादि विचारोंके पृथक् प्रकरण हैं इसमें समस्त कार्यनिर्वाह थोडेही शब्दोंसे एकही स्थलमें हो जाता है इसलिये दिनशुद्धि विशेषके "यद्वा" मुहूर्तदिनके पंद्रहवें भाग (दो घडी) उपलक्षितकालके चिंता शुभाशुभनिरूपणरूप विचारका मणि . जैसे हीरा आदि समस्त कांतिमानोंके आधार है ऐसेही समस्त मुहू-र्त (दिनशुद्धि) के आधार इस मुहूर्तचिंतामणिनाम ग्रंथको जगद्विख्यात अनंत नामा दैवज्ञ (ज्योतिषी) का पुत्र रामदैवज्ञ विस्तारित अर्थात् विधि-निषेधके संनिवेश (विधान) का निरूपण करता है ॥ २ ॥

अनुष्टुप्—तिथीशावह्निकोगौरीगणेशोहिर्गुहोरविः ॥
शिवोदुर्गान्तकोविश्वे हरिःकामःशिवःशशी ॥ ३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथम पंचांगके शुभाशुभनिरूपणार्थ तिथियोंके स्वामी कहते हैं:-कि प्रतिपदाका स्वामी अग्नि, एवं द्वि० का ब्रह्मा, तृ० पार्वती, च० गणेश, पं० सर्प, ष० कार्तिकेय, स० सूर्य, अ० शिव, न० दुर्गा, द० यम, ए० विश्वेदेव, द्वा० हरि, त्रयोदशी कामदेव, चतुर्दशी शिव, पू० अ० चंद्रमा हैं। इनके कहनेका प्रयोजन यह है कि तिथिका जो अधिपति उसका पूजन उसीमें होता है तथा उनके जैसे गुण एवं कर्म हैं वैसेही प्रकार कर्त्तव्य कार्यका शुभाशुभ परिणाम देते हैं जैसे रत्नमाला आदियोंके तिथिप्रकरणोक्त प्रयोजन है कि प्रतिपदामें विवाह, यात्रा, व्रतबंध, प्रतिष्ठा, सीमंत, चूडा, वास्तुकर्म, गृहप्रवेश आदि मंगल न करना परंतु यहां विशेषतः शुक्ल प्र०की है कृष्णमें उक्त कार्योंमेंसे कुछ होते हैं इनकी स्पष्टता आगे लिखेंगे. द्वितीयामें राज्यसंबंधी अंग वा चिह्नोंके कृत्य व्रतबंध प्रतिष्ठा विवाह यात्रा भूषणादि कर्म शुभ होते हैं, तृतीयामें द्वितीयाके उक्त कर्म और गमनसंबंधी कृत्य, शिल्प, सीमंत, चूडा, अन्नप्राशन, गृहप्रवेशभी शुभ होते हैं. रिक्ता ४। ९। १४ में अग्निकर्म मारणकर्म बंधनकृत्य शस्त्र विष अग्निदाह घात आदिक विषयिक कृत्य शुभ और मंगल कृत्य अशुभ होते हैं, पंचमीमें समस्त शुभकृत्य सिद्धि देते हैं परंतु ऋण (कर्जा) इसमें न देना देनेसे नाश हो जाता है. षष्ठीमें तैलाभ्यंग, यात्रा, पितृकर्म और दंतकाष्ठोंके विना सभी मंगल पौष्टिक कर्म करने तथा संग्रामोपयोगी शिल्प, वास्तु भूषण वस्त्रभी शुभ है. सप्तमीमें जो जो कृत्य द्वि० तृ० पं० स० में कहे हैं वे सिद्ध होते हैं. अष्टमीमें रणोपयोगी कर्म, वास्तुकृत्य, शिल्प, राजकृत्य, लिखनेका काम, स्त्री, रत्न, भूषण कृत्य शुभ होते हैं. दशमीमें जो जो द्वि० तृ० पं० स० में कहे हैं वे सिद्ध होते हैं. एकादशीमें व्रत उपवासादि समस्त धर्मकृत्य, देवताका उत्सव, वास्तुकर्म, सांग्रामिक कर्म, शिल्प शुभ होते हैं. द्वादशीमीमें समस्त स्थावर जंगमके धर्म पुष्टिकारक शुभकर्म सभी सिद्ध होते हैं. त्रयो० में द्वि० तृ० पं० स० के उक्त कृत्य शुभदायक होते हैं. पूर्णिमामें यज्ञक्रिया, पौष्टिक, मंगल, संग्रामोपयोगी, वास्तुकर्म, विवाह, शिल्प, समस्त भूषणादि सिद्ध होते हैं. अमावास्यामें पितृकर्म मात्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0, In Public Domain. Digitization by eGangotri

होते हैं कहीं शाबरोक्त उग्रकर्मभी कहे हैं अन्य मंगल पोष्टिकोत्सवादि कृत्य न करने ॥ ३ ॥

उ०जा०—नन्दाचभद्राचजयाचरिक्तापूर्णेतितिथ्योऽशुभ-
मध्यशस्ताः ॥ सितेऽसितेशस्तसमाधमाःस्युः
सितज्ञभौमार्किगुरौचसिद्धाः ॥ ४ ॥

तिथियोंके तीन आवृत्तिमें नंदादि पंच संज्ञा क्रमसे हैं जैसे १ । ६ । ११ नंदा. २ । ७ । १२ भद्रा. ३ । ८ । १३ जया. ४ । ९ । १४ रिक्ता. ५ । १० । १५ पूर्णा संज्ञक हैं इनके जैसे नाम वैसेही फलभी हैं. तथा शुक्लपक्षमें पूर्वत्रिभाग (प्रतिपदासे पंचमी) पर्यंत अशुभ अर्थात् इनमें चंद्रमा क्षीणही रहता है, द्वितीयत्रिभाग (पंचमीसे दशमी) पर्यंत मध्यम और अंतिमत्रिभाग (दशमीसे पूर्णमासी) पर्यंत शुभ होती हैं तथा कृष्णपक्षमें पू० त्रि० (पंचमी) पर्यंत शुभ. म० त्रि० (पंचमीसे दशमीपर्यंत मध्यम और अं० त्रि० (एकादशीसे अमा०) पर्यंत अधम होती है चतुर्थपादका अर्थ यह है कि शुक्रवारके दिन नंदा १ । ६ । ११ बुधके भद्रा २ । ७ । १२ मंगलके जया ३ । ८ । १३ शनिवारके रिक्ता ४ । ९ । १४ गुरुवारके दिन पूर्णा ५ । १० । १५ सिद्धि देनेवाली है इसका प्रयोजन यह है कि " सिद्धा तिथिर्हंति समस्तदोषान्० " इत्यादि० मासशून्यमासदग्ध, दिनदग्ध आदि दोषोंको हटाकर कार्य सिद्धि देती हैं ॥ ४ ॥

शालिनी—नन्दाभद्रानन्दिकाख्याजयाचरिक्ताभद्राचैवपू-
र्णामृताकात् ॥ याम्यंत्वाष्ट्रंवैश्वदेवंधनिष्ठार्यम्णं
ज्येष्ठांत्यंरवेर्दग्धभं स्यात् ॥ ५ ॥

सूर्यादिवारोंमें नन्दादि उक्ततिथि क्रमसे अशुभ (घातक) होती है जैसे रविवारको नंदा (१।६।११) सोमवारको भद्रा (२।७।१२) मंगलको नंदा (१ । ६ । ११) बुधको जया (३ । ८ । १३) । गुरुवारको रिक्ता (४ । ९ । १४) शुक्रवारको भद्रा (२ । ७ । १२) शनिवारको

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्णा (५। १०। १५) ऐसेही नक्षत्रभी, जैसे रविवारको भरणी, सोमवारको चित्रा, मंगलको उत्तराषाढा, बुधको धनिष्ठा, गुरुवारको उत्तराफाल्गुनी, शुक्रको ज्येष्ठा, शनिवारको रेवती दग्धनक्षत्र होते हैं उक्त घातकतिथि तथा ये दग्धनक्षत्र शुभ कृत्यमें वर्ज्य हैं ॥ ५ ॥

तिथिचक्रम् ।

तिथि	तिथि फ.	स्वामी	संज्ञा	शुक्ल	कृष्ण	पाल
१	सिद्धि	अग्नि	नन्दा	अशुभ	शुभ	कोहडा
२	कार्य साधन	ब्रह्मा	भद्रा	अ०	शुभ	वनभंटा
३	आरोग्य	गौरी	जया	अ०	शुभ	नोन
४	हानि	गणेश	रिक्ता	अ०	शुभ	तिल
५	शुभ	सर्प	पूर्णा	अ०	शुभ	खट्टा
६	अशुभ	स्कंद	नन्दा	मध्यम	मध्यम	तेल
७	शुभ	सूर्य	भद्रा	म०	म०	आवला
८	व्याधि	शिव	जया	म०	म०	नारियल
९	मृत्युदा	दुर्गा	रिक्ता	म०	म०	लड्डुआ
१०	धनदा	यम	पूर्णा	म०	म०	चिचेंडा
११	शुभा	विश्वे	नन्दा	शुभ	अशुभ	सेमदाना
१२	सर्वसिद्धि	हरि	भद्रा	शुभ	अशुभ	मसूर
१३	सर्वसिद्धि	काम	जया	शुभ	अ०	भंटा
१४	उग्रा	शिव	रिक्ता	शुभ	अ०	सहद
१५	पुष्टिदा	चन्द्र	पूर्णा	शुभ	अ०	जुवा
३०	अशुभ	पितर	०	०	०	मैथुन

अनु०—षष्ठ्यादितिथयोमन्दाद्विलोमंप्रतिपद्बुधे ॥
सप्तम्यर्केऽधमाषष्ठ्याद्यामाश्चरदधावने ॥ ६ ॥

शनिवारसे विपरीत तथा षष्ठीसे सीधे क्रमसे गिननेमें तथा प्रतिपदाको बुध सप्तमीको रवि अधम शुभकार्यमें वर्जनीय ककचयोग होता है. पंचांगोंमें इसे वारदग्ध लिखते हैं. इनकी सुगमता यहभी है कि तिथिवार जोडनेसे १३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitization by eGangotri

जिस दिन हो वही वा० द० है जैसे शनिवारकी षष्ठी शुक्रकी सप्तमी बृहस्पतिवारकी अष्टमी बुधकी नवमी मंगलकी दशमी चंद्रवारकी एकादशी रविवारकी द्वादशी और बुधकी प्रतिपदा रविकी सप्तमी ये पृथक् २ ही कही हैं. और षष्ठी, प्रतिपदा, अमा०के दिन काष्ठविशेष नीमआदिसे दंतधावन (दांतन) न करना किसी आचार्यके मतसे नवमी तथा रविवारकोभी वर्जित है ॥ ६ ॥

इं०वं०—षष्ठ्यष्टमीभूतविधुक्षयेषुनोसेवेतनातैलपलेक्षुरंरतम् ॥
नाभ्यञ्जनंविश्वदशाब्दिकेतिथौधात्रीफलैः स्नानममाद्रिगोष्वसत् ।७।

षष्ठीके दिन तैलाभ्यंग, अष्टमीको मांसभोजन, चतुर्दशीको क्षौर, अमावास्याके दिन स्त्रीसंभोग मनुष्योंने न करना किसीका मत है. मैथुन सभी पर्वदिनोंमें न करना, चतुर्दशी, कृष्णाष्टमी, अमा०, पूर्णिमा, सूर्यसंक्रांति पर्व होते हैं उक्त कामोंमें तिथि तात्काल मानी जाती है उदयादिव्यापिनी नहीं तथा त्रयोदशी, दशमी, द्वितीयाके दिन तैलाभ्यंग (उबटन) न करना यह नियम केवल मलापकर्षस्नानमात्रको ब्राह्मणरहित तीन वर्णोंको है और अमा०, सप्तमी, नवमीको आमलेके चूर्णसे स्नान न करना करनेसे धन एवं संतति क्षीण होती है अन्य दिनोंमें आमले तिलकल्कसहितसे स्नान पुण्य देता है, यह वैद्यशास्त्रसेभी स्नानकी औषधी वर्णकांतिकारक है ॥ ७ ॥

इं०व०—सूर्येशपञ्चाग्निरसाष्टनन्दावेदाङ्गसप्ताश्विगजाङ्कशैलाः ॥
सूर्याङ्गसप्तोरगगोदिगीशादग्धाविषाख्याश्चहुताशनाश्च ॥ ८ ॥

सूर्यवारकी द्वादशी, चं० एकादशी, मं० पंचमी, बु० तृतीया, बृ० षष्ठी, शु० अष्टमी, शनिवारकी नवमी दग्धयोग होता है. रविवारकी चतुर्थी, चं०षष्ठी, मंगल सप्तमी, बु० द्वितीया, बृ० अष्टमी, शु० नवमी, श० सप्तमी विषयोग होता है. रविवारकी द्वादशी, चं०, षष्ठी, मं० सप्तमी, बु० अष्टमी, बृ० नवमी, शु०दशमी, श० एकादशी हुताशनयोग होता है. ये ३ योग नामसदृश फल देते हैं शुभकार्यमें वर्जित हैं ॥ ८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उ०जा०—सूर्यादिवारेतिथयोभवन्तिमघाविशाखार्द्राशिवमूलवह्निः ॥
ब्राह्मंकरोर्क्ष्यमघण्टकाश्चशुभेविवर्ज्यागमनेत्ववश्यम् ॥९॥

रविवारकी मघा, चं० विशाखा, मं० आर्द्रा, बु० मूल, बृ० कृत्तिका, शु० रोहिणी, श० हस्त यमघंटयोग होते हैं इतने दग्ध विशाख्य हुताशन, यमघंट योग शुभकार्यमें वर्जित हैं विशेषतः यात्राहीमें वर्ज्य हैं. आवश्यकमें इनके परिहारभी ग्रंथांतरोंमें हैं कि विंध्याचल तथा हिमालयके बीच इनका विचार मुख्य है अन्यदेशोंमें नहीं तथा लग्नसे केंद्रकोनमें शुभ ग्रह हो तो इनका दोष नहीं और किसीका मत है कि यमघंटकी ८ घटी वर्ज्य हैं वसिष्ठमत है कि उक्त ४ योग दिनमें अनिष्ट फल देते हैं रात्रिमें नहीं ॥ ९ ॥

(रव्यादिवारेएतास्तिथयोदग्धाद्याः)							
र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	वाराः
१२	११	५	३	६	८	९	दग्धास्तिथयः
४	६	५	२	८	९	७	विषाख्यास्ति.
१२	६	७	८	५	१०	११	हुताशनास्ति.
मघा	विशा	आर्द्रा	मूल	कृत्ति.	रोहि.	हस्त	यमघण्टानक्ष०

शा० वि०—भाद्रेचन्द्रदृशौनभस्यनलनेत्रेमाधवेद्वादशी
पौषेवेदशराइषेदशशिवामार्गेद्विनागामधौ ॥
गोष्ठोचोभयपक्षगाश्चतिथयः शून्याबुधैः कीर्त्तिता
ऊर्जाषाढतपस्यशुक्रतपसांकृष्णेशराङ्काब्धयः॥१०॥
शक्राःपञ्चसितेशकाद्यग्निविश्वरसाः क्रमात् ॥

मासशून्य (मासदग्ध) तिथि कहते हैं भाद्रपदकी १।२ तिथि श्रावणकी ३।२ वैशाखकी १२ पौषकी ४।५ अश्विनकी १० । ११ मार्गशीर्षकी ७।८ चैत्रकी ९ । ८ दोनोंही पक्षोंमें शून्य होती हैं तथा कार्तिककी ५ आषाढकी ६ फाल्गुनकी ४ ज्येष्ठकी १४ माघकी ५ कृष्णपक्षमें शून्य होती हैं और कार्ति-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ककी १४ आषाढकी ७ फाल्गुनकी ३ ज्येष्ठकी १३ माघकी ६ शुक्लपक्षमें शून्य होती हैं इनहीको मासदग्धभी कहते हैं ॥ १० ॥

अनु०—तथानिन्द्यंशुभेसार्पद्वादश्यांवैश्वमादिमे ॥ ११ ॥
अनुराधाद्वितीयायांपञ्चम्यांपित्र्यभंतथा ॥
त्र्युत्तराश्चतृतीयायामेकादश्यांचरोहिणी ॥ १२ ॥
स्वातीचित्रेत्रयोदश्यांसप्तम्यांहस्तराक्षसौ ॥
नवम्यांकृत्तिकाष्टम्यांपूषाषष्ठ्यांचरोहिणी ॥ १३ ॥

तिथिनक्षत्रसंबंधी दोष कहते हैं द्वादशीमें आश्लेषा, प्रतिपदामें उत्तराषाढा, द्वितीयामें अनुराधा, तृतीयामें तीनहूं उत्तरा, एकादशीमें रोहिणी, त्रयोदशीमें स्वाती चित्रा, सप्तमीमें हस्त मूल, नवमीमें कृत्तिका, अष्टमीमें पूर्वाभाद्रपदा, पंचमीमें मघा शुभकार्यमें वर्जनीय हैं ॥ ११ ॥१२ ॥ १३ ॥

अनु०—कदात्रभेत्वाष्ट्रवायूविश्वेज्यौभगवासवौ ॥
वैश्वश्रुतीपाशिपौष्णेअजपाद्यग्निपित्र्यभे ॥ १४ ॥
चित्राद्वीशौशिवाइज्यर्क्षा वसुमूलेयमैन्द्रभे ॥
चैत्रादिमासेशून्याख्यातारावित्तविनाशदा ॥ १५ ॥

चैत्रमहीनेमें रोहिणी अश्विनी, वैशाखमें चित्रा स्वाती, ज्येष्ठमें उत्तराषाढा श्रवण, भाद्रपदमें शतभिषा रेवती, आश्विनमें पूर्वाभाद्रपदा, कार्तिकमें कृत्तिका मघा, मार्गशीर्षमें चित्रा विशाखा, पौषमें आर्द्रा अश्विनी हस्त, माघमें श्रवण मूल, फाल्गुनमें भरणी ज्येष्ठा शून्य नक्षत्र होते हैं इनमें शुभकार्य करनेसे वित्त (धनादि) नाश होते हैं ॥ १४ ॥ १५ ॥

अनु०—घटोझषोगौर्मिथुनंमेषकन्यालितौलिनः ॥
धनुःकर्कोमृगःसिंहश्चैत्रादौशून्यराशयः ॥ १६ ॥

शून्यराशि कहते हैं कि चैत्रमें कुंभ, वैशाखमें मीन, ज्येष्ठमें वृष, आषाढमें मिथुन, श्रावणमें मेष, भाद्रपदमें कन्या, आश्विनमें वृश्चिक, कार्तिकमें तुला, मार्गशीर्षमें धन, पौषमें कर्क, माघमें मकर, फाल्गुनमें सिंहराशि शून्य होती हैं इनकाभी वही फल है ॥ १६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मासेषु शून्यसंज्ञकाः।

शून्य	चै.	वै.	ज्ये.	आ.	श्रा.	भा.	आ.	का.	मा.	पौ.	मा.	फा.
तिथयः	५।८ उभ पक्ष	१२ उभ पक्ष	कृ १४ शु १३	कृ. ६ शु ७	३ २ उ. प.	१।२ उ. प.	१०।११ उ. प.	कृ. ५ शु. १४	७।८ उ. प.	४।५ उ.प.	कृ. ५ शु. ९	कृ. ४ शु. ३
शून्य नक्ष-त्राणि	रोहि अश्वि नी	चित्रा स्वाति	उत्तरा षाढा पुष्य	पू. फा. धनि.	उ. षा. श्र. ध.	शत तारा रेवती	पू. भा.	कृत्ति मघा	चि. वि.	आर्द्रा आश्वि हस्त	श्रव. मूल	भर. ज्ये.
शून्यरा शयः	११	१२	२	३	१	६	८	७	९	४	१०	५

इं० व०—पक्षादितस्त्वोजतिथौघटेणौ मृगेन्द्रनक्रौमिथुनाङ्गनेच॥
चापेन्दुभेकर्कहरीहयान्त्यौगोन्त्यौचनेष्टेतिथिशून्यलग्ने ॥ १७॥

पक्षादि (प्रतिपदा) से लेकर विषमतिथिमोंमें ये लग्न शून्य होते हैं जैसे प्रतिपदामें तुला, मकर; तृ० में मकर, सिंह; पं० मिथुन, कन्या; स० धन, कर्क; न० सिंह, कर्क; ए० धन, मीन ये शून्यलग्न शुभकार्योंमें वर्ज्य हैं ॥ १७ ॥

अनु० नारदः—तिथयोमासशून्याश्चशून्यलग्नानियान्यपि ॥
मध्यदेशेविवर्ज्यानिनदूष्याणीतरेषुतु ॥ १८ ॥
पंग्वन्धकाणलग्नानिमासशून्याश्चराशयः ॥
गौडमालवयोस्त्याज्याअन्यदेशेनगर्हिताः ॥ १९ ॥

जो मासशून्य तिथ्यादि कहे हैं इनके निमित्त विशेषता नारद कहते हैं कि मासशून्यतिथि तथा जो शून्यलग्न कहे हैं वेभी मध्यदेशहीमें वर्ज्य हैं और देशोंमें इनका दोष नहीं तथा पंगु, अंध, काण, लग्न (जो विवाहप्रकरणमें कहे हैं) और मासशून्यराशि गौडदेश, मालव, मलबार (केरल) देशमें वार्जित करने और देशोंमें निंद्य नहीं है ॥ १८ ॥ १९ ॥

अनु०—वर्जयेत्सर्वकार्येषुहस्तार्कपंचमीतिथौ ॥
भौमाश्विनीचसप्तम्यांषष्ठ्यां चन्द्रेन्दवंतथा ॥ २० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वार नक्षत्र योगसे जो अमृतसिद्धियोग होते हैं वे किसी तिथिके योगसे अनिष्टभी हो जाते हैं. जैसे रविवारका हस्त सिद्धि है परंतु पंचमीके दिन हो तो विरुद्ध ऐसेही मंगलवारकी अश्विनी सप्तमीको, सोमवारका मृगशिर षष्ठीको ॥ २० ॥

अनु०-बुधानुराधामष्टम्यांदशम्यांभृगुरेवतीम् ॥
नवम्यांगुरुपुष्यंचैकादश्यांशनिरोहिणीम् ॥ २१ ॥

बुधवारकी अनुराधा अष्टमीको, शुक्रवारकी रेवती दशमीको, गुरुवारका पुष्य शनिवारकी रोहिणी एकादशीको विरुद्ध होती है ऐसे योग हो तो समस्त शुभकृत्यमें वर्जित करने ॥ २१ ॥

अनु०-गृहप्रवेशेयात्रायांविवाहेचयथाक्रमम् ॥
भौमाश्विनींशनौब्राह्मंगुरौपुष्यंचवर्जयेत् ॥ २२ ॥

उक्त भौमाश्विनी आदि अमृतसिद्धि योग सभी कार्योंमें उक्त हैं तौभी गृहप्रवेशमें भौमाश्विनी, यात्रामें शनिरोहिणी, विवाहमें गुरुपुष्य वर्जितही करना ॥ २२ ॥

शालि०-आनंदाख्यः कालदंडश्चधूम्रोधातासौम्योध्वाङ्क्षकेतूक्रमेण॥
श्रीवत्साख्योवज्रकंमुद्गरश्चछत्रंमित्रंमानसंपद्मलुंबौ ॥ २३ ॥
उ० जा०-उत्पातमृत्यूकिलकाणसिद्धीशुभोमृताख्योमुश-
लंगदश्च ॥ मातङ्गरक्षश्चरसुस्थिराख्यप्रवर्द्धमानाः
फलदाः स्वनाम्ना ॥ २४ ॥

आनंदादियोगोंके नाम । आनंद १ कालदंड २ धूम्र ३ प्रजापति ४ सौम्य ५ ध्वांक्ष ६ ध्वज ७ श्रीवत्स ८ वज्र ९ मुद्गर १० छत्र ११ मैत्र १२ मानस १३ पद्म १४ लुंबक १५ उत्पात १६ मृत्यु १७ काण १८ सिद्धि १९ शुभ २० अमृत २१ मुसल २२ गद २३ मातंग २४ राक्षस २५ चर २६ स्थिर २७ वर्द्धमान २८ योग नक्षत्रवारके अनुसार होते हैं जैसे इनके नाम हैं वैसे फलभी देते हैं ॥ २३ ॥ २४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	आनंदादि	रं.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	फल
१	आनंद	अ.	मू.	अ.	ह.	अ.	उ.	श.	सिद्धि
२	काल	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	मृत्यु
३	धूम्र	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	असुख
४	धाता	रो.	ति.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	सौभाग्य
५	सौम्य	मृ.	अ.	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	बहुसुख
६	ध्वांक्ष	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	धनक्षय
७	ध्वज	पु.	पू.	स्वा	मू.	श्र.	उ.	कृ.	सौभाग्य
८	श्रीवत्स	ति.	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	सौख्यसंपत्ति
९	वज्र	अ.	ह.	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	क्षय
१०	मुद्गर	भ.	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	लक्ष्मीक्षय
११	छत्र	पू.	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	राजसम्मान
१२	मित्र	उ.	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	ति.	पुष्टि
१३	मान	ह.	अ.	उ.	श.	अ	मृ.	अ.	सौभाग्य
१४	पद्म	चि.	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	धनागम
१५	लुंबक	स्वा.	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	धनक्षय
१६	उत्पात	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	ति.	उ.	प्राणनाश
१७	मृत्यु	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	अ.	ह.	मृत्यु
१८	काण	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	क्लेश
१९	सिद्धि	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.	कार्यसिद्धि
२०	शुभ	पू.	ध.	रे.	रो.	पु.	उ.	वि.	कल्याण
२१	अमृत	उ.	श.	अ.	मृ.	आ.	ह.	अ.	राजसम्मान
२२	मुशल	अ.	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	धनक्षय
२३	गदा	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पु.	स्वा.	मू.	अक्षयविद्या
२४	मातंग	ध.	रे.	रो.	ति.	उ.	वि.	पू.	कुलवृद्धि
२५	राक्षस	श.	अ.	मृ.	अ.	ह.	अ.	उ.	महाकष्ट
२६	चर	पू.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अ.	कार्यसिद्धि
२७	स्थिर	उ.	कृ.	पु.	पु.	स्वा.	मू.	श्र	गृहारम्भ
२८	वर्द्धमान	रे.	रो.	पु.	उ.	वि.	पू.	ध.	विवाह

अनु०—दास्रादर्कैर्मृगादिन्दौसार्पाद्भौमेकराद्बुधे ॥
मैत्राद्गुरौभृगौवैश्वाद्वण्यामन्देचवारुणात् ॥ २९ ॥

उक्त २८ योगोंके जाननेकी विधि यह है कि रविवारको अश्विनीसे सोम-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वारको मृगशिरसे एवं मं०को आश्लेषासे बु०को हस्तसे बृ०अनुराधासे शु० उत्तराषाढासे श०को शतभिषासे गिनना. जितनी संख्यामें वर्तमान दिननक्षत्र हो उतनी संख्याका उक्त योगोंमेंसे योग जानना. जैसे रविवारको अश्विनी आनंद भरणी कालदंड तथा सोमवारको हस्त, मृगशिरसे गिनकर ९ हुआ तो नवमयोग वज्र हुआ. ऐसेही अन्यभी जानने यहां अभिजित्भी गिनना चाहिये तब २८ योग होंगे ॥ २५ ॥

शालि०-ध्वांक्षेवज्रेमुद्गरेचेषुनाड्योवर्ज्यावेदाःपद्मलुम्बेगदेश्वाः ॥
धूम्रेकाणेमौशलेभूर्द्वयंद्वेरक्षोमृत्यूत्पातकालाश्च सर्वे ॥२६॥

आवश्यकतामें दुष्टयोगोंके वर्ज्य घटीसंख्या कहते हैं कि ध्वांक्ष, वज्र, मुद्गरके ५ घटी, पद्म लुम्बकके ४ घटी, गदकी ७, धूम्रकी १, काणकी२, मुसलकी २ और राक्षस, मृत्यु, उत्पात, कालदंडकी समस्त ६० घटी वर्जित हैं अन्यग्रंथोंमें चरयोगकी तीन घटी वर्जित करनी लिखी हैं ॥ २६ ॥

अनु०-सूर्यभाद्वेदगोतर्कदिग्विश्वनखसंमिते ॥
चन्द्रर्क्षेरवियोगाः स्युर्दोषसङ्घविनाशकाः ॥ २७ ॥

जिस नक्षत्रपर सूर्य हो उससे गिनकर (दिननक्षत्र) जिसपर चंद्रमा है उसपर्यंत ४ । ९ । ६ । १० । १२ । २० इनमेंसे कोई संख्या हो तो रवि योग होता है यह सभी कार्यमें शुभ होता है पूर्वोक्तादिदोषोंके समूहको नाश करता है ॥ २७ ॥

इ०व०-सूर्यैकमूलोत्तरपुष्पदास्रंचन्द्रेश्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्रम् ॥भौमेऽब्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पेज्ञेब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचान्द्रम् २८

उ०जा०-जीवेन्त्यमैत्र्यश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेन्त्यमैत्र्यश्व्यदितिश्रवाभम् ॥ शनौश्रुतिब्राह्मसमीरभानि
सर्वार्थसिद्धयै कथितानिपूर्वैः ॥ २९ ॥

सिद्धियोग कहते हैं कि, रविवारको हस्त, मूल, तीनहूं उत्तरा, पुष्य, अश्विनी. सोमवारको श्रवण, रोहिणी, मृगशिर, तिष्य, अनुराधा. मंगलवारको अ-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्विनी, उत्तराभाद्रपदा, कृत्तिका, आश्लेषा. बुधवारको अनुराधा, हस्त, कृत्तिका, आश्लेषा. बृहस्पतिवारको रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य. शुक्रवारको रेवती, पूर्वाफाल्गुनी, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण, शनिवारको श्रवण, रोहिणी, स्वाती सर्वार्थसिद्धि होती हैं यह प्राचीन आचार्योंने कहा है ॥ २८ ॥ २९ ॥

शालि०—द्वीशात्तोयाद्वासवात्पौष्णभाच्चब्राह्म्यात्पुष्यादर्य-
मर्क्षाच्चतुर्भैः ॥ स्यादुत्पातोमृत्युकाणौचसिद्धिर्वा-
रेकाद्ये तत्फलंनामतुल्यम् ॥ ३० ॥

रविवारको विशाखासे चार नक्षत्र क्रमशः उत्पात, मृत्यु, काण, सिद्धि योग होते हैं जैसे रविवारको विशाखा उत्पात, अनुराधा मृत्यु, ज्येष्ठा काण, मूल सिद्धि होते हैं ऐसेही सोमवारको पूर्वाषाढासे मंगलको धनिष्ठासे बुधको रेवतीसे गुरुवारको रोहिणीसे शुक्रको पुष्यसे शनिको उत्तराफाल्गुनीसे उक्त ४ योग होते हैं इनके फलभी जैसे नाम वैसेही हैं ॥ ३० ॥

	योग.	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
१	चरयोग	पू. स्वा.	आर्द्रा	वि.	रो.	पुष्य	भ.	मूल
२	क्रकचयोग	१२ ति.	११	१०	९	८	७	६
३	दग्धयोग	१२ ति.	११	५	३	६	८	९
४	मृत्युयोग	ति. १।६।११	२।७।१२	१।६ ११	४।९ १४	२।७ १२	३।८ १३	५।१० १५
५	सिद्धियोग	ति०	ति०	३।८ १३	७।२ १२	५।१० १५	१।६ ११	४।९ १४
६	उत्पातयोग	वि.	पू.	ध.	रे.	रो.	पुष्य	उ.
७	मृत्युयोग	अ.	उ.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.
८	कालयोग	ज्ये.	अ.	पू.	भ.	आर्द्रा	म.	चि.
९	सिद्धियोग	मू.	श्र.	उ.	कृ.	पु.	पू.	स्वा.
१०	यमदंष्ट्रयोग	म. ध.	मू. वि.	कृ.भ.	पू. षा. पु.	उ. षा. अ.	रो. अ.	श्र.श.
११	यमघंट	म.	वि.	आ.	मू.	कृ.	रो.	ह.
१२	मुशलवज्र	म.	चि.	उ.षा.	ध.	उ.	ज्ये.	रे.
१३	अमृतसिद्धि	ह.	अ.	अ.	अनु.	पुष्य	रे.	रो.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनु०-कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्थाभवारजाः ॥
हूणवङ्गखशेष्वेववर्ज्यास्त्रितयजास्तथा ॥ ३१ ॥

दुष्टयोगोंके परिहार कहते हैं कि जो तिथि वारसे उत्पन्न क्रकच (वारदग्ध) आदि हैं तथा तिथि और नक्षत्रसे उत्पन्न जैसे " अनुराधा द्वितीयायाम् " इत्यादि तथा नक्षत्र वारसे उत्पन्न जैसे " याम्यां त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठार्यम्णं ज्येष्ठांत्यं रवेर्दग्धभं स्यात् " इत्यादि और तिथि वार नक्षत्र तीनहूंसे उत्पन्न जैसे " वर्जयेत्सर्वकार्येषु हस्तार्कं पंचमीतिथौ " इत्यादि हैं ये समस्तदोष हूणदेश (वंग) बंगाला और (खसदेश) उत्तराखण्डमें वर्जित हैं और देशोंमें निषिद्ध नहीं हैं ॥ ३१ ॥

शा० वि०-सर्वस्मिन्विधुपापयुक्तनुलवावर्द्धेनिशाह्नोर्घटी
त्र्यंशंवैकुनवांशकंग्रहणतः पूर्वंदिनानांत्रयम् ॥
उत्पातग्रहतोऽह्यांश्चशुभदोत्पातैश्चदुष्टंदिनं
षण्मासंग्रहभिन्नभंत्यजशुभेयौद्धंतथौत्पातभम् ॥३२॥

समस्त शुभकृत्योंमें वर्जित पदार्थ कहते हैं कि चंद्रमा तथा पापग्रह, सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतुसे युक्त लग्न एवं नवांशकभी सभी कार्यमें त्याज्य हैं तथा मध्याह्न एवं अर्द्धरात्रिके मध्य १ घटी अभिजित् मुहूर्त्त उत्तम होता है परंतु इसके ठीक मध्यके (घटीत्र्यंश) २० पला (१० पूर्वकी १० परभागकी) भी त्याज्य हैं ऐसेही सूर्य चंद्र ग्रहणसे पूर्व तीन और उत्पात-प्रकृतिसे विरुद्ध होनेको उत्पात कहते हैं सो तीन प्रकार हैं. (१) दिव्य केतुदर्शन ग्रहनक्षत्र वैकृत, उल्का, निर्घात, परिवेषादि. (२) अंतरिक्ष, गंधर्वनगर, इंद्रधनुषादि. (३) भौम, पृथ्वीसंबंधी भूमिकंप, वृक्षवैकृत, पशुवैकृत, अग्नि जलवैकृतादि हैं जिस दिन ऐसा कोई उत्पात हो उससे तथा ग्रहणदिनसे ७ दिन पर्यंत शुभकृत्य न करना ऐसीही केतु (पुच्छलतारा) के दर्शनमेंभी जानना और मतांतरसे ग्रहणका नियम सर्व ग्रासमें ७ दिन त्रिभागोनमें ६ दिन अर्द्धग्रासमें ४ दिन चौथाई ग्रासमें ३ दिन और १ । २ । ३ अंगुल ग्रासमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१ दिन मात्र वर्ज्य है. शुभदोत्पातमें १ दिन वर्ज्य है. शुभदोत्पातबिजली गिरना, भूकंप, संध्यासमयमें निर्घातशब्द, परिवेष, रज विना अग्निधूम, सूर्यबिंब रक्त उदयास्तमें, वृक्षोंमें आसव, तेल, गोंद, फल, पुष्प निकलना, वसंतमें गौ तथा पक्षियोंकी मदवृद्धि, तारापतन, उल्कापतन, विना अग्निशब्द वायुमें धूमरेखा, रक्तकमल संध्यामें अरुण (गुलाबीरंग), आकाशमें क्षोभ, विना ग्रीष्म नदी सूखना, अकस्मात् पृथ्वी फट जाना, जलजीवोंका स्थलमें आना, अकस्मात् पहाड उड जाना, दिव्यस्त्री, विमान, भूतगंधर्वनगर अद्भुतदर्शन, दिनमें शुक्ररहित ताराओंका देखना, पर्वतोंमें विना मनुष्य गीत तथा बाजे सुनना, ठंडे वायुमें शर्करा, मृग तथा पक्षियोंका नाचना, यक्ष राक्षसादियोंका देखना, विना मनुष्य मनुष्यकी वाणी सुनना, दिशाओंमें घूमता अंधकार, अकाल हिमपात, आकाशका कृष्णरंग होना, स्त्री तथा गौ बकरी घोडी मृगपक्षियोंके गर्भसे अन्यरूपजीव उत्पन्न होना इत्यादि हैं. पापग्रहवेधितनक्षत्र तथा जिस नक्षत्रसे ग्रहयुद्ध हुआ हो और जिस नक्षत्रमें दारुण उत्पात हुआ हो ये सब छः महीने पर्यंत वर्ज्य हैं ॥ ३२ ॥

इं०व०—नेष्टग्रहर्क्षसकलार्द्धपादग्रासेक्रमात्तर्कगुणेन्दुमासान् ॥
पूर्वंपरस्तादुभयोस्त्रिघस्राग्रस्तेस्तगेवाभ्युदितेर्द्धखण्डे॥३३॥

नक्षत्रकी ग्रासपरत्वसे वर्जनीयता कहते हैं कि, सर्वग्रास ग्रहण हो तो ग्रहणनक्षत्र छः महीने, अर्द्धग्रासमें तीन महीने और चौथाई ग्रासमें एक महीना वर्जित करना और ग्रस्तास्त हो तो पहलेके तीन दिन वर्ज्य हैं पूर्वके शुभ हैं यदि ग्रस्तोदय हो तो पीछेके तीन दिन नेष्ट पूर्वके शुभ हैं जो अर्धग्रास हो तो पूर्व तथा पीछेकेभी ३ । ३ दिन सर्व ग्रासमें सातही दिन हैं ॥ ३३ ॥

व०ति०—जन्मर्क्षमासतिथयोव्यतिपातभद्रावैधृत्यमापितृदिना-
नितिथिक्षयर्द्धी ॥ न्यूनाधिमासकुलिकप्रहरार्धपात-
विष्कम्भवज्रघटिकात्रयमेववर्ज्यम् ॥ ३४ ॥

शुभकृत्योंमें जन्मके नक्षत्र, महीना, तिथि आदि वर्ज्य हैं मासप्रमाण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चान्द्रमाससे जन्मतिथिसे ३० दिनपर्यंतका है विष्कम्भादि योगोंमें व्यतिपात तथा वैधृति सर्व कर्ममें वर्जित हैं तथा भद्रा, अमावास्या, पितृदिन (माता-पिताका श्राद्धदिन) क्षयतिथि (जो एक वारमें तीन तिथि स्पर्श होती हैं) वृद्धितिथि (जो एक तिथि तीन वारोंको स्पर्श करती है) तथा क्षयमास जिस सावन महीनेमें अर्थात् दो अमाओंके बीच सूर्यसंक्रान्ति दो आवें) अधिकमास (जो दो अमाओंके बीच सूर्यसंक्रान्ति न आवे) एवं कुलिक योग, प्रहरार्द्धयोग (आगे कहेंगे) तथा महापात, महावैधृति (ये योग गणितसे ज्ञात होते हैं) और विष्कम्भयोग वज्रयोगके आदिकी तीन घटिका वर्जित करनी. उक्तदोषोंमें तिथि उपलक्षणसे नक्षत्रयोगभी क्षयवृद्धिके परिहार ग्रन्थान्तरोंमें हैं कि बृहस्पति केन्द्रमें हो तो क्षय (अवम) का और बुध केन्द्रमें हो तो वृद्धि (त्रिस्पृशा) का दोष नहीं होता ॥ ३४ ॥

अनु०—परिघार्धपञ्चशूलेषट्चगण्डातिगण्डयोः ॥
व्याघातेनवनाडचश्चवर्ज्याःसर्वेषुकर्मसु ॥ ३५ ॥

परिघयोगका पूर्वार्ध, शूलयोगके प्रथम पांच घटी गण्ड एवं अतिगण्डके छः घटी व्याघातके नौ घटी आदिकी सर्व कर्ममें वर्जित हैं ॥ ३५ ॥

अनु०—वेदाङ्गाष्टनवार्केन्द्रपक्षरन्ध्रतिथौत्यजेत् ॥
वस्वङ्कमनुतत्वाशाः शरानाडीः पराः शुभाः ॥ ३६ ॥

चतुर्थी, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, द्वादशी ये पक्ष रंध्रतिथि हैं आवश्यकतामें इनके ८ । ९ । १४ । २५ । १० इतनी घटिका आदिकी वर्जित हैं जैसे चतुर्थीकी ८ षष्ठीकी ९ अष्टमीकी १४ नवमीकी २५ द्वादशीकी १० घटी वर्जित करके शेष शुभकृत्यमें ग्राह्य हैं ॥ ३६ ॥

अनु०—कुलिकः कालवेलाचयमघण्टश्चकंटकः ॥
वाराद्विघ्नेक्रमान्मन्दबुधेजीवेकुजेक्षणः ॥ ३७ ॥

वर्तमानवारसे गिनकर जितनी संख्यामें शनि हो उसे दूना कर जो अंक हो उस दिन उतनवां मुहूर्त यमघंट होता है, तथा वर्तमान वारसे जितनवां बुध हो उसे दूना कर जो अंक हो उतनी संख्याका मुहूर्त कालवेला होती है ऐसेही

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्तमान वारसे बृहस्पति जितनी संख्यामें हो उसे दूनाकर यमघंट मुहूर्त होता है तथा वर्तमानवारसे मंगल जिस संख्यामें हो वह कंटक मुहूर्त होता है उदाहरण—जैसे रविवारके दिन रविसे शनि सातवां है इसे दूनाकर १४ भया तो रविवारके दिन चौदहवां मुहूर्त कुलिक हुआ तथा रविसे बुध चौथा है द्विगुण ८ हुआ इस दिन आठवां मुहूर्त कालवेला है तथा इससे बृहस्पति पांचवां २ गुणा १० इस दिन दशवां मुहूर्त यमघंट है ऐसेही रविसे मंगल तीसरा २ गुणा ६ रविवारको छठा मुहूर्त कंटक है इसी प्रकार सभी वारोंके मुहूर्त जानने ये मुहूर्त ४। ४ घडीके होते हैं शुभकृत्योंमें वर्जित हैं किंतु किसी आचार्यका मत ऐसाभी है कि इन मुहूर्तोंका उत्तरार्द्ध निषिद्ध हैं पूर्वार्द्ध दूषित नहीं और रात्रिमें इनका दोष नहीं अर्द्धयाम सर्वदा त्याज्य है इसको आगे कहेंगे॥ ३७॥

कुलिक आदि मुहूर्तचक्रम्।

	रवि.	चन्द्र.	मंगल.	बुध.	बृह.	शुक्र.	शनि.
कुलिक दुर्मुहूर्त.	१४	१२	१०	८	६	४	२
कालवेला.	८	६	४	२	१४	१२	१०
यमघंट.	१०	८	६	४	२	१४	१२
कंटक.	६	४	२	१४	१२	१०	८
अर्द्धयाम.	७	९	३	९	१५	५	१

यामार्धचक्रम्।

वार	यामार्ध. संख्या.	प्रहरादि.	तिथि.
र.	४	१२	१
चं.	७	२४	२८
मं.	२	४	८
बु.	५	१६	२०
गु.	८	२८	२२
शु.	५	८	१२
श.	६	२०	२४

शा० वि०—सूर्यैषट्स्वरनागदिङ्मनुमिताश्चन्द्रेऽब्धिषट्कुञ्जरा-
ङ्कार्कविश्वपुरन्दराःक्षितिसुतेब्ध्यग्नितर्कादिशः॥
सौम्येब्ध्यब्धिगजाङ्कदिङ्मनुमिताजीवेद्विषड्भास्कराः
शक्राख्यास्तिथयःकलाश्चभृगुजेवेदेषुतर्कग्रहाः॥ ३८॥

व० ति०—दिग्भास्करामनुमिताश्चशनौशशिद्विनागादिशोभवदिवा-
करसंमिताश्च॥ दुष्टक्षणःकुलिककण्टककालवेलाःस्युश्चा-
र्द्धयामयमघण्टगताःकलांशाः॥ ३९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुगमतासे दोष जाननेके हेतु दुर्मुहूर्तादि कहते हैं कि रविवारको ६ । ७ । ८ । १० । १४ सोमवारको ४ । ६ । ८ । ९ । १२ । १३ । १४ मंगलको २ । ४ । ३ । ६ । १० बुधको २ । ४ । ८ । ९ । १० । १४ बृहस्पतिवारको २ । ६ । १२ । १४ । १५ । १६ शुक्रवारको ४ । ५ । ६ । ९ । १० । १२ शनिवारको १ । २ । ८ । १० । ११ वें मुहूर्त निंद्य अर्थात् दुष्टक्षण कुलिक, कंटक कालवेला, अर्द्धयाम, यमघंट नामक यथावकाश होते हैं जैसे रविवारके दिन १४ वां मुहूर्त दुर्मुहूर्त्त एवं कुलिकभी ६ छठा कंटक ७ सातवां ८ आठवां अर्द्धयाम तथा आठवां कालवेलाभी और १० दशम यमघंट संज्ञक होते हैं ऐसेही सोमवारादिमेंभी उक्त संख्याओंमें उक्तनामक जानने मुहूर्त्त २ घडीका होता है परंतु दिनमान न्यूनाधिक होनेसे यहां षोडशांश दिनका लिया है जिस दिन जो दिनमान है उससे १६ से भाग लेकर जो मिले उतनेका एक मुहूर्त्त जानना ॥ ३८ ॥ ३९ ॥

अनु०—विपाशैरावतीतीरेशतद्रोश्चत्रिपुष्करे ॥
विवाहादिशुभेनेष्टंहोलिकाप्राग्दिनाष्टकम् ॥ ४० ॥

विपाशा (व्याशा) एवं ईरावती नदी (पंजाब देशमें है) के तीर तथा शतद्रु (शतलज) के तीर और त्रिपुष्कर देशमें होलाष्टक (फाल्गुन शुक्ल अष्टमीसे फागुनी " हुताशनी " पूर्णमासी पर्यंत) में विवाहादि शुभकार्य शुभ नहीं अन्यदेशोंमें इनका दोष नहीं ॥ ४० ॥

अनु०—मृत्युक्रकचदग्धादीनिन्दौशस्तेशुभाञ्जगुः ॥
केचिद्यामोत्तरंचान्येयात्रायामेवनिन्दितान् ॥ ४१ ॥

आनंदादियोगोंमें मृत्युयोग, क्रकच वारदग्ध (दग्धयोग) " सूर्येशप आग्नीत्यादि " और विषयोग, हुताशन योगादि पूर्वोक्त दुष्टयोग चंद्रमाके गोचर प्रकरणोक्त प्रकारसे शुभ होनेमें शुभ अर्थात् उक्त दुष्टफल छोडकर शुभ फल देनेवाले होते हैं. किसी आचार्यका मत ऐसाभी है कि उक्त दुष्ट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योगोंका एक प्रहरसे उपरांत दोष नहीं है और किसी किसीका मत है कि उक्त योग यात्राहीमें वर्जित है और कार्योंमें नहीं ॥ ४१ ॥

भु० प्र०—अयोगेसुयोगोपिचेत्स्यात्तदानीमयोगंनिहन्त्येषसिद्धिं
तनोति ॥ परेलग्नशुद्ध्याकुयोगादिनाशंदिनार्द्धोत्तरं
विष्टिपूर्वंचशस्तम् ॥ ४२ ॥

जिस दिन मृत्यु ककचादि कोई दुष्टयोग हो तथा सिद्धि (अमृतसिद्धि) योगभी हो तो दुष्टयोगके फलको नाश करके कार्यसिद्धि देता है अन्य आचार्योंका मत है कि (लग्नशुद्धि) लग्नसमीचीन बलवान् होनेमें मृत्युककचदग्धादियोंका नाश होता है और भद्रा व्यतीपात आदियोंका दोष मध्याह्नपर्यंत होता है मध्याह्नोत्तर नहीं है ऐसेभी भौमवार प्रत्यरि जन्मनक्षत्रकाभी है॥ ४२॥

शालि०—शुक्लेपूर्वार्द्धेष्टमीपञ्चदश्योर्भद्रैकादश्यांचतुर्थ्यांपरार्द्धे ॥
कृष्णेऽन्त्यार्द्धेस्यात्तृतीयादशम्योःपूर्वेभागेसप्तमीशम्भुतिथ्योः॥४३॥

शुक्लपक्षकी अष्टमी, पूर्णमासीके पूर्वार्ध एवं एकादशी, चतुर्थीके उत्तरार्धमें भद्रा होती है, कृष्णपक्षकी तृतीया दशमीके उत्तरार्धमें तथा सप्तमी, चतुर्दशी पूर्वभाग (पूर्वार्ध) में भद्रा होती है यह भद्रा विष्टिकरण है करण गिननेकी रीतिसे उक्त तिथियोंके उक्त दलोंमें यह करण आता है. यह बडा दोष समस्त शुभकृत्योंमें वर्जित है ॥ ४३ ॥

शा०वि०—पञ्चद्व्यद्रिकृताष्टरामरसभूयामादिघट्यः शरा
विष्टेराद्यमसद्वजेन्दुरसरामाद्याश्विबाणाब्धिषु ॥
याम्येष्वन्त्यघटीत्रयंशुभकरंपुच्छंतथावासरे
विष्टिस्तिथ्यपरार्द्धजाशुभकरी रात्रौतुपूर्वार्द्धजा ॥ ४४ ॥

भद्राके मुख पुच्छविभाग कहते हैं कि चतुर्थ्यादि तिथियोंके पंचमादि प्रहरोंके आदिके पांच ५ घटी भद्राका मुख होता है. जैसे चतुर्थीके पंचम प्रहरके आदिकी ५ घटी, अष्टमीके दूसरे प्रहरकी ५ घटी, एकादशीके सातवें प्रहरकी, पूर्णमासीके चौथे, तृतीयाके आठवें, सप्तमीके तीसरे, चतुर्दशीके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहले प्रहरकी पांच घटी भद्राका मुख होता है, यह अति दोषद है और चतुर्थीके आठवें, अष्टमीके प्रथम, एकादशीके छठे, पूर्णिमाके तीसरे, तृतीयाके सातवें, सप्तमीके दूसरे, दशमीके पांचवें, चतुर्दशीके चौथे प्रहरके अंतिम (पिछली) तीन ३ घटी पुच्छसंज्ञक होती हैं. यह पुच्छ भद्राका दुष्ट नहीं होता अर्थात् शुभकार्यमें ग्राह्य है यहां प्रहरगणना तिथिके आरंभसे है तिथिका सर्व भोग्यके आठ भाग ८ प्रहर मानने चाहिये । भद्राके अंगविभाग ग्रंथांतरोंमें ऐसे हैं मुखमें ५ गलेमें १ हृदयमें ११ नाभिमें ४ कटिमें ६ पुच्छमें ३ घटी है इनमेंसे पुच्छकी ३ घटी शुभ हैं. श्रीपतिआचार्य कहते हैं कि, एक समय दैत्योंने देवताओंको जीतलिया तब महादेवजीने क्रोधसे भालनेत्र खोला खोलतेही क्रोधाग्निका एक कण निकला वह खरमुखी, तीन पैरकी, लांगूल लिये, सात हाथवाली, सिंहसमान गला, कृशोदरी, प्रेतवाहिनी मूर्ति उत्पन्न होकर दैत्योंका संहार करती भई तब देवताओंने स्तुति करके इसका नाम भद्रा रक्खा और बवादिकरणोंमें स्थान एवं भाग दिया आवश्यक कृत्यमें भद्राका परिहार कहते हैं कि तिथिउत्तरार्द्धकी भद्रा दिनमें तथा तिथिपूर्वार्द्धकी रात्रिमें शुभ होती है और आचार्यांतरमत ऐसाभी है कि भद्रा, मंगलवार, व्यतीपात, वैधृति, मृत्युयोग मध्याह्नसे ऊपर दोष नहीं देते ॥ ४४ ॥

अनु०-कुम्भकर्कद्वयेमर्त्येस्वर्गेऽन्जेजात्रयेऽलिगे ॥
स्त्रीधनुर्जूकनक्रेधोभद्रातत्रैवतत्फलम् ॥ ४५ ॥

भद्रावास कहते हैं कि कुंभ, मीन, कर्क, सिंहके चंद्रमामें भद्रा हो तो मृत्युलोकमें तथा मेष, वृष, मिथुन, वृश्चिकमें स्वर्गलोकमें और कन्या, धन, तुला, मकरमें पाताललोकमें भद्राका निवास है, जिस दिन जिस लोकमें भद्रा रहती है वहीं अपना फल देती है अन्य २ लोकोंमें नहीं यहभी परिहारही है ॥ ४५ ॥

ज्ञा०वि०-वाप्यारामतडागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठेव्रता-
रम्भोत्सर्गवधूप्रवेशनमहादानानिसोमाष्टके ॥
गोदानाग्रयणप्रपाप्रथमकोपाकर्मवेदव्रतंनीलो-
द्वाहमथातिपन्नशिशुसंस्कारान्सुरस्थापनम् ॥ ४६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीक्षामौञ्जिविवाहमुण्डनमपूर्वदेवतीर्थेक्षणं
संन्यासाग्निपरिग्रहौनृपतिसंदर्शाभिषेकौगमम् ॥
चातुर्मास्यसमावृतीश्रवणयोर्वैधंपरीक्षांत्यजे-
द्वृद्धत्वास्तशिशुत्वइज्यसितयोर्न्यूनाधिमासेतथा ॥ ४७ ॥

कालशुद्धि कहते हैं कि नवीन बावडी बनाना, बगीचा, तालाब, कूवा, गृह इनका आरंभ गृहप्रतिष्ठा (गृहप्रवेश), व्रतोंका आरंभ, व्रतोंका उद्यापन, तुलादि सोलह महादान, सोमयाग, अष्टकाश्राद्ध, गोदान (केशांतकर्म), इष्टि-संचयन, जलशाला (पाउ), प्रथम उपाकर्म (श्रावणी), वेदव्रत, उपनिषद्व्रत, महानाम्न्यव्रत, काम्यवृषोत्सर्ग "न कि ग्यारहवें दिनवाला" तथा बालकोंके जातकर्मादि संस्कार किंतु जिनका मुख्य काल व्यतीत हो गयाहो, दीक्षा (मंत्रग्रहण), चूडाकर्म, अपूर्व देवता एवं तीर्थका दर्शन, अग्निहोत्र, चातुर्मास्ययज्ञ, समावर्त्तन, कर्णवेध, तप्तमाषादि परीक्षा (जो दिव्यमें न्यायविषय होती है), नववधूप्रवेश, देवताकी प्रतिष्ठा, व्रतबंध, विवाह, संन्यासग्रहण, प्रथम राजदर्शन, राज्याभिषेक, यात्रा इतने कृत्य बृहस्पति शुक्रके अस्तमें, बालत्वमें, वृद्धत्वमें और अधिमास (मलमास), क्षयमासमें न करने इसमें ग्रंथांतरीय निर्णय हैं कि "सीमंतजातकादीनि प्राशनांतानि यानि वै । न दोषो मलमासस्य मौढ्यत्वं गुरुशुक्रयोः ॥ १ ॥ तथा—अतीतकालान्यखिलानि तानि कार्याणि सौम्यायनगे दिनेशे । सिते गुरौ चापि हि दृश्यमाने तदुक्तपञ्चाङ्गदिनेप्यखण्डे ॥ २ ॥" अर्थात् सीमंत, जातकर्मसे लेकर अन्नप्राशनपर्यंत जितने शिशुसंस्कार हैं नियत कालपर होनेसे इनके लिये मलमास, क्षयमास, गुर्वस्त, शुक्रास्तका दोष नहीं । जब उक्त कृत्योंका मुख्यकाल (जैसे नामकर्म ११।१२ दिनमें, अन्नप्राशन छठे महीनेमें नियत है) किसी कारण बीत जाय तो वह कृत्य उत्तरायणमें बृहस्पति शुक्रके उदयमें और उस कृत्यके उक्त पंचांग अखंड (समस्त शुद्ध) में करना ॥ ४६ ॥ ४७ ॥

शालिनी—अस्तेवर्ज्यौसिंहनक्रस्थजीवेवर्ज्यंकेचिद्वक्रगेचातिचारे ॥
गुर्वादित्येविश्वघस्रेपिपक्षेप्रोचुस्तद्वद्दन्तरत्नादिभूषाम् ४८

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो जो कार्य बृहस्पतिके अस्तमें वर्जित कहे हैं वेही कार्य सिंह तथा मकरक बृहस्पतिमेंभी वर्जित हैं परंतु आचार्यांतरमतसे गया, गोदावरी यात्रामें दोष नहीं किसी आचार्योंका मत है कि, बृहस्पतिके वक्र एवं अतिचारमेंभी उक्त कृत्य वर्जित हैं परंतु २८ दिन पर्यंत और ऐसाभी है कि गोचरसे ५।९।७।२।११ राशिमें बृहस्पति जिसका हो उसको वक्रातिचारमेंभी उक्त कृत्योंका दोष नहीं यहभी मतान्तर है तथा गुर्वादित्य (गुरु सूर्यके एक राशिगत होने) मेंभी उक्त कृत्य वर्जित हैं मतान्तरसे गुर्वादित्य (बृहस्पतिके राशिके सूर्य, सूर्यके राशिमें बृहस्पति होने) में कहा है परंतु मुख्य पक्ष पूर्वोक्तही है तथा विश्वघ्न पक्ष (जिस पक्षमें दो २ तिथियोंका अवम होकर तेरह १३ दिनका पक्ष हो) इसमेंभी उक्त कृत्य वर्जित हैं और हस्तिदन्तादि तथा रत्नादिसंबंधी भूषणधारणभी उक्त दोष (सिंहे गुरु आदि) में न करना॥४८॥

इं०व०—सिंहेगुरौसिंहलवेविवाहोनेष्टोथगोदोत्तरतश्चयावत् ॥
भागीरथीयाम्यतटंहिदोषोनान्यत्रदेशेतपनेपिमेषे ॥ ४९ ॥

सिंहस्थ गुरुके परिहार तीन प्रकारसे कहते हैं कि विवाह तथा मतांतरसे व्रतबंधमें मात्र सिंहस्थ गुरुका दोष है अन्यकार्योंमें नहीं है वहभी सिंहराशिके सिंहांशक १३ । २० अंशसे १६ । ४० अंशके समस्त सिंहराशिके गुरुमें नहीं गोदावरीके उत्तर, भागीरथीके दक्षिण अर्थात् गंगा गोदावरी नदियोंके बीच जो देश हैं उनमें उक्त दोष है अन्य देशोंमें नहीं और मेषके सूर्य (सारमानके वैशाख) मेंभी उक्त दोष सर्वत्र नहीं है ॥ ४९ ॥

अनु०—मघादिपञ्चपादेषु गुरुः सर्वत्र निन्दितः ॥
गङ्गागोदान्तरं हित्वा शेषांघ्रिषु न दोषकृत् ॥ ५० ॥
मेषेकेसद्व्रतोद्वाहौ गङ्गागोदान्तरेपि च ॥
सर्वसिंहगुरुर्वर्ज्यः कलिङ्गे गौडगुर्जरे ॥ ५१ ॥

पूर्वोक्त मतको पुष्ट करते हैं कि मघा आदि पांच चरण मघाके चार ४

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वाफाल्गुनीके १ प्रथम पर्यंत बृहस्पति जबतक रहे तबतक सभी देशोंमें निंद्य है अन्यचरणों (पूर्वाके तीन उ० फा० के प्रथम) में गोदावरीके मध्यवर्तिदेशोंमें मात्र वर्जित है अन्यदेशोंमें नहीं ॥ ५०॥ और सिंहके बृहस्पतिमें सूर्य मेषका हो तो गंगा गोदावरीके मध्यदेशोंमेंभी विवाह व्रतबंध शुभ होते हैं समस्त सिंहका गुरु कलिंग, गौड, गुर्जरदेशोंमें वर्ज्य है अन्यको नहीं॥५१॥

शालि०—रेवापूर्वेगण्डकीपश्चिमेचशोणस्योदग्दक्षिणेनीचइज्यः ॥
वर्ज्योनायंकौंकणेमागधेचगौडेसिन्धौवर्जनीयः शुभेषु ॥ ५२ ॥

नीच (मकरके) बृहस्पतिका दोषपरिहार दो प्रकारसे कहते हैं कि रेवा (नर्मदा दक्षिण अमरकंटकसे जबलपूर विंध्यके पार्श्व २ होसंगाबाद ॐकारनाथ मंडलेश्वर महेसार होकर भडोचके समीप खम्भातकी खाडीमें द्वारकाके समीप पश्चिम समुद्रमें मिली) के पूर्वभागके देशोंमें तथा गंडकी (नेपाल जिलाके पश्चिम भाग हिमालय मुक्तिनाथसे पटना हरिहर क्षेत्रपर गंगामें मिली इससे लेकर मानपर्वत वा सारस्वत देश अर्थात् द्वारकाके उत्तर पश्चिम समुद्रपर्यंत) के पश्चिमके देशोंमें तथा शोणनद (अमरकंटकसे विन्ध्याचल होकर जिला आरा और मनेरके बीच गंगामें मिला) के दक्षिण उडेला, सिरगुजा, लुहारदगा रुहता सगड विहार आदि एवं उत्तरमें बघेलखंड, इलाहाबाद (प्रयागराज), अवध, रुहेलखंड, दिल्ली (इंद्रप्रस्थ), आग्रा, मथुरा, नदीनाथ, ज्वालामुखी आदि उत्तर हिमालयपर्यंत इन देशोंमें मकरगुरुका दोष नहीं तथा कोंकण (मुंबईसे १४० मील दक्षिण समुद्रके तीर) गौड देश (गौडबंगाला) मालदह, पुरनिया (लक्ष्मणावती), जन्नताबाद, मगधदेश (जिला गया) पटना (सिंधुदेश) अटक और झेलमके बीच जिसको सिंधुसागर कहते हैं इन देशोंमें शुभकार्य वर्जित हैं इन दोनोंहू पक्षसे अतिरिक्त देशोंको ग्रंथांतरीयमतसे ६० दिन वर्जित हैं तथा मकरमें मकरांशकमात्र वर्जित है समस्त मकर गुरु तथा सभी देशोंके लिये नहीं ॥५२॥ इस विषयमें संवत् १९४६ इसवी सन् १८९० में किसी २ मत्सरियोंके उत्तेजनपर मैंने समाचारपत्रोंमें इस विषयकी समा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोचना की थी जिसपर काशीवासी६४विद्वान् शास्त्रियोंके ओरसे एक निर्णयसंबंधी विजयपत्र मिला जिसमें उपरोक्त अर्थ अनेक प्रमाणोंसे प्रतिपादित हैं।

वंश०वि०—गोजान्त्यकुम्भेतरभेतिचारगो नो पूर्वराशिं गुरुरेतिवक्रितः ॥ तदाविलुप्ताब्दइहातिनिन्दितः शुभेषुरेवासुरनिम्नगान्तरे ॥ ५३ ॥

वृष, मेष, मीन, कुंभराशियोंके विना अन्यराशियोंमें बृहस्पति अतिचारसे (दश ग्यारह महीने) दूसरी राशिपर जाकर कुछ दिनोंमें वक्र होकर पुनः पूर्वराशिमें न आवे तो वह संवत्सर लुप्त कहाता है, यह शुभकृत्योंमें अतिनिंदित है यदि १ । २ । ११ । १२ राशियोंमें अतिचार करे तो लुप्त संवत्सरका दोष नहीं होता देशभेदसे परिहार है कि रेवा (नर्मदा) और गंगा (भागीरथी) के बीचके देशोंमें लुप्त संवत्सरका दोष है अन्यत्र नहीं आचार्यांतरमतसे बृहस्पति शुक्रके सम सप्तम (एकसे दूसरी सातवीं राशि) में होनेपरभी उक्त देशोंमें अस्तके तुल्य दोष है ॥ ५३ ॥

उपजा०—पादोनरेखापरपूर्वयोजनैःपलैर्युतोनास्तिथयोदिनार्द्धतः ॥ ऊनाधिकास्तद्विवरोद्भवैःपलैरूर्ध्वंतथाधोदिनपप्रवेशनम् ॥ ५४ ॥

लंकासे सुमेरुपर्यंत एक समसूत्र बांधकर उसके नीचे जो जो देश आवे वह मध्यरेखा है जहांसे वह रेखागतकोही देश समीप हो वह जितने योजन(चारकोशका एक) होवे देशांतर योजन कहाते हैं उन योजनोंमें चतुर्थांश घटायके पंद्रह १५ में पर (न्यूनाधिक) योजन हो तो जोडना पूर्व हो तो घटाना जिस दिन वारप्रवेश देखना है उस दिनके दिनार्द्धमें (न्यूनाधिक)पंद्रहमें न्यून वा अधिक किया गया जो देशांतर है वह १५से अधिक हो तो उसमें १५ घटाना यदि १५ से न्यून हो तो पंद्रहमें उसे घटायदेना यह प्रवृत्ति होती है उसमेंभी स्मरण चाहिये कि दिनार्द्ध संस्कार विशिष्ट अंकसे यदि १५ न्यून हो तो सूर्योदयसे पीछे उक्त पलाओंमें, यदि १५ से न्यून वह गणितागत अंक हो तो सूर्योदयसे प्रथमही वारप्रवेश जानना. उदाहरण काशीपुरी प्राक्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्यरेखा कुरुक्षेत्रसे ६३ योजन है. चौथाई घटाया ४७। १५ प्राक् योजन होनेसे १५ में पला ४७ घटाई तो १४। १३ हुए दिनार्द्ध १७।२ से न्यून होनेसे १४। १३ घटाया २। ४१ शेष रहा, दिनार्द्धसे न्यून गणितांग अंक होनेसे सूर्योदयसे पीछे २। ४७ में वारप्रवेश होगा ॥ ५४ ॥

अनु०—वारादेर्घटिकाद्विघ्नाःस्वाक्षत्रच्छेषवर्जिताः ॥
सैकातष्टानगैः कालहोरेशादिनपात्क्रमात् ॥ ५५ ॥

वारप्रवृत्तिकी इष्टघटी द्विगुण करके २ जगे स्थापन करना एक जगे ५ से भाग लेकर लाभ छोडके शेष द्वितीयस्थानस्थितिमें घटाय देना शेष जो रहे उसमें १ जोडना सातसे अधिक हो तो ७ से भाग लेकर शेष काल होरेश दिनके वारसे गिनकर जानना ऐसेही एक दिनमें सभी ग्रहोंकी होरा जाननी एक होरासे दूसरी होरा उससे छठे ग्रहकी होती है जैसे रविवार प्रवेश इष्टघटी ६ में हुआ द्विगुण १२ दो जगे स्थापन किया एकजगे ५ से भाग लेकर २ पाया दूसरे स्थानके १२ में घटाया १० रहा इसमें ७ से भाग लेकर ३ शेष रहा एक और जोड दिया ४ रविवारके दिनकी होरा देखनी है इस लिये रविसे चौथे बुधकी होरा हुई यहां वारप्रवृत्ति केवल कालहोराके निमित्त है और कार्योंमें वार सूर्योदयहीसे माना जाता है यह वसिष्ठसिद्धांतमें लिखा है ॥ ५५ ॥

शालि०—वारेप्रोक्तंकालहोरासुतस्यधिष्ण्येप्रोक्तंस्वामितिथ्यंशकेऽस्य ॥ कुर्यादिकशूलादिचिन्त्यं क्षणेषु नेवाल्पघ्यः पारिघश्चापिदण्डः ॥ ५६ ॥

कालहोराका प्रयोजन है कि जो कार्य जिस वारमें करना कहा है वह उसके कालहोरामें हरएक वारमें करलेना जैसे रविवारके दिनप्रवेशका निषेध है परंतु चंद्र बुध गुरु शुक्रके होरामें रविवारके दिनभी आवश्यकमें प्रवेश कर लेना ऐसेही जिस नक्षत्रमें जो कार्य नहीं करना कहा है उसमें यदि आवश्यक हो तो उस नक्षत्रमें जिस मुहूर्तमें पूर्वोक्त नक्षत्रके स्वामीकी कालहोरा हो उसमें वह कृत्य कर लेना मुहूर्तके स्वामी विवाहप्रकरणमें कहा है उक्त[illegible]य मुहूर्त-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोचना की थी जिसपर काशीवासी६४ विद्वान् शास्त्रियोंके ओरसे एक निर्णयसंबंधी विजयपत्र मिला जिसमें उपरोक्त अर्थ अनेक प्रमाणोंसे प्रतिपादित हैं।

वंश०वि०—गोजान्त्यकुम्भेतरभेतिचारगो नो पूर्वराशिं गुरुरेतिवक्रितः ॥ तदाविलुप्ताब्दइहातिनिन्दितः शुभेषुरेवासुरनिम्नगान्तरे ॥ ५३ ॥

वृष, मेष, मीन, कुंभराशियोंके विना अन्यराशियोंमें बृहस्पति अतिचारसे (दश ग्यारह महीने) दूसरी राशिपर जाकर कुछ दिनोंमें वक्र होकर पुनः पूर्वराशिमें न आवे तो वह संवत्सर लुप्त कहाता है, यह शुभकृत्योंमें अतिनिंदित है यदि १ । २ । ११ । १२ राशियोंमें अतिचार करे तो लुप्त संवत्सरका दोष नहीं होता देशभेदसे परिहार है कि रेवा (नर्मदा) और गंगा (भागीरथी) के बीचके देशोंमें लुप्त संवत्सरका दोष है अन्यत्र नहीं आचार्यांतरमतसे बृहस्पति शुक्रके सम सप्तम (एकसे दूसरी सातवीं राशि) में होनेपरभी उक्त देशोंमें अस्तके तुल्य दोष है ॥ ५३ ॥

उपजा०—पादोनरेखापरपूर्वयोजनैःपलैर्युतोनास्तिथयोदिनार्द्धतः ॥ ऊनाधिकास्तद्विवरोद्भवैःपलैरूर्ध्वंतथाधोदिनपप्रवेशनम् ॥ ५४ ॥

लंकासे सुमेरुपर्यंत एक समसूत्र बांधकर उसके नीचे जो जो देश आवे वह मध्यरेखा है जहांसे वह रेखागतकोही देश समीप हो वह जितने योजन(चारकोशका एक) होवे देशांतर योजन कहाते हैं उन योजनोंमें चतुर्थांश घटायके पंद्रह १५ में पर (न्यूनाधिक) योजन हो तो जोडना पूर्व हो तो घटाना जिस दिन वारप्रवेश देखना है उस दिनके दिनार्द्धमें (न्यूनाधिक)पंद्रहमें न्यून वा अधिक किया गया जो देशांतर है वह १५से अधिक हो तो उसमें १५ घटाना यदि १५ से न्यून हो तो पंद्रहमें उसे घटायदेना यह प्रवृत्ति होती है उसमेंभी स्मरण चाहिये कि दिनार्द्ध संस्कार विशिष्ट अंकसे यदि १५ न्यून हो तो सूर्योदयसे पीछे उक्त पलाओंमें, यदि १५ से न्यून वह गणितागत अंक हो तो सूर्योदयसे प्रथमही वारप्रवेश जानना. उदाहरण काशीपुरी प्राक्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्यरेखा कुरुक्षेत्रसे ६३ योजन है. चौथाई घटाया ४७। १५ प्राक् योजन होनेसे १५ में पला ४७ घटाई तो १४। १३ हुए दिनार्द्ध १७।२ से न्यून होनेसे १४। १३ घटाया २। ४१ शेष रहा, दिनार्द्धसे न्यून गणितांग अंक होनेसे सूर्योदयसे पीछे २। ४७ में वारप्रवेश होगा ॥ ५४ ॥

अनु०—वारादेर्घटिकाद्विघ्नाःस्वाक्षत्रच्छेषवर्जिताः ॥
सैकातष्टानगैः कालहोरेशादिनपात्क्रमात् ॥ ५५ ॥

वारप्रवृत्तिकी इष्टघटी द्विगुण करके २ जगे स्थापन करना एक जगे ५ से भाग लेकर लाभ छोडके शेष द्वितीयस्थानस्थितिमें घटाय देना शेष जो रहे उसमें १ जोडना सातसे अधिक हो तो ७ से भाग लेकर शेष काल होरेश दिनके वारसे गिनकर जानना ऐसेही एक दिनमें सभी ग्रहोंकी होरा जाननी एक होरासे दूसरी होरा उससे छठे ग्रहकी होती है जैसे रविवार प्रवेश इष्टघटी ६ में हुआ द्विगुण १२ दो जगे स्थापन किया एकजगे ५ से भाग लेकर २ पाया दूसरे स्थानके १२ में घटाया १० रहा इसमें ७ से भाग लेकर ३ शेष रहा एक और जोड दिया ४ रविवारके दिनकी होरा देखनी है इस लिये रविसे चौथे बुधकी होरा हुई यहां वारप्रवृत्ति केवल कालहोराके निमित्त है और कार्योंमें वार सूर्योदयहीसे माना जाता है यह वसिष्ठसिद्धांतमें लिखा है ॥ ५५ ॥

शालि०—वारेप्रोक्तंकालहोरासुतस्याधिष्ण्येप्रोक्तंस्वामितिथ्यंशकेऽस्य ॥ कुर्याद्दिक्शूलादिचिन्त्यं क्षणेषु नेवाल्घ्यः पारिघश्चापिदण्डः ॥ ५६ ॥

कालहोराका प्रयोजन है कि जो कार्य जिस वारमें करना कहा है वह उसके कालहोरामें हरएक वारमें करलेना जैसे रविवारके दिनप्रवेशका निषेध है परंतु चंद्र बुध गुरु शुक्रके होरामें रविवारके दिनभी आवश्यकमें प्रवेश कर लेना ऐसेही जिस नक्षत्रमें जो कार्य नहीं करना कहा है उसमें यदि आवश्यक हो तो उस नक्षत्रमें जिस मुहूर्तमें पूर्वोक्त नक्षत्रके स्वामीकी कालहोरा हो उसमें वह कृत्य कर लेना मुहूर्तके स्वामी विवाहप्रकरणमें कहा है उक्तविषय मुहूर्त-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में इतना अवश्य स्मरण चाहिये कि दिक्शूल तथा पारिघदंडादि विचार लेने इनका विचार यात्राप्रकरणमें है ॥ ५६ ॥

शा० वि०—मन्वाद्यास्त्रितिथीमधौतिथिरवीऊर्जेशुचौदिक्तिथि-
ज्येष्ठेन्त्येचतिथिस्त्विषेनवतपस्यश्वाःसहस्येशिवाः ॥
भाद्रेग्निश्चसितत्वमाष्टनभसःकृष्णेयुगाद्याःसिते
गोग्नीबाहुलराधयोर्मदनदर्शौभाद्रमाघासिते ॥ ५७ ॥
इति मुहूर्तचिन्तामणौ प्रथमं शुभाशुभप्रकरणम् ॥ १ ॥

चैत्र शुक्लपक्षकी ३ । १५ कार्तिक शुक्लकी १५ । १२ आषाढशुक्लकी १० । १५ ज्येष्ठ तथा फाल्गुनकी १५ अश्विन शुक्लकी ९ माघशुक्लकी ७ पौष शुक्लकी ११ भाद्रपदशुक्लकी ३ श्रावणकृष्णकी ३० (अमा) ८ (अष्टमी) ये मन्वादि हैं और कार्तिकशुक्लकी ९ वैशाखशुक्लकी ३ भाद्रपदकृष्णकी १३ माघकी ३० (अमा) ये युगादि हैं इतने तिथि पुण्यपर्व हैं इनमें व्रतबंध विद्यारंभ व्रतोद्यापनमें अनध्याय मानते हैं तथा नित्य पढनेमें भी अनध्याय है और प्रकार तत्कालीन अनध्याय संध्या गर्जन होनेमें निर्घातशब्द, भूकंप, उल्कापतनमें तत्कालमात्र तथा और आरण्यक समाप्तकरके एक दिनरात, तथा पूर्णमासी, चतुर्दशी, अष्टमी, राहुसूतक, ऋतुसंधिमें, श्राद्धभोजन करके, श्राद्धमें दान लेके, पशु (मेंडक नेवला कुत्ता सर्प बिल्ली चूआ) आदिके गुरु शिष्योंके बीचमें आजानेमें एक दिनरात, वज्र पडनेमें इंद्रधनुषमें, गधा ऊंट गीध उल्लू कौवाओंके अति दुःखित बडा शब्द करनेमें, प्रेत शूद्र चांडाल, श्मशान पतितके समीप जानेमें भोजनोत्तर गीले हाथ पर्यंत, अर्द्धरात्रिमें अति प्रचंड वायु चलनेमें रजवर्षणमें दिग्दाह, संध्यामें, नीहारमें, भयस्थानमें, दौडनेमें, दुर्गंधमें, श्रेष्ठजनके अपने घर आनेमें, गधा ऊंट हाथी घोडेके सवारीमें, वृक्षारोहणमें तात्कालिक अनध्याय होते हैं औरभी अनध्याय होते हैं औरभी अनध्याय धर्मशास्त्रोक्त सूतकादिभी हैं ॥ ५७ ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्तचिन्तामणिभाषायां प्रथमं शुभाशुभप्रकरणं समाप्तम् ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ नक्षत्रप्रकरणम्।

ज्ञा० वि०—नासत्यान्तकवह्निधातृशशभृद्रुद्रादितीज्योरगा
ऋक्षेशाः पितरोभगोर्यमरवीत्वष्टासमीरःक्रमात्॥
शक्राग्नीखलुमित्रइन्द्रनिर्ऋति क्षीराणिविश्वेविधि-
र्गोविन्दोवसुतोयपाजचरणाहिर्बुध्न्यपूषाभिधाः॥ १॥

नक्षत्रोंके स्वामी कहते हैं. अश्विनीके अश्विनीकुमार। भरणीका यम। ऐसेही कृत्तिकाका अग्नि। रोहिणीका ब्रह्मा। मृगशिरका चंद्रमा। आर्द्राका शिव। पूनर्वसुका अदिति। पुष्यका बृहस्पति। आश्लेषाका सर्प। मघाका पितर। पूर्वाफाल्गुनीका भग। उत्तराफाल्गुनीका अर्यमा। हस्तका सूर्य। चित्राका विश्वकर्मा। स्वातिका वायु। विशाखाके इंद्र एवं अग्नि। अनुराधाका मित्र (सूर्य)। ज्येष्ठाका इंद्र। मूलका निर्ऋति। पूर्वाषाढाका जल। उत्तराषाढाका विश्वेदेव। अभिजित्का विधि। श्रवणका विष्णु। धनिष्ठाका वसु। शतभिषाका वरुण। पूर्वाभाद्रपदाका अजचरण। उत्तराभाद्रपदाका अहिर्बुध्न्य। रेवतीका पूषा ये नक्षत्रोंके स्वामी हैं। स्वस्वामिनामसेभी ग्रंथोंमें प्रसिद्ध रहते हैं जैसे जहां कर नाम नक्षत्र संबंधमें हो हस्त जानना जो नक्षत्र जिस कार्यके योग्य है इसका विस्तार ग्रंथांतरोंसे कहते हैं। अश्विनीमें वस्त्र, उपनयन, क्षौर सीमंत, भूषण, स्थापना, हाथीका कृत्य, स्त्री, कृषि, विद्या आदि। भरणीमें बावडी, कुवा, तालाव आदि तथा विषशस्त्रादि उग्र एवं दारुण कर्म, रंध्रप्रवेश, गणित, धरोहर वारवेत्तमें वस्तु रखना। कृत्तिकामें अग्न्याधान, अस्त्र, शस्त्र, उग्रकर्म, मिलाप, विग्रह, दारुण कर्म, संग्राम, औषधि, वादिकर्म। रोहिणीमें सीमंत, विवाह, वस्त्र, भूषण, स्थिरकर्म, हाथी घोडेके कृत्य, अभिषेक, प्रतिष्ठा। मृगशिरमें प्रतिष्ठा, भूषण, विवाह, सीमंत, क्षौर, वास्तुकृत्य, हाथी घोडे ऊंटसंबंधी कृत्य, यात्रा। आर्द्रामें ध्वजा, तोरण, संग्राम, दीवाल, अस्त्रशस्त्रक्रिया, संधि, विग्रह, वैर, रसादिकृत्य। पुनर्वसुमें प्रतिष्ठा, सवारी, सीमंत, वस्त्र, वास्तु, उपनयन, धान्य, भक्षण, क्षौर। पुष्यमें वि-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाह विना समस्त शुभकृत्य । आश्लेषामें झूंठ, व्यसन, द्यूत, धातुवाद, औषधि, संग्राम, विवाद, रसक्रिया, व्यापार । मघामें कृषि, व्यापार, गौ, अन्न, रणोपयोगी कृत्य, विवाह, नृत्य, गीत । तीनहू पूर्वामें कलह, विष, शस्त्र, अग्नि, दारुण, उग्र, संग्राम, मांसविक्रय । तीनहू उत्तराओंमें प्रतिष्ठा, विवाह, सीमंत अभिषेक, व्रतबंध, प्रवेश, स्थापना, वास्तुकर्म । हस्तमें प्रतिष्ठा, विवाह, सीमंत, सवारी, उपनयन, वस्त्र, क्षौर, वास्तु, अभिषेक, भूषण । चित्रामें क्षौर, प्रवेश, वस्त्र, सीमंत, प्रतिष्ठा, व्रतबंध, वास्तुविद्या, भूषण । स्वातिमें प्रतिष्ठा, उपनयन, विवाह, वस्त्र, सीमंत, भूषण, विवाद, हस्तिकृत्य, कृषि, क्षौर । विशाखामें वस्त्रभूषण, व्यापार, रसधान्यसंग्रह, नृत्य, गीत, शिल्प, लिखना आदि । अनुराधामें प्रवेश, स्थापना, विवाह, व्रतबंध, अष्टप्रकार मंगल, वस्त्र, भूषण, वास्तु, संधि, विग्रह । ज्येष्ठामें क्रूरकर्म, उग्रकर्म, शस्त्र, व्यापार, गौ भैंसका कृत्य, जलकर्म, नृत्य वादित्र, शिल्प, लोहेके काम, पत्थरके काम, लिखना । मूलमें विवाह, कृषि, वाणिज्य, उग्र, दारुण, संग्राम, औषधि, नृत्य, शिल्प, संधि, विग्रह, लेखन । श्रवणमें प्रतिष्ठा, क्षौर, सीमंत, यात्रा, उपनयन, औषधि, पुरग्राम गृहका आरंभ, पट्टाभिषेक । धनिष्ठामें शस्त्र, उपनयन, क्षौर-प्रतिष्ठा, सवारी, भूषण, वास्तु, सीमंत, प्रवेश, शस्त्र । शतभिषामें प्रवेश, स्थापन, क्षौर, मौंजी, औषधि, अश्वकर्म, सीमंत, वास्तुकर्म । रेवतीमें विवाह, व्रतबंध, अश्वकर्म, प्रतिष्ठा, सवारी, भूषण, प्रवेश, वस्त्र, सीमंत, क्षौर, औषधिके कृत्य करने ॥ १ ॥

अनु०-उत्तरात्रयरोहिण्योभास्करश्चध्रुवंस्थिरम् ॥ तत्रस्थिरं बीजगेहेशान्त्यारामादिसिद्धये ॥ २ ॥ स्वात्यादित्येश्रुतेस्त्रीणि चन्द्रश्चापिचरंचलम् ॥ तस्मिन्नगजादिकारोहोवाटिकागमनादिकम् ॥ ३ ॥ पूर्वात्रयंयाम्यमघेउग्रंक्रूरंकुजस्तथा ॥ तस्मिन् घाताग्निशाठ्यानिविषशस्त्रादिसिद्धयति ॥ ४ ॥ विशाखाग्नेयभेसौम्योमिश्रंसाधारणंस्मृतम् ॥ तत्राग्निकार्यंमिश्रंचवृषोत्स-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र्गादिसिद्ध्यति ॥ ५ ॥ हस्ताश्विपुष्याभिजितःक्षिप्रंलघुगुरुस्तथा ॥ तस्मिन्पण्यरतिज्ञानभूषाशिल्पकलादिकम् ॥ ६ ॥ मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षंमृदुमैत्रंभृगुस्तथा ॥ तत्रगीताम्बरक्रीडामित्रकार्यविभूषणम् ॥ ७ ॥ मूलेन्द्रार्द्राहिभंसौरिस्तीक्ष्णंदारुणसंज्ञकम् ॥ तत्राभिचारघातोग्रभेदाःपशुदमादिकम् ॥ ८ ॥

नक्षत्रोंके संज्ञा तथा कर्मभी कहते हैं कि तीनों उत्तरा रोहिणी रविवार ध्रुव एवं स्थिरसंज्ञक हैं इनमें स्थिरकर्म बीज बोना, गृहारंभ, शांतिकर्म, बगीचाका कार्य तथा मृदुनक्षत्रोक्त कार्यभी सिद्ध होते हैं ॥ २ ॥ स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और चंद्रवार चर एवं चलसंज्ञक हैं. इनमें हाथी घोडे आदि सवारी, बावडी, यात्रा आदि तथा लघुनक्षत्रोक्त कर्मभी सिद्ध होते हैं ॥३ ॥ तीनों पूर्वा, भरणी, मघा और भौमवार उग्र एवं क्रूरसंज्ञक हैं इनमें मारणकृत्य, अग्निकृत्य, विषसंबंधी कृत्य, शस्त्रकर्म, अन्य अरिष्टकृत्य और दारुण नक्षत्रोक्त कृत्यभी सिद्ध होते हैं ॥ ४ ॥ विशाखा, कृत्तिका और बुधवार मिश्र एवं साधारणसंज्ञक हैं इनमें अग्निहोत्रादि काम्यवृषोत्सर्गादि और उग्रनक्षत्रोक्त कर्मभी सिद्ध होते हैं ॥ ५ ॥ हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् और गुरुवार क्षिप्र एवं लघुसंज्ञक हैं इसमें दुकान, स्त्रीसंभोग, शास्त्रादिज्ञानारंभ, भूषण, शिल्पविद्या, नृत्यादि ६४ कला और चरनक्षत्रोक्त कृत्यभी सिद्ध होते हैं ॥६॥ मृगशिर, रेवती, चित्रा अनुराधा और शुक्रवार मृदु एवं मैत्रसंज्ञक हैं इनमें गीतकृत्य, वस्त्र, स्त्रीक्रीडा, मित्रसंबंधी कृत्य, भूषण और ध्रुवनक्षत्रोक्त कृत्यभी सिद्ध होते हैं ॥ ७ ॥ मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा और शनिवार, तीक्ष्ण एवं दारुणसंज्ञक हैं इनमें अभिचार (जादूगरी), भयानक कर्म (मारणादि) तथा विद्वेषण, हाथी घोडे आदि पशुओंका दमन (शिक्षा) वा बंधन यद्वा उन्हें नपुंसक बनाना और उग्रनक्षत्रोक्त कृत्यभी सिद्ध होते हैं ॥ ८ ॥

इं० व०—मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखंभवेदूर्ध्वास्यमार्द्रेज्यहरित्रयंध्रुवम् ॥ तिर्यङ्मुखंमैत्रकरानिलादितिज्येष्ठाश्विभानीदृशकृत्यमेषुसत् ॥९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूल, आश्लेषा, मिश्रनक्षत्र अधोमुखसंज्ञक हैं इनमें वापी, कूप, खात आदि कृत्य शुभ होते हैं. आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और ध्रुवनक्षत्र ऊर्ध्वमुख हैं इनमें राज्याभिषेक पट्टबंधन इमारत आदि कृत्य शुभ होते हैं. मृदु नक्षत्र हस्त, स्वाती, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्विनी तिर्यङ्मुख (समदृष्टि) संज्ञक हैं. इनमें चक्र रथ हल बीज पशुकृत्यादि सिद्ध होते हैं ॥ ९ ॥

व०ति०—पौष्णध्रुवाश्विकरपञ्चमवासवेज्यादित्येप्रवालरदशङ्खसुवर्णवस्त्रम् ॥ धार्यंविरिक्तशनिचन्द्रकुजेह्निरक्तं भौमेध्रुवादितियुगेसुभगानदध्यात् ॥ १० ॥

रेवती, ध्रुवनक्षत्र, अश्विनी, हस्तसे अनुराधापर्यंत और पुष्य पुनर्वसुमें मूंगा मोती हाथीदांतके एवं शंखके भूषण चूडी आदि सुवर्ण वस्त्र धारण करना परंतु जिस दिन रिक्तातिथि शनि चंद्र मंगलवार न हो तथा मंगलवारको लालरंग-वस्त्र सुवर्ण धारणका दोष नहीं और मंगलवार ध्रुवनक्षत्र पुनर्वसु तिष्यमें सौभाग्यवतीने उक्त वस्तु धारण न करना ॥ १० ॥

शा०वि०—वस्त्राणांनवभागकेषुचचतुष्कोणेऽमराराक्षसा मध्यत्र्यंशगतानरास्तुसदशेपार्श्वेचमध्यांशयोः ॥ दग्धेवास्फुटितेम्बरेनवतरेपङ्कादिलिप्तेनसद्रक्षोंशेनृसुरांशयोःशुभमसत्सर्वांशकेप्रान्ततः ॥ ११ ॥

नवीनवस्त्र, उपलक्षणसे शयन पादुका छत्र ध्वजादिभी यदि किसी स्थानमें अग्निसे दग्ध हों वा फटे वा कज्जल पंक आदिसे लिप्त हों तो उसके बराबर नव (९) भाग करने चारों कोणोंमें देवता बीचके ऊर्ध्वाधत्रिभागमें मनुष्य और पार्श्वके दो भागोंमें राक्षसोंके स्थान हैं इनमेंसें दग्धादिभाग राक्षसोंका हो तो दुष्टफल है उस वस्त्रादिको त्यागके सुवर्णादि दान करना यदि उक्तभाग मनुष्य वा देवताओंका हो तो शुभ होता है. मतांतर है कि दग्धादिपर यदि श्रीवत्स सर्वतोभद्रादि शुभचिह्न हो तो राक्षसभागमेंभी शुभ होता है यदि सर्पादि दुष्टचिह्न शुभभागमें हो तोभी अशुभही होता है ॥ ११ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनु०—विप्राज्ञयातथोद्वाहेराज्ञाप्रीत्यार्पितंचयत् ॥
निन्द्येर्पिधिष्ण्येवारादौवस्त्रंधार्यंजगुर्बुधाः ॥ १२ ॥

ब्राह्मणकी आज्ञासे विवाहमें और राजा जब प्रसन्नतापूर्वक वस्त्रादि देवे तो विना उक्त मुहूर्त्त यद्वा निंद्य नक्षत्रवारादिमेंभी धारण करलेना ॥ १२ ॥

शा० वि०—राधामूलमृदुध्रुवर्क्षवरुणक्षिप्रैर्लतापादपा-
रोपोथोनृपदर्शनंध्रुवमृदुक्षिप्रश्रवोवासवैः ॥
तीक्ष्णोग्राम्बुपभेषुमद्यमुदितंक्षिप्रान्त्यवह्नीन्द्रभा-
दित्येन्द्राम्बुपवासवेषुहिगवांश्चस्तः क्रयोविक्रयः १३

अनुराधा, मूल, ध्रुव, मृदु, क्षिप्र, नक्षत्र शतभिषा और शुभवार तिथियोंमें लता वृक्ष, अन्नादिरोपण बीज वापन करना तथा ध्रुव मृदु क्षिप्र नक्षत्र एवं श्रवण धनिष्ठामें प्रथम राजदर्शन करना तथा तीक्ष्ण, उग्र नक्षत्र और शतभिषामें मद्यका आरंभ करना क्षिप्र नक्षत्र, रेवती, कृत्तिका, ज्येष्ठा, मृगशिर, पुनर्वसु, शतभिषा, धनिष्ठामें गौ आदि पशुओंका क्रय विक्रय (लेना देना आदि व्यवहार) करना ॥ १३ ॥

इं० व०—लग्नेशुभेचाष्टमशुद्धिसंयुतेरक्षापशूनांनिजयोनिभेचरे ॥
रिक्ताष्टमीदर्शकुजःश्रवोध्रुवत्वाष्ट्रेषुयानंस्थितिवेशनं न सत् ॥१४॥

शुभलग्न शुभग्रहोंके राशिलग्न जिससे अष्टमस्थानभी शुद्ध ग्रहरहित हो तथा पशुयोनिनक्षत्रोंमें एवं चरनक्षत्रोंमें पशुओंका रक्षासंबंधी कार्य करने और रिक्ता ४।९।१४ अष्टमी अमा तिथि मंगलवार श्रवण चित्रा ध्रुवनक्षत्रोंमें पशुओंकी स्थिति एवं प्रवेश न करना ॥ १४ ॥

मं० क्रां०—भैषज्यंसल्लघुमृदुचरेमूलभेद्यङ्गलग्ने
शुक्रेन्द्वीज्येर्विदिचदिवसेचापितेषांरवेश्च ॥
शुद्धेरिःफद्युनमृतिग्रहेसत्तिथौ नोजनेर्भं
सूचीकर्माप्यदितिवसुभत्वाष्ट्रमित्राश्विपुष्ये ॥ १५ ॥

लघु मृदु चर, नक्षत्र तथा मूलमें द्विस्वभाव राशि ३।६।९।१२ के लग्न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिनसे १२ ।७।८ भाव, शुद्ध ग्रहरहित हों तथा शुक्र, चंद्र, बृहस्पति, बुध रविवारमें सत्तिथौ (रिक्ता अमारहित तिथियोंमें) औषधिसेवन करना परंतु जन्मनक्षत्र तिथि उस दिन हो तो न करना और पुनर्वसु, धनिष्ठा, चित्रा अनुराधा अश्विनीमें सूचीकर्म (सिलाई कसीदा आदि काम) करना ॥ १५ ॥

अनु०—क्रयक्षैर्विक्रयोनेष्टोविक्रयक्षैःक्रयोपि न ॥
पौष्णाम्बुपाश्विनीवातश्रवश्चित्राःक्रयेशुभाः ॥ १६ ॥

जिन नक्षत्रोंमें वस्तु मोल लेना कहा है उनमें बेचनेका आरंभ न करना जिनमें बेचनेका आरंभ कहा है उनमें खरीद न करना यह नियम साधारण व्यवहारके आरंभमात्रका है सर्वदा नहीं यदि सर्वदाको यह नियम माना जाय तो व्यापारही न होवे जैसे किसी किसी दिन खरीदनेका नक्षत्र देखकर कोई खरीदने आया परंतु बेचनेका नक्षत्र न होनेसे उस दिनकोही न बेचेगा तो क्रेता कहांसे उक्त मुहूर्तपर खरीद सकेगा ऐसेही बेचनेके मुहूर्तपर किसीने बेचना चाहा परंतु खरीददार उस मुहूर्तपर लेता नहीं तो किसको बेचना ? ऐसी शंकामें यह नियम प्रथमारंभमात्रको है जैसे कोठावाले आदि महाजन समयपर बहुत माल खरीदते हैं पुनः विक्रीके समयपर बेचते हैं ऐसेमें यह मुहूर्त है नित्यके व्यापारको नहीं. रेवती, शतभिषा, अश्विनी, स्वाती, श्रवण खरीदनेको शुभ हैं ॥ १६ ॥

शा०वि०—पूर्वाद्वीशकृशानुसार्पयमभैकेन्द्रद्विकोणेशुभैः
षट्त्र्यायेष्वशुभैर्विनाघटतनुंतद्विक्रयःसत्तिथौ ॥
रिक्ताभौमघटान्विनाचविपणिर्मैत्रध्रुवक्षिप्रभै-
र्लग्नेचन्द्रसितेव्ययाष्टरहितैः पापैःशुभैर्व्ययखे ॥ १७ ॥

तीनों पूर्वा, विशाखा, कृत्तिका, आश्लेषा, भरणी नक्षत्रमें तथा केन्द्र १ । ४ । ७ । १० द्वि २ कोण ९ । ५ लग्नसे शुभग्रह हों ३ । ६ । ११ भावोंमें पापग्रह हों कुंभलग्न न हो एवं शुभतिथियोंमें विक्रय बेचनेका आरंभ करना और दुकानके आरंभके लिये रिक्ता तिथि मंगलवार कुंभलग्न छोडके अनुराधा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्रुव, क्षिप्र नक्षत्रोंमें तथा लग्नमें चंद्रमा शुक्र हों पापग्रह आठवें बारहवें न हों शुभग्रह २। ११। १० भावोंमें हों ऐसे मुहूर्तमें पण्यारंभ करना लग्नका चंद्रमा सर्व कार्योंमें वर्जित है परंतु वैश्यों (दुकानदारों) के स्वामी होनेसे तथा शुक्रके साथ होनेसे लग्नका चंद्रमा गुणी कहा है ॥ १७ ॥

इं०व०—क्षिप्रान्त्यस्विन्दुमरुज्जलेशादित्येष्वरिक्तारदिनेप्रशस्तम् ॥
स्याद्वाजिकृत्यंत्वथहस्तिकार्यंकुर्यान्मृदुक्षिप्रचरेषुविद्वान् १८

क्षिप्र नक्षत्र, रेवती, मृगशिर, स्वाति, शतभिषा, पूनर्वसुमें रिक्कातिथि भौमवार छोडके घोडोंका क्रयविक्रय आदि कृत्य करना घोडेकी सवारीके लिये ग्रंथांतरोंमें चक्र है कि, घोडेका आकार बनाके सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्र पर्यंत कंधेमें ५ नक्षत्र लक्ष्मी, पीठमें १० नक्षत्र अर्थसिद्धि, पुच्छमें २ स्त्रीनाश, पैरोंमें ४ रणमें भंग, पेटमें ५ घोडानाश, मुखमें २ धनलाभ और विद्वान्ने मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर नक्षत्रोंमें ऐसेही हाथीका कृत्य करना तथा शुभलग्न अंशक तारामें और शनिवारमें एवं शनि लग्नमें हो तो हाथीको अंकुशारंभ करना ॥ १८ ॥

शा०वि०—स्याद्भूषाघटनंत्रिपुष्करचरक्षिप्रध्रुवेरत्नयुक्त-
त्तीक्ष्णोग्रविहीनभेरविकुजेमेषालिसिंहेतनौ ॥
तन्मुक्तासहितंचरध्रुवमृदुक्षिप्रेशुभेसत्तनौ
तीक्ष्णोग्राश्विमृगेद्विदैवदहनेशस्त्रंशुभंघट्टितम् ॥ १९ ॥

त्रिपुष्कर (जिन नक्षत्रोंके ३ चरण एक राशिपर एक एक राशिपर है) चर, क्षिप्र, ध्रुव नक्षत्रोंमें भूषण घडने जो भूषण रत्नसहित (जडाऊ) हो तो तीक्ष्ण, उग्र नक्षत्र, वर्जित नक्षत्र तथा रवि मंगलवार, मेष वृश्चिक सिंह लग्नमें करना यदि मोतियोंका भूषण हो तो चर, ध्रुव, मृदु, क्षिप्र नक्षत्र चंद्र शुक्रवार ४। २। ७ लग्नमें करना यही चांदीके भूषणोंकोभी जानना. तीक्ष्ण, उग्र नक्षत्र अश्विनी, मृगशिर, विशाखा, कृत्तिकामें शस्त्र घडना शुभ होता है ॥ १९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्रग्धरा-मुद्राणांपातनंसद्ध्रुवमृदुचरभक्षिप्रभैर्वींन्दुसौरे
वस्त्रेपूर्णाजयाख्येनचगुरुभृगुजास्तेविलग्नेशुभैः स्यात् ॥
वस्त्राणांक्षालनंसद्भसुहयदिनकृत् पञ्चकादित्यपुष्ये
नोरिक्तापर्वषष्ठीपितृदिनरविजज्ञेषुकार्यंकदापि ॥२०॥

ध्रुव, मृदु, चर, क्षिप्र नक्षत्रोंमें सोम शनिवाररहित पूर्णा, जया तिथियों ५ । १० । १५ । २ । ७ । १३ में शुभलग्नमें गुरु शुक्रास्तादि दोषरहित समयमें मुद्रापातन और धनिष्ठा, अश्विनी, हस्तसे पांच नक्षत्र पुनर्वसु, पुष्य नक्षत्रोंमें स्वयं वस्त्रक्षालन करना यद्वा रजक (धोबी) को देना हो तो उक्तनक्षत्रोंमें देना परंतु रिक्तातिथि, षष्ठी, पर्वदिन, अमावास्या और शनि बुधवारमें वस्त्रप्रक्षालन कदापि न करना ॥ २० ॥

स्रग्ध०-संधार्याः कुन्तवर्मंध्वसनशरकृपाणासिपुञ्योविरिक्ते
शुक्रेज्याकाह्नमैत्रध्रुवलघुसहितादित्यशाक्रद्विदैवे ॥
स्युर्लग्नेपि स्थिराख्येशशिनिचशुभदृष्टेशुभैः केन्द्रगैः स्याद्
भोगःशय्यासनादेर्ध्रुवमृदुलघुहर्यन्तकादित्यइष्टः ॥ २१ ॥

रिक्तातिथिरहित शुक्र, बृहस्पति, रविवार, मैत्र, ध्रुव, लघु नक्षत्र तथा पुनर्वसु, ज्येष्ठा, विशाखामें कुंत (भाला), त्राणसहित तलवार वा खुंखरी छुरी वर्म (कवच वक्कर) धारन करने तथा इस कृत्यमें स्थिरलग्न तथा चन्द्रमापर शुभग्रहोंकी दृष्टि और शुभग्रह केंद्रमें आवश्यक हैं ध्रुव, मृदु, लघु, श्रवण, भरणी, पुनर्वसु, नक्षत्रोंमें शय्या (चारपाई पलंग), पीठ, मृगचर्म पादुका आदि बैठने तथा सोनेके उपयोगी वस्तु काममें लेनी ॥ २१ ॥

शा०वि०-अन्धाक्षंवसुपुष्यधातृजलभद्वीशार्यमान्त्याभिधं
मन्दाक्षंरविविश्वमित्रजलपाश्लेषाश्विचान्द्रंभवेत् ॥
मध्याक्षंशिवपित्र्यजैकचरणत्वाष्ट्रेन्द्रविध्यन्तकंस्वक्षं
स्वात्यदितिश्रवोदहनभाहिर्बुध्न्यरक्षोभगम् ॥ २२ ॥

रोहिणी, पूर्वाषाढा, धनिष्ठा, पुष्य, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, रेवती,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंधाक्षसंज्ञक हैं. हस्त, उत्तराषाढा, अनुराधा, शतभिषा, आश्लेषा, अश्विनी, मृगशिर मंदाक्षसंज्ञक हैं. आर्द्रा, मघा, पूर्वाभाद्रपदा, चित्रा, ज्येष्ठा, अभिजित्, भरणी मध्याक्षसंज्ञक हैं. उत्तराभाद्रपदा, मूल, पूर्वफाल्गुनी, स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, कृत्तिका सुलोचनसंज्ञक हैं. इनकी गिननेकी सुगम रीति यहभी है कि रोहिणीसे ४। ४ नक्षत्र क्रमसे अंध, मंद, मध्य, सुलोचन होते हैं. जैसे रो० अंध, मृ० मंद, आ० मध्य, पु० सुलोचन, पुनः तिष्य अंध, आश्लेषा मंद इत्यादि ॥ २२ ॥

अनु०—विनष्टार्थस्यलाभोऽन्धेशीघ्रंमन्देप्रयत्नतः ॥
स्याद्दूरेश्रवणंमध्येश्रुत्यात्मीनसुलोचने ॥ २३ ॥

नक्षत्रोंकी उक्त संज्ञाओंका प्रयोजन यह है कि कुछ वस्तु अंधलोचन नक्षत्रमें खोई हो तो शीघ्र मिले. मंदलोचनमें यत्न करनेसे मिले. मध्यलोचनमें दूरतर पता मात्र लगे, वस्तु हाथ न आवे. सुलोचनमें मिलना तो कहां रहा किंतु पता सुनाईभी न देवे. जब वस्तु खोये जानेका दिन वा नक्षत्र ज्ञात न हो तो प्रश्नसमय वर्तमान नक्षत्रसे कहना ॥ २३ ॥

अनु०—तीक्ष्णमिश्रध्रुवोग्रैर्यद्द्रव्यंदत्तंनिवेशितम् ॥
प्रयुक्तं च विनष्टं च विष्टयां पातेचनाप्यते ॥ २४ ॥

तीक्ष्ण, मिश्र, ध्रुव, उग्र नक्षत्र तथा भद्रा व्यतीपातमें जो धनादि किसीको पुनः लेनेके हेतु दिया वा चोर ले गया वा खोया गया वा कर्जा दिया जाय तो पुनः मिलेगा नहीं ॥ २४ ॥

ज्ञा०वि०—पित्रार्कध्रुववासवाम्बुपमघातोयान्त्यपुष्येन्दुभिः
पापैर्हीनबलैस्तनौ सुरगुरौज्ञेवाभृगौखेविधौ ॥
आप्येसर्वजलाशयस्यखननंन्यंभोमघैः सेन्द्रभै-
स्तैर्नृत्यंहिबुकेशुभैस्तनुगृहेज्ञेज्ञराशौशुभम् ॥ २५ ॥

अनुराधा, हस्त, ध्रुवनक्षत्र, धनिष्ठा, शतभिषा, मघा, पूर्वाषाढा, रेवती, पुष्य, मृगशिरमें तथा पापग्रह हीनबली हों, शुभलग्नमें बुध बृहस्पति शुक्र-

 Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेंसे कोई हो, चंद्रमा दशम स्थानमें जलचर राशिका हो ऐसे समयमें बावडी, कूप, तालाव आदि जलाशय खनना वा बनाना और पूर्वाषाढा मघारहित ज्येष्ठासहित उक्तनक्षत्र तथा लग्नसे चौथे शुभग्रह और लग्नमें बुध बुधकी राशि ३ । ६ के चंद्रमामें " नृत्यारंभ " नाच खेल नाटकादियोंका आरंभ करना ॥ २५ ॥

शालि०-क्षिप्रमैत्रेवित्तिसतार्कैज्यवारेसौम्येलग्नेकेंकुजेवाखलाभे ॥
योनेर्मैत्र्यांराशिपोश्चापिमैत्र्यांसेवाकार्या स्वामिनः सेवकेन ॥२६॥

क्षिप्र, मैत्र नक्षत्र, बुध, शुक्र, रवि, गुरुवार तथा शुभग्रहयुक्त लग्नमें और सूर्य वा मंगल दशम वा ग्यारहवां हो ऐसे मुहूर्तमें सेवक (नोकर) ने स्वामीकी सेवाका आरंभ करना परंतु स्वामिसेवककी योनियोंकी मैत्री तथा राशियोंकी मैत्री मुख्य विचार्य है यदि योनि एवं राशियोंकी परस्पर मैत्री हो तो सेवा शुभ होती है ॥ २६ ॥

शा०वि०-स्वात्यादित्यमृदुद्विदैवगुरुभेकर्णत्रयाश्चेचरे
लग्ने धर्मसुताष्टशुद्धिसहितेद्रव्यप्रयोगःशुभः ॥
नारेग्राह्यमृणंतु संक्रमदिनेवृद्धौकरेकैंह्रियत्त-
द्वंशेषुभवेद्दणंनचबुधेदेयं कदाचिद्धनम् ॥ २७ ॥

स्वाती, पुनर्वसु, मृदुनक्षत्र, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शततारा, अश्विनीनक्षत्र, तथा चर लग्नमें एवं ९।५ स्थानोंमें शुभग्रह हों, पापग्रह हों, अष्टमभावमें कोई ग्रह न हो ऐसे मुहूर्तमें द्रव्यप्रयोग (धनवृद्धि) के लिये ऋणादि देना तथा मंगलवार, संक्रांति और रविवारयुक्त हस्तमें ऋण न लेना, यदि लेवे तो उसके वंशसेभी ऋण न उतरे और बुधवारको कदाचित्-भी ऋण न देना ॥ २७ ॥

शा०वि०-मूलद्वीशमघाचरध्रुवमृदुक्षिप्रैर्विनार्केशनिं
पापैर्हीनबलैर्विधौजललवेशुक्रेविधौमांसले ॥
लग्नेदेवगुरौ हलप्रवहणं शस्तंनसिंहेघटे
कर्कीजेणघटेतनौक्षयकरंरिक्तासुषष्ठ्यांतथा ॥ २८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूल, विशाखा, मघा, चर, ध्रुव, मृदु, क्षिप्र नक्षत्रोंमें रवि शनिरहित वारोंमें तथा पापग्रह, हीनबली चंद्रमा जलचर राशिके अंश तथा राशिमें हों और शुक्र चंद्रमा (बलवान्) उदय हो, बृहस्पति लग्नमें हो सिंह, कुंभ, कर्क, मेष, मकर, धन, लग्न, रिक्ता षष्ठी तिथि न हो ऐसे मुहूर्तमें हल जोतना आदि कृषिकर्मका आरंभ करना. रिक्ता षष्ठी आदि वर्जितोंमें करनेसे कृषि क्षय होती है ॥ २८ ॥

शा० वि०-एतेषुश्रुतिवारुणादितिविशाखोडूनिभौमं विना
बीजोत्तिर्गदिताशुभात्वशुभतोष्टाग्नीन्दुरामेन्दवः ॥
रामेन्द्वग्नियुगान्यसच्छुभकराण्युत्तौहलेकोंज्झिता-
द्राद्रामाष्टनवाष्टभानिमुनिभिःप्रोक्तान्यसत्सन्तिच ॥२९

श्रवण, शतभिषा, पुनर्वसु, विशाखा और मंगलवाररहित पूर्वश्लोकोक्त हलप्रवाहनक्षत्रोंमें बीजवापन करना जब सूर्य आर्द्राके प्रथम चरणपर जाता है तो उस दिनसे तीन दिन पृथ्वीका रज उत्पन्न होता है. इन दिनों पृथ्वीमें बीज न बोना बीजवापनमें विशेषविचार फणिचक्रका है कि राहुके नक्षत्रसे ८ नक्षत्र अशुभ ३ शुभ १ अशुभ ३ शुभ १ अशुभ ३ शुभ १ अशुभ ३ शुभ ४ अशुभ दिननक्षत्रपर्यंत गिनके जहां आवे ऐसा फल जानना. ऐसेही हलप्रवाह (खेती जोतने) के लिये हलचक्र है कि सूर्यके मुक्तनक्षत्रसे ३ अशुभ ८ शुभ ९ अशुभ ८ इसमें २८ नक्षत्र अभिजित् सहित हैं. इन चक्रोंमें पूर्वोक्त नक्षत्र शुभ स्थानमें हों तो लेना, अशुभ स्थानमें हों तो न लेना अनुक्तनक्षत्र चक्रोंमें शुभभी हों तो न लेना ग्रंथांतरमतसे चक्र ऐसे हैं ॥ २९ ॥

बीजोत्तिचक्रम् ।

ग्रन्थान्तरे-भवेद्भत्रितयं मूर्ध्नि धान्यनाशाय राहुभात् ।
गले त्रयं कज्जलाय वृद्धिर्भद्वादशोदरे ॥
निस्तण्डुलत्वं लांगूले भचतुष्टयमीरितम् ।
नाभावहिपंचकं च बीजोप्तावीतयः क्रमात् ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

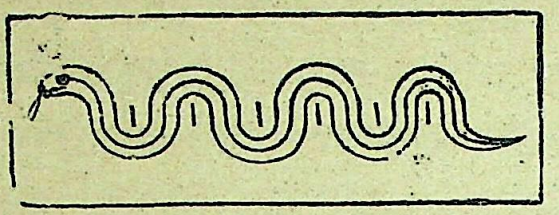

हलचक्रम् ।

ग्रन्थान्तरे—हलदण्डिकयूपानां द्विद्विस्थानेत्रिकंत्रिकम् ।
योक्रयोः पञ्चकंमध्ये गणनाचक्रलाङ्गले ॥
दण्डस्थे च गवां हानिर्यूपस्थे स्वामिनोभयम् ।
लक्ष्मीर्लाङ्गलयोक्रेषुक्षेत्रारम्भदिनक्षंके ॥

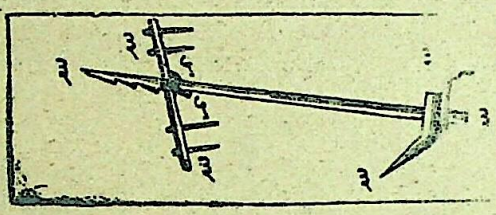

शा० वि०—त्वाष्ट्राग्निमित्रकभाद्वयेम्बुपलघुश्रोत्रे शिरामोक्षणं
भौमार्कैज्यदिनेविरेकवमनाद्यं स्याद्बुधार्कीविना ॥
मित्रक्षिप्रचरध्रुवेरविशुभाहेलग्नवर्गेविदो
जीवस्यापितनौगुरौनिगदिताधर्मक्रियातद्बले ॥ ३० ॥

चित्रा, स्वाती, अनुराधा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मृगशिर, शतभिषा, श्रवण और लघुनक्षत्रोंमें मंगल बृहस्पति रविवारमें शिरामोक्षण (नसोंद्वारा रुधिर निकालना) तथा उक्त नक्षत्रोंमें बुध शनि विना अन्य वारोंमें वमनविरेक (औषधिसे रद्द, दस्त लेने) और मित्र, क्षिप्र, चर, ध्रुव नक्षत्रोंमें रवि चंद्र बुध बृहस्पतिवार बुध गुरुके वर्ग (नवांशादि) किसी लग्नमें तथा लग्नके बृहस्पति एवं कर्ताके बृहस्पति शुद्धिमें धर्मक्रिया (कोटिहोम रुद्रानुष्ठानादि) करने ॥ ३० ॥

व० ति०—तीक्ष्णाजपादकरवह्निवसुश्रुतीन्दुस्वातीमघोत्तरज-
लान्तकतक्षपुष्ये ॥ मन्दारिक्तरहितेदिवसेऽतिश-
स्ताधान्यच्छिदानिगदितास्थिरभेविलग्ने ॥ ३१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीक्ष्ण नक्षत्र पूर्वाभाद्रपदा हस्त कृत्तिका धनिष्ठा श्रवण मृगशिर स्वाती मघा तीनहूं उत्तरा पूर्वाषाढा भरणी चित्रा पुष्यमें तथा शनि मंगलवार रिक्कातिथि रहित और स्थिरराशिके लग्नोंमें अन्न (पक्की खेती) काटनी ॥ ३१ ॥

व०ति०—भाग्यार्यमश्रुतिमघेन्द्रविधातृमूलमैत्र्यान्त्यभेषु गदितं कृणमर्दनंसत् ॥ द्वीशाजपान्निर्ऋतिधातृशतार्यमर्क्षंस-स्यस्यरोपणमिहार्किकुजौविनासत् ॥ ३२ ॥

पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, श्रवण, मघा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मूल, अनुराधा, रेवती नक्षत्रोंमें शुभतिथिवारमें अन्नमर्दन (चना गेहूं आदिका मर्दन भूसेसे अलग) करना। विशाखा पूर्वाभाद्रपदा मूल रोहिणी शततारा उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रोंमें शनि मंगलवार वर्जित करके अन्न पौधेसे लेके दूसरे स्थल पानीके खेतीमें रोपण करना ॥ ३२ ॥

व०ति०—मिश्रोग्ररौद्रभुजगेन्द्रविभिन्नभेषु कर्काजतौलिरहितेज-तनौ शुभाहे ॥ धान्यस्थितिः शुभकरीगदिताध्रुवे-ज्यद्वीशेन्द्रदस्रचरभेषुचधान्यवृद्धिः ॥ ३३ ॥

मिश्र, उग्र, आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठारहित नक्षत्रोंमें कर्क मेष तुलारहित लग्नमें शुभवारमें अन्नस्थिति (खेतीको ढार आदिमें स्थापन) करना. ध्रुव, पुष्य, विशाखा, ज्येष्ठा और चरनक्षत्रोंमें धान्यवृद्धि (अन्न व्याजपर देना अर्थात् अन्न उधारे देकर कुछ महीनोंमें सवाया वा ड्योढा) लेते हैं ॥ ३३ ॥

व०ति०—क्षिप्रध्रुवान्त्यचरमैत्रमघासुशस्तं स्याच्छान्तिकंसह चमङ्गलपौष्टिकाभ्याम्॥ खेकैविधौसुखगतेतनुंगेगु-रौनोमोढ्यादिदुष्टसमयेशुभदंनिमित्ते ॥ ३४ ॥

क्षिप्र, ध्रुव, रेवती, चर, मैत्र नक्षत्रोंमें तथा लग्नसे दशम सूर्य चतुर्थ चंद्र लग्नके गुरु होनेमें मूल गंडांतादि वा केतु, उत्पातदर्शनादि शांति तथा पौष्टिककर्म करने नैमित्तिकशांति गुर्वस्त शुक्रास्त बालवृद्धादि दुष्टसमयमेंभी शुभ होती है ॥ ३४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनु०-सूर्यभात्त्रित्रिभेचान्द्रेसूर्यविच्छुक्रपङ्क्तवः ॥
चन्द्रारेज्यागुशिखिनोनेष्टाहोमाहुतिःखले ॥ ३५ ॥

होमको आहुति कहते हैं, शुभग्रहकेमें होम करना पापग्रहकी आहुतिमें न करना सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रर्क्षपर्यंत ३। ३गिनके प्रथम ३में सूर्यकी फिर ३में बुधकी एवं शुक्र शनि चंद्रमा मंगल गुरु राहु केतुकी क्रमसे आहुति जाननी ॥ ३५ ॥

इं०व०-सैकातिथिर्वारयुताकृताप्ताशेषेगुणेऽग्नेर्भुविवह्निवासः ॥
सौख्यायहोमेशशियुग्मशेषेप्राणार्थनाशौदिविभूतलेच॥३६॥

वर्तमानतिथिमें १ जोडके वार जोडना ४ से शेष (नष्ट) करना जो शेष० वा ३ रहे तो पृथ्वीमें अग्निका वास जानना हवन करनेमें सुख होगा यदि २। १ शेष रहे तो वह्निवास नहीं होम करनेसे प्राणधन नाश होते हैं ॥ ३६ ॥

अनु०-नवान्नंस्याच्चरक्षिप्रमृदुभेसत्तनौदिवा ॥
विनानन्दाविषघटीमधुपौषार्किभूमिजान् ॥ ३७ ॥

पौष, चैत्रमास, शनि, मंगलवार, नंदा १ । ६ । ११ तिथि विषघटी (विवाहप्रकारोक्त) इन सबको छोडकर शुभयुक्त दृष्टलग्नमें तथा चर, क्षिप्र, मृदु, नक्षत्रोंमें नवान्न (नई फसलका अन्न) प्राशन करना ॥ ३७ ॥

अनु०-याम्यत्रयविशाखेन्द्रसार्पपित्र्येशभिन्नभे ॥
भृग्विज्यार्केदिनेनौकाघटनंसत्तनौशुभम् ॥ ३८ ॥

भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, विशाखा, ज्येष्ठा, आश्लेषा, आर्द्रा रहित नक्षत्रोंमें तथा शुक्र गुरु रविवारमें गुणवान् लग्नमें नौका (नाव डोंगी आदि) घडनी॥ ३८॥

अनु०-मूलार्द्राभरणीपित्र्यमृगेसौम्येघटेतनौ ॥
सुखेशुक्रेष्टमेशुद्धेसिद्धिर्वीराभिचारयोः ॥ ३९ ॥

मूल, आर्द्रा, भरणी, मघा, मृगशिर नक्षत्रोंमें तथा कुंभलग्नमें बुध अथवा चतुर्थ शुक्र तथा अष्टम शुद्ध हो तो ऐसे मुहूर्तमें वीरसाधन एवं अभिचार (मारणादि जादूगरी) करना. यहां लग्नके बुध चतुर्थ शुक्र कहा यह असंभव है इससे 'अथवा' पद लिखा ॥ ३९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व० ति०-व्यन्त्यादितिध्रुवमघानिलसार्पधिष्ण्यैरिक्तेतिथौचर-
तनौविकवीन्दुवारे ॥ स्नानंरुजाविरहितस्यजनस्यश-
स्तंहीने विधौखलखगैर्भवकेन्द्रकोणे ॥ ४० ॥

जब रोगी रोगसे निर्मुक्त होता है उसके स्नानका मुहूर्त है कि रेवती पुनर्वसु ध्रुवनक्षत्र मघा स्वाती रहित अन्यनक्षत्रोंमें तथा रिक्तातिथि चरलग्नमें शुक्र चंद्रवाररहित वारोंमें लग्नसे पापग्रह केंद्र कोणोंमें हो तथा चंद्रमा हीन जन्मराशिसे ४। ८। १२ स्थानमें हो तथा चंद्रमा हीन स्थानमें हो ऐसेमें रोगमुक्त स्नान करना ॥ ४० ॥

अनु०-मृदुध्रुवक्षिप्रचरेज्ञेगुरौवाखलग्नगे ॥
विधौज्ञजीववर्गस्थेशिल्पारम्भः प्रसिद्ध्यति ॥ ४१ ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर नक्षत्रोंमें बृहस्पति वा बुध दशम वा लग्नमें हो और चंद्रमा बुध वा गुरुके नवांशादि षड्वर्गमेंसे किसीमें हो तो शिल्पविद्या (कारीगरी) के कामका आरंभ करना ॥ ४१ ॥

अनु०-सुरेज्यमित्रभाग्येषुचाष्टम्यांतैतिलेहरौ ॥
शुक्रदृष्टेतनौसौम्येवारेसन्धानमिष्यते ॥ ४२ ॥

पुष्य अनुराधा पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र अष्टमी द्वादशीतिथिमें वा तैतिलकरणमें लग्नमें शुक्र हो वा शुक्रदृष्ट लग्न हो और शुभवारमें प्रीति (मैत्री) दोस्तानेका आरंभ करना ॥ ४२ ॥

व०ति०-त्यक्त्वाष्टभूतशनिविष्टिकुजान् जनुर्भमासौमृतौर-
विविधूअपिभानिनाड्याः ॥ व्यङ्गेचरर्तुलवेशार्क-
जीवताराशुद्धौ करादितिहरीन्द्रकपेपरीक्षा ॥ ४३ ॥

अष्टमी चतुर्दशीतिथि शनि मंगलवार भद्रा जन्मनक्षत्र जन्ममास गोचरसे अष्टम सूर्य चंद्रमा और नाडीनक्षत्र जन्मनक्षत्रसे १०। १६। १८। २३। २५। १ नाडीसंज्ञक हैं इतने छोडके द्विस्वभाव चरलग्ननवांशकोंमें चंद्र गुरु ताराशुद्धिमें और हस्त पुनर्वसु श्रवण ज्येष्ठा शतभिषामें परीक्षा (दिव्यादि) करना ॥ ४३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनु०-व्ययाष्टशुद्धोपचयेलग्नगेशुभदृग्युते ॥
चन्द्रेत्रिषट्दशायस्थेसर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति ॥ ४४ ॥

लग्नसे १२ । ८ भाव शुद्ध ग्रहरहित तथा तात्काल लग्नजन्म राशिसे उपचय ३ । ६ । १० । ११ और १ में चंद्रमा ३ । ६ । ११ । १० में हो ऐसी लग्नशुद्धि समस्त शुभकार्योंमें आरंभ सिद्ध होता है ॥ ४४ ॥

उ० जा०-स्वातीन्द्रपूर्वाशिवसार्पभेमृतिर्ज्वरेन्त्यमैत्रे स्थिरता भवेद्रुजः ॥ याम्यश्रवोवारुणतक्षभे शिवाघस्राहि-पक्षोद्व्यधिपार्कवासवे ॥ ४५ ॥

उपेंद्रव०-मूलाग्निदास्रेनवपित्र्यभेनखा बुध्न्यार्यमेज्यादिति धातृभेनगाः ॥ मासोब्जवैश्वेथयमाहिमूलभे मिश्रे-सपित्र्येफणिदंशनेमृतिः ॥ ४६ ॥

स्वाती ज्येष्ठा तीन पूर्वा आर्द्रा आश्लेषामें ज्वरादिरोग उत्पन्न हो तो मृत्यु होवे रेवती अनुराधामें रोग स्थिर (बहुत दिन) रहे भरणी श्रवण शततारा चित्रामें ११ दिनपर्यंत विशाखा हस्त धनिष्ठामें १५ दिन मूल कृत्तिका अश्विनीमें ९ दिन मघामें २० दिन तीन उत्तरा पुष्य पुनर्वसु रोहिणीमें ७ दिन मृगशिर उत्तराषाढामें ३० दिन रोग रहता है. भरणी आश्लेषा मूल मिश्र मघा कृत्तिका विशाखा आर्द्रामें सर्प काटे तो मृत्यु होवे ॥ ४५ ॥ ४६ ॥

उ०जा०-रौद्राहिशक्राम्बुपयाम्यपूर्वाद्विदैववस्वग्निषुपापवारे ॥
रिक्ताहरिस्कन्ददिनेचरोगेशीघ्रंभवेद्रोगिजनस्यमृत्युः॥४७॥

आर्द्रा आश्लेषा ज्येष्ठा शततारा तीन पूर्वा विशाखा धनिष्ठा कृत्तिका नक्षत्र तथा पापवारमें रिक्ता ४ । ९ । १४ द्वादशी षष्ठी तिथिमें जो रोगी होवे तो शीघ्र मृत्यु पावे चन्द्रमा गोचरसे ४ । ८ । १२ होनेमें विशेष है ॥ ४७ ॥

इं०व०-क्षिप्राहिमूलेन्दुहरीशवायुभे प्रेतक्रियास्याज्झषकुम्भ-गेविधौ ॥ प्रेतस्यदाहंयमदिग्गमंत्यजेच्छय्यावितानं गृहगोपनादिच ॥ ४८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अश्विनी पुष्य हस्त आश्लेषा मूल ज्येष्ठा श्रवण आर्द्रा स्वाती नक्षत्रोंमें प्रेतक्रिया (और्ध्वदैहिक क्रिया) न करनी । तथा मकरकुंभके चंद्रमामें पंचक होते हैं इनमें प्रेतका दाह, दक्षिणदिशागमन, शय्या (बिस्तर) का कृत्य चांदनी (चंदोया) और घरकी लिपाई पोताई आदि मरम्मत उपलक्षणसे तृण काष्ठादि संग्रह न करना. प्रेतदाह आवश्यकमें कुश तथा रुईके ५ मूर्ति बनाकर प्रेतके साथ दाह करते हैं पंचकशांतिभी करते हैं ॥ ४८ ॥

व० ति०—भद्रातिथीरविजभूतनयार्कवारेद्वीशार्यमाजचरणा-
दितिवह्निवैश्वे ॥ त्रैपुष्करोभवतिमृत्युविनाशवृद्धौ
त्रैगुण्यदोद्विगुणकृद्धसुतक्षचान्द्रे ॥ ४९ ॥

भद्रा २।७।१२ तिथि शनि मंगल रविवार विशाखा उत्तराफाल्गुनी पूर्वाभाद्रपदा इतने तिथिवार नक्षत्रोंमें एकही समय होनेमें त्रिपुष्कर योग होता है इसमें कोई मरे तो उस घरमें दो और मरे कुछ वस्तु खोई जांय तो दो और खोई जावें कुछ वस्तु मिले वा बढे तो दो और मिलें और नक्षत्रके स्थानमें धनिष्ठा चित्रा वा मृगशिर हो तो उक्तफल द्विगुण होते हैं यह द्विपुष्कर है ॥ ४९ ॥

शा०वि०—शुक्रारार्किषुदर्शभूतमदनेनन्दासुतीक्ष्णोग्रभे
पौष्णेवारुणभेत्रिपुष्करदिनेन्यूनाधिमासेयने ॥
याम्येन्दात्परतश्चपातपरिघेदैवेज्यशुक्रास्तके
भद्रावैधृतयाः शवप्रतिकृतेर्दाहोनपक्षेसिते ॥ ५० ॥
जन्मप्रत्यरितारयोर्मृतिसुखान्त्येज्येचकर्तुर्नस-
न्मध्योमैत्रभगादितिध्रुवविशाखाब्यङ्घ्रिभेज्ञेपिच ॥
श्रेष्ठोकैज्यविधोर्दिनेश्रुतिकरस्वात्यश्विपुष्येतथा
त्वाशौचात्परतोविचार्यमखिलंमध्ययेथासंभवम् ॥ ५१ ॥

जब किसी मरेका प्रेत नहीं मिले तो प्रतिकृति (पर्णशर करने) का मुहूर्त कहते हैं कि शुक्र मंगल शनिवारमें चतुर्दशी अमावास्या त्रयोदशी नंद १।६।११ में तीक्ष्ण उग्र रेवती शततारा नक्षत्रोंमें त्रिपुष्कर योगमें मल-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मास क्षयमासमें कर्क मकर संक्रांतिमें एक वर्षसे अधिक मरेको हो तो दक्षिणायनमेंभी तथा व्यतीपात परिघयोगमें शुक्रास्त गुर्वस्तमें भद्रा वैधृतिमें कृष्ण पक्षमें पर्णशरका दाह न करना ॥ ५० ॥ क्रिया करनेवालेका उस दिन जन्मप्रत्यरि तारा चौथा आठवां बारहवां चंद्रमा जन्म राशिसे न हो और अनुराधा पूर्वाफाल्गुनी पुनर्वसु ध्रुवनक्षत्र विशाखा मृगशिर चित्रा धनिष्ठा बुधवारमें उक्त कृत्य मध्यम कहा है तथा रवि गुरु चंद्रवार श्रवण हस्त स्वाती पुष्य अश्विनी नक्षत्र शुभ होते हैं इतने विचार अशौचसे उपरांत यदि किसी कारण अशौचमें प्रेतक्रिया न हुई हो तो तब हैं, अशौचमें उक्त विचार कुछ नहीं ॥ ५१ ॥

उ०जा०–अभुक्तमूलंघटिकाचतुष्टयं ज्येष्ठान्त्यमूलाहिभवं हिनारदः ॥ वसिष्ठएकद्विघटीमितंजगौबृहस्पतिस्त्वेकघटिप्रमाणकम् ॥ ५२ ॥

अभुक्त मूलका प्रमाण नारदमतसे ज्येष्ठाके अंत्यकी ४ घटी मूलके आदिकी ४ घटी मिलाके ८ घटी अभुक्त मूल होता है. वसिष्ठ ज्येष्ठांत्यकी एक मूलादिकी दो कहता है. बृहस्पति एकही घटी कहता है ॥ ५२ ॥

उ०जा०–अथोचुरन्ये प्रथमाष्टघट्योमूलस्यशक्रान्तिमपञ्चनाड्यः ॥ जातंशिशुंतत्रपरित्यजेद्वामुखंपितास्याष्टसमानपश्येत् ॥ ५३ ॥

अन्य आचार्य कहते हैं कि मूलादिकी ८ घटी ज्येष्ठान्त्यकी ५ घटी अभुक्त मूल है यहां बहुमत होनेसे आचार्यने नारदमतही प्रमाण किया है इस अभुक्त मूलमें जो बालक उत्पन्न हो तो उसे त्याग करना अथवा उस बालकका मुख आठ वर्षपर्यंत न देखे तब शांतिकरके उपलक्षणसे आश्लेषांत्य मघादिमेंभी ऐसाही विचार है ॥ ५३ ॥

उप०–आद्येपितानाशमुपैतिमूलपादेद्वितीयेजननी तृतीये ॥ धनंचतुर्थस्यशुभोथशान्त्यासर्वत्रसत्स्यादहिभे विलोमम् ॥ ५४ ॥

कन्या वा पुत्र मूलके प्रथम चरणमें उत्पन्न हो तो पिता नाश होवे दूसरेमें हो तो माता मरे तीसरेमें हो तो धननाश होवे चौथे चरणमें हो तो शांति करके शुभ होवे किसीको दोष नहीं आश्लेषामें यही विचार विपरीत है जैसे च-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुर्थचरणमें पिता मरे तीसरेमें माता, दूसरेमें धननाश प्रथम चरण शांतिकरके शुभ होताहै प्रकारांतर है कि१ वर्षमें पिताका ३ वर्षमें माताका २ वर्षमें धनका ९ वर्षमें श्वशुरका ५ वर्षमें भाईका ८ वर्षमें शाले वा मामाका अन्य अनुक्त बांधवादिकोंका ७ वर्षमें नाश करताहै तत्पश्चात् शांति करनी योग्य है. प्रकारांतरसे मूल तथा अश्लेषाका वृक्ष वा लवाखसे चक्रन्यासपूर्वक विशेष विचार चक्रमें लिखाहै ॥ ५४ ॥

मूलवृक्षचक्रं	मूलपुरुषचक्रं	कन्याज-मिथुन-मूलचक्रम्	अश्लेषाचक्रम्	सर्पवृक्षचक्रम्
मूले ७ मूलनाश	मूर्धि ५ राजा	शीर्षे ४ पशुनाशः	शिरसि ५ पुत्रादि	फले १० धनं
स्तंभे ८ वंशनाश	मुखे ७ पितृहन्तु	मुखे ६ धनागमः	मुखे ७ पितृहन्तुः	पुष्पे ५ धनं
त्वचि १० मातृक्लेश	स्कंधे ४ बंधी	कंठे ५ धनागमः	नेत्रे २ मातृनाशः	दले ९ राजभयं
शाखा ११ मातुल	बाहौ ८ वधः	हृदये ५ कुटुम्बनाशः	ग्रीवा ३ क्लेशः	शाखा ७ हानि
क्लेश पत्रे ५ मंत्रिपदं	हस्ते ३ धनी	बाहौ ५ धनागमः	स्कंधे ४ गुरुभक्तः	त्वचा १३ मातृहा
फले ४ विपुलाल०	हृदये ९ मंत्री	हस्ते ४ दयाधर्मी	हस्ते ८ वधः	लता १२ पितृहा
शिखा २ अल्पजीवी	नाभौ २ ज्ञानी	गुप्ते ४ स्वामिना	हृदये ११ आत्महा	स्कंध ४ अल्पायुः
	गुह्ये १० कामी	जंघे ४ मातुलघ्नी	नाभौ ६ भ्रमः	
	जानु ६ मतिमान्	जानु ४ भ्रातृनाशः	गुप्ते ८ तपस्वी	
	पादे ६ मतिमान	पादे १० वैधव्यं	पादे ५ धनहा	

(इं० व०) स्वर्गे त्रिमोष्ठपदेषुमाघेभूमौनभःकार्तिकचैत्रपौषे॥ मूलं ह्यधस्तात्सुतपस्यमार्गवैशाखशुक्लेष्वशुभंचतत्र॥५५॥

आषाढ भाद्रपद आश्विन माघ महीनोंमें मूलका वास स्वर्गमें है श्रावण कार्तिक चैत्र पौष पृथ्वीमें वास है फाल्गुन मार्गशीर्ष वैशाख ज्येष्ठ पातालमें रहताहै जिस महीनेमें जहाँ रहताहै वहाँही फल करताहै अन्यलोकोंमें विशेषतः दोष नहीं ॥ ५५ ॥

(शा०वि०) गण्डान्तेन्द्रभशूलपातपरिघव्याघातगण्डाव्यसं-क्रान्तिर्व्यतिपातवैधृतिसिनीवालीकुहूदर्शके ॥ वज्रे कृष्णचतु-र्दशीषुयमघण्टेदग्धयोगेमृतौ विष्टौसोदरभेजनिर्नपितृभेशस्ता शुभाशान्विताः ॥ ५६ ॥

गंडांत, ज्येष्ठा, शूल, पात, परिघ, व्याघात, अतिगंड, क्षयतिथि, संक्रांति,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यतीपात, वैधृति, सिनीवाली (शुक्लप्रतिपदाका पूर्वदल) कुहू (कृष्णचतुर्दशीका उत्तरदल), दर्श (अमावास्या), वज्रयोग, कृष्णचतुर्दशी, यमघंट, दग्धयोग, मृत्युयोग, भद्रा, सहोदर भाई तथा मातापिताके जन्मनक्षत्र इतनोंमें पुत्रकन्याजन्म अनिष्ट होता है इनकी शांति अन्य ग्रंथोंमें कही है उनके करनेसे शुभ होता है उपलक्षणसे ग्रहणजन्म त्रिक (तीन पुत्रोंके पीछे कन्या तीन कन्याओंके पीछे पुत्रजन्म) आदिभी ऐसेही हैं ॥ ५६ ॥

उ०जा०—त्रिव्यङ्कपञ्चाग्निकुवेदवह्नयःशरेषुनेत्राश्विशरेन्दुभूकृताः ॥
वेदाग्निरुद्राग्नियमाग्निवह्नयोऽब्धयःशतंद्विद्विरदाभतारकाः ॥ ५७ ॥

अश्विन्यादि नक्षत्रोंके तारा कहते हैं कि अश्विनीके ३ भरणीके ३ एवं कृ० ६ रो० ५ मृ० ३ आ० १ पु० ४ पु० ३ आ० ५ म० ५ पू० २ उ० २ ह० ५ चि० १ स्वा० १ वि० ४ अ० ४ ज्ये० ३ मू० ११ पू० ३ उ० २ अभि० ३ श्र० ३ ध० ४ श० १०० पू० ३ उ० २ रेवतीके ३२ इन ताराओंकी गणती तथा वक्ष्यमाणरूपोंसे तारा पहँचाने जाते हैं ॥ ५७ ॥

उ०जा०—अश्व्यादिरूपंतुरगास्ययोनिक्षुरोनएणास्यमणिगृहंच ॥
पृषत्कचक्रेभवनंचमञ्चःशय्याकरोमौक्तिकविद्रुमंच ५८॥

रथोद्धता—तोरणंबलिनिभंचकुण्डलंसिंहपुच्छगजदन्तमञ्चकाः ॥
त्र्यस्रचत्रिचरणाभमर्दलौवृत्तमञ्चयमलाभमर्दलाः ५९॥

अश्विन्यादियोंके रूप—अश्विनी घोडाकासा मुख, भरणी भग, कृ० क्षुर (उस्तरा), रो० गाडी, मृ० हरिणमुख, आ० मणि, पु० मकान, पु० बाण, अ० चक्र, म० मकान, पू० मंजा, उ० बिस्तर, ह० हाथ, चि० मोती, स्वा० मूंगा, वि० तोरण, अ० भातका पुंज, ज्ये० कुंडल, मू० शेरका पूंछ, पू० हाथीदांत, उ० मंजा, अ० त्रिकोण, श्र० वामन, ध० मृदंग, श० वृत्त पू० मंजा, उ० यमल, रेवती मृदंगस्वरूप है ॥ ५८ ॥ ५९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्षत्रचक्रम्।

नक्षत्र	तारा	रूप	देवता	अनवहडाचक्र	गण	योनि	नाडी
अ.	३	घोडा	अश्विनी कुमार	चूचेचोला	दे.	अश्व	१
भ.	३	भग	यम	लीलूलेलो	म.	गज	२
कृ.	६	छुरी	अग्नि	आईउए	रा.	छाग	३
रो.	५	गाडी	ब्रह्मा	ओवाविक	म.	नाग	३
मृ.	३	हरिण	चंद्र	वेवोकाकी	दे.	नाग	२
आ.	१	मणि	शिव	कुघंङछ	म.	श्वान	१
पु.	४	कमान	अदिति	केकोहाही	दे.	मार्जार	१
ति.	३	बाण	अंगिरा	हूयेहोडा	दे.	छाग	२
अ.	५	चक्र	सर्प	डीडूडेडो	रा.	मार्जार	३
म.	५	घर	पिता	मामीमूमे	रा.	मूषक	३
पू.	२	मंजा	भग	मौटाटीटू	म.	मूषक	२
उ.	२	बिछार	अर्यमा	टेटोपापी	म.	गौ	१
ह.	५	हात	सूर्य	पूषणठ	दे.	महिषी	१
चि.	१	मोती	त्वष्टा	पेपोरारी	रा.	व्याघ्र	२
स्वा.	१	मूंगा	वायु	रूरेरोते	दे.	महिषी	३
वि.	४	तोरण	इंद्राग्नि	तीतूतेतो	रा.	व्याघ्र	३
अ.	४	भात	मित्र	नानीनूने	दे.	मृग	२
ज्ये.	३	कुंडल	इंद्र	नोयवियु	रा.	मृग	१
मू.	११	सिंहपु.	राक्षस	येयोभाभी	रा.	श्वान	१
पू.	३	हा.दां.	जल	भूधफढ	म.	मर्कट	२
उ.	२	मंजा	विश्वेदेव	भेभोभूभि	म.	नेवला	०
श्र.	३	त्रिको.	विधि	जुजेजोख	दे.	नेवला	३
श्र.	३	वामन	विष्णु	खिखुखेखो	दे.	मर्कट	३
ध.	५	मृदंग	वसु	गागिगूंगे	रा.	सिंह	२
श.	१००	वृत्त	वरुण	गोशशिशु	रा.	अश्व	१
पू.	२	मंजा	अजपाद	सेसोदादि	म.	सिंह	१
उ.	२	यमल	अहिर्बुध्न्य	दूथझञ	म.	गौ	२
रे.	३२	मृदंग	पूषा	देदोचाचि	दे.	गज	३

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उ० जा०-जलाशयारामसुरप्रतिष्ठासौम्यायनेजीवशशाङ्कशुक्रे ॥
दृश्येमृदुक्षिप्रचरध्रुवेस्यात्पक्षेसितेस्वर्क्षतिथिक्षणेवा॥६०॥

जलस्थान, बगीचा और देवता आदि प्रतिष्ठाका मुहूर्त कहते हैं कि, उत्तरायणमें बृहस्पति, चंद्रमा, शुक्रके उदयमें मृदु, ध्रुव, क्षिप्र, चर नक्षत्रमें शुक्लपक्षमें शुभ तिथिवार मुहूर्तमें तथा जिस देवताकी प्रतिष्ठा हो उसी स्वामीके नक्षत्रमें जैसे विष्णुके श्रवणमें, शिवके आर्द्रामें, जलाशयका पूर्वाषाढा, शततारामें तथा रिक्तातिथि मंगलवार रहितमें उक्त कृत्य करना इसमें अदले श्लोकके प्रथमचरणका अर्थभी आ गया ॥ ६० ॥

उ० जा०-रिक्तारवर्जेदिवसेतिशस्ताशशाङ्कपापेस्त्रिभवाङ्कसंस्थैः ॥
व्यन्त्याष्टगैः सत्खचरैर्मृगेन्द्रेसूर्योघटेकोयुवतौचविष्णुः॥६१॥
शिवोनृयुग्मेद्वितनौचदेव्यःक्षुद्राश्चरेसर्वइमेस्थिरर्क्षे ॥
पुष्येग्रहाविघ्नपयक्षसर्पभूतादयोन्तेश्रवणेजिनश्च ॥ ६२ ॥
इति मुहूर्तचिंतामणौ द्वितीयं नक्षत्रप्रकरणं समाप्तम् ॥ २ ॥

प्रथमपादका अर्थ पूर्व कहा गया शेषका यह है कि जलाशय एवं बगीचाके प्रतिष्ठामें शुभलग्नमात्र विचार्य है ग्रहयोगकी विशेषता नहीं देवप्रतिष्ठामें चंद्रमा तथा पापग्रह ३।६।११ वें शुभ ग्रह ८।१२ भावरहित स्थानोंमें होनेसे शुभ होते हैं विशेषता है कि सूर्यकी प्रतिष्ठा सिंहलग्नमें ब्रह्माकी कुंभमें विष्णुकी कन्यामें शिवकी मिथुनमें मिथुन कन्या धन मीनमें देवीकी तथा दक्षिणमूर्त्यादियोंकी चरलग्नोंमें क्षुद्र (चतुःषष्टियोगिनी आदियों) की अनुक्त (इन्द्रादियों) की स्थिर लग्नोंमें स्थापना करनी तथा चंद्रादिग्रह पुष्यमें उपलक्षणसे सूर्य हस्तमें शिव ब्रह्मा पुष्य श्रवण अभिजित्में कुबेर स्कंद अनुराधामें दुर्गा आदि मूलमें सप्तर्षि व्यास वाल्मीकि आदि जिन नक्षत्रोंमें सप्तर्षि देखे जाते हैं वा पुष्यमें, गणेश, यज्ञ, नाग, भूत, विद्याधर, अप्सरा, राक्षस, गंधर्व, किन्नर, पिशाच, गुह्यक, सिद्धादि रेवतीमें बुद्ध (जिन) श्रवणमें, इंद्र कुबेर वर्जित लोकपाल धनिष्ठामें, शेषदेवता तीन उत्तरा रोहिणीमें प्रतिष्ठा युक्त करने ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्तचिन्तामणिभाषायां द्वितीयं नक्षत्रप्रकरणं समाप्तम् ॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ संक्रान्तिप्रकरणम् ।

व०ति०—घोरार्कसंक्रमणमुग्रखौहिशूद्रान् ध्वाङ्क्षीविशोल-
घुविधौचचरक्षभौमे ॥ चौरान्महोदरयुतानृपतीन्
ज्ञमैत्रेमन्दाकिनीस्थिरगुरौसुखयेच्चमन्दा ॥ १ ॥
विप्रांश्चमिश्रभृगुगातुपशूंश्च मिश्रातीक्ष्णार्कजेन्त्य-
जसुखाखलुराक्षसीच ॥

ग्रहोंकी एक राशिसे दूसरी राशिमें जाना संक्रांति कहाती है यह १ मध्य-मासे २ स्पष्टासे है यहां मध्यसंक्रमण छोडकर स्पष्ट संक्रांति कहते हैं यहभी सायन १ निरयन २ प्रकार है अन्यग्रहोंके संक्रांति घटी विवाहप्रकरणमें "देवद्वयंक" इत्यादि कहेंगे यहां मुख्यता सूर्यकी वारनक्षत्रभेदसे कहते हैं कि सूर्यकी निरयनांश संक्रांति यदि रौद्रनक्षत्र (तीन पूर्वा भरणी मघा) रविवारमें हो तो घोरा नाम शूद्रोंको प्रसन्न करती है लघुनक्षत्र चंद्रवारमें हो तो ध्वांक्षीनाम वैश्योंको सुख देती है चरनक्षत्र मंगलवारमें हो तो महोदरानाम चोरोंको सुख करती है मैत्रनक्षत्र बुधवारमें हो तो मंदाकिनी नाम राजाओंको सुख देती है स्थिरनक्षत्र गुरुवारमें हो तो मंदानाम ब्राह्मणोंको सुख देती है मिश्रनक्षत्र शुक्रवारमें हो तो मिश्रानाम पशुओंको सुख करती है तीक्ष्ण नक्षत्र शनिवारमें हो तो राक्षसीनाम चांडालोंको सुख देती है ॥ १ ॥

व०ति०—त्र्यंशेदिनस्यनृपतीन्प्रथमे निहन्तिमध्येद्विजानपिविशो-
परकेचशूद्रान् ॥ २ ॥ अस्तेनिशाप्रहरकेषुपिशाचकादी-
न्नक्तञ्चरानपिनटान्पशुपालकांश्च ॥ सूर्योदये सकल-
लिंगिजनंचसौम्ययाम्यावनंमकरकर्कटयोर्निरुक्तम् ॥ ३ ॥

दिनमानमें ३ से भाग लेके अंश होता है यदि संक्रांति दिनके प्रथम अंशमें हो तो राजाओंको द्वितीय (मध्यत्र्यंश) में हो तो ब्राह्मणोंको तीसरेमें हो तो वैश्योंको अस्तसमयमें हो तो शूद्रोंको अनिष्ट (नाश) फल कहा है रात्रिके प्रथम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रहरमें हो तो पिशाच भूतादियोंको दूसरेमें रात्रिंचरोंको तीसरेमे नाचनेवालों-को चौथेमें पशु पालनेवालोंको और सूर्योदय समयमें लिंगिजन (पाखंडी वा कृत्रिमवेषधारियों) को नाश फल करती है और मकर संक्रमसे सौम्य (उत्तरा-यण) कर्क संक्रमणमें दक्षिणायन होती है ग्रंथांतरमत है कि, मेष संक्रांति भर-ण्यादि ४ नक्षत्रोंमें हो तो अन्नवृद्धि मघादि १० में हानि अन्यनक्षत्रोंमें सौख्य होता है जन्मनक्षत्रमें संक्राति राजाओंको शुभ औरको क्लेश धनक्षय करती है संक्रांतिवर्षाका फल १ । ६ । १२ । ४ में हो तो सुख सुभिक्ष ११ । ९ । ५ । ३ में रोग युद्ध २ । ८ । ७ । १० में रोग चोर अग्निभय होता है ॥ २ ॥ ३ ॥

अनु०—षडशीत्याननंचापनृयुक्कन्याझषेभवेत् ॥
तुलाजौविषुवद्विष्णुपदांसिंहालिगोघटे ॥ ४ ॥

धन, मिथुन, कन्या, मीनकी संक्राति षडशीतिमुखा नामकी तुला मेषकी विषुवती, सिंह वृश्चिक वृषकुंभकी विष्णुपदा होती है इनका प्रयोजन यह है कि दक्षिणायन विष्णुपदके आद्यकी ७ । ८ के मध्यकी षडशीत्यानन और मकरकी पीछेकी घटी अति पुण्य देनेवाली है ॥ ४ ॥

उ०जा०—संक्रान्तिकालादुभयत्रनाडिकाःपुण्यामताः षोडशषो-डशोष्णगोः ॥ निशीथतोर्वागपरत्रसंक्रमेपूर्वापराह्ा-न्तिमपुण्यभागयोः ॥ ५ ॥

संक्रांति समयसे १६ घटी पूर्व १६ घटी परेकी पुण्यकाल होता यदि संक्रमण रात्रिमें हो तो अर्द्धरात्रिके पूर्व होनेमें पूर्वदिनका उत्तरार्द्ध तथा अर्द्धरात्रिके उत्तर संक्रम होनेमें दूसरे दिनका पूर्वार्ध पुण्यकाल होताहै॥५॥

उ०जा०—पूर्णेनिशीथेयदिसंक्रमःस्याद्दिनद्वयंपुण्यमथोदयास्तात् ॥
पूर्वेपरस्ताद्यदियाम्यसौम्यायनेदिनेपूर्ववरेतुपुण्ये ॥ ६ ॥

यदि मध्यरात्रिमें संक्रमण हो तो पूर्व एवं परके दोनहूं दिन पुण्यकाल होता है कर्कसंक्रांति यदि अर्धरात्रिसे ऊपर सूर्योदयके भीतर हो तो पूर्वदिन तथा मकरसंक्रांति सूर्यास्तसे ऊपर हो तो दूसरा दिन पुण्यकाल होताहै॥६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इं०व०—संध्यात्रिनाडीप्रमितार्कबिम्बादर्द्धोदितास्तादधऊर्ध्वमत्र ॥
चेद्याम्यसौम्येअयनेक्रमात्स्तःपुण्यौतदानींपरपूर्वघस्रौ॥७॥

सूर्योदयसे पूर्वकी तथा सूर्यास्तसे ऊपरकी ३ । ३ घटी संध्यासमय होता है यही हेतु करके मकर संक्रांतिके पूर्व पर दिन पुण्यकाल कहे हैं कि सूर्योदय संध्यामें दक्षिणायन हो तो पूर्वदिन तथा सायंसंध्यामें उत्तरायण हो तो उत्तर दिन पुण्यकाल स्नान दानादिके योग्य होता है ॥ ७ ॥

अनु०—याम्यायनेविष्णुपदेचाद्यमध्यातुलाजयोः ॥
षडशीत्याननेसौम्येपरानाड्योऽतिपुण्यदाः॥ ८ ॥

याम्यायन विष्णुपद ४ । २ । ५ । ८ । ११ के संक्रांतियोंके पूर्वके १६ घटी तुलामेषके मध्यकी षडशीत्यानन ३ । ६ । ९ । १२ के तथा मकर संक्रांतिके आगेकी १६ घडी अतिपुण्य देनेवाली होती हैं ॥ ८ ॥

उ०जा०—तथायनांशाःखरसाहताश्चस्पष्टार्कगत्याविहृतादिनाद्यैः ॥
मेषादितः प्राक्चलसंक्रमाःस्युर्दानेजपादौबहुपुण्यदास्ते॥९॥

ऊपर निरयनसंक्रांति कही अब सायनसंक्रांति कहते हैं कि, अयनांश ६० से गुणाकर सूर्य स्पष्टगतिसे भाग लेकर दिनघटी पलात्मक ३ लब्धि लेना मेषादि संक्रांति कालसे पहिले उतने दिनादि चलसंक्रम होता है दानजपादिमें बहुत पुण्य देनेवाला होता है ॥ ९ ॥

उ०जा०—समंमृदुक्षिप्रवसुश्रवोग्निघात्रिपूर्वास्त्रपभंबृहत्स्यात् ॥
ध्रुवद्विदैवादितिभंजघन्यंसार्पाम्बुपार्द्रानिलशाक्रयाम्यम्॥१०॥

मृदु, क्षिप्र, धनिष्ठा, श्रवण, कृत्तिका, मघा, तीन पूर्वा और मूल ये १५ नक्षत्र समसंज्ञक हैं. ध्रुव, विशाखा, पुनर्वसु ये ६ नक्षत्र बृहत्संज्ञक और आश्लेषा, शततारा, आर्द्रा, स्वाती, ज्येष्ठा, भरणी ये ६ नक्षत्र जघन्यसंज्ञक हैं ॥ १० ॥

उ०जा०—जघन्यभेसंक्रमणेमुहूर्त्ताःशरेन्दवोबाणकृताबृहत्सु ॥
खरामसङ्ख्यासमभेमहर्घसमर्घसाम्यंविधुदर्शनेपि ॥ ११ ॥

जघन्यनक्षत्रोंमें संक्रम हो तो १५ मुहूर्त्त बृहत्में ४५ समनक्षत्रोंमें ३०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुहूर्त्त जानने जो १५ मुहूर्त्तवाली संक्रांति हो तो महर्घ (अन्नभाव तेज) होवे ४५ मुहूर्त्तकी हो तो सुलभ (सस्ता मंदा) होवे ३० मुहूर्त्तवाली हो तो सम (न तेज न मंदा सामान्य) रहे ऐसाही विचार चंद्रोदयमेंभी जानना ॥ ११ ॥

अनु०—अर्कादिवारेसंक्रांतौकर्कस्याब्दविशोपकाः ॥
दिशो नखागजाःसूर्याधृत्योष्टादशसायकाः ॥ १२ ॥

कर्कसंक्रांति रविवारको हो तो १० सोमवारको २० मंगलको ८ बुधको १२ बृहस्पतिको १८ शुक्रको १८ शनिको ५ अब्दविशोपका होती हैं॥ १२॥

इं०व०—स्यात्तैतिलेनागचतुष्पदेरविःसुप्तोनिविष्टस्तुरगादिपञ्चके ॥
किंस्तुघ्नऊर्ध्वःशकुनौसकौलवेनेष्टःसमःश्रेष्ठइहार्घवर्षणे १३॥

तैतिल नाग चतुष्पद करणोंमें संक्रम हो तो सुप्त रवि हो तो अन्नके भाव (मूल्य), वर्षाके लिये अनिष्ट होता है गरादि पांच (गर वणिज विष्टि बालव बव) मध्यम, किंस्तुघ्नसे ऊपर शकुनि और कौलवमें श्रेष्ठ होता है इसको आगे प्रकट कहेंगे ॥ १३ ॥

शा०वि०—सिंहव्याघ्रवराहरासभगजावाहाद्विषद्घोटकाः
श्वाजौगौश्चरणायुधश्चवतोवाहारवेः संक्रमे ॥
वस्त्रंश्वेतसुपीतहारितकपांडारक्तकालासितं
चित्रंकंबलदिग्धनाभमथशस्त्रंशाद्भशुण्डीगदा ॥ १४ ॥
खड्गोदण्डधरासतोमरमथोकुन्तश्चपाशोंकुशो-
स्त्रंबाणास्त्वथभक्ष्यमन्नपरमान्नंभैक्षपक्वान्नकम् ॥
दुग्धंदध्यापिचित्रितान्नगुडमध्वाज्यंतथाशर्कराऽ-
थोलेपोमृगनाभिकुंकुममथोपाटीरमद्रोचनम् ॥ १५ ॥
यावश्चोतुमदोनिशांजनमथोकालागुरुश्चन्द्रको
जातिर्दैवतभूतसर्पविहगाः पश्वेणविप्रास्ततः ॥
क्षत्रावैश्यकशूद्रसंकरभवाःपुष्पंचपुन्नागकं
जातीवाकुलकेतकानिचतथाबिल्वार्कदूर्वाम्बुजम् ॥१६॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इं०व०—स्यान्मल्लिकापाटलिकाजपाचसंक्रांतिवस्त्राशनवाहनादेः ॥
नाशश्चतद्वृत्युपजीविनांचस्थितोपविष्टस्वपतांचनाशः॥१७॥

बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज, विष्टि ये ७ करण स्थिर और शकुनि, किंस्तुघ्न, नाग, चतुष्पद ये चर संज्ञक हैं इनमें संक्रांति होनेसे क्रमसे वाहनादि कहते हैं कि बव १ में सिंह। बालव २ में व्याघ्र। कौलव ३ में सूकर। तैतिल ४ में गदहा। गर ५ में हाथी। वणिज ६ में महिष। विष्टि ७ में घोडा। शकुनि ८ में कुत्ता। चतुष्पद ९ में मेंढा। नाग १० में बैल। किंस्तुघ्न ११ में मुर्गा। बवादि क्रमसे १ में श्वेतवस्त्र २ पीत ३ नीला ४ गुलाबी ५ लाल ६ कृष्ण ७ श्याह८चित्र ९ कंबल १० नंगा ११ मेघवर्ण। एवं क्रमसे शस्त्र १ भुशुण्डी (दंडविशेष) २ गदा ३ खड्ग ४ लाठी ५ धनुष ६ बाण ७ मुद्गर ८ कुंत ९ पाश १० अंकुश ११ बाण। भोजन १ अन्न २ पायस ३ भिक्षा ४ पक्वान्न ५ दूध ६ दही ७ खिचरी ८ गुड ९ मध्वन्न १० घी ११ शर्करा। १ कस्तुरी २ कुंकुम ३ सुर्खचंदन ४ मिट्टी ५ गोरोचन ६ हरिद्रा ७ यावक (जौखार) ८ ओतु (बिडालमद) ९ सुर्मा १० अगरु ११ कर्पूर। १ देवता २ भूत ३ सर्प ४ पक्षी ५ पशु ६ मृग ७ ब्राह्मण ८ क्षत्रिय ९ वैश्य १० शूद्र ११ संकर मिश्र। १ पुन्नाग (नाग केशर) २ जाती ३ बकुल ४ केतकी ५ बिल्व ६ आक ७ दूर्वा ८ कमल ९ वेला १० गुलाब ११ जपा (ओंड्र)। १ शिशु २ कुमार ३ गतालका ४ युवा ५ प्रौढा ६ प्रगल्भा ७ वृद्ध ८ वंध्या ९ अतिवंध्या १० सुतार्थिनी ११ प्रव्राजिका। १ पंथा २ भोग ३ रति ४ हास्य ५ दुर्मुखी ६ ज्वरा ७ भुक्ता ८ कंपा ९ ध्याना १० कर्कशा ११ वृद्धा। इतने जो वाहनादि कहे हैं इनका प्रयोजन है कि, उस महीनेमें उन वस्तुओंका अथवा उन वस्तुओंसे आजीवन करनेवालोंका (जो कोई खडे, बैठे, सोयेमें जैसे आजीवन करते हो) नाश होता है ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करण	वाहन	वस्त्र	शस्त्र	भोजन	लेपन	जाति	पुष्प	वय	अवस्था
बव	सिंह	श्वेत	भुशुंडी	अन्न	कस्तूरी	देवता	नाकेशर	शिशु	पंथा
बालव	व्याघ्र	पीत	गदा	पायस	कुंकुम	भूत	जाती	कुमार	भोग
कौलव	वराह	नील	खड्ग	भिक्षा	सुवर्णचंदन	सर्प	बकुल अशोक	गताल्का	रति
तैतिल	गदहा	गुलाबी	लट्ठी	पक्वान्न	मिट्टी	पक्षी	केतकी	युवा	हास्य
गर	हाथी	लाल	धनुष	दूध	गोरोचन	पशु	बिल्व	प्रौढ	दुर्मुखी
वणिज	महिष	कृष्ण	बाण	दही	हरिद्रा	मृग	आक	प्रगल्भा	ज्वरा
विष्टि	घोडा	श्याम	मुद्गर	खिचरी	जोखार	ब्राह्मण	दूर्वा	वृद्ध	भुक्ता
शकुनि	कुत्ता	चित्र	कुंत	गुड	बिडालमद	क्षत्रिय	कमल	वंध्या	कंपा
किंस्तुघ्न	मेंढा	कंबल	पाश	मद्यान्न	सुर्मा	वैश्य	वेला	वंध्या	ध्यान
नाग	बैल	नंगा	अंकुश	घी	अगरु	शूद्र	गुलाब	सुतार्थिनी	कर्कश
चतुष्प	मुर्गा	बादल	बाण	शक्कर	कपूर	संकर	ओट्र	परिव्राजिका	वृद्धा

उ०जा०—संक्रांतिर्धिष्ण्याद्धरविष्ण्यतस्त्रिभेस्वभेनिरुक्तंगमनंततो द्वभे ॥ सुखंत्रिभेपीडनमंगभेसुखंत्रिभेर्थहानीरसभेधनागमः ॥ १८॥

संक्रांति जिस नक्षत्रमें हो उसको पहिले नक्षत्रसे अपने जन्मनक्षत्रपर्यंत गिनना ३ के भीतर हो तो उस महीनेमें गमन होवे परे ६ हो तौ सुख एवं ३ पीडन ६ वस्त्रादिलाभ ३ धनहानि ६ धनागम होता है ॥ १८ ॥

उ०जा०—नृपेक्षणंसर्वकृतिश्चसङ्गरःशास्त्रंविवाहोगमदीक्षणेरवेः ॥ वीर्येथतारावलतःशुभोविधुर्विधोर्बलेकौकंबलेकुजादयः ॥ १९ ॥

सूर्यके बल देखके अथवा रविवारको राजदर्शन, एवं चंद्रके समस्त शुभकृत्य मंगलके संग्राम बुधके शास्त्र पढाना पढना बृहस्पतिके विवाह शुक्रके यात्रा शनिके यज्ञ दीक्षा शुभ होती हैं तथा तारा बलसे चंद्रमा शुभ जानना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्रसंक्रमणमें तारा शुभ हो तो अनिष्टचंद्रभी शुभ होता है ऐसेही चंद्रबलसे रविसंक्रम शुभ होती है अन्य भौमादि ग्रहसंक्रमणमें सूर्यके बल उपचयादि होनेमें शुभ होते हैं ॥ १९ ॥

उ०जा०—स्पष्टार्कसंक्रांतिविहीनउक्तोमासोधिमासक्षयमासकस्तु ॥
द्विसंक्रमस्तत्रविभागयोस्तास्तिथेर्हिमांसौप्रथमान्त्यसंज्ञौ ॥२०॥
इति मुहूर्तचिंतामणौ संक्रांतिप्रकरणम् ॥ ३ ॥

शुक्लप्रतिपदासे अमावास्यापर्यंत चांद्रमास है यदि यह मास सूर्यके स्पष्ट संक्रांतिसे रहित हो तो अधिमास (मलमास वा लौंद) कहते हैं, ऐसेही उक्तमासमें सूर्यस्पष्ट संक्रांति दो आवें तो क्षयमास होता है उक्तमासकी शुक्लकृष्ण भेदसे (शुक्लांत, कृष्णांत) क्षयमासमें जन्म वा मरणमें तिथिका पूर्वभाग हो तो पूर्वमास उत्तरार्द्ध हो तो परमास वर्धापनादियोंको मानते हैं ॥ २० ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्तचिंतामणिभाषायां तृतीयं प्रकरणं समाप्तम् ॥ ३ ॥

अथ गोचरप्रकरणम् ।

उ०जा०—सूर्यारसान्त्येखयुगेग्निमन्देशिवाक्षयोभौमशनीतमश्च ॥
रसांकयोर्लाभशरेगुणांत्येचंद्रोम्बराब्धौगुणनन्दयोश्च॥१॥
लाभाष्टमेचाद्यशरेरसान्त्येनगद्वयेज्ञोद्विशरेब्धिरामे ॥
रसांकयोर्नागविधौखनागेलाभव्ययेदेवगुरुःशराब्धौ ॥२॥

इं०व०—द्व्यंत्येनवांशेद्विगुणोशिवाहौशुक्रःकुनागेद्विनगेग्निरूपे ॥
वेदांबरेपञ्चनिधौगजेपौनंदेशयोर्भानुरसेशिवाग्नौ ॥ ३ ॥

उ०जा०—क्रमाच्छुभोविद्धइतिग्रहःस्यात्पितुःसुतस्यात्रनवेधमाहुः ॥
दुष्टोपिखेटोविपरीतवेधाच्छुभोद्विकोणेशुभदःसितेज्यः४॥

जन्मराशिसे ग्रहभावफलको गोचर कहते हैं सूर्य जन्मराशिसे ६।१२ तथा १०।४ तथा ३।९ तथा ११।५ स्थानोंमें शुभ तथा विरुद्धभी होता है. जैसे छठा सूर्य है और बारहवां कोई ग्रह हो तो वेध हुआ ऐसेही दशमपर चतुर्थसे ३ पर ९ से ११ पर ५ से वेध होता है परंतु पितापुत्र श० सू०चं०बु०का परस्पर वेध नहीं होता तथा मंगल शनि राहु ६।८।११।५।३।१२ में चंद्रमा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१०।४।३।९।११।८।१।५।६।१२।७।२ स्थानोंमें पूर्वोक्तक्रमसे शुभ तथा विद्धभी होता है । बुध २।५ में बृहस्पति ५।४।२।१२।९।१०।२।३।११। ३। शुक्र १।८।२।७।३।१।४।१०।५।९।८।५।९।१०।१२।८।११।३ ये ग्रह इन स्थानोंमें शुभ तथा विद्धभी होते हैं विना वेधके शुभवेधसहित अशुभ होते हैं अनुक्तस्थानोंमें अशुभही जानना यह क्रमवेध कहा गया इससे विपरीत वामवेध होता है जैसे छठे सूर्यपर बारहवें ग्रहका क्रमवेध है जो सूर्य बारहवां छठे ग्रहसे विद्ध हो तो यह वामवेध है जो ग्रह दुष्टस्थानभी हो और उसपर वामवेध हो तो शुभ होताहै और चंद्रमा शुक्लपक्षमें २।९।५ स्थानमें यदि ६।८।४ स्थानस्थित ग्रहोंसे विद्ध न हो तो शुभ होता है ॥१॥२॥३॥४॥

वेधचक्रम् ।

रवेः			मं.	श.	रा.							बुधस्य			
६	१०	३	११	६	११	३	१०	३	११	१	६	७	२	४	६
१२	४	९	५	२	५	१२	७	२	८	५	१२	२	५	३	९
गुरोः									शुक्रस्य						
८	१०	११	६	२	९	७	११	१	२	३	४	५	८	९	१२	११
१	८	१२	४	१२	१०	३	८	८	७	१	१०	९	११	११	६	२

उ०जा०—स्वजन्मराशेरिहवेधमाहुरन्येग्रहाधिष्ठितराशितःसः ॥
हिमाद्रिविध्यांतरएववेधोनसर्वदेशेष्वितिकाश्यपोक्तिः ॥५

एक जन्मराशिसे दूसरा ग्रहाधिष्ठितराशिसे वेध दो प्रकारका किसीके मतसे है काश्यपादि आचार्योंने जन्मराशिहीसे दो भेद कहे हैं जैसा छठा सूर्य स्वराशिसे द्वादशस्थग्रहसे विद्ध न हो तो शुभ है १ तथा सूर्य जन्मराशिसे द्वादश नेष्ट है परंतु स्वाक्रांतराशिसे छठे भावगत ग्रहोंसे विद्ध (वामवेध) हो तो शुभ होता है यह दो प्रकारका वेध हिमालय और विंध्याचलके मध्य (आर्यावर्त्त) देशको है सभी देशोंको नहीं ॥ ५ ॥

शा०वि०—जन्मर्क्षेनिधनंगृहंजनिभतोघातः क्षतिःश्रीर्व्यथा-
चिंतासौख्यकलत्रदौस्थ्यमृतयःस्युर्माननाशःसुखम् ॥
लाभोपायइतिक्रमात्तदशुभध्वस्त्यैजपस्वर्णगो-
दानंशांतिरथोग्रहंत्वशुभदंनोवीक्ष्यमाहुःपरे ॥ ६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मराशिसे ग्रहणकलाफल कहते हैं कि राशिपर हो तो शरीर पीडा दूसरा हानि ३ धन ४ रोग ५ पुत्रकष्ट ६ सौख्य ७ स्त्रीकष्ट ८ मृत्यु ९ मान-नाश १० सुख ११ लाभ १२ नाश ये फल छः महीनेपर्यंत होते हैं अशुभफल दूर करनेके लिये गायत्र्यादि मंत्रोंका जप, गोदान, भूमि सुवर्ण आदि यथाशक्ति दान और कल्पोक्तशांति करनी किसीका मत है कि अनिष्टफल-सूचक ग्रहण देखना नहीं यही उपाय है ॥ ६ ॥

अनु०—पापान्तःपापयुक्द्यूनेपापाच्चन्द्रःशुभोप्यसत् ॥
शुभांशेचाधिमित्रांशेगुरुदृष्टोऽशुभोपिसत् ॥ ७ ॥

शुभफल देनेवाला शुभभावस्थ चंद्रमाभी पापग्रहोंके बीच, तथा पापयुक्त और पापग्रहोंसे सप्तम भावमें हो तो अशुभफल देता है यदि शुभग्रह नवांशमें वा अधिमित्रांशकमें हो और गुरुदृष्ट हो तो अशुभभी शुभ फल देता है ॥७॥

अनु०—सितासितादौसदुष्टेचन्द्रेपक्षौशुभावुभौ ॥
व्यत्यासेचाशुभौप्रोक्तौसंकटेज्जवलंत्विदम् ॥ ८ ॥

शुक्लपक्षके प्रतिपदामें यदि चंद्रमा गोचरसे शुभ हो तो सारा शुक्लपक्ष शुभ और कृष्णपक्षकी प्रतिपदामें अनिष्ट हो तो सारा कृष्णपक्ष शुभ होता है विपरीतमें विपरीत जानना अर्थात् शुक्ल १ में चन्द्र अनिष्ट हो तो वह पक्ष अनिष्ट कृष्णप्रतिपदामें शुभ हो तो वह पक्ष अनिष्ट होवे ॥ ८ ॥

शालिनी—वज्रंशुक्रेज्जेसुमुक्ताप्रवालंभौमेगोगोमेदमार्कौतुनीलम् ॥
केतौवैडूर्यंगुरौपुष्पकंज्ञेपाचिःप्राङ्माणिक्यमर्केतुमध्ये ॥ ९ ॥

ग्रहोंके दुष्टफल परिहारको प्रत्येकके मणि तथा उनके नवरत्न धारणका विधि है कि, शुक्रका हीरा अंगूठी वा बाजूके पूर्व किनारेपर. चंद्रमाका मोती आग्नेयमें. मंगलका मूंगा दक्षिणमें. राहुका गोमेद नैर्ऋत्यमें. शनिका नीलम पश्चिममें. केतुका वैडूर्य वायव्यमें. बृहस्पतिका पुष्पराज उत्तरमें. बुधका पाचि पन्ना ईशानमें. सूर्यका माणिक्य (चुन्नी) मध्यमें रखना अथवा एक २ ग्रहकी प्रीतिके लिये उक्त एक २ धारण वा दान करना ॥९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहदानचक्रम् ।

ग्रह	दा.	०	०	०	०	०	०	०	०	ज.
रवि	माणिक	गेहूं	सवत्सा गौ	रक्तवस्त्र	गुड	सोना	तांबा	रक्तचंदन	मजल	७०००
चंद्र	घृतकलश	श्वेतवस्त्र	दही	शंख	मोती	सोना	चांदी	०	०	११०००
मंगल	मूंगा	गेहूं	मसुरी	बैल लाल	कनेरफूल	रक्तवस्त्र	गुड	सोना	तांबा	१००००
बुध	नीलवस्त्र	मूंग	सोना	दासी	पन्ना	रलस	घृत	कांसी	हाथिदांत	८०००
गुरु	पीतवस्त्र	घोडा	सहत	पीलाअन्न	नोंन	पुष्पराज	चीनी	हरिद्रा	सोना	१९०००
शुक्र	चित्रवस्त्र	चावल	घृत	सोना	चांदी	हीरा	सुगंध	शुभ्रधेनु	यक्षकर्दम	११०००
शनि	उडदी	तेल	नीलम	तिल	कुलथी	भैंस	लोह	कृष्णगौ	भैंसी	२३०००
राहु	गोमेद	घोडा	नीलम	कंबल	तिल	उडद	लोहा	भेड	सोना	१८०००
केतु	वैडूर्य	रत्न	कस्तूरी	कंबल	शस्त्र	गेहूं	नोंन	धूम्रवस्त्र	बक्रा	७०००

(इं० व०) माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणिगारुत्मकंपुष्पकवज्र-
नीलम ॥ गोमेदवैडूर्यकमर्कन:स्यरत्नान्यथोज्ञस्यसुदेसुवर्णम्॥१०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धारण योग्य माणिक्य हैं कि सूर्यका चुन्नी चं० मोती मं० मूंगा बु० पन्ना बृ० पुष्पराज शु० हीरा श० नीलम रा० वैडूर्य के० मरकत और बुधकी प्रीतिके लिये सुवर्ण धारण कहा है ॥ १० ॥

शालिनी—धार्यंलाजावर्त्तकंराहुकेत्वोरौप्यंशुक्रेन्द्वोश्चमुक्तागुरोस्तु ॥
लोहंमंदस्यारभान्वोःप्रवालंताराजन्मर्क्षात्रिरावृत्तितःस्यात् ॥ ११ ॥

बहुमूल्य मणिधारणकी शक्ति न हो तो बुधका सुवर्ण धारण करे यह अर्थ प्रथमश्लोकसे अन्वय है तथा राहुकेतुका (लाजावर्त्त) चं० शु० का चांदी बृ० मोती श० लोहा सू० मं० मूंगा ग्रंथांतरोंमें जडी धारणभी कहे हैं सू० बेलकी, चं० दूदिया, मं० गोजिह्वा, बुधका विधारा, बृ० भारंगी, शु० सिंहपुच्छी, श० बिछली, रा० चंदन, के० आसगंध और जन्मनक्षत्रसे दिननक्षत्रपर्यंत ९ । ९ करके ३ आवृत्ति गिननी जितनवां हो उतनवीं तारा जाननी ॥ ११ ॥

अनु—जन्माख्यसंपद्विपदःक्षेमप्रत्यरिसाधकाः ॥
वधमैत्रातिमैत्रा स्युस्तारानामसदृक्फलाः ॥ १२ ॥

पूर्वश्लोकोक्त क्रमसे गिनके क्रमसे ये तारा होती हैं जन्म १ संपत् २ विपत् ३ क्षेम ४ प्रत्यरि ५ साधक ६ वध ७ मित्र ८ परममित्र ९ जैसे इनके नाम हैं वैसेही फलभी हैं उनमें ३।५।७ तारा अनिष्ट हैं ॥ १२ ॥

शा० वि०—मृत्यौस्वर्णंतिलाद्विपद्यपिगुडंशाकंत्रिजन्मस्वथो
दद्यात्प्रत्यरितारकासुलवणंसर्वोविपत्प्रत्यरिः ॥
मृत्युश्चादिमपर्ययेनशुभदोषैषांद्वितीयेंशका-
नादिप्रान्त्यतृतीयकाअथशुभाःसर्वेतृतीयेस्मृताः ॥१३॥

आवश्यकतामें दुष्टताराओंका परिहार है कि, वध ७ तारामें तिल सुवर्ण विपत् ३ में गुड (चीनि आदि) जन्मतारामें शाक (भूजी) प्रत्यरि ५ में लवण दान करना दूसरा प्रकार परिहार है कि पहिली आवर्तीमें ३ । ५ । ७ तारापूरी ६० घटीपर्यंत नेष्ट है दूसरी आवर्तीमें विपत्की आदिकी २० घडी प्रत्यरिके मध्यकी २० घटी वधकी अंत्यकी २० घटी छोडनी तीसरे आवर्तीमें सभी शुभ है दोष नहीं करते ॥ १३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(अनुष्टुप्) षष्टिघ्नंगतभंभुक्तंघटीयुक्तंयुगाहतम् ॥ शराब्धिघ्न-लब्धतोर्कशेषेवस्थाःक्रियाद्विधोः ॥ १४ ॥

प्रत्येक राशियोंमें चंद्रमाके १२ अवस्था होती है नाम सदृशफल समस्त कार्यारंभमें देतीहैं अश्विनीसे लेकर जितने नक्षत्र हों उससंख्याको ६० से गुना-कर वर्त्तमान नक्षत्रके भुक्तघटी जोड देनी ४ से गुनाकर ४५ से भाग लेना जो लाभ हुआ वह गत अवस्था, शेषवर्त्तमान अवस्था होतीहै ४५ के भाग देनेसे लब्धि १२ से अधिक हो तो १२ से भाग लेकर शेषगतअवस्था जाननी उसके आधेकी वर्त्तमान अवस्था होतीहै मेषके चंद्रमामें प्रवासादि वृषमें नाशादि मिथुनमें मरणादि ऐसेही सबका क्रम जानना प्रकारांतरसे इन अवस्थाओंके गिननेका क्रम चक्रमें लिखाहै ॥ १४ ॥

चन्द्रावस्थाचक्रम् ।

अ.	११। प्रवास	२२॥ नाश	३३॥। मरण	४५ जय	५६। हास्य	६० रति
भ.	७॥ रति	१८॥। क्रीडित	३० सुप्त	४१। भुक्ति	५२॥ ज्वरा	६० कंप
कृ.	३॥। कंप	१५ स्थिर	२६। प्रवास	३७॥ नाश	४८॥। मरण	६० जय
रो.	११। हास्य	२२॥ रति	३३॥। क्रीड़ा	४५ सुप्ति	५६। भुक्ति	६० ज्वर
मृगशि.	७॥ ज्वर	१८॥। कंप	३० स्थिर	४१। प्रवास	५२॥ नाश	६० मरण
आर्द्रा.	३॥। मृति	१५ जय	२६। हास्य	३७॥ रति	४८॥। क्रीड़ा	६० सुप्ति
पुन.	११। भुक्त	२२॥ ज्वर	३३॥। कंप	४५ स्थिरता	५६। प्रवास	६० नाश
तिष्य.	७॥ नाश	१८॥। मरण	३० जय	४१। हास्य	५२॥ रति	६० क्रीड़ा
आश्ले.	३॥। क्रीडा	१५ सुप्ति	२६। भुक्ति	३७॥ ज्वर	४८॥। कंप	६० स्थिर
मघा.	११। प्रवास	२२॥ नाश	३३॥। मरण	४५ जय	५६। हास्य	६० रति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वाफा.	७॥ रति	१८॥। क्रीडा	३० सुप्ति	१४। भक्ति	५२॥ ज्वर	६० कंप
उ. फा.	३॥। कंप	१५ स्थिर	२६। प्रवास	३७॥ नाश	४८॥। मरण	६० जय
हस्त.	११। हास्य	२२॥ रति	३३॥। क्रीडित	४५ सुप्ति	५६। भुक्ति	६० ज्वर
चि.	७॥ ज्वर	१८॥। कंप	३० स्थिर	४१। प्रवास	५२॥ नाश	६० मरण
स्वा.	३॥। मृति	१५ जय	२६। हास्य	३७॥ स्थिर	४८॥। क्रीडा	६० सुप्ति
वि.	११। भुक्ति	२२॥ ज्वर	३३॥। कम्प	४५ स्थिर	५६। प्रवास	६० नाश
अ.	७॥ नाश	१८॥। मृति	३० जय	४१। हास्य	५२॥ रति	६० क्रीडा
ज्ये.	३॥। क्रीडा	१५ सुप्ति	२६। भुक्ति	३७॥ ज्वर	४८॥। कंप	६० स्थिर
मू.	११। प्रवास	२२॥ नाश	३३॥। मृति	४५ जय	५६। हास्य	६० रति
पूर्वा.	७॥ रति	१८॥। क्रीडा	३० सुप्ति	४१। भुक्ति	५२॥ ज्वर	६० कंप
उत्तरा.	३॥। कंप	१५ स्थिर	२६। प्रवास	३७॥ नाश	४८॥। मरण	६० जय
श्रव.	११। हास्य	२२॥ रति	३३॥। क्रीडित	४५ सुप्ति	५६। भुक्ति	६० ज्वर
धनि.	७॥ ज्वर	१८॥। कंप	३० स्थिर	४१। प्रवास	५२॥ नाश	६० मरण
शत.	३॥। मृति	१५ जय	२६। हास्य	३७॥ रति	४८॥। क्रीडा	६० सुप्ति
पूर्वा.	११। भुक्ति.	२२॥ ज्वर	३३॥। कंप	४५ स्थिर	५६। प्रवास	६० नाश
उत्तराभा.	७॥ नाश.	१८॥। मृति	३० जय	४१। हास्य	५२॥ रति	६० क्रीडा
रेवती.	३॥। क्रीडा.	१५ सुप्ति	२६। भुक्ति	३७॥ ज्वर	४८॥। कंप	६० स्थिर

उ०जा०—प्रवासनाशौमरणंजयश्चहास्यारतिक्रीडितसुप्तभुक्ताः ॥
वराख्यकम्पस्थिरताअवस्थामेषात्क्रमान्नामसदृक्फलाःस्युः॥१९॥

अवस्थाओंके नाम प्रवास १ नाश २ मरण ३ जय ४ हास्य ५ रति ६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रीडित ७ सुप्ति ८ मुक्ता ९ ज्वर १० कंप ११ स्थिर १२ जैसे इनके नाम वैसेही फलभी हैं ॥ १५ ॥

शा० वि०—लाजाकुष्ठबलाप्रियङ्गुघनसिद्धार्थैर्निशादारुभिः
पुङ्खालोध्रयुतैर्जलैर्निगदितंस्नानंग्रहोत्थाघहृत् ॥
धेनुःकंव्वरुणो वृषश्च कनकं पीताम्बरं घोटकः
श्वेतोगौरसितामहासिरजइत्येतारवेर्दक्षिणाः ॥ १६ ॥

दुष्ट ग्रहोंके परिहारार्थ स्नानकी औषधी लाजा (खील) वा लज्जावती, कूट, बला (भीमली), मालकांगनी, मुस्ता, सर्षप, देवदारु, हरिद्रा, शरपुंखा, लोध इतने जलमें मिलाके स्नान करनेसे ग्रहोंका अरिष्ट दूर होता है दक्षिणा कहते हैं कि सूर्यके प्रीत्यर्थ गौ, चं० शंख, मं० रक्तवृषभ, बु० सुवर्ण, बृ० पीतांबर शु० घोडा, श० कृष्णगौ, रा० खड्ग, के० बकरा दक्षिणामें देना ॥ १६ ॥

उ० जा०—सूर्यारसौम्यास्फुजितोक्षनागसप्ताद्रिषड्नान्विधुरग्निनाडीः ॥ तमोयमेज्यास्त्रिरसाश्विमासान्नगन्तव्यराशेःफलदाःपुरस्तात् ॥ १७ ॥

सूर्य जिस राशिपर जानेवाला है उसका फल ५ दिन पहले देताहै तथा मंगल८दिनसे बुध ७दिनसे शु० ७दिनसे चं० ३घटी राहु३महीने शनि ६महीने बृ० दो महीने ७अंशसे ऊपर स्पष्ट होनेसे अग्रिमराशिका फल देताहै ॥ १७ ॥

शालिनी—दुष्टेयोगेहेमचन्द्रेचशंखंधान्यंतिथ्यर्द्धेतिथौतंडुलांश्च ॥
वारेरत्नंभेचगांहेमनाड्यांदद्यात्सिधूत्थंचतारासुराजा ॥ १८

आवश्यककृत्यमें दुष्टयोगोंका दान कहते हैं, यहां राजा उपलक्षण है व्यतिपातादिमें सुवर्ण चंद्रदुष्टमें शंख तिथिमें तंडुल वारमें उक्त रत्न राशिमें गौ दुर्महूर्तमें सुवर्ण तारामें लवण देना ॥ १८ ॥

व० जा०—राज्यादिगौरविकुजौफलदौसितेज्यौमध्येसदाशशिसुतश्चरमेज्यमन्दौ ॥ अध्वान्नवह्निभयसन्मतिवस्त्रसौख्यदुःखानिमासिजनिभेरविवासरादौ ॥ १९ ॥

इति मुहूर्तचिंतामणौ चतुर्थगोचरप्रकरणं समाप्तम् ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य मंगल राश्यादि १० अंशमें अपना फल पूर्ण देते हैं अन्य अंशोंमें थोडा थोडा देते हैं एवं शुक्र बृहस्पति मध्यके १० अंशमें बुध पूरे ३० ही अंशोंमें चंद्रमा शनि अंत्य १० अंशमें पूरा फल देता है जिस महीनेमें जन्मनक्षत्र रविवारको हो तो सफर चंद्रवारको हो तो भोजन पदार्थ मिले एवं मं० अग्निभय बु० धर्मबुद्धि बृ० वस्त्रप्राप्ति शु० सौख्य श० दुःख होता है ॥ ११ ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्तचिन्तामणिभाषायां चतुर्थगोचरप्रकरणं समाप्तम् ॥४॥

अथ संस्कारप्रकरणम् ।

अनु०—आद्यंरजःशुभंमाघमार्गशीर्षफाल्गुने ॥
ज्येष्ठश्रावणयोःशुक्लेसद्वारेसत्तनौदिवा ॥ १ ॥
श्रुतित्रयमृदुक्षिप्रध्रुवस्वातौसितांबरे ॥
मध्यंचमूलार्दितिभेपित्र्यमिश्रेपरेष्वसत् ॥ २ ॥

संस्कार ४८ हैं इनमें गर्भाधानोपयोगी रजोदर्शन मुख्य है यह प्रथम ऋतु (रजोदर्शन) माघ, वैशाख आश्विन फाल्गुन ज्येष्ठ श्रावण महीनोंमें शुक्लपक्षमें शुभग्रहोंके वारमें शुभलग्न तथा दिनमें और श्रवण, धनिष्ठा, शततारा, मृदु, क्षिप्र, ध्रुव, स्वाती नक्षत्रोंमें शुभ होता है मूल पूनर्वसु मघा विशाखा कृत्तिकामें मध्यम अन्य नक्षत्रोंमें अशुभ होता है तथा उस समय श्वेतवस्त्र शुभ होता है॥ १ ॥ २ ॥

शालिनी—भद्रानिद्रासंक्रमेदर्शरिक्तासंध्याषष्ठीद्वादशीवैधृतेषु ॥
रोगेष्टम्यांचन्द्रसूर्योपरागेपातेचाद्यंनोरजोदर्शनंसत् ॥३॥

प्रथम रजोदर्शन भद्रामें, सोयेमें, संक्रांतिदिन, अमावास्या, रिक्तातिथि, संध्यासमय, षष्ठी, द्वादशी, वैधृतिमें तथा ज्वरादिरोगमें, अष्टमीमें, सूर्यचंद्र-ग्रहणमें, व्यतीपातमें शुभ नहीं होता नेष्ट फल है ॥ ३ ॥

व०ति०—हस्तानिलाश्विमृगमैत्रवसुध्रुवाख्यैःशक्रान्वितैःशु-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भतिथौशुभवासरेच ॥ स्नायादथार्तववतीमृगपौष्ण-
वायुहस्ताश्विधातृभिररंलभतेचगर्भम् ॥ ४ ॥

हस्त स्वाती मृगशिर अनुराधा धनिष्ठा ध्रुव ज्येष्ठानक्षत्र शुभतिथि (पूर्वोक्त भद्रादिरहित) शुभग्रहोंके वारमें प्रथम रजोवती स्नान करे और मृगशिर रेवती स्वाती हस्त अश्विनी रोहिणीमें स्नान करनेसे शीघ्रही गर्भधारणकरती है॥४॥

ज्ञा०वि०-गंडान्तांत्रिविधंत्यजेन्निधनजन्मर्क्षेचमूलान्तकं
दास्रंपौष्णमघोपरागदिवसंपातंतथावैधृतिम् ॥
पित्रोःश्राद्धदिनंदिवाचपरिघाद्यर्द्धंस्वपत्नीगमे
भान्युत्पातहतानिमृत्युभवनंजन्मर्क्षतःपापभम् ॥ ५ ॥

गर्भाधान मुहूर्त्त कहते हैं। नक्षत्रतिथि लग्न गंडांत जन्मनक्षत्र मूल भरणी अश्विनी रेवती मघा ग्रहणदिन व्यतिपात वैधृति मातापिताका श्राद्धदिन, दिनमें परिघार्द्ध दिव्यांतरिक्ष भूमिज उत्पात जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टम लग्न पापयुक्त नक्षत्र लग्न इतने प्रथम ऋतुस्नाता अपने पत्नीके गमन, गर्भाधानमें वर्जित करने ॥ ५ ॥

शालिनी-भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्वसंध्याभौमार्कार्कीनाद्यरात्रीश्चतस्रः ॥
गर्भाधानंत्युत्तरेन्द्रार्कमैत्रब्रह्मस्वातीविष्णुवस्वम्बुपेसत्॥६॥

भद्रा षष्ठी पर्वदिन रिक्कातिथि संध्यासमय मंगल रवि शनिवार और रजोदर्शनसे लेकर ४ रात्रि वर्जित करके तीन उत्तरा मृगशिर हस्त अनुराधा रोहिणी स्वाती श्रवण धनिष्ठा शतभिषामें गर्भाधान करना ॥ ६ ॥

इं०व०-केन्द्रत्रिकोणेषुशुभैश्चपापैरुर्यायारिगैःपुंग्रहदुष्टलग्ने ॥
ओजांशगेन्दावपियुग्मरात्रौचित्रादितीज्याश्विषुमध्यमंस्यात् ७॥

केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ में शुभग्रह, ३।६।११ भावोंमें पापग्रह होवें तथा पुरुषग्रह (सू०मं०वृ०) लग्नको देखे चंद्रमा विषमराशिके अंशकमें होवे ऐसे लग्नमें तथा समरात्रिमें गर्भाधान करना स्त्रीग्रह बली चंद्रमांशकमें तथा विषमरात्रिमें आधान हो तो कन्या होती है पुंग्रह बली तथा समरात्रिमें पुत्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है मिश्रयोगोंमें नपुंसक होता है और चित्रा पुनर्वसु पुष्य अश्विनी नक्षत्र गर्भाधानको मध्यम हैं पूर्वोक्तोंके न मिलनेमें इनमेंभी करते हैं ॥ ७ ॥

शा०वि०—जीवार्कारदिनेमृगेज्यनिर्ऋतिश्रोत्रादितिब्रध्नभै-
रिक्तामार्करसाष्टवर्ज्यतिथिभिर्मासाधिपेपीवरे ॥
सीमन्तोष्टमषष्ठमासिशुभदैःकेन्द्रत्रिकोणेखलै-
र्लाभारित्रिषुवाध्रुवान्त्यसदहेलग्नेचपुम्भांशके ॥ ८॥

गर्भके निश्चय हुएमें सीमंतोन्नयन मुहूर्त कहते हैं कि, बृहस्पति मंगल सूर्यवार हस्त मृगशिर पुष्य मूल श्रवण पुनर्वसुमें सीमंत संस्कार करना रिक्ता ४।९।१४ अमा द्वादशी षष्ठी अष्टमी तिथि छोडके छठे आठवें महीनेमें जिसमें मासेश बलवान् हो तथा शुभग्रह केंद्र त्रिकोणोंमें पापग्रह ३।६।११ भावोंमें हों लग्नमें पुरुष राशिका अंशक हो शुभवारके दिन नक्षत्र विकल्पसे कहते हैं कि अथवा ध्रुवनक्षत्र एवं रेवतीमें सीमंत संस्कार करना ॥ ८ ॥

व०ति०—मासेश्वराः सितकुजेज्यरवीन्दुसौरिचन्द्रात्मजास्त-
नुपचन्द्रदिवाकराःस्युः ॥ स्त्रीणांविधोर्बलमुशन्ति
विवाहगर्भसंस्कारयोरितरकर्मसुभर्तुरेव ॥ ९ ॥

गर्भ रहेमें प्रथम मासका स्वामी शुक्र २ का मंगल ३ का बृहस्पति ४ का सूर्य ५ का चंद्रमा ६ का शनि ७ का बुध आठवेंका लग्नेश ९ का चंद्रमा १० का सूर्य है इनके बलवान् होनेमें गर्भपुष्ट निर्बलतासे अपने मासमें क्षीणादि करता है और विवाहमें एवं गर्भसंस्कार गर्भाधानादियोंमें स्त्रियोंको पृथक् चंद्रबल (चंद्रशुद्धि) आवश्यक है अन्य समस्त कृत्योंमें सौभाग्यवतीको भर्त्ताकी चंद्रशुद्धि देखी जातीही स्त्रियोंकी पृथक् नहीं ॥ ९ ॥

इं०व०—पूर्वोदितैःपुंसवनंविधेयंमासेतृतीयेत्वथविष्णुपूजा ॥
मासेष्टमेविष्णुविधातृजीवैर्लग्नेशुभेमृत्युगृहेचशुद्धे ॥ १० ॥

सीमंतोक्त तिथिवार नक्षत्रोंमें तीसरे वा चौथे महीनेमें गर्भका पुंसवन संस्कार करना तथा पुंवार पुरुषलग्न और पुरुषनाम नक्षत्रोंमें पुंसवन करते हैं एवं ती-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरे महीनेमें विष्णुपूजा आठवेंमें विष्णु ब्रह्मा बृहस्पतिका पूजन करना जितने गर्भसंस्कार कहे हैं इन सबमें शुभलग्न तथा अष्टमभाव शुद्ध चाहिये ॥ १० ॥

उ०जा०–तज्जातकर्मादिशिशोर्विधेयंपर्वाख्यरिक्तोनतिथौ शुभेह्नि ॥
एकादशद्वादशकेपिघस्रेमृदुध्रुवक्षिप्रचरोडुषुस्यात् ॥ ११ ॥

पुत्रोत्पन्न होतेही नालच्छेदनके पहले जातकर्म करना यदि वह समय किसी प्रकार व्यतीत हो जाय तो नामकर्मके साथही करना इसलिये जातकर्मादियों-का एकही मुहूर्त्त कहते हैं कि रिक्कातिथि पूर्वदिन छोडके शुभवारमें ग्यार-हवें अथवा बारहवें दिन मृदु ध्रुव क्षिप्र नक्षत्रोंमें करना कहता है ब्राह्मणका ११ दिनमें क्षत्रियोंका १३ में वैश्योंका १६ में सूत्रधार सूतकांतमें करना शूद्रोंका महीनेमें । मुख्य काल व्यतीत हुएमें उत्तरायणादि समयकी पूर्वोक्त अपेक्षा है मुख्यकालमें विशेष विचार नहीं ॥ ११ ॥

व०ति–पौष्णध्रुवेन्दुकरवातहयेषुसूतीस्नानं समित्रभरवीज्यकुजे-
षुशस्तम् ॥ नार्द्रात्रयश्रुतिमघान्तकमिश्रमूलत्वाष्ट्रे ज्ञ-
सौरिवसुषड्रविरिक्ततिथ्याम् ॥ १२ ॥

रेवती ध्रुव नक्षत्र मृगशिर हस्त स्वाती अश्विनीमें सूतिकाने स्नान करना आर्द्रासे तीन श्रवण मघा भरणी मिश्र संज्ञक एवं मूल चित्रा नक्षत्र बुध शनि-वार ८।६।१२।४।९।१४ तिथि सूतिकाके स्नानको न लेने ॥ १२ ॥

ज्ञा०वि–मासेचेत्प्रथमेभवेत्सदशनोबालोविनश्येत्स्वयं
हन्यात्सक्रमतोऽनुजातभगिनीमात्रग्रजान्द्व्यादिके ॥
षष्ठादौलभतेहिभोगमतुलंतातात्सुखंपुष्टतां
लक्ष्मीसौख्यमथोजनौसदशनोवोर्ध्वंस्वपित्रादिहा ॥ १३ ॥

बालकके पहिले महीनेमें दांत ऊगें तो स्वयं नष्ट होवे दूसरेमें कनिष्ठ भाईको एवं ३ में भगिनी ४ में माता ५ में ज्येष्ठभ्राताको नाश करे छठेमें बहुत भोग ७ में पितासे सुख ८ में पुष्टता ९ में धन १० में सौख्य ११ में सुख होवे यदि जन्मही दंतसहित हो अथवा पहिले ऊपरके पंक्तिके दांत आवें तो पित्रादियोंका नाश करता है ॥ १३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनु०-दोलारोहेऽर्कभात्पञ्चशरपञ्चेषुसप्तभैः ॥
नैरुज्यंमरणंकार्श्यं व्याधिः सौख्यंक्रमाच्छशोः ॥ १४ ॥

बालकको दोला (पालने) में झुलानेके लिये दोलाचक्र है कि, सूर्यके नक्षत्रसे ५ नक्षत्रमें निरोगी उपरांत ५ में मरण फिर ५ में कृशता ५ में रोगी ७ में सौख्य होता है ॥ १४ ॥

व० ति०-दन्तार्कभूपधृतिदिङ्मितवासरेस्याद्वारेशुभेमृदुल-
घुध्रुवभैः शिशूनाम् ॥ दोलाधिरूढिरथनिष्क्रमणं
चतुर्थमासेगमोक्तसमयेर्कमितेऽह्निवास्यात् ॥ १५ ॥

दोलारोहणको उक्त चक्रमें मुहूर्त्त है कि ३२।१२।१६।१८।१० वें दिनोंमें शुभवारमें मृदु लघु ध्रुवनक्षत्रोंमें बालकोंका दोलारोहण करना और चौथे महीनेमें तथा यात्रोक्त तिथि वार नक्षत्रोंमें निष्क्रमण करना ॥ १५ ॥

भु०-कवीज्यास्तचैत्राधिमासेनपौषेजलंपूजयेत्सूतिकामासपूर्त्तौ ॥
बुधेंद्वीज्यवारेविरिक्तेतिथौहिश्रुतीज्यादितीन्द्वर्कनैर्ऋत्यमैत्रैः १६

शुक्रास्त, गुर्वस्त, चैत्र, पौषमास, रिक्तातिथि, मलमास छोडके प्रसूतिसे एक मास पूरे हुएमें बुध चंद्र बृहस्पतिवारमें श्रवण पुष्य पुनर्वसु मृगशिर हस्त मूल अनुराधा नक्षत्रोंमें सूतिकाका जलपूजन करना ॥ १६ ॥

स्रग्धरा-रिक्तानंदाष्टदर्शाहरिदिवसमथोसौरिभौमार्कवारां-
ल्लग्नंजन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगंमीनमेषालिकंच ॥
हित्वाषष्ठात्समेमास्यथचमृगदृशांपञ्चमादोजमासे
नक्षत्रैःस्यात्स्थिराख्यैःसमृदुलघुचरैर्बालकान्नाशनंसत् ॥ १७ ॥

निष्क्रमणसे उपरांत पुत्रका छठे आदि सममास ६। ८। १०। १२ में तथा कन्याका पांचवें आदि विषम ५। ७। ९। ११ मासमें अन्नप्राशन करना इसमें रिक्ता ४। ९। १४। नंदा १। ६। ११ अष्ट ८ दर्श ३० हरि १२ तिथि शनि मंगल सूर्यवार जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टम लग्न एवं नवांशक और १२।१।८लग्न छोडके स्थिर मृदु लघु चर नक्षत्र लेने॥ १७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व० ति०—केन्द्रत्रिकोणसहजेषुशुभैः खशुद्धेलग्नेत्रिलाभरिपुगैश्चवद-
न्तिपापैः ॥ लग्नाष्टषष्ठरहितंशशिनंप्रशस्तंमैत्राम्बुपानि-
लजनुर्भमसच्चकेचित् ॥ १८ ॥

अन्नप्राशनमें लग्नशुद्धि कहते हैं कि, केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ५।९ सहज ३ भावोंमें शुभग्रह ३ । ११ । ६ भावोंमें पापग्रह हों दशम १० भाव शुद्ध (ग्रहरहित) हो चंद्रमा १।८।६ स्थानोंसे अन्य भावमें हो ऐसे लग्नमें अन्नप्राशन शुभ होता है तथा अनुराधा शततारा स्वाती और जन्मनक्षत्रको कोई अशुभ कहते हैं ॥ १८ ॥

अनु०—क्षीणेन्दुपूर्णचन्द्रेज्यज्ञभौमार्कार्किभार्गवैः ॥
त्रिकोणव्ययकेन्द्राष्टस्थितैरुक्तंग्रहैः फलम् ॥ १९ ॥
भिक्षाशीयज्ञकृद्दीर्घजीवीज्ञानीचपित्तरुक् ॥
कुष्ठीचान्नक्लेशवातव्याधिमान्भोगभागिति ॥ २० ॥

अन्नप्राशनमें ग्रहभाव फल है कि, त्रिकोण ९।५ व्यय १२ केंद्र १।४।७।१० अष्ट ८ वें भावोंमेंसे किसीमें क्षीणचंद्रमा हो तो भिक्षाका अन्न खानेवाला होवे एवं पूर्णचंद्रसे यज्ञ करनेवाला बृहस्पतिसे दीर्घायु बुधसे ज्ञानी मंगलसे पित्तरोगी सूर्यसे कुष्ठी (रुधिरसंबंधी रोगी) शनिसे अन्नक्लेश (अन्न पचे नहीं वा अन्न मिलना कठिन) हो तथा वातरोगीभी होवे शुक्रसे भोगी (सुख भोगनेवाला) वह बालक होवे ॥ १९ ॥ २० ॥

व० ति०—पृथ्वींवराहमभिपूज्यकुजेविशुद्धेरिक्तेतिथौ व्रजति
पञ्चममासिबालम् ॥ बद्ध्वाशुभेह्निकटिसूत्रमथध्रुवेन्दु-
ज्येष्ठर्क्षमैत्रलघुभैरुपवेशयेत्कौ ॥ २१ ॥

पंचम मासमें वा अन्नप्राशनसमयमें भूम्युपवेशन संस्कार कहते हैं कि पृथ्वी, वराह ग्रहोंकी पूजा करके मंगलकी शुद्धिमें रिक्ता ४।९।१४ तिथियोंको छोडके चरलग्नमें ध्रुव, मैत्र, मृगशिर, ज्येष्ठा, लघुनक्षत्रोंमें बालकके कटिसूत्र (तागडी कर्धनी) बांधके पृथ्वीमें बिठलाना ॥ २१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शालिनी—तस्मिन्काले स्थापयेत्तत्पुरस्ताद्वस्त्रंशस्त्रंपुस्तकंलेख-
नींच ॥ स्वर्णंरौप्यंयच्चगृह्णातिबालस्तैराजीवैस्तस्य
वृत्तिःप्रदिष्टा ॥ २२ ॥

भूम्युपवेशन समयमें आजीविकाकी परीक्षा है कि, बालकके आगे वस्त्र, शस्त्र, पुस्तक, कलम, सोना, चांदी, औरभी आजीवनोपयोगी वस्तु रखनी बालक जिस वस्तुको प्रथम ग्रहण करे उस वस्तुसंबंधी कृत्यसे आजीवन होवे उसीकी वृत्तिसे प्रतिष्ठा पावे ॥ २२ ॥

स्रग्धरा—वारेभौमार्किहीनेध्रुवमृदुलघुभैर्विष्णुमूलादितीन्द्र-
स्वातीवस्वभ्युपेतैर्मिथुनमृगसुताकुम्भगोमीनलग्ने ॥
सौम्यैःकेन्द्रत्रिकोणैरशुभगगनगैःशुक्लभत्रिसंस्थै-
स्ताम्बूलंसार्द्धमासद्वयमितसमयेप्रोक्तमन्नाशनेवा ॥२३

मंगल शनिरहित वारमें श्रवण मूल पुनर्वसु ज्येष्ठा स्वाती धनिष्ठा ध्रुव मृदु नक्षत्रोंमें मिथुन मकर कन्या कुंभ वृष मीन लग्नमें केंद्र १। ४। ७। १० के शुभग्रह ३। ६। ११ के पापग्रहोंमें बालकको पानसुपारी खिलाना यह कर्म ढाई महीनेमें अथवा अन्नप्राशनके दिन करना ॥ २३ ॥

स्रग्धरा—हित्वैतांश्चैत्रपौषावमहरिशयनंजन्ममासंचरिक्तां
युग्माब्दंजन्मतारामृतुमुनिवसुभिः संमितेमास्यथोवा ॥
जन्माहात्सूर्यभूपैःपरिमितदिवसेज्ञेज्यशुक्रेन्दुवारेऽ-
थोजाब्देविष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैःकर्णवेधःप्रशस्तः ॥२४

"कर्णवेधका मुहूर्त" चैत्र पौष महीना सौर मानसे तथा क्षयतिथि (जन्ममास) जन्मदिनसे ३० दिन रिक्ता ४। ९। १४ तिथियुग्म २। ४ ६। ८। १०। १२ वर्ष जन्मतारा १। १०। १९ वें नक्षत्र जन्मनक्षत्रसे इतने वर्जित करके ६। ७। ८ वें महीने अथवा जन्मदिनसे १२। १६ वें दिनमें इनसे उपरांत विषम वर्षमें बुध बृहस्पति शुक्र चंद्रवार एवं श्रवण धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृदु, लघु, नक्षत्रोंमें कर्णवेध शुभ होता है ॥ २४ ॥

महार्षिणी—संशुद्धेमृतिभवने त्रिकोणकेन्द्रन्यायस्थैः शुभखचरैः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्णाख्यलग्ने ॥ पापाख्यैररिसहजायगेहसंस्थैर्लग्नस्थेत्रिदशगुरौशुभावहः स्यात् ॥ २५ ॥

कर्णवेधमें लग्नशुद्धि अष्टम स्थान ग्रहरहित हो त्रिकोण ९ । ५ केंद्र १ । ४ । ७ । १० तथा ३ । ११ स्थानोंमें शुभग्रह बृहस्पति शुक्रके लग्नों २ । ७ । ९ । १२ में तथा बृहस्पति लग्नमें हों ऐसे लग्नमें कर्णवेध शुभ होता है और जन्मोत्सव कृत्य सौरवर्ष पूर्ण हुएमें "जिस दिन सूर्य जन्मके राश्यादिमें आवे" करते हैं. दाक्षिणात्य जन्मतिथिभी मानते हैं ॥ २५ ॥

स्रग्धरा—गीर्वाणाम्बुप्रतिष्ठापरिणयदहनाधानगेहप्रवेशा-
श्चौलंराजाभिषेकोव्रतमपिशुभदंनैवयाम्यायनेस्यात् ॥
नोवाबाल्यास्तवार्द्धंसुरगुरुसितयोर्नैवकेतूदयेस्यात्
पक्षंवार्द्धंचकेचिज्जहतितमपरेयावदीक्षांतदुग्ये ॥ २६ ॥

देवमंदिर एवं जलाशयकी प्रतिष्ठा, विवाह, अग्न्याधान, चूडाकर्म, व्रतबंध, राज्याभिषेक, गृहप्रवेश, दक्षिणायनमें तथा बृहस्पति शुक्रके बाल्य वृद्धअस्तमें केतु (पुच्छलतारा) के उदयमें न करने जब केतु अस्त हो जावे तौ १५ वा ७ दिन औरभी छोडने किसीका मत है कि उग्र द्विशिख त्रिशिख तामस कीलकादि संज्ञक धूम्रकेतु जबतक देखे जावें तबतक दोष है उपरांत नहीं ॥ २६ ॥

अनु०—पुरःपश्चाद्गुरोर्बाल्यंत्रिदशाहंचवार्द्धकम् ॥
पक्षंपञ्चदिनंतेद्वेगुरोःपक्षमुदाहृते ॥ २७ ॥
तेदशाहंद्वयोःप्रोक्तेकैश्चित्सप्तदिनंपरैः ॥
त्र्यहंत्वात्ययिकेप्यन्यैरर्द्धाहंचत्र्यहंविधोः ॥ २८ ॥

शुक्रके पूर्वोदय होनेमें तीन दिन पश्चिमोदयमें १० दिन बालत्व रहता है तथा पूर्वास्तमें १५ दिन पश्चिमास्तमें ५ दिन वृद्धत्व होता है बृहस्पति १५ दिन बाल १५ दिन वृद्ध होता है ॥ २७ ॥ किसीके मतसे बृहस्पति शुक्रके उदय तथा अस्तमें बाल्य वार्द्धकके १० । १० दिन हैं किसीने ७ ही दिन कहे हैं और किसीका मत है कि आत्ययिकमें यदि कर्त्तव्य कृत्यकी फिर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिनशुद्धयादि न मिलें, समय निकल जाता हो, तथा उस समयके उस कार्यके न करनेसे पुनः वह कार्य नाश हो तो तीनही दिन छोडने और चंद्रमाका वृद्धत्व ३ दिन बालत्वका आधा दिन छोडना ॥ २८ ॥

स्रग्धरा—चूडावर्षात्तृतीयात्प्रभवतिविषमेष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी
पर्वोनाहेविचैत्रोदगयनसमयेज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् ॥
वारेलग्नांशयोश्चास्वभनिधनतनौनैधनेशुद्धियुक्ते
शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः ॥ २९ ॥

रथो०—क्षीणचन्द्रकुजसौरिभास्करैर्मृत्युशस्त्रमृतिपङ्गुताज्वराः ॥
स्युःक्रमेणबुधजीवभार्गवैःकेन्द्रगैश्चशुभमिष्टतारया ॥३० ॥

व्रतबंधसे पृथक् चूडाकर्म करना हो तो मुहूर्त है कि तीसरे वर्षसे विषम ३। ५। ७ वर्षोंमें रिक्ता ४।९।१४ आद्य १ षष्ठी ६ पर्वदिन चैत्रमास छोडके उत्तरायणमें बुध बृहस्पति शुक्र चंद्रवारमें जन्मराशिलग्नसे अष्टम लग्न न हो अष्टमस्थानमें शुक्रसे अन्य कोई ग्रह न हो जन्ममास छोडके और ज्येष्ठासहित अनुराधारहित मृदु चर लघु नक्षत्रोंमें लग्नसे ११।६।३ भावोंसे पापग्रह केंद्र कोणोंमें शुभग्रह होनेमें चूडाकर्म करना ॥ २९ ॥ लग्नमें केंद्रों १। ४। ७। १० में क्षीण चंद्र हो तो मृत्यु मंगल हो तो शस्त्राघात शनिसे पंगुला (लंगडा) सूर्यसे ज्वर तथा बुध बृहस्पति शुक्रसे शुभफल होता है परंतु इसमें ताराशुद्धि आवश्यक है जन्म विपत् प्रत्यरि वध तारा न लेनी यह विचार वैदिक मुंडन चौल अवैदिक मुंडन सुखार्थ क्षौरमें तुल्य है ॥ ३० ॥

अनु०—पञ्चमासाधिकेमातुर्गर्भेचौलंशिशोर्नहि ॥
पञ्चवर्षाधिकेश्रेष्ठंगर्भिण्यामपिमातरि ॥ ३१ ॥

चौलवाले बालककी माताका गर्भ पांच महीनेसे ऊपरका हो तो पांच वर्षके भीतर अवस्थावालेका चूडाकर्म न करना बालक पांच वर्षसे अधिक हो तो पांच महीनेसे अधिक गर्भवती माता होनेमें भी दोष नहीं ॥ ३१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शालि०-तारादौष्टचेन्जेत्रिकोणेच्चगेवाक्षौरंसत्स्यात्सौम्यमित्रस्ववर्गे।
सौम्येभेन्जेशोभनेदुष्टताराशस्ताज्ञेयाक्षौरयात्रादिकृत्ये॥३२॥

यदि चंद्रमा त्रिकोण ५ । ९ वा उच्च २ राशिमें हो अथवा बुध गुरु शुक्रके षड्वर्गमें तथा गोचरसे शुभस्थानमें हो शुभनक्षत्रमें क्षौर एवं यात्रादि कृत्य दुष्टतारामेंभी कर लेने ॥ ३२ ॥

अनु०-ऋतुमत्याः सूतिकायाःसूनोश्चौलादिनाचरेत् ॥
ज्येष्ठापत्यस्यनज्येष्ठैकैश्चिन्मार्गोपिनेष्यते ॥ ३३ ॥

बालककी माता रजोवती अथवा प्रसूति हो तो चौलादि (चूडा व्रतबंध) विवाह न करने और आद्यगर्भ कन्या पुत्रके चौलव्रत विवाह ज्येष्ठके महीनेमें न करने कोई मार्गशीर्षमेंभी न करने कहते हैं ॥ ३३ ॥

शा०वि०-दन्तक्षौरनखक्रियात्रविहिताचौलोदितेवारभे
मन्दाङ्गारखीन्विहायनवमंघस्रंचसंध्यांतथा ॥
रिक्तांपर्वनिशांनिरासनरणग्रामप्रयाणोद्यत-
स्नाताभ्यक्तकृताशनैर्नहिपुनः कार्याहितप्रेप्सुभिः ॥३४॥

सामान्य क्षौर दंत, केश, नखक्रियाभी चौलोक्त नक्षत्र वारादिकोंमें करने परंतु शनि मंगल सूर्यवारमें एक क्षौरसे नववें दिनमें संध्याकालमें रिक्तातिथि पर्वदिन रात्रिसमयमें न करना विना आसन, रण वा ग्रामांतरके तैयारीमें न्हायके नित्य नैमित्तिक कर्म करके, तेल उबटन लगायके भोजन करके, शृंगार भूषण वस्त्रादि पहनके शुभ चाहनेवालोंने क्षौर न करना ॥ ३४ ॥

मं०भा०-ऋतुपाणिपीडभृतिबन्धमोक्षणे क्षुरकर्मचद्वि-
जनृपाज्ञयाचरेत् ॥ शववाहतीर्थगमाब्धिसंप्लुम-
ज्जनक्षुरमाचरेन्नखलु गर्भिणीपतिः ॥ ३५ ॥

यज्ञमें, विप्राज्ञासे, विवाहमें, गोदानसंस्कारमें, मातापिताके मरणमें, कैदसे छूटनेमें, ब्राह्मण तथा राजाकी आज्ञासे क्षौर अनुक्त दिनमेंभी कर लेना और गर्भिणी स्त्रीके पतिने प्रेतके साथ न जाना तीर्थयात्रा समुद्रस्नान और क्षौर न करना ॥ ३५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भु० प्र०—नृपाणांहितंक्षौरभेश्मश्रुकर्मदिनेपञ्चमेपञ्चमेस्वोदयेवा ॥ षडग्निस्त्रिमैत्रोष्टकः पञ्चपित्र्योऽब्दतोऽध्यर्यमाक्षौरकृन्मृत्युमेति ॥ ३६ ॥

श्मश्रुकर्म शृंगारार्थ क्षौर राजाओंने क्षौरोक्त नक्षत्रमें अथवा पांचवें पांचवें दिनमें नित्य करना अथवा स्वोदयमें जैसे मेष लग्नमें १३।२० अंशपर्यंत अश्विनी उदय २६।४० पर्यंत भरणीका ३० पर्यंत कृत्तिकाका उदय होता है जो कार्य क्षौरादि अश्विनीमें उक्त है वह मेषलग्नके १३।२० अंशभीतर कर लेना ऐसेही सभी नक्षत्र जानना और छः आवर्ती कृत्तिकामें ३ अनुराधामें ८ रोहिणीमें ५ मघामें ४ उत्तराफाल्गुनीमें मतांतरसे ४ आवर्ती सभी उत्तराओंमें जो एकही वर्षमें क्षौर करे तो मृत्यु पावे ॥ ३६ ॥

पं० चा०—गणेशविष्णुवाग्रमाःप्रपूज्यपञ्चमाब्दकेतिथौ शिवार्कदिग्द्विषट्शरत्रिकेरवावुदक् ॥ लघुश्रवोनिलान्त्यभादितीशतक्षमित्रभेचरोनसत्तनौशिशोर्लिपिग्रहःसतांदिने ॥ ३७॥

बालकके पांचवें वर्षमें गणेश विष्णु सरस्वती लक्ष्मीका पूजन करके ११। १२।१०।२।६।५।३तिथियोंमें सूर्यके उत्तरायणमें लघु नत्रक्ष श्रवण स्वाती रेवती पुनर्वसु आर्द्रा चित्रा अनुराधा नक्षत्रोंमें चंद्र बुध गुरु शुक्रवारमें चर १।४।७।१० रहित शुभलग्नमें अक्षरारंभ करना ॥ ३७ ॥

पं० चा०—मृगात्कराच्छ्रुतेस्त्रयेश्विमूलपूर्विकात्रयेगुरुद्वयेर्कजीववित्सितेऽह्निषट्शरत्रिके ॥ शिवार्कदिग्द्विकेतिथौध्रुवांत्यमित्रभेपरैःशुभरैधीतिरुत्तमात्रिकोणकेन्द्रगैःस्मृता॥३८॥

मृगशिर, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शततारा, मूल, तीन पूर्वा, पुष्य, आश्लेषा नक्षत्र रवि गुरु बुध शुक्रवार एवं६।५।३।११। १२।१०।२ तिथियोंमें तथा शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ में हो ऐसे मुहूर्त्तमें विद्या पढनेका आरंभ करना कोई ध्रुव, रेवती, अनुराधामेंभी कहते हैं । तथा अनध्यायभी विद्यारंभमें न लेने ॥ ३८ ॥

शा० वि०—विप्राणांव्रतबन्धनंनिगदितंगर्भाज्जनेर्वाष्टमे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्षेवाप्यथपञ्चमेक्षितिभुजांषष्ठेतथैकादशे ॥
वैश्यानांपुनरष्टमेप्यथपुनः स्याद्वादशेवत्सरे
कालेथद्विगुणेगतेनिगदितेगौणंतदाहुर्बुधाः ॥ ३९ ॥

व्रतबंधके लिये मुख्य काल नित्य एवं काम्य ब्रह्मवर्चस्वादि दो प्रकार है गर्भसे अथवा जन्मसे सौरवर्ष प्रमाणसे ब्राह्मणका ८ वर्षमें क्षत्रियका ११ में वैश्यका १२ में मुख्यकाल नित्य संज्ञक है तथा ब्राह्मणके ५ वर्षमें क्षत्रियका ६ में वैश्यका ८ में काम्य संज्ञक मुख्यकाल है गर्भ वा जन्मसें नित्य संज्ञक मुख्य काल द्विगुणपर्यंत गौण काल है जैसे ब्राह्मणके १६ क्षत्रियके २२ वैश्यके २४ वर्षपर्यंत गौणकाल है इनसे ऊपर अतिकाल है ॥ ३९ ॥

व० ति०—क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वा रौद्रार्कविद्रुसितेन्दुदिनेव्रतंसत् ॥ द्वित्रीषुरुद्ररविदिक्प्रमितेतिथौहिकृष्णादिमत्रिलवकेपिनचापराह्णे ॥ ४० ॥

क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु, आश्लेषा, मूल, तीन पूर्वा, आर्द्रा नक्षत्रोंमें तथा सूर्य बुध गुरु शुक्र चंद्रवारोंमें २।३।५।११।१२।१० तिथियोंमें तथा कृष्णपक्षके पूर्व त्रिभागमें व्रतबंध शुभ होता है परंतु अपराह्णमें नहीं महीनोंमें उत्तरायणके छः महीने उक्त हैं इसमेंभी चैत्रका तो बडाही माहात्म्य है ॥ ४० ॥

प्रमाणिका—कवीज्यचन्द्रलग्नपारिपौमृतौव्रतेधमाः ॥
व्ययेब्जभार्गवौतथातनौमृतौसुतेखलाः ॥ ४१ ॥

व्रतबंधके लग्नशुद्धि शुक्र, बृहस्पति, चंद्रमा और लग्नेश छठे आठवें स्थानोंमें अधम होते हैं चंद्रमा शुक्र बारहवें स्थानमें ऐसेही फल देते हैं तथा लग्न पंचम अष्टम भावमें पापग्रहभी अधम हैं ॥ ४१ ॥

अनु०—व्रतबन्धेषडष्टिःफवर्जिताःशोभनाःशुभाः ॥
त्रिषडायेखलाःकर्कगोस्थःपूर्णोविधुस्तनौ ॥ ४२ ॥

व्रतबंधमें शुभग्रह ८।६।१२स्थानोंमें अशुभ अन्योंमें शुभ तथा ३।६।११ स्थानोंमें पापग्रह शुभ और वृष कर्क २।४ राशियोंका चंद्रमा यदि पूर्ण हो तो लग्नमें शुभ होता है ॥ ४२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शालिनी—विप्राधीशौभार्गवेज्यौकुजार्कौराजन्यानामोषधी-
शोविशांच ॥ शूद्राणांज्ञश्चान्त्यजानांशनिः स्या-
च्छाखेशाः स्युर्जीवशुक्रारसौम्याः ॥ ४३ ॥

ब्राह्मणोंके स्वामी शुक्र बृहस्पति, क्षत्रियोंके मंगल सूर्य, वैश्योंका चंद्रमा, शूद्रोंका बुध, चांडालोंका शनि स्वामी है. तथा ऋग्वेदका बृहस्पति, यजुर्वेदका शुक्र, सामवेदका मंगल, अथर्वणका बुध शाखेश है ॥ ४३ ॥

व० ति०—शाखेशवारतनुवीर्यमतीवशस्तंशाखेशसूर्यशशि-
जीवबलेव्रतंसत् ॥ जीवेभृगौरिपुगृहेविजितेचनी-
चेस्याद्वेदशास्त्रविधिनारहितोव्रतेन ॥ ४४ ॥

व्रतबंधमें शाखेश, वेदेशका वार तथा लग्न और गोचरोक्त बलीभी अति उत्तम होता है तथा शाखेश, सूर्य, चंद्रमा, बृहस्पतिका बल व्रतबंधमें मुख्य है इनके शुभ होनेमें शुभ अशुभमें अशुभ होता है यदि बृहस्पति शुक्र शत्रुराशि नीचराशिमें हो तथा विजित (ग्रहयुद्धमें पराजित) हों तो व्रतबंधवाला वेद, शास्त्र और नित्य नैमित्तिक श्रौतस्मार्त कर्मोंसे रहित होवे उपलक्षणसे इनके नीचांशकादियोंकाभी यही फल है ॥ ४४ ॥

अनु०—जन्मर्क्षमासलग्नादौव्रतेविद्याधिकोव्रती ॥
आद्यगर्भेपिविप्राणांक्षत्रादीनामनादिमे ॥ ४५ ॥

व्रतबंधमें जन्मनक्षत्र जन्ममास जन्मलग्नादियोंका दोष ब्राह्मणके आद्यगर्भ तथा द्वितीयादि गर्भकोभी और क्षत्रिय वैश्यके द्वितीयादि गर्भको नहीं क्षत्रियादियोंके आद्यगर्भमात्रको दोष है द्वितीयादियोंको दोष नहीं ॥४५॥

अनु०—बटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तमः ॥
श्रेष्ठोगुरुः खषट्त्र्याद्येपूजयान्यत्रनिन्दितः ॥ ४६ ॥

बालकके व्रतबंधमें कन्याके विवाहमें जन्मराशिसे ५ । ९ । ११ । २ । ७ स्थानमें गोचरसे बृहस्पति श्रेष्ठ होता है १० । ६ । ३ । १ में पूजा शांति करके लेना अन्य ४ । ८ । १२ में निंदित है ॥ ४६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनु०-स्वोच्चेस्वभेस्वमैत्रेवास्वांशेवर्गोत्तमेगुरुः ॥
रिःफाष्टतूर्यगोपीष्टोनीचारिस्थः शुभोप्यसत् ॥ ४७ ॥

बृहस्पति अपने उच्च ४ स्वभवन ९ । १२ स्वमैत्र १ । ८ स्वांश ९ । १२ के और वर्गोत्तमांशमें अथवा उक्त उच्चादि अंशकोंमें हो तो गोचरसे ४ । ८ । १२ मेंभी हो तौभी दोष नहीं और नीच १० और शत्रुराशि नवांशकोंमें गोचरका शुभभी अशुभ होता है ॥ ४७ ॥

अनु०-कृष्णप्रदोषेऽनध्यायेज्ञनौनिइयपराह्णके ॥
प्राक्संध्यागर्जितेनेष्टोव्रतबन्धोगलग्रहे ॥ ४८ ॥

कृष्णपक्ष, प्रथम, त्रिभाग (प्रतिपदासे पंचमीपर्यंत) छोडके व्रतबंधमें अयोग्य है शुक्ल द्वितीयासे समस्त शुक्लपक्ष तथा कृष्णपंचमीपर्यंत उक्त है और जिस दिन प्रदोष हो, अनध्याय शनिवार रात्रिमें अपराह्ण (दिनके पिछले त्रिभाग) में प्राक्संध्या (पूर्वोक्त लक्षणसे पहिली संध्या) के मेघ गर्जनमें तथा गलग्रह ४ । ७ । ८ । ९ । १३ । १४ । १५ । १ तिथियोंमें व्रतबंध न करना ॥ ४८ ॥

अनु०-क्रूरोजडोभवेत्पापः पटुः षट्कर्मकृद्बुधः ॥
यज्ञार्थभाक्तथासूर्खोरव्यद्यंशेतनौक्रमात् ॥ ४९ ॥

व्रतबंधके लग्नमें सूर्यका नवांश हो तो बटु क्रूरबुद्धि एवं चंद्रमाके मूर्ख मंगलके पापी बुधके चतुर बृहस्पतिके षट्कर्मा (यजन १ याजन २ दान ३ प्रतिग्रह ४ अध्ययन ५ अध्यापन ६ करनेवाला) शुक्रके यज्ञ करनेवाला, धनवान् शनिके अंशमें मूर्ख होवे ॥ ४९ ॥

त्रोटक-विद्यानिरतः शुभराशिलवेपापांशगतेहिदरिद्रतरः ॥
चन्द्रेस्वलवेबहुदुःखयुतःकर्णादितिभेधनवान्स्वलवे ॥ ५० ॥

व्रतबंधमें चंद्रमा शुभराशियोंके अंशकमें हो तो व्रतबंधवाला विद्यामें तत्पर रहे पापग्रह राशियोंके अंशकमें हो तो अतिदरिद्री होवे यदि कर्कांशकमें हो तो बहुत दुःखोंसे युक्त होवे परंतु श्रवण एवं पुनर्वसु नक्षत्रमें स्वांशकी धनवान् करता है ॥ ५० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनु०—राजसेवीवैश्यवृत्तिः शस्त्रवृत्तिश्चपाठकः ॥
प्राज्ञोर्थवान्म्लेच्छसेवीकेन्द्रेसूर्यादिखेचरैः ॥ ५१ ॥

केंद्रमें सूर्य हो तो राजाकी सेवा करनेवाला चंद्रमा हो तो वैश्यवृत्ति (दुकानदार) एवं मंग० शस्त्रवृत्ति बु० पढानेवाला बृह० प्राज्ञ (ज्ञानी) शु० धनवान् श० म्लेच्छोंकी सेवा करनेवाला होवे ॥ ५१ ॥

अनु०—शुक्रेजीवेतथाचन्द्रेसूर्यभौमार्किसंयुते ॥
निर्गुणः क्रूरचेष्टःस्यान्निर्घृणः सद्युतेपटुः ॥ ५२ ॥

शुक्र वा बृहस्पति वा चंद्रमा सूर्ययुक्त हो तो व्रती गुणरहित होवे मंगलयुक्त हो तो हिंसक और शनियुत हो तो चतुर होवे ॥ ५२ ॥

प्रमाणिका—विधौसितांशगेसितेत्रिकोणगेगुरौतनौ ॥
समस्तवेदविद्द्वितीयमांशगेतिनिर्घृणः ॥ ५३ ॥

यदि चंद्रमा शुक्रके २। ७ अंशकमें त्रिकोण ९। ५ भावमें हो तथा बृहस्पति लग्नमें हो तो व्रती समस्त वेदका जाननेवाला होवे यदि लग्नके बृहस्पतिमें चंद्रमा शनिके अंशमें हो तो अतीव निर्लज्ज होवे ॥ ५३ ॥

ज०च०—शुचिशुक्रपौषतपसांदिगश्विरुद्रार्कसंख्यसिततिथयः ॥
भूतादित्रितयाष्टमीसंक्रमणंचव्रतेष्वनध्यायः ॥ ५४ ॥

अनध्याय नित्य, नैमित्तिक दो प्रकार है आषाढशुक्ल दशमी ज्येष्ठशुक्ल द्वितीया पौषशुक्ल एकादशी मन्वादि माघशुक्ल द्वादशी इतने सोपपदा होनेसे अनध्याय हैं तथा चतुर्दशी पूर्णमासी प्रतिपदा, कृष्णपक्षमें अमा अष्टमी एवं सूर्यका निरयन संक्रांति दिन और मन्वादि युगादि इतने व्रतबंधमें अनध्यायत्वसे वर्जित हैं और अनध्याय पूर्व कहे जानने ॥ ५४ ॥

अनु०—अर्कतर्कत्रितिथिषुप्रदोषःस्यात्तदग्रिमैः ॥
रात्र्यर्द्धसार्द्धप्रहरयाममध्यस्थितैः क्रमात् ॥ ५५ ॥

द्वादशीके दिन अर्द्धरात्रिसे पूर्व त्रयोदशी, षष्ठीके दिन डेढ प्रहरसे पूर्व सप्तमी तथा तृतीयाके दिन एक प्रहरसे पूर्व चतुर्थी प्रवृत्त हो तो उस दिन प्रदोष जानना व्रतबंधमें नेष्ट है ॥ ५५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(आर्या) प्राग्ब्रह्मौदनपाकाद्व्रतबन्धानन्तरंयदिचेत् ॥
उत्पातानध्ययनोत्पत्तावपिशान्तिपूर्वकंतत्स्यात् ॥ ५६ ॥

व्रतबंधके दिन बह्वृचाओंका ब्रह्मौदन संस्कार होताहै. व्रतबंधसे ऊपर ब्रह्मौदनसे पूर्व यदि गर्जन भूकंप उल्का दिग्दाहादि उत्पात, अनध्याय हो तो शास्त्रोक्त शांति करनी बह्वृचाओंसे अन्योंका उपनयनांग ब्राह्मणभोजन तथा वेदारंभांग ब्राह्मणभोजनपर्यंत मानतेहैं (शांति) स्वस्तिवाचन पायसहोम गायत्री तथा बृहस्पतिसूक्तजप गोदान ब्राह्मण भोजन है ॥ ५६ ॥

(व० ति०) वेदक्रमाच्छशिशिवाहिकरत्रिमूलपूर्वासुपौष्णकरमैत्रमृगादितीज्ये ॥ ध्रौवेषुचाश्विवसुपुष्यकरोत्तरेशकर्णेमृगान्त्यलघुमैत्रधनादितौसत् ॥ ५७ ॥

वेदक्रमसे व्रतबंध नक्षत्र मृगशिर आर्द्रा अश्लेषा हस्त चित्रा स्वाती मूल तीन पूर्वा ऋग्वेदियोंको रेवती हस्त अनुराधा मृगशिर पुनर्वसु पुष्य रोहिणी तीन उत्तरा यजुर्वेदियोंको अश्विनी, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त, तीन उत्तरा, आर्द्रा, श्रवण, सामवेदियोंको मृगशिर, पुष्य, अश्विनी, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, अथर्वणवेदियोंको उपनयनमें विहित हैं ॥ ५७ ॥

वेदपरत्वेनक्षत्रचक्रम् ।

ऋग्वेद.	यजुर्वेद.	सामवेद.	अथर्ववेद.
मृ.	रे.	अश्वि.	मृ.
आ.	ह.	ध.	रे.
अ.	अनु.	पुष्य.	ह.
ह.	मृ.	ह.	अश्वि.
चि.	पु.	उ.	पुष्य.
स्वा.	पु.	आ.	अनु.
मू.	उ.	श्र.	ध.
पू.	रो.	०	पुन.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनु०—नान्दीश्राद्धोत्तरंमातुःपुष्पेचौलान्तरंनहि ॥
शान्त्याचौलंव्रतंपाणिग्रहःकार्योन्यथानसत् ॥ ५८ ॥

नांदीश्राद्धसे ऊपर यदि कार्यवालेकी माता रजस्वला हो जाय तो चूडा, व्रतबंध, विवाह अन्य लग्नमें करना यदि और लग्न न मिले तो शांति करके निश्चित लग्नमें करना शांति (सुवर्णप्रतिमामें लक्ष्मीका पूजन श्रीसूक्तपाठ मृत्युंजयपायसहोम और अभिषेक) करना ॥ ५८ ॥

अनु०—विचैत्रव्रतमासादौविभौमास्तेविभूमिजे ॥
छुरिकाबन्धनंश्रेष्ठंनृपाणांप्राग्विवाहतः ॥ ५९ ॥

क्षत्रियोंका व्रतबंधसे ऊपर विवाहके भीतर छुरिकाबंधन करते हैं यह चैत्र छोडकर व्रतबंधोक्त मासादिमें होता है परंतु इतना विशेष है कि, मंगल अस्त न हो तथा मंगलवार न हो, यह तलवार बांधनेका मुहूर्त है ॥ ५९ ॥

अनु०—केशान्तंषोडशेवर्षेचौलोक्तदिवसेशुभम् ॥
व्रतोक्तदिवसादौदिसमावर्त्तनमिष्यते ॥ ६० ॥
इति मुहूर्तचिन्तामणौ संस्कारप्रकरणं पञ्चमम् ॥ ५ ॥

ब्राह्मणका १६ क्षत्रिय वैश्यका २२ वर्षमें चूडाकर्मोक्त मुहूर्तमें केशांतकर्म करना १३ वर्षमें महानाम्नीव्रत १४ में महाव्रत १५में उपनिषद्व्रत १६ में केशांत तथा गोदान व्रतसंस्कार होते हैं इन सभीमें चौलोक्त मुहूर्त है और वेद तथा विद्या पढके गोदानांत संस्कार करके व्रतबंधादि उक्त मुहूर्तमें समावर्तन संस्कार करना ॥ ६० ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्तचिंतामणिभाषायां संस्कारप्रकरणम् ॥ ५ ॥

अथ विवाहप्रकरणम् ।

समावर्तनानंतर स्वकुलोद्धारकपुत्रप्राप्त्यर्थ विवाह करना कहा है यह ८ प्रकारका है वरको आप बुलायके उसकी कुछ हानि न करके जो कन्या यथाशक्ति अलंकारयुक्त दी जाती है यह ब्राह्म विवाह है. इसका पुत्र पूर्वापर २१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुस्तका उद्धार करता है १ जो यज्ञ कराके दक्षिणामें दी जाती है यह दैव है इसकी संतान पूर्वके १४ पश्चात्के ६ पुस्तको पवित्र करती है २ धर्म सहायार्थ जो वरके याच्ञा करने (मांगने) से दी जाती है वह प्राजापत्य है इसका पुत्र पूर्वापर ६ । ६ पुस्त को पवित्र करता है ३ जो १ गौ १ वृषभ अथवा २ गौ यज्ञके लिये अथवा कन्याहीके लिये वरसे लेकर कन्या दी जाती है परंतु शुल्क (मूल्य) बुद्धिसे न हो तो वह आर्षसंज्ञक है यहभी दैवके तुल्य है ४ कन्याके पित्रादियोंको धन देके अथवा कन्याको धनादिसे संतुष्ट करके जो विवाह है वह आसुर है ५ प्रथमही कन्यावरके प्रेम आलिंगनादि हुएमें उनके इच्छानुकूल विवाह होनेमें गांधर्व है ६ संग्राममें जीतके वा बलात्कारसे कन्या हरण करके राक्षस विवाह है ७ सोते अथवा निशा आदिसे बेहोशमें जो बलात्कारसे कन्याका धर्षण करता है यह अधम, पैशाच विवाह है ८ इनमें प्राजापत्य, ब्राह्म, दैव, ऋषिविवाह है उक्त समयपर शुभफल देते हैं इनसे जो संतान हो वह दैव पैत्र्य कर्ममें पवित्र तथा धर्मात्मा ज्ञानी आस्तिक आदि गुणवान् होती है आर्षविवाहभी विकल्पसे ऐसाही है. आसुर, गांधर्व, राक्षस, पैशाच कनिष्ठ हैं इनके संतान अधर्मी पाखंडी दूषक नास्तिक आदि होती हैं संग्राममें कन्याहरण (राक्षस) तथा गांधर्वका अंग स्वयंवर, ये राजाओंके धर्म हैं अन्यके नहीं द्रव्य देके जो विवाह (आसुर) होता है यह अतीव निंद्य है इसको दैवपित्र्यकर्मोपयोगी धर्मपत्नी धर्मशास्त्र नहीं कहता दासीकी गणनामें है इसके संतानभी शुद्ध नहीं होती इसके आदि ४ विवाहोंको काल नियमभी नहीं जब चाहे तब विवाह करे " विवाहः सार्वकालिकः " यह गृह्यकारवचनभी गांधर्वादि विवाहोंके लिये है ॥

अथ विवाहप्रयोजनम् ।

व० ति०—भार्यात्रिवर्गकरणंशुभशीलयुक्ताशीलंशुभंभवति
लग्नवशेनतस्याः ॥ तस्माद्विवाहसमयःपरिचि-
न्त्यतेहितन्निग्नतामुपगताःसुतशीलधर्माः ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभशीलयुक्त (भर्त्रादियोंको अनुकूल) जो भार्या है वह धर्मार्थकाम त्रिवर्गके साधन योग्य स्थान है उसका शील लग्नके आधीन है वह लग्न विवाहसमयके आधीन है स्त्रियोंका विवाह पुरुषोंका उपनयन दूसरा जन्म है तस्मात् इन समयोंमें जैसा लग्न हो उसके सदृश संतान, स्वभाव और धर्म होते हैं देव, पैत्र्य, मनुष्य ३ ऋण गृहस्थीपर रहते हैं इनके उद्धार करनेवाली शुभसंतान होती है यह संतान शुभलक्षण स्त्रीके आधीन है उसके शुभगुणवती होनेके हेतु विवाहमुहूर्त कहते हैं ॥ १ ॥

स्रग्धरा-आदौसंपूज्यरत्नादिभिरथगणकंपूजयेत्स्वस्थचित्तं
कन्योद्वाहंदिगीशानलहयविशिखेप्रश्नलग्नाद्यदीन्दुः ॥
दृष्टाजीवेनसद्यः परिणयनकरोगोतुलाकर्कटाख्यं
वास्यात्प्रश्नस्यलग्नंशुभखचरयुतालोकितंतद्विदध्यात्॥२॥

यहां अथशब्द ग्रंथमध्य होनेसे मंगलार्थ है प्रथम प्रश्न पूंछनेके लिये स्वस्थचित्त ज्योतिषीको सुवर्ण वस्त्र फलादियोंसे सुपूजित करके कन्याके विवाहके लिये पूछे प्रश्नयोग कहते हैं कि, प्रश्नलग्नसे यदि १०।११।३।७।५ स्थानमें चंद्रमा गुरु दृष्ट हो तो शीघ्र विवाह होगा तथा वृष, तुला, कर्क लग्न प्रश्नमें हो उसे शुभग्रह देखें वा शुभयुक्त हो तो विवाह शीघ्र होवे ॥ २ ॥

द्रु०वि०-विषमभांशगतौशशिभार्गवौतनुगृहंबलिनौय-
दिपश्यतः ॥ रचयतोवरलाभमथोयदायुग-
लभांशगतौयुवतिप्रदौ ॥ ३ ॥

प्रश्नमें चंद्रमा शुक्र यदि विषमराशि विषमनवांशकमें हों बली हों तथा लग्नको देखें तो कन्याको वर मिले तथा वही चंद्रमा शुक्र युग्मराशि नवांशकमें हो तो वरको कन्या मिले ये दोनहूं विवाहयोग एकही प्रयोजनीय हैं ॥ ३ ॥

शालि०-षष्ठाष्टस्थःप्रश्नलग्नाद्यदीन्दुर्लग्नेक्रूरःसप्तमेवाकुजःस्यात् ॥
मूर्त्तावेन्दुःसप्तमेतस्यभौमोरण्डासास्यादष्टसंवत्सरेण॥४॥

यदि प्रश्नलग्नसे चंद्रमा छठा आठवां हो तो आठ वर्षमें विधवा होवे आप-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी मरे १ तथा लग्नमें पापग्रह सप्तममें मंगल हो तो वही फल २ और लग्नमें चंद्रमा सप्तममें मंगल तौभी वही फल है ३ ये वैधव्ययोग हैं ॥ ४ ॥

दोषकं–प्रश्नतनोर्यदिपापनभोगःपञ्चमगोरिपुदृष्टशरीरः ॥
नीचगतश्चतदाखलुकन्यास्यात्कुलटात्वथवामृतवत्सा ॥५॥

प्रश्नलग्नमें पंचम पापग्रह शत्रुग्रहसे दृष्ट तथा नीचराशिगत हो तो व्यभिचारिणी (वेश्या) अथवा मृतवत्सा (मरे पुत्रवाली) होवे ॥ ५ ॥

पुष्पिताग्रा–यदिभवतिसितातिरिक्तपक्षेतनुगृहतःसमराशिगः
शशाङ्कः ॥ अशुभखचरवीक्षितोरिरन्ध्रेभवति
विवाहविनाशकारकोयम् ॥ ६ ॥

यदि कृष्णपक्षका चंद्रमा प्रश्नलग्नसे २।४ आदि राशियोंका ६।८ भावमें पापदृष्ट हो तो विवाहका विनाश (वह विवाह न होने) पावे ॥ ६ ॥

शा०वि०–जन्मोत्थंचविलोक्यबालविधवायोगंविधात्र्यव्रतं
सावित्र्याउतपैप्पलंहिसुतयादद्यादिमांवारहः ॥
सल्लग्नेच्युतमूर्तिपिप्पलघटैःकृत्वाविवाहंस्फुटं
दद्यात्तांचिरजीविनेऽनभवेद्दोषः पुनर्भूभवः ॥ ७ ॥

यदि जन्मके बालवैधव्यकारक जातकोक्तादियोग कन्याके देखे जावे तौ उसके पित्रादियोंने रहः (एकांतमें) निश्चयतासे सावित्रीव्रत करना तथा पिप्पलसंबंधी व्रत करना अथवा शुभलग्नविवाहोक्त सद्गुणसौभाग्यकारकयोगोंमें विष्णुप्रतिमा अश्वत्थ और घटके साथ विवाहविधिसे विवाह करके यह कन्या चिरजीवी (जिस वरके दीर्घायु योग हों) को देना इस उपायके करनेमें वैधव्य दोष और पुनर्भू (दो वरोंके साथ विवाह) का दोषभी नहीं होता॥७॥

स्रग्विणी–प्रश्नलग्नेक्षणेयादृशा पत्ययुक्स्वच्छेया कामिनी
तत्रचेदाव्रजेत् ॥ कन्यकावासुतोवातदापण्डितै-
स्तादृशापत्यमस्याविनिर्दिश्यते ॥ ८ ॥

प्रश्नसमयमें ज्योतिषीके समीप जैसी स्त्री आवे वैसा उत्तर प्रश्नका कहना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जैसे कोई स्त्री पुत्र लेके आवे सो विवाहवाली कन्याके पुत्र होंगे कन्या लेक आवे तो कन्या होंगी दोनहूं हों तो कन्या पुत्र सभी होंगे, उस स्त्रीके जैसे लक्षण सुभगा दुर्भगा पुत्रवती वांझ आदि हों वैसेही कन्याके कहना ॥ ८ ॥

स्रग्विणी-शङ्खभेरीविपञ्चीरवैर्मङ्गलंजायतेवैपरीत्यंतदालक्षयेत् ॥
वायसोवाखरः श्वासृगालोपिवाप्रश्नलग्नक्षणेरौतिनादंयदि ॥ ९ ॥

प्रश्नसमयमें शकुन शंख भेरी (तुरी) वीणा आदि शुभवाद्य सुननेमें, देखनेमें आवे तो मंगल होगा ऐसेही हाथी घोडे छत्र आदि तथा जिन वस्तुओंके देखनेसे चित्त प्रसन्न हो ऐसे मंगलकारी होते हैं वायस, कौवा, गदहा, कुत्ता, स्यार यदि उस समय शब्द करें तो अमंगल जानना उल्लू भैंसेभी ऐसेही हैं ॥ ९ ॥

म०-विश्वस्वातीवैष्णवपूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वाग्नेयैर्वाकरपीडोचितऋक्षैः ॥
वस्त्रालङ्कारादिसमेतैःफलपुष्पैःसंतोष्यादौस्यादनुकन्यावरणंसत् ॥

कन्यावरणमुहूर्त उत्तराषाढा, स्वाती, श्रवण, तीन पूर्वा, अनुराधा, धनिष्ठा, कृत्तिकामें तथा विवाहोक्त नक्षत्रादियोंमें वस्त्र, भूषण आदि वस्तुसहित फल पुष्पोंसे विधिपूर्वक कन्यावरण (सगाई) करना ॥ १० ॥

म०-धरणिदेवोथवाकन्यकासोदरःशुभदिनेगीतवाद्यादिभिःसंयुतः।
वरवृतिंवस्त्रयज्ञोपवीतादिनाध्रुवयुतैर्वह्निपूर्वात्रयैराचरेत् ॥ ११ ॥

ब्राह्मण (पुरोहित) ने अथवा कन्याके सहोदर भाईने शुभवारादि दिनमें तथा ध्रुवनक्षत्रोंसहित कृत्तिका, तीन पूर्वाओंमें गीत वाद्यादि मंगलपूर्वक वस्त्र, भूषण, यज्ञोपवीतादियोंसे वरका वरण (वाग्दान) करना ॥ ११ ॥

व०मा०-गुरुशुद्धिवशेनकन्यकानांसमवर्षेषुषडब्दकोपरिष्टात् ॥
रविशुद्धिवशाच्छुभोवराणामुभयोश्चन्द्रविशुद्धितोविवाहः ॥ १२ ॥

कन्याके गुरुशुद्धि (पूर्वोक्त) वरके सूर्यशुद्धि तथा दोनहूंके चंद्रशुद्धिमें कन्याके अवस्था छः वर्ष ऊपर समवर्षमें वरके विषमवर्षोंमें विवाह शुभ होता है यहां आचार्यांतर मत है कि, जन्मसे विषमवर्षके तीन महीने ऊपर ९ महीने तथा समके तीन महीनेपर्यंत विवाह शुभ होता है ॥ १२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्रु० वि०-मिथुनकुम्भवृषालिमृगाजगेमिथुनगेपिरवौत्रिलवेशुचेः ॥
अलिमृगाजगतेकरपीडनंभवतिकार्तिकपौषमधुष्वपि ॥ १३ ॥

मिथुन, कुंभ, वृष, वृश्चिक, मकर, मेष राशियोंके सूर्यमें विवाह शुभ होता है. इनमें आषाढके त्रिलव (शुक्लप्रतिपदासे दशमीपर्यंत) मात्र शुभ है हरिशयनी एकादशीसे योग्य नहीं तथा वृश्चिकके सूर्यमें कार्तिक, मकरके सूर्यमें पौष, मेषके सूर्यमें चैत्रभी विवाहको लेते हैं ॥ १३ ॥

रथोद्धता-आद्यगर्भसुतकन्ययोर्द्वयोर्जन्ममासभतिथौकरग्रहः ॥
नोचितोथविबुधैः प्रशस्यते चेद्द्वितीयजनुषोः सुतप्रदः ॥ १४ ॥

जन्ममास (जन्मतिथिसे ३० दिन) जन्मनक्षत्र जन्मतिथिमें आद्यगर्भके पुत्र कन्याका विवाह उचित नहीं है. द्वितीयादि गर्भवालोंको पुत्र देनेवाले जन्ममासादि विवाहमें होते हैं ॥ १४ ॥

शालिनी-ज्येष्ठद्वन्द्वंमध्यमंसंप्रदिष्टंत्रिज्येष्ठंचेन्नैवयुक्तंकदापि ॥
कचित्सूर्यवह्निगंप्रोह्यमाहुर्नैवान्योन्यंज्येष्ठयोः स्याद्विवाहः ॥ १५ ॥

ज्येष्ठपुत्र ज्येष्ठकन्या और ज्येष्ठमास विवाहमें यह त्रिज्येष्ठ कदापि योग्य नहीं है. ज्येष्ठपुत्र ज्येष्ठमास अथवा ज्येष्ठकन्या ज्येष्ठमास यह ज्येष्ठद्वंद्व मध्यम होता है. कोई कृत्तिकाके सूर्यपर्यंत त्रिज्येष्ठ वा द्वंद्वका दोष नहीं है ऐसा कहते हैं. और आद्यगर्भके कन्या पुत्रका परस्पर विवाह नहीं होता ॥ १५॥

हरिणी-सुतपरिणयात्षण्मासान्तः सुताकरपीडनंनचनिजकुले-
तद्वद्वामण्डनादपिमुण्डनम् ॥ नचसहजयोर्दैयेभ्रात्रोः सहोद-
रकन्यकेनसहजसुतोद्वाहोद्वार्द्धेशुभेनपितृक्रिया ॥ १६ ॥

पुत्रके विवाहसे छः महीनेपर्यंत कन्याका विवाह न करना. तथा मंडन (विवाह)से मुंडन (चौल) उपनयन और महानाम्न्यादि ४ व्रत छः महीनेपर्यंत न करने. यदि बीचमें संवत्सर बदले जैसे फाल्गुनमें मंगल वा पुत्रोद्वाह हुआ तो वैशाखमें मुंडन अथवा कन्योद्वाह हो सकता है. यह नियम निज कुल (तीन पुरुष सापिंडपर्यंत) का है, तथा मंगलसे ६ महीनेपर्यंत पितृक्रिया

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(श्राद्धादि) न करने और सहोदरभाइयोंको सदोदरकन्या न देने तथा सहोदरोंका विवाहभी ६ महीनेके भीतर एकसे दूसरा न करना, कन्याके विवाहसे ४ दिन पीछे पुत्रका विवाह हो सकता है. परंतु एकोदरप्रसूत कन्या पुत्र वा पुत्र पुत्र वा कन्या कन्याका छः महीनेपर्यंत नहीं होता ॥ १६ ॥

उ० जा०—वध्वावरस्यापिकुलेत्रिपूरुषेनाशंत्रजेत्कश्चननिश्चयोत्तरम् ।
मासोत्तरंतत्रविवाहइष्यतेशान्त्याथवासूतकनिर्गमे परैः ॥१७॥

यदि विवाहमुहूर्त निश्चय (दिनपट्टा) हुएमें वर वा कन्याके त्रिपुरुष (सपिंड तीन पुस्तके भीतर कोई) मर जावे तो एक महीने ऊपर शांतिकरके विवाह करना. कोई आचार्य कहते हैं कि, सूतकोत्तर शांति करके कर लेना, परंतु यह विषय तीन पुरुषवालोंका है माता पिताका नहीं, जैसे पिताका आशौच १ वर्ष, माताका ६ महीने, स्त्रीका ३ महीने, भ्रातृपुत्रादियोंका १ महीना होता है यही हेतु है इसमें और विशेषता है कि दुर्भिक्षमें राज्यभंशमें पिताके प्राणसंकटमें तथा प्रौढा (अतिकालीन कन्या) के विवाहमें किसी प्रकारका प्रतिकूल नहीं है ॥ १७ ॥

उ० जा०—चूडाव्रतंचापिविवाहतोव्रताच्चूडाचनेष्टापुरुषत्रयान्तरे ॥
वधूप्रवेशाच्चसुताविनिर्गमःषण्मासतोवाब्दविभेदतःशुभः॥१८॥

तीन पुरुषके भीतरवालोंके विवाहसे ऊपर छः महीनेपर्यंत वा संवत्सर बदलनेपर्यंत चूडाकर्म व्रतबंध तथा अपिशब्दसे महानाम्न्यादि ४ व्रतभी न करने तथा वधूके प्रवेशसे उतनेही समयपर्यंत कन्याका निर्गम (घरसे बाहर देना) न करना त्रिपुरुषी होती है, चौथे पुरुषको दोष नहीं ॥ १८ ॥

व० ति०—श्वश्रूविनाशमहिजौसुतरांविधत्तःकन्यासुतौनिर्ऋतिजौ
श्वशुरंहतश्च ॥ ज्येष्ठाभजाततनयास्वधवाग्रजंचशक्रा-
ग्निजाभवतिदेवरनाशकर्त्री ॥ १९ ॥

आश्लेषाके उत्पन्न कन्या पुत्र साक्षात् सासको नाश करते हैं. मघा सौतिया सासको तथा मूलके जन्मवाले श्वशुरका नाश करते हैं; तथा ज्येष्ठामें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्मवाली कन्या अपने पतिके सहोदर जेठे भाई (ज्येष्ठ) को, ऐसेही विशाखाके जन्मवाली देवर (भर्ताके सहोदर छोटे भाई) का नाश करती है ग्रथांतरवाक्य ऐसेभी हैं कि ज्येष्ठावाला पुरुष कन्याके ज्येष्ठ भाईको, विशाखावाला छोटे भाई (शाले) को नाश करता है ॥ "पत्न्यग्रजामग्रजं वा हन्ति ज्येष्ठर्क्षजः पुमान् । तथा भार्या स्वसारं वा शालकं वा द्विदैवजः ॥" इति । यहां ज्येष्ठ कनिष्ठ भाइयोंके स्थानमें बहिनभी कही है उक्तसे प्रथम वा पीछेके गर्भवाला कन्या वा पुत्र जो हो यह भावार्थ है ॥ १९ ॥

अनु०-द्वीशाद्यपादत्रयजाकन्यादेवरसौख्यदा ॥
मूलान्तपादसार्पाद्यपादजौतौतयोःशुभौ ॥ २० ॥

पूर्वोक्त दोषोंमें विशेष विचार है कि विशाखाके प्रथम तीन चरणवाली कन्या देवरको दोष नहीं करती. प्रत्युत सुख देनेवाली होती है केवल चतुर्थचरण निषिद्ध है ऐसेही मूलका चतुर्थचरण श्वशुरको, आश्लेषाका प्रथम चरण सासको, वर तथा कन्याको शुभ होता है ॥ २० ॥

अनु०-वर्णोवश्यंतथातारायोनिश्चग्रहमैत्रकम् ॥
गणमैत्रंभकूटंचनाडीचैतेगुणाधिकाः ॥ २१ ॥

विवाहका मेलकविचार कहते हैं कि वर्णमैत्री हो तो १ गुण, वश्यमें २, तारामें ३, योनिमें ४, ग्रहमैत्रीमें ५, गणमैत्रीमें ६, भकूटमैत्रीमें ७, नाडीगुणमें ८ इन सबका योग ३६ गुण होते हैं अधिकमें मेलक शुभ हीनमें क्रमशः अशुभ होता है. इनका प्रत्येक विचार आगे कहते हैं ॥ २१ ॥

प्रमाणिका-द्विजाझषालिकर्कटास्तनोनृपाविशोंघ्रिजाः ॥
वरस्यवर्णतोधिकावधूर्नशस्यतेबुधैः ॥ २२ ॥

मीन, वृश्चिक कर्कट ब्राह्मण तथा १ । ५ । ९ क्षत्रिय, २ । ६ । १० वैश्य, ३ । ७ । ११ शूद्रवर्ण हैं. वरसे हीनवर्ण कन्या शुभ, कन्याके वर्णसे हीनवर्ण वर अच्छा नहीं होता, दोनहूंका एक वर्ण अतिउत्तम होता है वर्णाधिक वर होनेमें १ गुण मिलता है कन्या अधिकमें नहीं ॥ २२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इ०व०—हित्वामृगेन्द्रनरराशिवश्याःसर्वेतथैषांजलजाश्चभक्ष्याः ॥
सर्वेपिसिंहस्यवशेविनालिङ्गेयंनराणांव्यवहारतोऽन्यत् ॥ २३ ॥

वश्यकूट मनुष्यराशियों (३।६।७) के वशवर्ती सिंह विना सभी राशि हैं जलचर राशिभी मनुष्योंका भक्ष्य होनेसे उनके वश्यही हैं तथा सिंहके वश वृश्चिक छोडके सभी राशि हैं अन्य परस्पर वश्यावश्य मानुष व्यवहारसे जानना यहांभी वरके राशिके वश्य कन्याकी राशि होनेमें २ गुण मिलते हैं विपरीतमें नहीं ॥ २३ ॥

अनु०—कन्यर्क्षाद्धरभंयावत्कन्याभंवरभादपि ॥
गणयेन्नवभिःशेषत्रीण्यद्विभमसत्स्मृतम् ॥ २४ ॥

कन्याके नक्षत्रसे वरके नक्षत्र वरनक्षत्रसे कन्याके नक्षत्रपर्यंत गिनके जितने हों ९ से शेषकरके तारा जाननी ३ । ५ । ७ शेष रहें तो अशुभ अन्य शुभ होते हैं शुभसे ३ गुण मिलते हैं ॥ २४ ॥

ज्ञा०वि०—अश्विन्यम्बुपयोर्हयोनिगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः सिंहोवस्वजपाद्वयोः समुदितोयामान्त्ययोः कुञ्जरः ॥ मेषो देवपुरोहितानलभयोःकर्णाम्बुनोर्वानरःस्याद्वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चान्द्राज्जयोन्योरहिः ॥ २५ ॥ ज्येष्ठामैत्रभयोःकुरङ्गउदितोमूलार्द्रयोः श्वातथामार्जारोदितिसार्पयोरथमघायोन्योस्तथैवोन्दुरुः ॥ व्याघ्रोद्वीशभचित्रयोरपिचगौरर्यम्णब्रुध्न्यर्क्षयोर्योनिः पादगयोः परस्परमहावैरंभयोन्योस्त्यजेत् ॥ २६ ॥

योनिकूट । अश्विनी शततारा की अश्वयोनि । स्वाती, हस्त महिष । धनिष्ठा, पूर्वाभाद्र० सिंह । भरणी, रेवती हाथी । पुष्य, कृत्तिका मेष (मेंढा) । श्रवण, पूर्वाषाढा वानर । उत्तराषाढा, अभिजित् नेवला । रोहिणी, मृगशिर, सर्प । ज्येष्ठा, अनुराधा हरिण । मूल, आर्द्रा कुत्ता । पुनर्वसु, आश्लेषा बिल्ली । मघा, पूर्वाफा० चूहा । विशाखा गोयोनि है । चित्रा व्याघ्र । उत्तराफा० उत्तराभा० गोयोनि हैं । एक योनिके वर कन्या उत्तम मित्र समयोनियों के सा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मान्य और परस्पर योनिवैरमें अशुभ होता है. इनका वैर गोव्याघ्रका । गज सिंह । घोडा भैंसा । कुत्ता मृग । बिल्ला सर्प । वानर मेंढा । बिल्ला चूहा । इत्यादि लोकव्यवहारसे जानना । योनिमैत्री होनेमें ४ गुण मिलते हैं॥२५॥२६॥

शा०वि०-मित्राणि द्युमणेः कुजेज्यशशिनः शुक्रार्कजौवैरिणौ सौम्यश्चास्यसमोविधोर्बुधरवीमित्रेनचास्यद्विषत् ॥ शेषाश्चास्यसमाः कुजस्यसुहृदश्चन्द्रेज्यसूर्याबुधः शत्रुःशुक्रशनीसमौ चशशभृत्सूनोः सिताहस्करौ ॥ २७ ॥ मित्रेचास्यरिपुः शशी गुरुशनिक्ष्माजाः समागीष्पतेर्मित्राण्यर्ककुजेन्दवोबुधसितौ शत्रूसमःसूर्यजः ॥ मित्रेसौम्यशनीकवेः शशिरवीशत्रूकुजेज्यौसमौमित्रेशुक्रबुधौशनेः शशिरविक्ष्माजाद्विषोन्यः समः ॥ २८ ॥

ग्रहकूट । सूर्यके मं० बृ० चं० मित्र शु० श० शत्रु बु० सम है । चंद्रमाके बु० सू० मित्र अन्यसम शत्रु कोई नहीं । मंगलके चं० गु०सू० मित्र बुध शत्रु शु० श० सम । बुधके शु०सू०मित्र चं०श० बृ० श० मं० सम । बृहस्पतिके सू० मं० चं० मित्र बु० शु० शत्रु श० सम । शुक्रके बु० श० मित्र चं०सू०शत्रु बृ०मं० सम । शनिके शु० बु० मित्र चं० सू० मं० शत्र बृ० सम है वरकन्याके राशीश मित्र तथा एकाधिपत्य हों तो ५ गुण एव सममित्रमें ४ सम सममें ३ मित्र शत्रुमें २ सम शत्रुमें १ आधा शत्रु शत्रुमें ० मिलता है शत्रु शत्रुका मेल कहीं नहीं होता मृत्युषट्काष्ट होता है ॥२७॥२८॥

मित्रामित्रचक्रम्.

ग्रं.	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
मित्र.	चं. मं. गु.	र. बु.	गु. चं. र.	र. शु.	र. चं. मं.	बु. श.	बु. शु.
सम.	बु.	मं. गु. शु. श.	शु. श.	मं. गु. श.	श.	मं. गु.	गु.
शत्रु.	शु. श.	०	बु.	चं.	बु. शु.	र. चं.	र. चं. मं.

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व०ति०—रक्षोनरामरगणाः क्रमतोमघाहिवस्विन्द्रमूलवरुणा-
निलतक्षराधाः ॥ पूर्वोत्तरात्रयविधात्र्यमेशभानिमै-
त्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥ २९ ॥

मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शताभिषा, कृत्तिका, चित्रा, विशाखा राक्षसगण। तीन पूर्वा, तीन उत्तरा, रोहिणी, भरणी, आर्द्रा, मनुष्यगण और अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिर, श्रवण, रेवती, स्वाती, अश्विनी, पुष्य, हस्त देवगण है ॥ २९ ॥

मालिनी—निजनिजगणमध्येप्रीतिरत्युत्तमास्यादमरमनुजयोः
सामध्यमासंप्रदिष्टा ॥ असुरमनुजयोश्चेन्मृत्युरेवप्र-
दिष्टोदनुजविबुधयोःस्याद्वैरमेकान्ततोत्र ॥ ३० ॥

वरकन्याका एकही गण हो तो अत्यंत प्रीति होती है देवमनुष्यकी मध्यम प्रीति राक्षसमनुष्यकी मृत्यु देवराक्षसका कलह होता है मनुष्यराक्षसमें विशेष यह है कि वर राक्षस कन्या मनुष्य गण हो तो वैर होता है यदि वर मनुष्य कन्या राक्षस गण हो तो वरको मृत्यु यह बहुत प्रमाणोंसे पुष्ट है इस कूटमें गुण साम्यमें ६ गुण देव मनुष्यमें ५ देव राक्षस एवं मनुष्यराक्षसमें गुण ० है कन्या राक्षसी वर देवमें २ कन्या देव वर मनुष्यमें ४ गुण है ॥ ३० ॥

अनु०—विषमात्कन्यकाराशेःषष्ठंषष्ठाष्टकंनसत् ॥
समात्षष्ठंशुभंज्ञेयंविपरीतंतदशुभम् ॥
मृत्युःषट्काष्टकेज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवात्मजे ॥
द्विर्दादशे निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥ ३१ ॥

विषमराशिसे छठी राशि तथा समसे आठवीं वही होती है यह शत्रुषट्काष्टक है, इनके स्वामी शत्रु होते हैं तथा समराशिसे छठी विषमसे आठवीं मित्रषट्काष्टक है इनके स्वामी मित्र होते हैं यह शुभ होता है इससे विपरीत अशुभ है शत्रुषट्काष्टक मृत्यु करता है यदि वरकन्याकी ५। ९ एकसे दूसरी पंचम नवम राशि हो तो पुत्रहानि एवं दूसरी बारहवीं हो तो दरिद्रता होती है अन्यस्थानोंमें शुभ होते हैं ॥ ३१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शा०वि०—प्रोक्तदुष्टभकूटकेपरिणयस्त्वेकाधिपत्येशुभोऽ-
थाराशीश्वरसौहृदेपिगदितोनाड्यर्क्षशुद्धिर्यदि ॥
अन्यर्क्षेशपयोर्बलित्वसहितेनाड्यर्क्षशुद्धौतथा
ताराशुद्धिवशेनराशिवशताभावेनिरुक्ताबुधः ॥३२॥

उक्त प्रकारसे दुष्टभकूट हुएमेंभी परिहार है कि वरकन्याकी राशियोंका स्वामी एकही हो (जैसे १ । ८ का मंगल २।७ का शुक्र) तो विवाह शुभ होता है तथा राशीशोंकी मैत्रीमेंभी शुभ है यदि नाडिशुद्धि नक्षत्रशुद्ध हो यदि उक्तराशीश अंशेशोंकी परस्पर मैत्री हो तथा बलवान्भी हों और नाडीशुद्धि हो तथा ताराशुद्धि हो एवं राशिवश्यताभी योग्यही हो तो ग्रहोंके शत्रुभावका दोष नहीं होता यहां ग्रहमैत्री (मित्रषट्काष्टक) १ एकाधिपत्य २, सबलांशेशमैत्री ३, राशिवश्यता ४, ताराशुद्धि ५ प्रकार षट्काष्टकोंके परिहार हैं इनमेंसे एकके होनेमेंभी षट्काष्टकदोष नहीं होता परंतु नाडी सभीमें होना चाहिये ॥ ३२ ॥

शालि०—मैत्र्यांराशिस्वामिनोरंशनाथद्वन्द्वस्यापिस्याद्गणानांनदोषः।
खेटारित्वंनाशयेत्सद्भकूटंखेटप्रीतिश्चापिदुष्टभकूटम् ॥ ३३ ॥

गणकूट भकूट ग्रहकूटोंका परिहार कन्यावरके राशीश तथा अंशेशोंकी परस्पर मैत्री हो तो दुष्टगण (राक्षस मनुष्यादि) का दोष नहीं होता तथा शुभ राशिकूट (तीसरा ग्यारहवां आदि) हो तो ग्रहोंके शत्रुताका दोष नहीं होता एवं राशीशोंकी प्रीति षट्काष्टकादि दोषोंका नाश करती है ॥ ३३ ॥

स्रग्धरा—ज्यैष्ठार्यम्णेशनीराधिपभयुगयुगंदास्रभंचैकनाडी
पुष्येन्दुत्वाष्ट्रमित्रान्तकवसुजलभंयोनिबुध्न्येचमध्या ॥
वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथोपौष्णभंचापरास्यु-
र्दम्पत्योरेकनाड्यांपरिणयनमसन्मध्यनाड्यांहिमृत्युः ॥ ३४ ॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, उत्तराफाल्गुनी, शततारा इनसे दो दो नक्षत्रोंकी आद्यनाडी पुष्य, मृगशिर, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढा, पूर्वाफा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्तराभाद्रपदाकी मध्यनाडी स्वाती, कृत्तिका, आश्लेषा, उत्तराषाढा इनसे दो दो नक्षत्रोंकी अंत्यनाडी होती है. वरकन्याके नक्षत्र एकनाडीमें हो तो अशुभ फल होता है मध्यनाडीमें हो तो दोनहूंकी निश्चय करके मृत्युही होती है मध्यनाडी छोडके पार्श्वनाडियोंका दोष गोदावरीके दक्षिण अथवा क्षत्रिय आदियोंको नहीं किसीका मत है कि आद्यनाडी वरको अंत्य कन्याको मध्य दोनहूंको दोष करती है इनमें अंत्यनाडीको अन्य परिहारांतर होनेमें लेतेभी हैं " चतुस्त्रिद्व्यंघ्रिभोत्थायाः कन्यायाः क्रमशोऽश्विभात् ॥ वह्निभादिन्दुभान्नाडी त्रिचतुःपञ्चपर्वसु ॥ १ ॥ " ग्रंथांतरोंसे त्रिचतुःपंचनाडी कहते हैं कन्याका नक्षत्र चार चरण एकही राशिका हो तो पूर्वोक्त त्रिनाडी एवं तीन चरण एकराशिका हो तो चतुर्नाडी द्विचरणमें पंचनाडी विचारना त्रिनाडी अश्विनीसे, चतुर्नाडी कृत्तिकासे, पंचनाडी मृगशिरसे गिनते हैं परंतु चतुर्नाडी अहल्या देशमें पंचनाडी पंजाबमें त्रिनाडी सर्वत्र वर्जित है कोई नाडीमें नक्षत्रके प्रथम चतुर्थ और तीसरे दूसरे चरणमें विशेष दोष कहते हैं नाडीविचार वरकन्या, स्वामिसेवक, नये मित्र, देश तथा नवीन देश, ग्राम नगर, घरमें है जहां नक्षत्रनाडी हुएमें चरणनाडी न हो तहां दोष अल्प है पूर्वोक्तादि परिहार हुएमें नाडीकी शांतिभी है कि मृत्युंजयादि जप सुवर्णनाडीदान तथा वर्णादि कूटमें गौ अन्य वस्त्र सुवर्ण देना ॥ ३४ ॥

कन्याप.	वर्णगुण.			
ब्राह्मण.	१	०	०	०
क्षत्रिय.	१	१	०	०
वैश्य.	१	१	१	०
शूद्र.	१	१	१	१
	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
	वरपक्षे			

वश्यगुण.

चतुष्पद.	२	॥	१	०	२
मनुष्य.	॥	२	०	०	०
जलचर.	१	०	२	२	२
वनचर.	०	०	२	२	०
कीट.	१	०	१	०	२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ताराचक्रम्.

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

योनिगुणाः.

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा	मा.	मू.	गौ.	भै.	व्या	ह.	वा.	न.	सिं.
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	२	२	०
मेष	१	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	३	२	४	०	२	२	२	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	१	२	३	२	३	२	२	४	५	०	३	२	२	१
भैंस	०	२	३	२	२	२	२	३	४	१	२	३	२	२
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	१	१	४	१	१	२	२
हरिण	३	३	२	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	१
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	३	३	३	०	१	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	०	०	३	२	१	२	२	४

गणगुणाः.

वर \ कन्या	दे.	म.	रा.
दे.	६	५	१
म.	६	६	०
रा.	१	०	६

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहमैत्रीगुणाः.

वर्ग	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
र.	५	५	५	३	५	०	०
चं.	५	५	४	१	४	॥	॥
मं.	५	४	५	॥	५	३	॥
बु.	३	१	॥	५	॥	५	४
गु.	५	४	५	॥	५	॥	३
शु.	५	॥	३	५	॥	५	५
श.	०	॥	॥	४	३	५	५

नाडीचक्रम्.

वर्ग	आ.	म.	अं.
आ.	०	८	८
म.	८	०	८
अं.	८	८	०

भकूटगुणाः.

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष.	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	०	७	७

आर्या—अकचटतपयशवर्गाःखगेशमार्जारसिंहशुनाम्॥
सर्पाखुमृगावीनांनिजपञ्चमवैरिणामष्टौ॥ ३५॥

अवर्ग गरुड। कवर्ग मार्जार। चवर्ग सिंह। टवर्ग कुत्ता। तवर्ग सर्प। पवर्ग चूहा। यवर्ग मृग। शवर्ग अज (बक्रा) ये ८ वर्गोंके स्वामी हैं अप-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेसे पांचवां शत्रु होता है जैसे गरुडका सर्प, मार्जारका चूहा इत्यादि स्त्रीपुरुषके नक्षत्र भक्ष्यभक्षक हो तो शुभ नहीं होता कोई नामाक्षरसेभी वरकन्या स्वामिसेवक आदि सभीको विचारते हैं ॥ ३५ ॥

शालिनी-राश्यैक्येचेद्भिन्नभृक्षद्वयोःस्यान्नक्षत्रैक्येराशियुग्मंतथैव ॥
नाडीदोषोनोगणानांचदोषोनक्षत्रैक्येपादभेदेशुभंस्यात् ॥ ३६॥

यदि वरकन्यादियोंका एक राशि और दो नक्षत्र हों वा एक नक्षत्र हो परंतु राशि दो हों और नक्षत्र तो एक हो परंतु चरण भिन्न हों एकही चरण न हो तो नाडीदोष गणदोष उपलक्षणसे तारादिदोषभी नहीं होते. व्यवहार, राजसेवा, संग्राम, ग्राम, मित्रतामें नामराशिसे फल हैं ॥ ३६ ॥

मं०भा०-कुजशुक्रसौम्यशशिसूर्यचन्द्रजाः कविभौमजी-
वशनिसौरयोगुरुः ॥ इहराशिपाः क्रियमृगा-
स्यतौलिकेन्दुमतो नवांशविधिरुच्यतेबुधैः ॥ ३७॥

राशिस्वामी । मेष वृश्चिकका मंगल, तुला वृषका शुक्र एवं ३ । ६ का बुध, ४ का चन्द्रमा, ५ का सूर्य, ९ । १२ का बृहस्पति, १० । ११ का शनि राशीश हैं । नवांश कहते हैं कि एक राशिके ३० अंश होते हैं इनके९ भाग ३ अंश २० कलाका एक ६ । ४० पर्यंत दो एवं १० । ० ॥ १३। २० । १६ । ४० ॥ २० । ० ॥ २३ । २० ॥ २६ । ४० ॥ ३० । ०॥ इनकी गिनती १ । ५ । ९ को मेषसे२ । ६ । १० को मकरसे १ । ७ । ११ को तुलासे ४ । ८ । १२ को कर्कसे अर्थात् चरादि गणना है जैसे मेषके ३ । २० तौ मेषका ६ । ४० पर्यंत वृषका नवांश इत्यादि वृषमें ३ । २० लौं मकरका ६ ।४० में कुम्भका इत्यादि सभीके जानने ॥ ३७ ॥

श०व०-समगृहमध्येशशिरविहोरा ॥
विषमभमध्येरविशशिनोः सा ॥ ३८ ॥

होरा । समराशि १५ अंशलौं चन्द्रमाकी उपरांत ३० लौं सूर्यकी विषम राशिमें १५ लौं सूर्यकी उपरांत चन्द्रमाकी होरा होती है ॥ ३८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व०ति०—शुक्रज्ञजीवशनिभूतनयस्य बाणशैलाष्टपञ्चविशि-
खासमराशिमध्ये ॥ त्रिंशांशकोविषमभेविपरीतम-
स्माद्रेष्काणकाःप्रथमपञ्चनवाधिपानाम् ॥ ३९ ॥

त्रिंशांशक । समराशिमें ५ अंशपर्यंत शुक्रका तब ७ बुधका तब ८ बृहस्पतिका ५ शनिका ५ मंगलका और विषम राशिमें विपरीत ५ अंश मंगलका ५ शनि ८ बृहस्पति ७ बुध ५ शुक्रका त्रिंशांश होता है । द्रेष्काण । दश अंशपर्यंत जो राशि है उसके स्वामीके ११ से २० पर्यंत उस राशिसे पंचम राशिके स्वामीका २१ से ३० पर्यंत उस राशिसे नवम राशिके स्वामीका द्रेष्काण होता है ॥ ३९ ॥

व०ति०—स्याद्द्वादशांशइहराशितएवगेहंहोराथदृक्कनवमांश-
कसूर्यभागाः ॥ त्रिंशांशकश्चषडिमेकथितास्तु
वर्गाः सौम्यैः शुभंभवतिवाशुभमेवपापैः ॥ ४० ॥

द्वादशांश एकराशिके ३० अंशोंके १२ भाग अढाई २ । ३० अंशका होता है. अपनी राशिसे गिना जाता है जैसे मेषके २।३० अंशमें मेषका द्वादशांश ५ । ० पर्यंत वृषका ७।३० पर्यंत मिथुनका इत्यादि सभीका जानना । होरा, द्रेष्काण, नवांश, द्वादशांश, त्रिंशांश, राशि ये षड्वर्ग हैं शुभग्रहोंके षड्वर्ग सभी कार्यमें शुभ पापका अशुभ होता है ॥ ४० ॥

शा०वि०—ज्येष्ठापौष्णभसार्पभान्त्यघटिकायुग्मं च मूलाश्विनी
पित्र्यादौघटिकाद्वयंनिगदितंतद्भस्यगण्डान्तकम् ॥
कर्कालेयण्डजभांततोऽर्धघटिकासिंहाश्विमेषादिगा
पूर्णान्तेघटिकात्मकंत्वशुभदंनन्दातिथेश्चादिमम् ॥४१॥

तिथ्यादि पंचाग तथा वर्षर्तु मासपक्षदिनादि सभी संधि होती हैं इनमें विशेषतः तिथिनक्षत्रलग्नकी संधियोंकी गंडांत संज्ञा है वह ज्येष्ठा रेवती आश्लेषाके अंत्यके २ घटी अश्विनी मघा मूलके आदिकी २ घटी समस्त ४ । ४ घटियोंका नक्षत्रगंडांत होता है तथा कर्क वृश्चिक मीनके अंतिम आधी घटी मेष सिंह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. eGangotri

धनके आदिकी आधी घटी समस्त घटी लग्नगंडांत होता है एवं १ पूर्णा ५। १०। १५ तिथियोंके अंत्यके १ घटी नंदा १। ६। ११ के आदिके १ घटी समस्त दो घटी तिथिगंडांत होता है गंडांतके उत्पन्न कन्या पुत्र दोषद होते हैं इसका विस्तार नक्षत्रप्रकरणमें कह आये हैं शुभकार्योंमें गंडांत वर्जित है परंतु तिथिगंडांत लग्नगंडांत ग्रथांतरोंमें सामान्यदोष कहा है कि चंद्रमाके बली होनेमें तिथिगंडांत बृहस्पतिके बली होनेमें लग्नगंडांतका दोष नहीं ऐसेही मासांतक ३ दिन वर्षांतके १५ दिन संधिगंडांतसंज्ञक है योग करण संधि १। १ घटी होती है ऐसेही दिन रात्रि अर्द्धरात्रि मध्याह्नादिभी हैं॥ ४१॥

अनु०—लग्नात्पापावृज्वनृजूव्ययार्थस्थौयदातदा॥
कर्त्तरीनामसाज्ञेयामृत्युदारिद्र्यशोकदा॥ ४२॥

लग्नसे पापग्रह दूसरा वक्री तथा बारहवां मार्गी हो तो इसका नाम कर्त्तरी विवाहादियोंमें मृत्यु किंवा दरिद्रता किंवा शोक देती है ऐसेही सप्तमभावमें कर्त्तरी अशुभ कहते हैं तथा चंद्रमाभी उक्तफलकारक है जातकोंमें सभी भावोंमें अपने २ उक्त वस्तुका अनिष्ट फल है॥ ४२॥

अनु०—चंद्रेसूर्यादिसंयुक्तेदारिद्र्यंमरणंशुभम्॥
सौख्यंसापत्न्यवैराग्येपापद्वययुतेमृतिः॥ ४३॥

चंद्रमा सूर्यके साथ हो तो दरिद्रता एवं मंगलके साथ मृत्यु बुधके साथ शुभ बृहस्पतिके साथ सौख्य शुक्रके सापत्न्य (सौकण) शनिके वैराग्य (फकीरी) राहु केतुभी ऐसेही जानना यदि चंद्रमा दो पापग्रहोंसे युक्त हो तो मृत्यु होवे परंतु मित्र स्वक्षेत्र उच्चवर्गोत्तमादिगत चंद्रमा पापयुक्त दोष नहीं करता यह ग्रंथांतरमत है॥ ४३॥

अनु०—जन्मलग्नभयोर्मृत्युराशौनेष्टःकरग्रहः॥
एकाधिपत्येराशीशे मैत्रेवानैवदोषकृत्॥ ४४॥

जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टमलग्न विवाहादि शुभकार्यमें शुभ नहीं होता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परंतु एकाधिपत्य जैसे १ । ८ हो तथा राशीश मैत्री (जैसे ५ । १२) हों तो लग्नाष्टक राश्यष्टकका दोष नहीं होता ॥ ४४ ॥

उ०जा०—मीनोक्षकर्कालिमृगास्त्रियोष्टमंलग्नंयदानाष्टमगेहदोषकृत् ॥
अन्योन्यमित्रत्ववशेनसावधूर्भवेत्सुतायुर्गृहसौख्यभागिनी ॥४५॥

यदि १२।२।४।८।१०।६ ये राशि यदि जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टम हों तो उक्त अष्टकदोष नहीं है क्योंकि इनके स्वामी परस्पर मित्र हैं इससे इन राशियोंके अष्टम होनेमें वधू, पुत्र, आयु और घरके सुखयुक्त होती है मतांतर है कि जो अष्टम राशीश केंद्रमें वा स्वोच्चादिमें हो तो अष्टमोक्त दोष नहीं ॥४५॥

कु०पि—मृतिभवनांशो यदि च विलग्ने तदाधिपतिर्वा नशुभकरः स्यात् ॥ व्ययभवनंवाभवतितदंशस्तदाधिपतिर्वाकलहकरः स्यात् ॥ ४६ ॥

उक्त अष्टमराशिका नवांश अथवा अष्टमेश लग्नमें हो तो शुभ नहीं यदि जन्मलग्न जन्मराशिसे व्ययराशि वा उसका अंश अथवा तदीश लग्नमें हो तो कलहकारक होता है कोई धनहानि कहते हैं ॥ ४६ ॥

वंशस्थ—खरामतोंत्यादितिवाह्निपित्र्यभेखवेदतःकेरदतश्चसार्पभे ॥
खबाणतोश्वेधृतितोर्यमाम्बुपेकृतेभगत्वाष्ट्रभविश्वजीवभे ॥ ४७ ॥
मनोर्द्विदैवानिलसौम्यशाक्रभेकुपक्षतः शैवकरोष्टतोजभे ॥
युगाश्वितोबुध्न्यभतोययाम्यभेखचन्द्रतोमित्रभवासवश्रुतौ ॥४८
भूलेङ्गबाणद्विषनाडिकाःकृतावर्ज्यांशुभेथोविषनाडिकाध्रुवाः ॥
निभभोगेनखतर्कभाजिताःस्पष्टाभवेयुर्विषनाडिकास्तथा ४९

विष्टी रेवती, पुनर्वसु, कृत्तिकाके ३० घटीसे ऊपर ४ घटी एवं रो० २० से श्लेषा ३२ से अश्विनी ५० से भरणी शततारा १८ से पूर्वाफाल्गुनी, [illegible] उत्तराषाढा, पुष्यके २० से विशाखा स्वाती मृगशिर ज्येष्ठा १४ से आर्द्रतके ३१ से पूर्वाभाद्र १६ से उत्तराभाद्र, पूर्वाषाढ, भर-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

णी २४ से अनुराधा, धनिष्ठा, श्रवण १० से मूलके ५६ से । ये विषनाडी सर्वत्र शुभकृत्यमें तथा जन्ममेंभी वर्ज्य (अशुभ फलकारक) हैं यह घटिका षष्टिप्रमाण भुक्तसे जाननी जैसे ६० घटीके नक्षत्रमें उक्त घटीसे विषघटी होती है तो अमुक सर्वभोग होनेमें कितनी घटीसे होंगी उक्त ध्रुवक ६० से गुणाकर सर्वभोगसे भाग लिया स्पष्ट विषघटीका आरंभ मिलता है ग्रंथांतरोंमें परिहार है कि चंद्रमा लग्न विना केंद्रत्रिकोणमें बली हो अथवा लग्नेश शुभयुक्त केंद्रमें हो तो विषघटीका दोष नहीं होता ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥

नक्षत्रविषघटी.

अ.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	आ.
५०	२४	३०	४०	१४	२१	३०	२०	३२
म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अ.	ज्ये.
३०	२०	१८	२१	२०	१४	१४	१०	१४
मू.	पू.	उ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.	रे.
५६	२४	२०	१०	१०	१८	१६	२४	३०

वारविषघटी.

र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
२०	२	१२	१०	७	५	२५

तिथिविषघटी.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	ति.
१५	५	८	७	७	११	४	८	७	१०	३	१३	१४	७	८	घ.

मालिनी—गिरिशभुजगमित्राः पित्र्यवस्वम्बुविश्वेऽभिजिदथ च विधातापीन्द्रइन्द्रानलौच ॥ निर्ऋतिरुदकनाथोऽप्यर्यमाथो भगःस्युःक्रमशइहमुहूर्त्तावासरेबाणचन्द्राः ।५० ॥

एक दिनके १५ मुहूर्तोंके स्वामी महादेव १ सर्प २ मित्र ३ पितर ४ वसु ५ जल ६ विश्वेदेवा ७ अभिजित् ८ ब्रह्मा ९ इंद्र १० इंद्राग्नि ११ राक्षस १२ वरुण १३ अर्यमा १४ भग १५ मुहूर्त २ घटीका होता है ॥ ५० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनु०—शिवोजपादादृष्टौस्युर्भंशाआदितिजीवकौ ॥
विष्ण्वर्कत्वाष्ट्रमरुतोमुहूर्त्तानिशिकीर्तिताः ॥ ५१ ॥

रात्रिमुहूर्त । शिव १ अजचरण २ अहिर्बुध्न्य ३ पूषा ४ अश्वि ५ यम ६ अग्नि ७ ब्रह्मा ८ चंद्रमा ९ अदिति १० बृहस्पति ११ विष्णु १२ सूर्य १३ त्वाष्ट्र १४ वायु १५ ये रात्रिमें मुहूर्ताधीश हैं इनका प्रयोजन यह है कि जो कार्य जिस नक्षत्रमें कहा है वह उसके स्वामी मुहूर्तमें कर लेना "विष्ण्ये प्रोक्तं स्वामितिथ्यंशकेस्य" यह ग्रंथकारनेभी प्रकट कहा है ॥ ५१ ॥

भुजङ्गप्र०—रवावर्यमाब्रह्मरक्षश्चसोमेकुजेवह्निपित्र्येबुधे चाभिजित्स्यात् ॥ गुरौतोयरक्षौभृगौब्राह्मपित्र्येशनावीशसार्पौ मुहूर्त्तानिषिद्धाः ॥ ५२ ॥

रविवारको अर्यमा, चंद्रवारमें ब्रह्मा राक्षस, मंगलको अग्नि पितर, बुधको अभिजित्, बृहस्पतिको जल राक्षस, शुक्रको ब्राह्म पितर, शनिको शिव, सर्प मुहूर्त निषिद्ध होते हैं ॥ ५२ ॥

प्रहर्षिणी—निर्वेधैः शशिकरमूलमैत्र्यपित्र्यंब्राह्मांत्योत्तरपवनैः शुभोविवाहः ॥ रिक्तामारहितातिथौशुभेह्निवैश्वप्रांत्यांघ्रिः श्रुतितिथिभागतोभिजित्स्यात् ॥ ५३ ॥

विवाहमुहूर्त वेधरहित । मृगशिर, हस्त, मूल, अनुराधा, मघा, रोहिणी, रेवती, तीन उत्तरा, स्वाती नक्षत्र तथा शुभग्रहोंके वारमें विवाह शुभ होता है रिक्ता ४ । ९ । १४ अमा ३० तिथि न लेनी तथा विवाहसे ४ दिनके भीतर श्राद्धदिन वा अमा हो तो वह दिन न करना यहभी प्रमाण है उत्तराषाढाका चतुर्थचरण एवं श्रवणके आदि ४ घटी अभिजित् नक्षत्र होता है ॥ ५३ ॥

शा०वि०—वेधेन्योन्यमसौविरञ्च्यभिजितोर्याम्यानुराधक्षयोर्विश्वेन्दोर्हरिपित्र्ययोर्ग्रहकृतोहस्तोत्तराभाद्रयोः ॥ स्वातीवारुणयोर्भवेन्निर्ऋतिभादित्यास्तथोफान्त्ययोः खेटेतत्रगतेतुरीयचरणाद्योर्वातृतीयद्वयोः ॥ ५४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पंचशलाकावेध। रोहिणी अभिजित्। एवं भरणी अनुराधा। उत्तराषाढा मृगशिर। श्रवण मघा। हस्त उत्तराभाद्र०। स्वाती शतभिषा। मूल पुनर्वसु। उत्तराफाल्गुनी रेवतीका परस्पर वेध ग्रहोंका होता है शेष नक्षत्रोंका वेध अधले श्लोकोक्त सप्तशलाकावाला जानना, चरणवेध प्रथम पादका चतुर्थपर द्वितीयका तृतीयपर तृतीयका द्वितीयपर चतुर्थका प्रथमपर होता है॥ ५४॥

शा०वि०—शाक्रेज्येशतभानिलेजलशिवेपौष्णार्यमर्क्षेवसु-
द्वीशेवैश्वसुधांशुभेहयभगेसार्पानुराधेमिथः॥
हस्तोपान्तिमभेविधातृविधिभेमूलादितीत्वाष्ट्रभे-
जांघ्रीयाम्यमघेकृशानुहरिभेविद्धेकुभृद्रेखके॥ ५५॥

सप्तशलाकावेधचक्रम्.

	कृ.	रो.	मृ.	आ.	पु.	पु.	आ.	
भ.								म.
अ.								पू.
रे.								उ.
उ.								ह.
पू.								चि.
श.								स्वा
ध.								वि.
	श्र.	अ.	उ.	पू.	मू.	ज्ये.	अ.	

पंचशलाका.

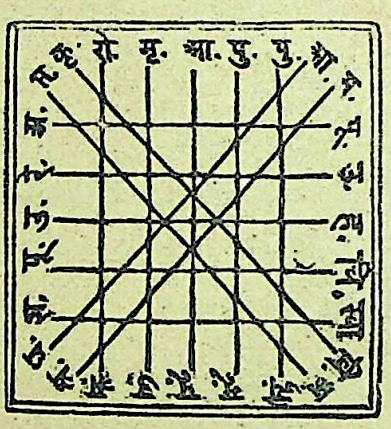

सप्तशलाका। ज्ये०पुष्य। श० कृ०। पूर्वाषा०आर्द्रा। रेवती उत्तराफा०। धनिष्ठा विशाखा। उत्तराषाढा मृगशिर। अश्विनी पूर्वाफा०। आश्लेषा अनु०। हस्त उत्तराभाद्र०। रोहिणी अभिजित्। मूल पुनर्वसु। चित्रा पूर्वाभाद्र०। भर० मघा।कृत्ति०श्रवणका परस्पर सप्तशालाका वेध ग्रहोंका होता है वेधका फल यह है कि "यस्याः शशी सप्तशलाकभिन्नपापैरपापैरथवा विवाहे। विवाहवह्नेन च सा वृताङ्गी श्मशानभूमिं रुदती प्रयाति॥१॥" जिस स्त्रीके विवाहमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चंद्रमा पापग्रहोंके सप्तशलाकासे विद्ध हो तो वह विवाहके वस्त्रोंको लेकर रोती हुई श्मशानभूमिमें जावे अर्थात् शीघ्रही विधवा होकर सकाम न होवे॥५५॥

अनु०—ऋक्षाणि क्रूरविद्धानिक्रूरभुक्तादिकानिच ॥
भुक्त्वाचंद्रेणमुक्तानिशुभार्हाणिप्रचक्षते ॥ ५६ ॥

जो नक्षत्र पापविद्ध होकर छूटें तद्वत् क्रूरगंतव्य हों क्रूराक्रांत हों तो जब वह दोष उनका छूट जाय तबभी चंद्रमाके भुक्त कियेमें वह नक्षत्र शुद्ध (शुभकार्य योग) होता है ग्रंथांतरोंमें द्विराशिभोग नक्षत्रके लिये है कि जिस राशिके भागमें पापग्रह हो वही भाग वर्जित है दूसरा भाग शुभ कार्यमें ग्राह्य है ॥ ५६ ॥

उ० जा०—ज्ञराहुपूर्णेन्दुसिताः स्वपृष्ठेभंसप्तगोजातिशरैर्मितं हि ॥
स्वंलत्तयन्तेर्कशनीज्यभौमाःसूर्याष्टतर्कैग्निमितंपुरस्तात् ॥ ५७ ॥

लत्ता। बुध अपने अधिष्ठित नक्षत्रसे पीछे सातवें नक्षत्रपर लत्तादोष करता है तथा राहु स्वपृष्ठ नववेंपर, पूर्णचंद्रमा बाईसवें नक्षत्रपर यह कृष्णपक्षके ६। ७। ८ के बीच होता है तथा शुक्र स्वपृष्ठ पंचम नक्षत्रपर लत्तादोष करता है तथा सूर्य अपने आक्रांतनक्षत्रसे आगे १२ वें शनि ८ वें बृहस्पति छठे भौम तीसरेपर उक्त दोष करता है वक्री ग्रहकी लत्ताभी उक्त क्रमसे विपरीत जाननी ॥ ५७ ॥

पथ्या आर्या—हर्षेणवैधृतिसाध्यव्यतिपातकगण्डशूलयोगानाम् ॥
अन्तेयन्नक्षत्रंपातेननिपातितंतत्स्यात् ॥ ५८ ॥

पात। हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतिपात, गंड, शूल योगोंका जिस नक्षत्रमें अंत (समाप्ति) हो उसपर पातदोष होता है शुभकार्यमें वर्ज्य है इसीका नाम चंडीशचंडायुधभी है ॥ ५८ ॥

शालिनी—पञ्चास्याजौगोमृगौतौलिकुम्भौकन्यामीनौकर्क्यलीचाप-
युग्मे ॥ तत्रान्योन्यंचन्द्रभान्वोर्निरुक्तंक्रान्तेःसाम्यंनो
शुभंमङ्गलेतत् ॥ ५९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रांतिसाम्य । मेष सिंह । वृष मकर । तुला कुम्भ । कन्या मीन । कर्क वृश्चिक । धन मिथुन राशियोंमें सूर्य चंद्रमा परस्पर एक रेखामें हों तो क्रांतिसाम्यदोष होता है शुभकृत्यमें वर्जित है इसे महापातभी कहते हैं ॥ ५९ ॥

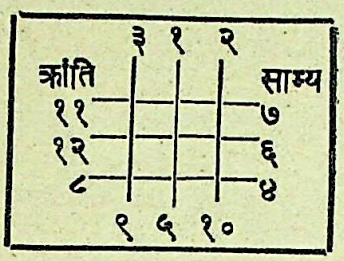

इं० व०—व्याघातगण्डव्यतिपातपूर्वेशूलान्त्यवज्रेपरिघातिगण्डे ॥
योगेविरुद्धेत्वभिजित्समेतोदोषः शशीचेद्विषमर्क्षगोर्कात् ॥ ६० ॥

एकार्गल । व्याघात, गंड, व्यतिपात आदि विरुद्धयोग तथा शूल, वैधृति वज्र, परिघ, अतिगण्ड योग जिस दिन हों उस दिनका नक्षत्र सूर्यके नक्षत्रसे विषम हो तो एकार्गलदोष होता है सूर्यनक्षत्रसे चंद्रर्क्ष सम होनेमें उक्त योगोंके हुएमेंभी नहीं होता इसीको खार्जूरभी कहते हैं ॥६०॥ खार्जूरएकार्गल-चक्रम्.

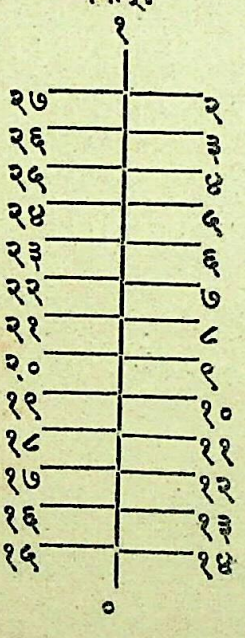

उ० व०—शराष्टदिक्छक्कनगातिधृत्यस्तिथि-
धृतिश्चप्रकृतेश्चपञ्च ॥ उपग्रहाःसूर्यभतोऽ-
ब्जताराः शुभानदेशेकुरुबाह्लिकानाम् ॥ ६१ ॥

उपग्रह । सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाका नक्षत्र ५।८।१०। १४।७।१९।१५।१८।२।२२।२४।२५वां हो तो उपग्रह दोष है बाह्लीक तथा कुरुदेशमें दोष करता है. कोई यहांभी परिहार कहते हैं कि नक्षत्रके जिस चरणपर सूर्य है उक्त संख्याके चंद्रर्क्षकेभी उस चरणपर दोष होता है अन्यपर नहीं ये परिहार उपरोक्त खार्जूर (एकार्गलके) हैं ॥६१॥

अनु०—पातोपग्रहलत्तासुनेष्टोङ्घ्रिःखेटपत्समाः॥
वारस्त्रिघ्नोष्टभिस्तष्टः सैकःस्यादर्द्धयामकः ॥६२॥

पात चंडीश, चंडायुध, उपग्रह लत्तामेंभी चरणवेध दूषित हैं जैसे पात एवं उपग्रह जिस चरणपर हो उतनवां चरण दूषित नक्षत्रका वर्ज्य है तथा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस ग्रहकी लत्ता है वह जिस चरणपर अपने स्थितनक्षत्रके है उतने संख्याक दिन नक्षत्रके चरणपर दोष होता है और पर नहीं अर्द्ध याम है कि वर्त्तमान वार ३ से गुणाकर ८ से तष्ट (शेष) किया जो शेष रहे उसमें १ जोडके अर्द्ध-याम दोष होता है दिनमें यह शुभ कार्यमें वर्ज्य है रात्रिको नहीं ॥ ६२ ॥

अनु०—शक्रार्कदिग्वसुरसाब्ध्यश्विनः कुलिकारवेः ॥
रात्रौनिरेकास्तिथ्यंशाः शनौचान्त्येपिनिन्दिताः ॥ ६३ ॥

कुलिक दिनमें रविवारको १४ वां मुहूर्त चंद्रको १२ मंगलको १० बुधको ८ बृहस्पति ६ शुक्र ४ शनिको २ मुहूर्त कुलिक होता है तथा रात्रिमें उक्तोंमें १ घटायके जैसे सू० १३ चं० ११ मं० ९ बु० ७ बृ० ५ शु० ३ श० १ ये मुहूर्त्त कुलिक होते हैं ये मुहूर्त्त विवाहमें वैधव्यकारक होनेसे अतिनिन्दित हैं इसी हेतु यहां दुबारे कहे हैं प्रथम शुभाशुभप्रकरणमेंभी कह आये थे वहां साधारण दोषगणना है अन्यकार्योंमें इनका फल दोषद नहीं ॥ ६३ ॥

मुहूर्त.

दिवा	आ.	अ.	अ.	म.	घ.	पू. षा.	उ. फा.	श्र.	रो.	ज्ये.	वि.	मू.	श.	उ. फा.	पू.फा.
मुहूर्त्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
रात्रि	आ.	पू. फा.	उ. फा.	रे.	अभि.	भ.	कृ.	रो.	मृ.	पु.	पु.	श्र.	ह.	चि.	स्वा.
मुहूर्त्त	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५

वारदुर्मुहूर्त.

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
उ. फा.	मू.	म.	अभि.	मू.	रो.	अ.
०	रो.	कृ.	०	मृ.	भ.	आ.

इं०व०—चापात्न्यगेगो घटगेपतङ्गेककर्काजगेस्त्रीमिथुनेस्थिते च ॥
सिंहालिगेनक्रघटेसमाः स्युस्तिथ्योद्वितीयाप्रमुखाश्चदग्धाः ॥६४॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दग्धतिथि । धनमीनके सूर्यमें द्वितीया २ । ११ केमें ४ कर्क मेषमें ६ मिथुनकन्यामें ८ सिंह वृश्चिकमें १० मकर तुलाकेमें १२ दग्ध होती हैं ये मासदग्ध तिथि मध्यदेशहीमें वर्जित हैं ॥ ६४ ॥

अ०वि०-लग्नाच्चन्द्रान्मदनभवनगेखेटेनस्यादिहपरिणयनम् ॥
किंवाबाणाशुगमितलवगैर्जामित्रंस्यादशुभकरमिदम् ॥ ६५ ॥

लग्न तथा चंद्रमासे सप्तम ग्रह होनेमें यामित्र दोष होता है विवाहादियोंमें अशुभ फल करता है किंवा ५५ अंशपर लग्न वा चंद्रमा स्थित नवांशपर हो तो विशेष दोष है जैसे तुलाको ५ अंशपर लग्न वा चंद्रमा है तो मेषके ५ अंश ५५ हुए इसमें जो ग्रह हो उसकी यामित्री हुई यह सूक्ष्मयामित्री है इसमें शुभग्रहोंकी यामित्रीका फल ग्रंथांतरोंमें शुभभी है ॥ ६५ ॥

इं०व०-उपग्रहर्क्षंकुरुवाह्लिकेषुकलिङ्गवङ्गेषुचपातितंभम् ॥
सौराष्ट्रशाल्वेषुचलत्तितंभंत्यजेत्तुविद्धंकिलसर्वदेशे ॥ ६६ ॥

कुरुदेश, वाह्लीकदेश (पश्चिममें है) उपग्रहनक्षत्र त्याज्य है अन्य देशोंमें नहीं. कालिंग, वंग (पूर्वमें है), मागधादियोंमें पातदोष (चंडीश चंडायुध) त्याज्य है. सौराष्ट्र, शाल्व (पश्चिम) में लत्ता त्याज्य है और वेध सर्वत्र त्याज्य है कहीं युतिदोष गौडमें यामित्री यमुनु प्रदेशमें कहा है ॥ ६६ ॥

इं०व०-एकार्गलोपग्रहपातलत्तायामित्रकर्त्तर्युदयास्तदोषाः ॥
नश्यन्तिचन्द्रार्कबलोपपन्नेलग्नेयथार्काभ्युदयेतुदोषाः ॥६७॥

एकार्गल (खार्जूर) तथा उपग्रह, लत्ता, पात, यामित्री, कर्त्तरी, उदयास्त (वक्ष्यमाण) इतने दोष विवाहलग्नमें सूर्य चंद्रमाके बलवान् होनेमें नाश हो जाते हैं जैसे सूर्यके उदय होनेमें रात्रिका अंधकार नष्ट होता है ॥ ६७ ॥

उ०जा०-शशाङ्कसूर्यर्क्षयुतेर्भशेषे खंभूयुगाङ्कानिदशेशतिथ्यः ॥
नागेन्दवोंकेन्दुपितानखाश्चेद्भवन्तिचैतेदशयोगसंज्ञाः ॥६८॥

सूर्य चंद्रमाके नक्षत्रसंख्या जोडके २७ से भाग लेना शेष०।१।४।६।१०। ११।१५।१८।१९।२० मेंसे कोई रहे तो दशयोगसंज्ञा होती है ॥६८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शा०वि०—वाताग्न्यग्निमहीपचौरमरणं रुग्वज्रवादाः क्षतियोंगाङ्के दलितेसमेमनुयुतेथौजेतुसैकार्धिते ॥ भंदास्राद-थसंमितास्तुमनुभी रेखाः क्रमात्संलिखेद्वेधोस्मिन् ग्रहचन्द्रयोर्नशुभदः स्यादेकरेखास्थयोः ॥ ६९ ॥

दशयोगका फल है कि० शेषमें वायुदोष १ में मेघभय ४ थेमें अग्निभय एवं ६ राजभी० १० में चौरभय ११ मृत्यु १५ रोग १८ वज्रभी० १९ कलह २० धननाश उक्त अंकोंमेंसे समका आधा करके १४ जोडना जितने हों अश्विन्यादि उतनवां नक्षत्र होता है जैसे समांक १० आधा ५ जुडे १४ तो १९ वां मूल हुआ, यदि विषम अंक हो तो १ जोडके आधा करना जैसे विषमांक १५ एक जोडके १६ आधा ८ तिष्यनक्षत्र हुआ चौदह आडी रेखाका एक चक्र करना उक्तक्रमसे जो नक्षत्र आया उसे आदि चक्ररेखा-ओंके दोनहूं ओर अभिजित् सहित सर्व नक्षत्र लिखने जिन जिन नक्षत्रोंमें जो ग्रह हैं उन्हींमें लिखने चंद्रमाके साथ एक रेखामें कोई ग्रह हो तो दृष्टिरूप वेध है अशुभ होता है । बृहस्पति लग्नेश, शुक्र बलवान् एवं केंद्रगत होनेमें दशदोषका दोष नहीं होता यह ग्रंथांतरमत है ॥ ६९ ॥

शा०—लग्नेनाढ्यायातातिथ्योङ्कतष्टाः शेषेनागद्व्यब्धिकैन्दुसंख्ये ॥ रोगोवह्नीराजचौराश्चमृत्युर्बाणश्चायंदाक्षिणात्यप्रसिद्धः ॥ ७० ॥

लग्नमें शुक्लपक्षप्रतिपदातिथि ८ जोडके ९ से तष्ट करके शेष ८ रहे तो रोग बाण २ शेषमें अग्नि ४ में राजा ६ में चोर १ में मृत्युबाण होता है. यह दाक्षिणात्य, महाराष्ट्रदेशोंमें प्रसिद्ध है अन्यत्र नहीं ॥ ७० ॥

मालिनी—रसगुणशशिनागाढ्यसंक्रान्तियातांशकमितरथ-तष्टाङ्कैर्यदापंचशेषाः ॥ रुगनलनृपचौरामृत्युसंज्ञश्च-बाणो नवहृतशरशेषशेषकैक्येसशल्यः ॥ ७१ ॥

निरयनांश सूर्यसंक्रांतिसे गत अंशोंमें पृथक् पृथक् ६।३।१।८।४ जोडने ९ से तष्ट करके जिस अंकमें ५ शेष रहे वह बाण इस प्रकार जानना कि ६ में ५ शेष रहे तो रोगबाण एवं १ में अग्नि १ राज ८ में चोर ४ में मृत्युबाण होताहै

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह काष्ठशल्यबाण है पूर्वोक्त प्रकारसे ६ आदि अंकोंमें सूर्यगतांश जोडके ९ से शेष करके जो जो अंक शेष है उन सबको जोडके ९ से गुणाकार ५ से शेष करना यदि ५ शेष रहे तो सशल्य (लोह शल्यसहित) जानना अन्यांक शेषमें शल्यरहित होता है सशल्य अतिनिंद्य है ॥ ७१ ॥

ज्ञा० वि०—रात्रौचोररुजौदिवानरपतिर्वह्निः सदासंध्ययोर्मृत्युश्चाथ शनौनृपोविदिमृतिर्भौमेग्निचौरौरवौ॥ रोगोथव्रतगेहगोपनृपसेवायात्रानपाणिग्रहेवर्ज्याश्चक्रमतोबुधैरुगनसक्ष्मापालचौरामृतिः ॥ ७२ ॥

चोर, रोगबाण रात्रिमें अग्नि, नृपबाण दिनमें मृत्युबाण संध्यासमयमें वर्ज्य है तथा शनिवारमें राज, बुधमें मृत्यु, मंगलमें अग्नि, चौर, सूर्यमें रोगबाण वर्जित है और व्रतबंधमें रोगबाण गृहगोपनादि घरके कृत्यमें अग्निबाण राजसेवामें नृपबाण यात्रामें चौर, विवाहमें मृत्युबाण त्याज्य हैं ॥ ७२ ॥

बाणचक्रम्।

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	
रो. बा.	७ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२ १	३ १२ २१ ३०	३ ११ २० २९	९ १८ २७	८ १७ २६	६ १५ २४	७ १६ २५	६ १५ २४	रोगबाणमें ये तिथि निषिद्ध.
अ. बा.	२ २० २९	११ १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २२	४ १३ २२	३ १२ २१	२ ११ २९	१० १६ २८	९ १८ २७	अ. बा. में. निषिद्ध ति.
रा. बा.	४ २२ १	३ २१ ३०	२ २० २९	१० १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	३ १२ ३०	२ १० २९	रा. बा. में निषिद्ध ति.
चौ. बा.	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २३	३ २९ ३०	२ २० २९	१० १९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	चौ. बा. में. ति. निषिद्ध.
मृ. बा.	१ १९ २८	९ १८ १७	८ १७ २६	७ १६ २५	६ १५ २४	५ १४ २३	४ १३ २२	३ १२ २१ ३०	२ ११ २० २९	१० २९ २८	९ १८ २७	८ १७ २६	मृ. बा. में. ति. निषिद्ध.

उ०जा०—त्र्यांशंत्रिकोणंचतुरस्रमस्तंपश्यन्तिखेटाश्चरणाभिवृद्ध्या॥ मन्दोगुरुर्भूमिसुतः परेचक्रमेणसंपूर्णदृशोभवन्ति ॥ ७३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रह अपने स्थित राशिसे ३ । १० भावमें १ चरण दृष्टि ९ । ५ में २ चरण ४ । ८ में ३ चरण ७ में पूरे ४ चरण दृष्टिसे देखते हैं तथा शनि ३ । १० बृहस्पति ९ । ५ मंगल ४ । ८ अन्यग्रह ७ सप्तस्थानमें पूर्ण दृष्टि देखते हैं ॥ ७३ ॥

शिखरिणी—यदालग्नांशेशोलवमथतनुंपश्यतियुतोभवेद्रायं वोढुः शुभफलमनल्पंरचयति ॥ लवद्यूनस्वामीलवमदनभंलग्नम-दनंप्रपश्येद्वावध्वाः शुभमितिरथाज्ञेयमशुभम् ॥ ७४ ॥

भु०प्र०—लवेशोलवंलग्नपोलग्नगेहंप्रपश्येन्मिथोवाशुभंस्याद्वरस्य ॥ लवद्यूनपोंशंद्युनंलग्नपोस्तंमिथोवीक्षतेस्याच्छुभंकन्यकायाः ॥७५॥

मालिनी—लवपतिशुभमित्रंवीक्ष्यतेंशंतनुंवापरिणयनकरस्य स्याच्छुभंशास्त्रदृष्टम् ॥ मदनलवपमित्रंसौम्यमं-शंद्युनंवातनुमदनगृहंचेद्वीक्षतेशर्मवध्वाः ॥ ७६ ॥

उदयास्तशुद्धि । यदि लग्नेश, अंशेश लग्न तथा लग्नांशको देखे यद्वा उनमें युक्त हो तो वरको बहुतही शुभफल होते हैं जैसे मेषलग्नमें मिथुनांशेश बुध तुलाका मिथुनको देखता है इत्यादि लग्नशुद्धिका विचार है, बलवान् नवांशसे सप्तम नवांशका स्वामी अंशसे सप्तमभावको किंवा सप्तम भाव नवांशको देखे वा युक्त हो तथा सप्तमेश सप्तमभावांशेश सप्तमभाव तथा तन्नवांशको देखे वा युक्त हो तो कन्याको अतिशुभफल देते हैं, यदि लग्नेश लग्नांशेश लग्न तथा अंशको न देखें तो वरको अशुभ (मृत्यु), यदि सप्तम भावेश सप्तम भाव नवांशेश सप्तम भाव वा तन्नवांशको न देखे वा युक्त न हो तो कन्याको अनिष्ट होवे ॥ ७४ ॥ लग्नेश लग्नको अंशेश अंशको देखे अथवा परस्पर लग्नेश अंशेश लग्नको देखे तो वरको शुभ होवे तथा सप्तमेश सप्तमभावको सप्तमभावांशेश अंशको अथवा अंशेश भावको भावेश अंशको देखें तो कन्याको शुभ होवे अथवा सप्तमेश लग्नसप्तमभावको तथा सप्तमेशांशेश लग्न सप्तमको देखे तौभी कन्याको शुभ होवे एवं लग्नेश वा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्ननवांशेश सप्तम तथा लग्नको देखे तो दोनोंको शुभ होवे ॥ ७५ ॥ लग्न नवांशेशको कोई शुभग्रह मित्र होकर अपने अंश वा लग्नको देखे तो विवाहमें पुत्रपौत्रादि शुभफल करे सप्तम भावांशेशकाभी मित्र शुभग्रह सप्तम भावको तथा लग्न नवांशको देखे अथवा लग्नसे सप्तमभावको देखे तो वधूको शास्त्रोक्त शुभ (पुत्रपौत्रादि) होवे पापग्रहोंके उक्त प्रकार योग तथा दृष्टिसे सर्वत्र अशुभ जानना ॥ ७६ ॥

मंजुभाषिणी–विषुवायनेषुपरपूर्वमध्यगान्दिवसांस्त्यजेदि-
तरसंक्रमेषुच ॥ घटिकास्तुषोडशशुभक्रिया-
विधौपरतोपिपूर्वमपिसंत्यजेद्बुधः ॥ ७७ ॥

विषुवति १ । ७ संक्रांति अयन ४ । १० संक्रांतिके पूर्वदिन तथा दूसरा दिन और संक्रांतिदिन तीनहूं दिन विवाहव्रतबंधादि शुभकार्यमें वर्जित करने अन्य ८ संक्रांतियोंके संक्रांतिकालसे १६ घटी पूर्व १६ घटी पश्चात्की समस्त ३२ घटी वर्जित हैं ॥ ७७ ॥

अनु०–देवद्यङ्कर्तवोऽष्टाष्टौनाड्योङ्काःखनृपाःक्रमात् ॥
वर्ज्याःसंक्रमणेर्कादेः प्रायोर्कस्यातिनिन्दिताः ॥ ७८ ॥

सूर्यके संक्रमसे पूर्वापरकी ३३ घटी एवं चंद्रमाकी २ मंगलकी ९ बुधकी ६ बृहस्पतिकी ८८ शुक्रकी ९ शनिकी १६० घटी संक्रमणकी शुभकार्यमें वर्जित हैं विशेषविचार संक्रांतिप्रकरणमें कह आये ॥ ७८ ॥

उ० जा०–घस्रेतुलालीबधिरौमृगाश्वौरात्रौचसिंहाजवृषादिवान्धाः ॥
कन्याघृयुक्कर्कटकानिशान्धादिनेघटोन्त्योनिशिपङ्गुसंज्ञः ॥ ७९ ॥

दिनमें ७।८ लग्न बधिर है १० । ९ रात्रिमें बधिर है ५।११ । २ दिनमें ६।३।४ रात्रिमें अंधे हैं ११ । ७ दिनमें १२ रात्रिमें पंगु(खोडे)हैं ॥ ७९ ॥

बधिरान्धवितुलालयोपराह्णेमिथुनंकर्कटकोङ्गनानिशान्धाः ॥
दिवसान्धाहरिगोक्रियास्तुकुम्भाम्भोजकुम्भान्तिमभागसंध्ययोर्हि ८०

९।७।८लग्न अपराह्ण (दिनके पिछले त्रिभाग) में बधिर हैं ३।४।६ रात्रिम अंधे हैं५।९।११दिनमें अंधे हैं १०।११।१२ संध्यासमयमें कुब्ज हैं ॥८०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रहार्षिणी—दारिद्र्यंबधिरतनौदिवान्धलग्नेवैधव्यंशिशुमरणंनिशा-
न्धलग्ने ॥ पंग्वंगेनिखिलधनानिनाशमीयुःसर्वत्रार्धि-
पगुरुदृष्टिभिर्नदोषः ॥ ८१ ॥

बधिरलग्नेमें विवाहादि करनेमें दरिद्रता दिवांधलग्नमें वैधव्य रात्र्यंधमें संत-
तिमरण पंगुलग्नमें समस्तधननाश होवे यदि इनपर लग्नेश तथा बृहस्पतिकी दृष्टि
हो तो इनका उक्तदोष नहीं है. औरभी परिहार है कि "पंग्वन्धकाणलग्नानि
मासशून्याश्च राशयः । गौडमालवयोस्त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिताः ॥" उक्त-
दोष तथा मासशून्यराशि गौडदेश मालवादेशमें त्याज्य हैं अन्यत्र नहीं ॥८१॥

चित्रपदा—कार्मुकतौलिककन्यायुग्मलवेझषगेवा ॥
यर्हिभवेदुपयामस्तर्हिसतीखलुकन्या ॥ ८२ ॥

विवाहलग्नमें यदि ९।८।६।३।८।१२राशियोंके नवांश हो तो विवाहिता
कन्या निश्चयसे पतिव्रता रहे ॥ ८२ ॥

श्रीछन्द—अन्त्यनवांशेनचपरिणेयाकाचनवर्गोत्तममिहहित्वा ॥
नोचरलग्नेचरलवयोगंतौलिभृगस्थेशशभृतिकुर्यात्॥८३॥

लग्नमें अंत्य (पिछला) नवांशक जैसे मेषलग्नमें धननवांश वृषमें मकर११
न लेना परंतु वर्गोत्तम हो तो लेना. जो लग्न वही नवांशकभी हो उसे वर्गोत्तम
कहते हैं जैसे ३।९। १२ । १० में वर्गोत्तम अंत्यनवांशकही होता है और
तुलामकरका चंद्रमा हो तो चरलग्नमें चर अंशक न लेना चंद्रमा अन्यराशि-
में हो तो चरमें चरांशभी लेना ॥ ८३ ॥

उ०जा०—व्ययेशनिःस्वेनिजस्तृतीयेभृगुस्तनौचन्द्रखलानशस्ताः॥
लग्नेष्टकविग्लौश्चरिपौमृतौग्लौर्लग्नेष्टशुभाराश्चमदेचसर्वे ॥८४ ॥

विवाहलग्नसे बारहवां शनि, दशम मंगल, तीसरा शुक्र, लग्नमें चंद्रमा पापग्रह
और लग्नेश शुक्र चंद्रमा ६ । ८ स्थानमें तथा लग्नेश शुक्र, बुध, बृहस्पति
चंद्रमा, मंगल अष्टमस्थानमें शुभ नहीं होते इनमें १२शनिका फल कन्या मद्य-
पा, दशम मंगलका शाकिनी (मांस खानेवाली,) तीसरे शुक्रका देवररता फल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है औरका वैधव्य तथा मरणरूप फल है सप्तम शुभग्रहोंके फल यामित्रीप्रसंग-में कह आये हैं ॥ ८४ ॥

व० ति०—त्र्यायाष्टषट्सुरविकेतुतमोर्कपुत्रात्र्यायारिगःक्षितिसुतो-द्विधनायगोज्जः ॥ सप्तव्ययाष्टरहितौज्ञगुरूसितोष्टत्रिद्यू नषड्व्ययगृहान्परित्यत्यशस्तः ॥ ८५ ॥

सूर्य, केतु, राहु, शनि विवाहलग्नसे ३ । ८ । ६ भावोंमें शुभ होते हैं इन-हींमें विंशोपका बल पाते हैं तथा मंगल ३ । ११ । ६ में चंद्रमा २ । ३ । ११ में बुध शुक्र ७ । १२ । ८ स्थानरहित सभीमें शुक्र ८ । ३ । ७ । ६ । १२ स्थानोंको छोडके अन्योंमें पाता है ॥ ८५ ॥

शा० वि०—पापौकर्त्तरिकारकौरिपुगृहेनीचास्तगौकर्त्तरीदोषोनै-वसितेऽरिनीचगृहगेतत्षष्ठदोषोपिन ॥ भौमेस्तेरि-पुनीचगेनहिभवेद्भौमोष्टमोदोषकृन्नीचेनीचनवांश-केशशिनिरिःफाष्टारिदोषोपिन ॥ ८६ ॥

कर्तरीकारक पापग्रह यदि नीच तथा अस्तंगत हो तथा उनके बीच कोई शुभग्रह हो तो लग्न वा सप्तममें कर्तरीका दोष नहीं तथा शुक्र छठा नीच वा शत्रुराशिका हो तो छठे शुक्रका दोष नहीं मंगल अष्टम यदि नीचराशि वा अस्तंगत हो तो अष्टमोक्त दोष नहीं और चंद्रमा नीचराशि नीचनवांशकमें ६ । ८ । १२ स्थानोंमें हो तो इसकाभी दोष नहीं ॥ ८६ ॥

व० ति०—अब्दायनर्तुतिथिमासभपक्षदग्धतिथ्यन्यकाणबधिराङ्ग-मुखाश्चदोषाः ॥ नश्यन्तिविद्धरुसितेष्विहकेन्द्रकोणेत-द्वच्चपापविधुयुक्तनवांशदोषाः ॥ ८७ ॥

अब्ददोष १ अयनदोष २ ऋतुदोष ३ तिथिदोष ४ मासदोष ५ नक्षत्रदोष ६ पक्षदोष ७ दग्धतिथि अंध काण बधिर पंगु आदि लग्नदोष अकालवृष्टयादि ८ इतने दोष लग्नसे केंद्र १ । ४ । १० कोण ९ । ५ में बुध बृहस्पति शुक्रके बलवान् होकर स्थित होनेमें अनिष्ट फल नहीं करते तैसाही पापयुत चंद्रमा वा पापयुत नवांशदोषभी नष्ट हो जाता है ॥ ८७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शालिनी-केन्द्रेकोणेजीवआयेरवौवालग्नेचन्द्रेवापिवर्गोत्तमेवा ॥
सर्वेदोषानाशमायान्तिचन्द्रेलाभेतद्वद्दुर्मुहूर्तांशदोषाः ॥८८॥

केंद्र १।४।७।१० कोण ५।९ में बृहस्पति उपलक्षणसे बुध शुक्रभी तथा ११ में रवि, लग्नसे उपचय ३।६। १०। ११ में वा वर्गोत्तमनवांशमें चंद्रमा हो तो उक्त समस्तदोष नष्ट होते हैं ऐसेही चंद्रमा ११ वें भावमें हो तो "रवावर्यमेत्यादि" दुर्मुहूर्त और पापग्रह नवांश दोषभी नाश होते हैं ॥८८॥

शिखारिणी-त्रिकोणेकेन्द्रेवामदनरहिते दोषशतकंहरेत्सौम्यः
शुक्रोद्विगुणमपिलक्षंसुरगुरुः ॥ भवेदायेकेन्द्रेङ्गपउपलवेशो
यदि तदासमूहंदोषाणांदहनइवतूलंशमयति ॥ ८९ ॥

बुध विवाहलग्नसे केंद्र १।४।७।१० कोण ९।५ में हो तो एक सौ दोषों-को हरता है तथा शुक्र हो तो दो सौ और बृहस्पति एक लक्ष दोष दूर करता है तथा लग्नेश वा लग्ननवांशेश आय ११ केंद्र १।४।७। १० में हो तो दोषोंके स-मूह (पुंज) को फूंकते हैं जैसे अग्नि रुईके ढेरको क्षणमात्रमें फूंकती है ॥८९॥

अनु०-द्वौ द्वौज्ञभृग्वोः पञ्चेंदौरवौसार्द्धत्रयोगुरौ ॥
रामामन्दाशुकेत्वारेसार्द्धैकैकंविशोपकाः ॥ ९० ॥

पहिले जो "आयाष्टषट्सु" इत्यादि श्लोकमें ग्रहोंके शुभस्थान कहे हैं उन स्थानोंमें बुध २ शुक्र २ चंद्रमा ५ सूर्य ३।३० साढे तीन बृहस्पति ३ शनि १।३० राहु १।३० केतु विंशोपका बल पाते हैं यह बल जिसका जो स्थान शुभ कहा है वह उसीमें पाता है अन्यमें नहीं सभी ग्रह बलवान् (अपने उक्त स्थानोंमें) हों तो विंशोपका बल २० पाते हैं उक्त अंकोंका जोड २१ ३० होता है इसमें रा० के० मेंसे एकका १।३० घटता है यतः एक शुभस्थानमें होगा दूसरा अशुभमें रहेगा ॥ ९० ॥

उ०जा०-श्वश्रूःसितार्कः श्वशुरस्तनुस्तनुर्जामित्रपःस्याद्दयि-
तोमनःशशी ॥ एतद्बलंसंप्रतिभाव्यतांत्रिकस्तेषां
सुखंसंप्रवदेद्विवाहतः ॥ ९१ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitized by eGangotri

विवाहवाली कन्याकी सास शुक्र। श्वशुर सूर्य। लग्न शरीर। सप्तमेश भर्ता। मन चंद्रमा होता है तांत्रिक (ज्योतिषी) ने इनका बल देखके उनका शुभाशुभ विचारके विवाहलग्न निश्चय करना जैसे उक्त ग्रह नीच, शत्रु, अस्त, त्रिक आदिमें हो तो उनको अशुभ उच्चस्वगृहादि भावों (शुभस्थानों) में हो उनको शुभ जानना ॥ ९१ ॥

मत्तमयूर-कृष्णेपक्षेसौरिकुजार्कैपि च वारे वर्ज्यैर्नक्षत्रेयदिवा
स्यात्करपीडा ॥ संकीर्णानांतर्हिसुतायुर्धनलाभश्री-
तिप्राप्त्यैसाभवतीहस्थितिरेषा ॥ ९२ ॥

कृष्णपक्षमें शनि मंगल रविवारमें तथा अनुक्त नक्षत्रोंमें यदि विवाह हो तो वही संकीर्णोंको धन, पुत्र, आयु, लाभ देनेवाला होता है इनको उक्त शुभमुहूर्त्तादि विपरीत होते हैं संकीर्ण वर्णसंकर तथा चांडालोंको कहते हैं ॥ ९२ ॥

अनु०-गान्धर्वादिविवाहेर्कद्विदनेत्रगुणेन्दवः ॥
कुयुगाङ्गाग्निभूरामास्त्रिपद्यामशुभाः शुभाः ॥ ९३ ॥

गांधर्वादि विवाहमें सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रपर्यंत ४ अशुभ २ शुभ ३ अ० ३ शु० १ अ० ४ शु० ६ अ० ३ शु० १ अ० ३ शुभ यही चक्रमात्र देखते हैं पाठांतर 'त्रिपद्यां' ऐसाभी है अर्थात् त्रिघटी चक्र पट्टा (साया) लिखनेकोभी देखते हैं ॥ ९३ ॥

पृथ्वी-विधोर्बलमवेक्ष्यवादलनकण्डनंवारकंगृहाङ्गणविभूषणा-
न्यथचवेदिकामण्डपान् ॥ विवाहविहितोडुभिर्विरचयेत्त-
थोद्वाहतोनपूर्वमिदमाचरेन्निवषण्मितेवासरे ॥ ९४ ॥

विवाहांगी कृत्य गेहूं उरद आदिका दलन चांवल छाटना मंगलकलश स्थापन घरांगण सम्भारना भूषण शृंगारादिवस्तु वेदी मंडप रचना तोरण बंदनवार आदि सकलारंभ चंद्रमाका बल देखके विवाहोक्त नक्षत्रोंमें करना परंतु कार्यादिनके पूर्व ३। ९। ६ दिनमें न करना जवांकुरार्पण तैलल्लापन (वान) मंगलगणेशार्चनमेंभी यही विचार है ॥ ९४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शालिनी—हस्तोच्छ्रायावेदहस्तैःसमन्तात्तुल्यावेदीसद्मनोवामभागे॥
युग्मेघस्रेषष्ठहीनेचपञ्चसप्ताहेस्यान्मण्डपोद्वासनंसत् ॥ ९५ ॥

घरके अग्र बांये ओर आंगनमें कन्याके हाथसे एक हाथ ऊंची तथा चारों ओरसे ४।४ हाथ चतुरस्रवेदी स्तंभसोपानादियुत करनी मंडप उत्तम १६ हाथका होता है स्थानादि संकटमें १२।१०।८ भी मध्यम पक्षमें उक्त है विवाहोत्तरमंडपका उद्वासन छठे छोडकर समदिन तथा ५।७ वें दिनमें करना॥ ९५॥

इं० व०—सूर्यैङ्गनासिंहघटेषुशैवेस्तम्भोलिकोदण्डमृगेषुवायौ ॥
मीनाजकुम्भेनिर्ऋतौविवाहेस्थाप्योग्निकोणेवृषयुग्मकर्के ॥९६॥

मंडपमें प्रथम स्तंभनिवेशन ६।५।७ के सूर्यमें ईशान कोणमें ८।९।१० केमें वायव्य १२।१।११ केमें नैर्ऋत्य २।३।४ केमें आग्नेयसे करना यही नियम गृहारंभमेंभी है ॥ ९६ ॥

मं० ऋ०—नास्यामृक्षंनतिथिकरणंनैवलग्नस्यचिन्तानो वा वारोनचलवविधिर्नोमुहूर्त्तस्यचर्चा ॥ नोवायोगोनृमृतिभवनंनैव जामित्रदोषोगोधूलिःसामुनिभिरुदितासर्वकार्येषुशस्ता ॥९७ ॥

गोधूलीमें नक्षत्र तिथि करणकी कुछ अपेक्षा नहीं लग्नका विचारभी नहीं तथा वार अंशक मुहूर्त्तकीभी चर्चा नहीं दुष्टयोग, अष्टमशुद्धि जामित्रदोष कुछ नहीं होते यह मुनियोंने सर्व कार्योंमें शुभ कही है ॥ ९७ ॥

जलधरमाला—पिण्डीभूतेदिनकृतिहेमन्ततौंस्यादर्द्धास्तेतपसमयेगोधूलिः ॥ संपूर्णास्तेजलधरमालाकालेत्रेधायोज्यासकलशुभेकार्यादौ ॥ ९८ ॥

उक्त गोधूलीका समय कहते हैं कि हेमंत (शीतकाल) मार्गशीर्षसे ४ महीने सूर्य जब सायंकालमें नीहारादिरहित किरणशून्य पिंडाकर हो तथा तप (उष्णकाल) चैत्रसे ४ महीने अर्द्धास्त (सूर्यबिंब आधा अस्त) होनेमें जलधरमाला (वर्षाकाल) श्रावणसे ४ महीने संपूर्ण अस्त हुएमें गोधूली होती है समस्त शुभकृत्यादिमें गुणदाता है ॥ ९८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैश्वदेवी-अस्तंयातेगुरुदिवसेसौरेसार्केलग्नान्मृत्यौ रिपुभव-
नेलग्नेवेन्दौ ॥ कन्यानाशस्तनुमदमृत्युस्थेभौमे
वोढुर्लाभेधनसहजेचन्द्रेसौख्यम् ॥ ९९ ॥

गोधूलीका और प्रकार है कि, गुरुवारके दिन सूर्यास्त हुएमें गोधूला होती है सूर्यास्तके पूर्व आधी घटी अर्द्धयाम होनेसे छोड दिया शनिवारमें सूर्य देखेही रहेमें है क्योंकि सूर्यास्तम कुलिक हो जायगा तथा सायंकालीन लग्नसे ८ । ६ । १ वा लग्नमें चंद्रमा हो तो कन्याका नाश होवे लग्न सप्तम अष्टममें मंगल हो तो वरका नाश होवे ऐसे मुख्यदोष गोधूलीमेंभी वर्जित हैं पंचांगशुद्धिभी मुख्य विचार्य है और २ । ३ भावमें चंद्रमा हो तो सुख देता है गोधूलीमें हो तो औरभी विशेषता है ॥ ९९ ॥

इं०व०-मेषादिगेर्केष्टशरानगाक्षासप्तेषवः सप्तशरागजाक्षाः ॥
गोक्षाःखतर्काःकुरसाःकुतर्काःकृङ्गानिषष्टिर्नवपञ्चभुक्तिः ॥ १०० ॥

मेषादि राशियोंमें सूर्यकी गति स्थूलकालीन है कि मेषके ५८ वृ०५७ मि० ५७ क० ५७ सिं० ५८ कन्यामें ५९ तु० ६० वृ० ६१ ध० ६१ म० ६० कुं० ६० मी० ५९ है ॥ १०० ॥

अनु०-संक्रान्तियातघस्राद्यैर्गतिर्निघ्नीरषड्हृता ॥
लब्धेनांशादिनायोज्यंयातर्क्षंस्पष्टभास्करः ॥ १०१ ॥

सूर्यसंक्रांतिके घटीपलाओंसे इष्ट दिनादि जितने हों उनसे उक्त स्थूल गति गुनाके ६० से भाग लेना ३ अंशादि क्रमसे लेकर सूर्यकी भुक्तराशि राशिके स्थानमें रखना सूर्यका स्पष्ट होता है ॥ १०१ ॥

अनु०-तनोरिष्टांशकात्पूर्वनवांशादशसंगुणाः ॥
रामाप्तालब्धमंशाद्यंतनोर्वर्गादिसाधने ॥ १०२ ॥

अभीष्ट लग्नमें जो नवांश निश्चय किया उसके पूर्व जितने नवांश हो उन्हें १० से गुनाकर ३ से भाग लेना लब्धि यथाक्रम ३ अंक लेके जो हो वह लग्न स्पष्ट भुक्त उस समयका होता है इसीसे षड्वर्ग साधन करना ॥ १०२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. Prof. Satya Vrat Shastri Collection, Delhi. Digitized by eGangotri

शालिनी-अर्काल्लग्नात्सायनाद्भोग्यभुक्तैर्भागैर्निघ्नात्स्वोदया-
त्खाग्निभाक्तात् ॥ भोग्यंभुक्तंचान्तरालोदयाढ्यं
षष्ट्याभक्तंस्वेष्टनाड्योभवेयुः ॥ १०३ ॥

सूर्यसायनस्पष्टके राशिभोग्यांशोंसे स्वदेशीय लग्न खंड पलात्मक गुनना ३० से भाग लेना लब्धि भोग्य पला होती है एवं भुक्तांशोंसे गुनाकर भुक्तपला मिलती है इन भुक्तभोग्यपलाओंका योग्य करना इसमें सायन लग्न तथा सूर्यके अंतराल लग्नोंके पला जोडने ६० से भाग लेकर सूर्योदयमारभ्य इष्टघटी होती हैं॥ १०३॥

शालिनी-चेल्लग्नार्कौसायनावेकराशौतद्विश्लेषघ्नोदयः
खाग्निभक्तः॥ स्वेष्टःकालोलग्नमूनंयदार्का-
द्रात्रेःशेषोऽर्कात्सषड्भान्निशायाम् ॥ १०४ ॥

यदि सायन लग्न तथा सूर्य एकही राशिमें हो तो उनके अंतर्गत अंशोंसे स्वदेशीय लग्न खंड गुनना ३० से भाग लेकर उदयात् इष्टकाल होता है रात्रिके लिये राशिमें ६ जोडके उक्त प्रकारसे करना ॥ १०४ ॥

शा०वि०-उत्पातान्सहपातदग्धतिथिभिर्दुष्टांश्चयोगांस्तथा
चन्द्रेज्योशनसामथास्तमयनंतिथ्याःक्षयर्द्धीतथा ॥
गण्डान्तंचसविष्टिसंक्रमदिनंतन्वंशपास्तंतथा
तन्वंशेशविधूनथाष्टरिपुगान्पापस्यवर्गांस्तथा ॥ १०५ ॥

उत्पात (सेंदुक्रूर क्रूराक्रांत इत्यादि), महापात, दग्धतिथि दुष्टयोग, चंद्रमा, गुरु, शुक्रका अस्त, तिथिकी क्षयवृद्धि, गंडांत ३ प्रकारका, भद्रा संक्रांतिदिन, लग्नेश अंशेशका अस्त लग्नेश अंशेश चंद्रमाके ६ । ८ स्थानमें स्थिति और पापग्रहोंके षड्वर्ग इत्यादि पूर्वोक्तदोष विवाहमें वर्ज्य हैं ॥ १०५ ॥

शा०वि०-सेन्दुक्रूरखगोदयांशमुदयास्ताशुद्धिचण्डायुधात्
खार्जूरंदशयोगयोगसहितंजामित्रलत्ताव्यधम् ॥
बाणोपग्रहपापकर्तरितथातिथ्यृक्षयोगोत्थितं
दुष्टंयोगमथार्द्धयामकुलिकाद्यान्वारदोषानपि ॥ १०६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रूराक्रांतविमुक्तभंग्रहणभंयत्क्रूरगन्तव्यभं
त्रेधोत्पातहतंचकेतुहतभंसंध्योदितंभंतथा ॥
तद्भच्चग्रहभिन्नयुद्धगतभंसर्वानिमान्संत्यजे-
दुद्वाहेशुभकर्मसंग्रहकृतान्लग्नस्यदोषानपि ॥ १०७ ॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ विवाहप्रकरणं समाप्तम् ॥ ६ ॥

तथा पापयुक्त चंद्रमा, पापयुक्त लग्न लग्ननवांश, अस्तोदयशुद्धि, चंडीश, चंडायुध, खार्जूर, दशयोग, जामित्री, लत्तावेध, बाण, उपग्रह पाप कर्तरी तिथिवारोद्भव (सूर्यैशेत्यादि) नक्षत्रवारोत्थ (मृत्यु) आदि तिथिनक्षत्र वारोत्थ (हस्तार्कपंचमी) आदि दुष्टयोग अर्द्धयाम कुलिकादि अन्यादिदोष पापाक्रांतनक्षत्र पापमुक्त तथा पापगंतव्यनक्षत्र ग्रहणनक्षत्र तीन प्रकारके उत्पातका नक्षत्र केतूदयनक्षत्र (संध्योदि०) सूर्यसे १४ वां नक्षत्र ग्रहभिन्ननक्षत्र युद्धनक्षत्र इतने समस्त दोष तथा ग्रहकृतलग्नके दोषभी विवाहमें तथा सभी शुभकर्मयें वर्जित हैं ॥ १०६ ॥ १०७ ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्त्तचिंतामणिभाषायां विवाहप्रकरणं समाप्तम् ॥ ६ ॥

अथ वधूप्रवेशप्रकरणम् ।

उ०व०–समाद्विपञ्चाङ्कदिनेविवाहाद्वधूप्रवेशोष्टदिनान्तराले ॥
शुभःपरस्ताद्विषमाब्दमासदिनर्क्षवर्षात्परतोयथेष्टम् ॥१॥

विवाह करके विवाहिता कन्याका वरके घरमें प्रवेश करनेको वधूप्रवेश कहते हैं वह विवाहसे १६ दिनके भीतर सम २।४।६।८।१०।१२।१४। १६ दिनमें तथा ५।९।७ दिनोंमें यदि १६ दिनके भीतर न हो तो विषममास विषमवर्षोंमें उक्त दिनमें करना यदि ५ वर्षभी व्यतीत हो जांय तो तब समविषम नियम नहीं जब इच्छा हो शुभपंचांगमें करे ॥ १ ॥

अनु०–ध्रुवक्षिप्रमृदुश्रोत्रवसुमूलमघानिले ॥
वधूप्रवेशःसन्नेष्टोरिक्तारार्केबुधेपरैः ॥ २ ॥

ध्रुव, क्षिप्र, मृदु, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा, स्वाती नक्षत्र तथा रिक्ता ४।९।१४ तिथि मंगल सूर्य बुधवाररहित दिनमें वधूप्रवेश शुभ होताहै ॥२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इं० व०-ज्येष्ठेपतिज्येष्ठमथाधिकेपतिंहन्त्यादिमेभर्तृगृहेवधूःशुचौ॥
श्वश्रूंसहस्येश्वशुरक्षयेतनुंतातंमधौतातगृहे विवाहतः॥३॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ वधूप्रवेशप्रकरणं समाप्तम् ॥ ७ ॥

विवाहसे ऊपर प्रथम ज्येष्ठके महीने भर्ताके घर रहे तो पतिके ज्येष्ठ भाईको मृत्यु (दोष) होवे, अधिमासमें पतिको, आषाढमें सासको, पौषमें श्वशुरको, क्षयमासमें अपने शरीरको हरती है तथा विवाहसे प्रथम चैत्रमें पिताके घरमें रहे तो पिता मरे ॥ ३ ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्तचिन्तामणिभाषायां सप्तमं वधूप्रवेशप्रकरणं समाप्तम् ॥७॥

अथ द्विरागमनप्रकरणम् ।

पञ्चचामर-चरेदथौजहायने घटालिमेषगेरवौरवीज्यशुद्धियोगतः
शुभग्रहस्यवासरे ॥ नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषेविल-
ग्नकेद्विरागमंलघुध्रुवेचरेस्रपेमृदूडुनि ॥ १ ॥

वधू प्रवेश करके यदि वधू पिताके घरमें जाकर पुनः पतिके घरमें आवे उसे द्विरागमन कहते हैं. वह विषम १ । ३ । ५ वर्षमें ११ । १ । ८ के सूर्यमें विवाहोक्त सूर्यशुद्धि गुरुशुद्धि हुएमें शुभग्रहोंके वारमें ३।१२।६।७।२ लग्नोंमें लघु ध्रुव चर मूल मृदु नक्षत्रोंमें करना ॥ १ ॥

प्रहर्षिणी-दैत्येज्योह्यभिमुखदक्षिणेयदिस्याद्गच्छेयुर्नहिशिशुगर्भिणीनवोढाः ॥ बालश्चेद्व्रजतिविपद्यतेनवोढाचेद्गन्ध्याभवतिचगर्भिणीत्वगर्भा ॥ २ ॥

विवाहमें भर्ताके घर जानेमें यात्रोक्त शुक्रसंमुखादि शुद्धि नहीं देखते इस लिये द्विरागमनमें देखना आवश्यक होनेसे शुक्रशुद्धि कहते हैं कि शुक्र संमुख तथा दक्षिण हो तो बालक, गर्भवती, नवविवाहिता गमन न करे इस प्रति शुक्रमें बालक गमन करे तो विपत्ति (मृत्यु) पावे गर्भिणी गर्भरहित होवे नवोढा वांझ होवे। " अस्तं गते गुरौ शुक्रे सिंहस्थे वा बृहस्पतौ ॥ दीपोत्सव-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिवे चैव कन्या भर्तृगृहं विशेत् ॥ १ ॥ " किसीका मत है कि गुरु अस्त हो वा शुक्र अस्त हो वा संमुख दक्षिण हो वा सिंहस्थगुरु हो इन दोषोंमें आवश्यकता होनेमें कन्या (नववधू) दीपोत्सव (दीपमालिका) से २दिन प्रथम २ पीछेके दिनमें भर्ताके घर जावे दोष नहीं ॥ २ ॥

प्रहर्षिणी—नगरप्रवेशविषयाद्युपद्रवेकरपीडनेविबुधतीर्थयात्रयोः ॥
नृपपीडनेनववधूप्रवेशनेप्रतिभार्गवोभवतिदोषकृन्नहि ॥३॥

परचक्रागम राजविद्रोह वा नृपपीडनादि उपद्रवसे स्वनगरप्रवेशमें किंवा दुर्भिक्षादिदुःखसे अन्यत्रगमनमें तथा विवाहमें एवं नगरकोटयात्रा देवयात्रा तीर्थयात्रामें राजाके निकालनेमें और नवविवाहिता कन्याके भर्ताके घरप्रवेश करनेमें संमुख दक्षिणशुक्रका दोष नहीं होता ॥ ३ ॥

इं० व०—पित्र्येगृहेचेत्कुचपुष्पसंभवस्तथानदोषःप्रतिशुक्रसंभवः ॥
भृग्वंगिरोवत्सवसिष्ठकश्यपात्रीणांभरद्वाजमुनेःकुलेतथा४॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ द्विरागमनप्रकरणं समाप्तम् ॥ ८ ॥

यदि कन्याके पिताहीके घरमें कुच (स्तन) उद्भव आवें तथा रजोदर्शन हो जावे तो प्रतिशुक्रका दोष नहीं उपलक्षणसे सूर्य गुरुशुद्धिभी नहीं और भृगु अंगिरा वत्स वसिष्ठ कश्यप अत्रि भरद्वाज ऋषियोंके वंशमें अर्थात् उक्त गोत्रवालोंकोभी प्रतिशुक्रका दोष कभी नहीं है ॥ ४ ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्तचिंतामणिभाषायामष्टमप्रकरणं समाप्तम् ॥ ८ ॥

अथाग्न्याधानप्रकरणम् ।

श्रौत स्मार्त कर्मानुष्ठान अग्निधारणको अग्न्याधान कहते हैं यह कोई तो विवाहमें कोई पिता वा भाईसे पृथक् रहनेसे करते हैं ॥

व० ति०—स्यादग्निहोत्रविधिरुत्तरगेदिनेशेमिश्रध्रुवान्त्यशशिशुक्रसुरेज्यधिष्ण्ये ॥ रिक्तासुनोशशिकुजेज्यभृगौननीचे
नास्तंनविजितेगतेनचशत्रुगेहे ॥ १ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अग्न्याधान मुहूर्त्त सूर्यके उत्तरायणमें तथा मिश्र, ध्रुव, रेवती, मृगशिर ज्येष्ठा, पुष्यनक्षत्रोंमें अग्निहोत्र करना परंतु रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि न लेनी और चंद्रमा मंगल बृहस्पति शुक्र नीचराशिमें, अस्तंगत तथा ग्रहयुद्धमें पराजित न हों शत्रुराशियोंमेंभी न हों तो अग्न्याधान शुभ होता है ॥ १ ॥

व० ति०—नोकर्कनक्रझषकुम्भनवांशलग्नेनोऽब्जेतनौरविश-
शीज्यकुजेत्रिकोणे ॥ केन्द्रर्क्षषट्त्रिभवगेषुपरैस्त्रि-
लाभषट्खस्थितैर्निधनशुद्धियुते विलग्ने ॥ २ ॥

कर्क मकर मीन कुंभलग्न वा नवांशक तथा लग्नका चंद्रमा न लेने और सूर्य चंद्र गुरु मंगल त्रिकोण ५ । ९ में अन्य बु० शु० श० रा०के० ३ । ११ । ६ । १० स्थानमें हो तथा लग्नसे अष्टमभाव ग्रहरहित हो जन्मलग्न जन्मराशि अष्टमलग्न न हो तो उक्त कृत्य शुभ होता है ॥ २ ॥

अनु०—चापेजीवेतनुस्थेवामेषेभौमेम्बरेद्युने ॥
षट्त्र्यायेब्जेरवौवास्याज्जाताग्निर्यजति ध्रुवम् ॥ ३ ॥

इति श्रीमुहूर्त्तचिन्तामणावग्न्याधानप्रकरणम् ॥ ९ ॥

उक्त आधानलग्न बृहस्पतिसहित धन हो १ अथवा मंगल मेषका दशम यद्वा सप्तम हो २ वा चंद्रमा ३ । ६ । ११ से औरमें हो ३ सूर्य ३ । ६ । ११ में हो ४ इन योगोंमें कोईभी हो तो अग्निहोत्रकर्ता निश्चयसे ज्योतिष्टोमादि यज्ञ करनेवाला होगा ॥ ३ ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्तचिन्तामणिभाषायामग्न्याधानप्रकरणं नवमं समाप्तम् ॥९॥

अथ राजाभिषेकप्रकरणम् ।

इं० व०—राजाभिषेकःशुभउत्तरायणेगुर्विन्दुशुक्रैरुदितैर्बलान्वितैः ॥
भौमार्कलग्नेशदशेशजन्मपैर्नोचैत्ररिक्तारनिशामलिम्लुचे ॥१॥

राजाभिषेकमुहूर्त्त । उत्तरायणमें बृहस्पति चंद्रमा शुक्रके उदय तथा बल-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वान् हुएमें मंगल सूर्य लग्नेश दशमेशके बलवान् हुएमें तथा जन्मलग्नेशकेभी तत्काल बलवान् हुएमें राजाभिषेक शुभ होता है चैत्रका महीना रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि मंगलवार और मलिनमास वर्जित करना रात्रिमेंभी राजाभिषेक न करना ॥ १ ॥

इं०व०—शाक्रश्रवःक्षिप्रमृदुध्रुवोडुभिःशीर्षोदयेवोपचयेशुभेतनौ ॥
पापैस्त्रिषष्ठायगतैःशुभग्रहैःकेन्द्रत्रिकोणायधनत्रिसंस्थैः ॥ २ ॥

ज्येष्ठा श्रवण क्षिप्र मृदु ध्रुव नक्षत्रोंमें शीर्षोदय ३ । ५ । ६ । ७ । ८। ११ लग्नोंमें अथवा जन्मलग्नसे उपचय ३ । ६ । १० । ११ लग्नोंमें शुभग्रहयुक्त दृष्टोंमें अथवा जन्मराशिसे उपचय लग्नोंमें शुभग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रि० ९ । ५ तथा ११ । २ । ३ स्थानोंमें हों पापग्रह ३ । ६ । ११ में हों ऐसे मुहूर्त्तमें राजाभिषेक शुभ होता है ॥ २ ॥

इं०व०—पापैस्तनौरुङ्निधनेमृतिः सुतेपुत्रार्तिरर्थव्ययगैर्दरिद्रता ॥
स्यात्खेलसोभ्रष्टपदोद्युनाम्बुगैःसर्वेशुभंकेन्द्रगतैःशुभग्रहैः॥ ३ ॥

लग्नमें पापग्रह हो तो रोग होवे अष्टम हो तो मृत्यु पंचम हो तो पुत्रक्लेश २। १२में हो तो धननाश (दारिद्र्य) दशममें हो तो अलस (निरुद्यमता) ४ । ७ में हो तो ऐश्वर्यसे भ्रष्ट हो जावे ६।८। १२ में चंद्रमाभी मृत्यु देता है ॥३ ॥

भु०प्र०—गुरुर्लग्नकोणेकुजोरौसितःखेसराजासदामोदतेराजलक्ष्म्या।
तृतीयायगौसौरिसूर्यौखबन्ध्वोर्गुरुश्चेद्धरित्रीस्थिरास्यान्नृपस्य॥ ४ ॥

इति श्रीमुहूर्त्तचिन्तामणौ राजाभिषेकप्रकरणम् ॥ १० ॥

लग्नमें बृहस्पति वा त्रिकोणमें हो मंगल छठा शुक्र दशम हो तो राजा सर्वदा राज्यलक्ष्मीके भोगसहित प्रसन्न रहे । सूर्य ११ शनि ३ में बृहस्पति ४ बुध ४में हों तो राजाकी पृथ्वी (राज्य) स्थिर (सर्वदा हस्तगत)रहे॥४॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्त्तचिन्तामणिभाषायां राजाभिषेकप्रकरणं दशमं समाप्तम् ॥१०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ यात्राप्रकरणम्।

यात्रा देशांतरगमनको कहते हैं यहभी २ प्रकारकी है कि एक युद्धवेजयार्थ दूसरे अन्यकार्यवशात् युद्धमें योग लग्नादिविशेष, अन्यमें पंचांगशुद्धि विशेष लिखते हैं।

प्रहर्षिणी-यात्रायांप्रविदितजन्मनानृपाणांदातव्यंदिवसमबुद्धजन्मनांच ॥ प्रश्नाद्यैरुदयनिमित्तमूलभूतैर्विज्ञातेह्यशुभशुभेबुधः प्रदद्यात् ॥ १ ॥

इस प्रकरणमें राजाकाही उपलक्षण है यह राजा सकललोकहितकारी होनेसे तथा सर्वजनश्रेष्ठ होनेसे है मुहूर्तादि तो राजा आदि सभीको हैं जिन राजाओंका छाया घटिकादियोंसे जन्मसमय तात्कालिक लग्नकुंडलिस्थ शुभाशुभग्रहफलज्ञान है उनको यात्रामुहूत देना जैसे शुभफल दशा अंतरोंमें यात्रा करनी अरिष्टमारकादि समयमें न करनी इत्यादिजातकोंमें लिखा है जिनका जन्मसमय ज्ञान नहीं है उनको प्रश्न, उपश्रुति, शकुन आदि लक्षणोंसे शुभाशुभ समय जानकर शुभसमयमें यात्राका दिन अशुभ (अरिष्टादि) में न देना ॥ १ ॥

द्रुतविलंबित-जननराशितनूयदिलग्नगेतदधिपौयदिवाततएववा ॥ त्रिरिपुखायगृहंयदिवोदयो विजयएवभवेद्वसुधापतेः ॥ २ ॥

प्रथम प्रश्न है कि यदि यात्राप्रश्नमें जन्मराशि जन्मलग्नप्रश्नमें हो तो राजाकी विजय होगी अथवा उनके स्वामी लग्नमें हो तौभी विजय अथवा जन्मराशि लग्नसे ३। ६ ।१०। ११ वां प्रश्नलग्न हो तौभी विजयही होगी ॥ २ ॥

मजु०-रिपुजन्मलग्नभमथादिपौतयोस्ततएववोपचयसद्मचेद्भवेत् ॥ हिबुकेद्युनेथशुभवर्गकस्तनौयदिमस्तकोदयगृहंतदाजयः ॥ ३॥

यदि शत्रुके जन्मराशि जन्मलग्न प्रश्नलग्नसे ४ । ७ भावोंमें हों तो राजाकी जय होवे उनके स्वामीभी ऐसेही जानने तथा शत्रुके जन्मराशि लग्नसे उपचय ३ । ६ ११ राशिप्रश्नलग्नसे ४ । ७ में हों तौभी विजय होवे प्रश्न-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्नसे शुभग्रहोंका नवांशादि षड्वर्ग हो वा शीर्षोदय राशि प्रश्नलग्नमें हों तौभी विजय होवे ॥ ३ ॥

त्रोटक-यदिप्रच्छितनौवसुधारुचिराशुभवस्तुयदिश्रुतिदर्शनगम् ॥
यदिपृच्छतिचादरतश्चशुभग्रहदृष्टयुतंचरलग्नमपि ॥ ४ ॥

यदि प्रश्नसमयमें भूमि रमणीय होवे तथा शुभवस्तु (मांगल्य वस्त्राभरणादि) सुनने देखनेमें आवे अथ च पूछनेवाला आदरपूर्वक नम्रतासे पूछे तो राजा (यात्रावाले) का विजय होवे और प्रश्नादि लग्न चर १ । ४ । ७ । १० शुभग्रहोंसे युक्त दृष्ट हो तौभी वही फल है ॥ ४ ॥

मालिनी-विधुकुजयुतलग्नेशौरिदृष्टेथचन्द्रेमृतिभमदनसंस्थे
लग्नगेभास्करेपि ॥ हिबुकनिधनहोराद्यूनगेवापि
पापेसपदिभवतिभङ्गः प्रश्नकर्तुस्तदानीम् ॥ ५ ॥

प्रश्नलग्नमें यदि चंद्रमा मंगल हो शनिकी दृष्टि लग्नपर हो तो प्रश्नकर्त्ताका भंग (पराजय) होता है तथा चंद्रमा ७ । ८ भावमें सूर्य लग्नमें हो तौभी वही फल है अथवा लग्नमें चंद्रमा ७ । ८ में सूर्य हो तौभी भंगही है तथा पापग्रह ४ । ८ । १ । ७ में हो तौभी वही फल होगा ॥ ५ ॥

भु०प्र०-त्रिकोणेकुजात्सौरिशुक्रज्ञजीवायदैकोपिवानोगमोर्का-
च्छशीवा ॥ बलीयांस्तुमध्येतयोर्योग्रहःस्यात्स्वकी-
यांदिशंप्रत्युतासौनयेच्च ॥ ६ ॥

जानेवाला कौन दिशा जायगा मंगलसे त्रिकोण ९ । ५ में शनि शुक्र बुध बृहस्पति होवें अथवा इनमेंसे एकभी हो तो जिस दिशा जाना चाहता है वहां न जायगा अथवा सूर्यसे चंद्रमा ५ । ९ में हो तौभी अभीष्ट दिशा न जायगा उक्तप्रतिबंधकर्त्ता ग्रहोंमेंसे जो बलवान् हो वह अपनी दिशाको ले जायगा॥६॥

मन्दलेखा-प्रश्नेगम्यदिगीशात्खेटःपञ्चमगोयः ॥
बोभूयाद्बलयुक्तः स्वामाशां नयतेसौ ॥ ७ ॥

दूसरा योग प्रश्नमें गम्य (गमन) निश्चित दिशाके स्वामीसे पंचम जो ग्रह हो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह बलवान् हो तो गम्यदिशा छुटाकर अपनी दिशाको अवश्य ले जाता है दिगीश पूर्वादिक्रमसे र० शु० मं० रा० श० चं० बु० बृ० हैं औरभी योग हैं कि शनि मंगल परस्पर सम सप्तम हो अथवा शनिराशिका मंगल मंगलकी राशिका शनि हो अथवा शुक्र मंगल त्रिकोणमें हो तो इनमेंसे जो बली हो वह गम्यदिशाको छुटाकर अपनी दिशा ले जाता है ॥ ७ ॥

भु०प्र०—धनुर्मेषसिंहेषुयात्राप्रशस्ताशनिज्ञोशनौराशिगेचैवमध्या ॥
रवौकर्कमीनालिसंस्थेतुदीर्घाजनुःसप्तपञ्चत्रितारावनेष्टाः ॥ ८ ॥

सूर्यके ९।१।५ राशियोंमें होनेमें यात्रा शुभ होती है तथा १०।११।३। ६।७ राशियोंमें मध्यम ४। १२ । ८ के सूर्यमें दीर्घयात्रा अशुभ लघुयात्रा मध्यम होती है सूर्य ८ प्रहरोंमें ८ ही दिशाओंमें रहता है यात्रासमयमें सूर्य पीठके ओर होना उत्तम होता है यह प्राच्य संमत है और यात्रामें जन्म पंचम तृतीय सप्तम ताराभी अशुभ होती है ॥ ८ ॥

भु०प्र०—नषष्ठीनचद्वादशीनाष्टमीनोसितायातिथिःपूर्णिमामानरिक्ता॥हयादित्यमित्रेन्दुजीवान्त्यहस्तश्रवोवासवैरेवयात्राप्रशस्ता॥९॥

शुक्लपक्षप्रतिपदा अमावास्या षष्ठी द्वादशी अष्टमी रिक्ता ४।९।१४ तिथि यात्रामें वर्जित है हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिर, पुष्य, रेवती, अश्विनी, श्रवण, धनिष्ठा नक्षत्रोंमें यात्रा शुभ होती है तथा शुभवार शुभ हैं ॥ ९ ॥

पृथ्वी—नपूर्वदिशिशाक्रभेनविधुसौरिवारेतथानचाजपदभेगुरौयम-
दिशीनदैत्येज्ययोः ॥ नपाशिदिशिधातृभेकुजबुधेयमर्क्षेतथा
नसौम्यककुभिव्रजेत्स्वजयजीवितार्थीबुधः ॥ १० ॥

दिशाशूल। पूर्वदिशा ज्येष्ठानक्षत्र शनि, सोमवारमें एवं दक्षिण पूर्वा भाद्रपदा बृहस्पति, पश्चिमदिशा शुक्र, रविवार रोहिणीनक्षत्र, उत्तरदिशा मंगल, बुधवार भरणीनक्षत्रमें जानेवाला यदि धन एवं शत्रुसे जय और जीवित (आयु) चाहे तो न जावे इन वार नक्षत्रोंमें इन दिशाको दिशाशूल होता है ॥ १० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शा० वि–पूर्वाह्णेध्रुवमिश्रभैर्नृपतेर्यात्रानमध्याह्नके
तीक्ष्णाख्यैरपराह्णकेनलघुभैर्नोपूर्वरात्रेतथा ॥
मित्राख्यैर्नचमध्यरात्रिसमयेचोग्रैस्तथानोचरै
रात्र्यन्तेहरिहस्तपुष्यशशिभिःस्यात्सर्वकालेशुभा॥११॥

ध्रुव, मिश्रनक्षत्रोंमें दिनके पूर्वाह्णमें यात्रा न करना एवं तीक्ष्णनक्षत्रोंको मध्याह्नमें लघुको अपराह्णमें मित्रनक्षत्रोंमें पूर्वरात्रिमें उग्रनक्षत्रोंमें मध्यरात्रिमें चर नक्षत्रोंमें पिछली रात्रिमें यात्रा न करना और श्रवण, हस्त, पुष्य, मृगशिर नक्षत्रोंमें सभी काल आठही प्रहरोंमें यात्रा शुभ होती है ॥ ११ ॥

इं० व०–पूर्वाग्निपित्र्यान्तकतारकाणांभूपप्रकृत्युग्रतुरंगमाःस्युः ॥
स्वातीविशाखेन्द्रभुजंगमानांनाड्योनिषिद्धामनुसंमिताश्च ॥१२॥

तीनहू पूर्वाओंके पूर्वाकी १६ घटी एवं कृत्तिकाकी २१ मघाकी ११ भरणीकी ७ स्वाती विशाखा ज्येष्ठा आश्लेषा चारोंकी १४ घटी आदिकी यात्रामें निषिद्ध हैं और घटी शुभ होती हैं ॥ १२ ॥

इं०व०–पूर्वार्धमाग्नेयमघानिलानांत्यजेद्धिचित्राहयमुत्तरार्धम् ॥
नृपःसमस्तांगमनेजयार्थीस्वातीमघांचोशनसोमतेन ॥ १३ ॥

एवं कृत्तिका मघा स्वातीका पूर्वार्द्ध चित्रा अश्विनीका उत्तरार्द्ध और उशना का मत है कि,जय चाहनेवालेने स्वाती तथा मघा समस्त त्याग करनी॥ १३॥

भु० प्र०–तमोभुक्ततारा: स्मृताविश्वसंख्याःशुभोजीवपक्षोमृतश्चा-
पिभोग्याः ॥ यदाक्रांतभंकर्त्तरीसंज्ञमुक्तंततोऽक्षेन्दुसंख्यं
भवेद्ग्रस्तनाम ॥ १४ ॥

राहु वक्रगति है इसके भुक्त १३ नक्षत्र जीवपक्षसंज्ञक शुभकार्यकारक हैं भोग्य १३ नक्षत्र मृतपक्षसंज्ञक हैं जिसमें राहु बैठा है वह कर्त्तरीसंज्ञक है उस नक्षत्रसे १५ वां नक्षत्र ग्रस्तसंज्ञक पुच्छ है ॥ १४ ॥

शा० वि०–मार्त्तंडेमृतपक्षगेहिमकरश्चेज्जीवपक्षेशुभा
यात्रास्याद्विपरीतगेक्षयकरीद्वौजीवपक्षेशुभा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रस्तर्क्षेमृतपक्षतःशुभकरंग्रस्तात्तथाकर्तरी
यायीन्दुःस्थितिमान्रविर्जयकरौतौद्वौतयोर्जीवगौ १५॥

सूर्य मृतपक्षमें चंद्रमा जीवपक्षमें हो तो यात्रा शुभ होती है विपरीत (सूर्य जीवपक्ष चंद्रमा मृतपक्षमें) हो तो हानिकारक होती है यदि सूर्य चंद्रमा दोनों जीवपक्षमें हों तो शुभ, मृत्युपक्षमें हों तो अशुभ जाननी मृतपक्ष नक्षत्रोंकी अपेक्षा ग्रस्तनक्षत्र तथा ग्रस्तनक्षत्रकी अपेक्षा कर्तरीनक्षत्र कुछ शुभ हैं (जैसे मरे हुए मनुष्यसे मरनेको तैयार हो रहा मनुष्य कुछ अच्छाही है) यहां यही उदाहरण योग्य है जो राजा अपने किलेमें बैठा है वह स्थायी जो शत्रुके ओर जाता है वह यायी संज्ञक है सूर्य जीवपक्षमें हो तो स्थायीकी जय चंद्रमा जीवपक्षमें हो तो यायीकी जय यदि सूर्य चंद्र दोनों जीवपक्षमें हों तो दोनोंका जय अर्थात् मिलाप होगा सूर्य चंद्र मृतपक्षमें हों तो दोनोंका पराजय अर्थात् दोनों पक्षकी हानि लाभ किसीका नहीं तथा सूर्य मृतपक्षमें चंद्रमा जीवपक्षमें हो तो यायीकी जय चंद्रमा मृतपक्षमें सूर्य जीवपक्षमें हो तो स्थायीकी जय सूर्य राहुके नक्षत्रमें चंद्रमा उससे १५ वेंमें हो तो यायीका थोडा जय यदि चंद्रमा राहुनक्षत्रमें चंद्रमा उससे १५ वेंमें हो तो स्थायीकी स्वल्पजय दोनों राहुके नक्षत्रमें हों तो दोनोंका पराजय (हानि) यदि १५ वेंमें हों तो दोनोंकी जय (संधि) होवे वह विचार सभी यात्राओंमें है ॥ १५ ॥

व०ति०—स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधादित्यध्रुवाणिवि-
षमास्तिथयोऽकुलाःस्यु ॥ सूर्येन्दुमन्दगुरवश्चकु-
लाकुलज्ञो मूलाम्बुपेज्ञाविधिभंदज्ञषट्द्वितिथ्यः ॥ १६ ॥

ज्ञा०वि०—पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनाद्वीशेन्द्रचित्रास्तथा
शुक्रारौकुलसंज्ञकाश्चतिथयोर्कार्षेन्द्रवेदैर्मिताः ॥
यायीस्यादकुलेजयीचसमरेस्थायीचतद्वत्कुले
संधिःस्यादुभयोःकुलाकुलगणेभूमीज्ञयोर्युध्यतोः॥१७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वाती भरणी आश्लेषा धनिष्ठा रेवती हस्त अनुराधा पुनर्वसु तीन उत्तरा रोहिणीनक्षत्र विषमतिथि १।३।५।७।९।११।१३।१५ सूर्य चंद्रमा, शनि बृहस्पतिवार आकुलसंज्ञक हैं तथा मूल शततारा आर्द्रा अभिजित् नक्षत्र १०।६।२ तिथि कुलाकुलसंज्ञक हैं तथा तीन पूर्वा अश्विनी पुष्य मघा मृगशिर श्रवण कृत्तिका विशाखा ज्येष्ठा चित्रानक्षत्र शुक्र मंगलवार १२।१४।४ तिथि कुलसंज्ञक हैं अकुलसंज्ञकोंमें युद्ध यात्रा हो तो यायीकी जय कुलसंज्ञकोंमें स्थायीकी जय कुलाकुलसंज्ञकोंमें दोनोंकी जय (संधि) होवे।१६।१७।

स्रग्धरा—स्युर्धर्मेदस्रपुष्योरगवसुजलपद्वीशमैत्राण्यथार्थे
याम्याजांघ्रीन्द्रकर्णादितिपितृपवनोडून्यथोभानिकामे ॥
वह्न्यार्द्राबुध्न्यचित्रानिर्ऋतिविधिभगाख्यानिमोक्षेथरोहि-
ण्यर्यम्णाप्येन्दुविश्वान्तिमभदिनकरक्षाणिपथ्यादिराहौ१८

अश्विनी पुष्य आश्लेषा धनिष्ठा शततारा विशाखा अनुराधा धर्मस्थानमें लिखने तथा भरणी पूर्वाभाद्रपदा ज्येष्ठा श्रवण पुनर्वसु मघा स्वाती अर्थस्थानमें कृत्तिका आर्द्रा उत्तराभाद्रपदा चित्रा मूल अभिजित् पूर्वाफाल्गुना कामस्थानमें रोहिणी उत्तराफाल्गुनी पूर्वाषाढा मृगशिर उत्तराषाढा रेवती हस्त मोक्षमार्गमें लिखने यह पथिराहुचक्र है ॥ १८ ॥

पथिराहुचक्रम्.

ध.	अ.	पु.	आ.	वि.	अनु.	ध.	श.
अ.	भ.	पु.	म.	स्वा.	ज्ये.	श्र.	पू.
का.	कृ.	आ.	पू.फा.	चि.	मू.	अ.	उ.भा.
मो.	रो.	मृ.	उ.फा.	ह.	पू. षा.	उ.षा.	रे.

स्रग्वि०—धर्मगेभास्करेवित्तमोक्षेशशीवित्तगेधर्ममोक्षस्थितःशस्यते।
कामगेधर्ममोक्षार्थगःशोभनोमोक्षगेकेवलं धर्मगःप्रोच्यते ॥१९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धर्ममार्गमें सूर्य और मोक्षमार्गमें चंद्रमा हो तो शुभ यदि सूर्य धनमार्गमें चंद्रमा धर्म वा मोक्षमार्गमें हो तौभी शुभ. अथवा काममार्गमें सूर्य धर्ममार्गमें चंद्रमा हो तौभी शुभ. अथवा मोक्षमार्गमें सूर्य धर्ममार्गमें चंद्रमा हो तौभी शुभ होता है विपरीत (जिस मार्गमें सूर्य कहा उसमें चंद्रमा जिसमें चंद्रमा कहा उसमें सूर्य) हो तो अशुभ जानना, धर्ममार्गमें सूर्य चंद्रमाभी हों तो समयुद्ध होवे परंतु थोडा यायी जीते धर्ममें चंद्रमा हो तो यायीकी जय धर्ममें सूर्य काममें चंद्रमा हो तो बांधवोंके साथ विरोध धर्ममें सूर्य मोक्षमें चंद्रमा शुभयुक्त भूमिलाभ करता है. कर्ममें सूर्य धर्ममें चंद्रमा शुभयुक्त रत्नलाभी. काममें सूर्य धनमें चंद्रमा शुभयुक्त धनलाभ. सूर्यचंद्रमा काममें शत्रुयुक्त दुःख देते हैं काममें सूर्य मोक्षमें चंद्रमा शुभयुक्त रत्नलाभी. मोक्षमें सूर्य धर्ममें चंद्रमा शुभयुक्त महालाभ. मोक्षमें सूर्य धनमें चंद्रमा यात्रा सफल. मोक्षमें सूर्य काममें चंद्रमा यात्रामें दुःख. सूर्य चंद्र मोक्षमार्गमें घोर विघ्नकारक. यह पथिराहुचक्र यात्रादि समस्तकार्योंमें विचारना ॥ १९ ॥

शा०—पौषेपक्षत्यादिकाद्वादशैवंतिथ्योमाघादौद्वितीयादिकास्ताः ॥
कामात्तिस्रःस्युस्तृतीयादिवच्चयानेप्राच्यादौफलंतत्रवक्ष्ये॥२०॥
सौख्यंक्लेशोभीतिरर्थागमश्चशून्यंनैःस्व्यंनिःस्वतामिश्रताच ॥
द्रव्यक्लेशादुःखमिष्टाप्तिरर्थोलाभःसौख्यंमङ्गलंवित्तलाभः॥२१॥
लाभोद्रव्याप्तिर्धनंसौख्यमुक्तंभीतिर्लाभोमृत्युरर्थागमश्च ॥
लाभःकष्टंद्रव्यलाभौसुखंचकष्टंसौख्यंक्लेशलाभौसुखंच ॥ २२ ॥
सौख्यंलाभःकार्यसिद्धिश्चकष्टंक्लेशः कष्टात्सिद्धिरर्थोधनंच ॥
मृत्युर्लाभोद्रव्यलाभश्चशून्यंशून्यंसौख्यंमृत्युरत्यन्तकष्टम्२३ ॥

इन चार श्लोकोंका अर्थ चक्रसे प्रगट होता है पौषमहीनेके प्रतिपदादि १२

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिथिचक्रं यात्रायाम् ।

पौ.	मा.	फा	चै.	वै.	ज्ये	आ	श्रा	भा.	आ	का	मा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	सौख्य	क्लेश	भीति	अर्थागम
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	शून्य	नैःस्व्य	नैस्व्य	मिश्रता
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	द्रव्यक्लेश	दुःख	द्र.प्रा.	अर्थ
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	लाभ	सौख्य	मंगल	वित्तलाभ
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	लाभ	द्र.प्रा.	धनप्रा.	सौख्य
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	भय भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थलाभ
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	लाभ	कष्ट	द्र.ला.	सुख
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	कष्ट	सौख्य	क्लेश	सुख
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	सौख्य	लाभ	का.सि.	कष्ट
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	क्लेश	कष्टसि	अर्थसि.	धन
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	मृत्यु	लाभ	द्र.ला.	शून्य
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	शून्य	सौख्य	मृत्यु	कष्ट

तिथि क्रमसे लिखने माघके द्वितीयादि एवं फाल्गुन ३ चैत्र ४ वैशाख ५ ज्येष्ठ ६ आषाढ ७ श्रावण ८ भाद्रपद ९ आश्विन १० कार्तिक ११ मार्गशीर्षके १२ से लिखना त्रयोदशी तृतीयाके तुल्य चतुर्दशी चतुर्थीके पंचदशी पंचमीके तुल्य जानना फल इनके पूर्वादिक्रममें चक्रमें लिखे हैं वही जानने ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

व०ति०—तिथ्यृक्षवारयुतिरद्रिगजाग्नितष्टास्थानत्रयेत्रवियतिप्रथमेतिदुःखी ॥ मध्येधनक्षतिरथोचरमेमृतिः स्यात्स्थानत्रयेऽङ्युजिसौख्यजयौनिरुक्तौ ॥ २४ ॥

तिथि यहां शुक्लपक्षादि ली जाती है तिथि नक्षत्र वार जोडके ३ जगह रखना एक जगह ७ से दूसरे ८ से तीसरे ३ से भाग लेना प्रथममें ० हो तो यात्री दुःखी होवे दूसरेमें ० शून्य हो तो धनहानि तीसरेमें ०शून्य हो तो मृत्यु होवे तीनही स्थानोंमें शून्य न हों तो सौख्य तथा जय होवे ॥ २४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रविवारको उत्तरदिशा काल चं० वायव्य मं० पश्चिम बु० नैर्ऋत्यमें बृ० दक्षिण शु० आग्नेय श० पूर्वमें काल होता है जिस दिशामें काल है उसके सं-मुख पांचवीं दिशामें पाश होता है जैसे शनिको पूर्वमें काल है तो पश्चिममें पाश होगा रात्रिमें विपरीत जिस दिशा काल उसमें पाश पाशवालीमें काल जानना संमुखकाल तथा पाश यात्रामें अशुभ होता है दक्षिण शुभ होते हैं कहा-भी है कि "दक्षिणस्थः शुभः कालः पाशो वामदिशि स्थितः शुभेत्यादि" और योगिनी राहुसहित दक्षिण तथा पृष्ठगत हो तो लक्ष शत्रुको मारता है यह स्वरोदयमें लिखा है कि "दक्षे पृष्ठे योगिनी राहुयुक्ता गच्छेद्युद्धे शत्रुलक्षं निहान्ति।" खंडराहु मासराहु वारराहु यामार्द्धराहु ग्रंथांतरोंमें सविस्तर कहे हैं॥ ३२॥

कालपाशः.

र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	वार.
उ.	वा.	प.	नै.	द.	आ.	पू.	काल.
द.	आ.	पू.	ई.	उ.	वा.	प.	पाश.

अनु०—भानिस्थाप्यान्यब्धिदिक्षुसप्तसप्तानलक्षतः॥
वायव्याग्नेयदिक्संस्थंपरिघंनविलङ्घयेत्॥ ३३॥

चतुष्कोण चक्रमें कृत्तिकादि ७ नक्षत्र पूर्वमें मघादि ७ दक्षिणमें अनुराधादि ७ पश्चिममें धनिष्ठादि ७ उत्तरमें आग्नेयवायव्यकोणगत एक रेखा देनी यह परिघदंड है इसे उल्लंघन न करना जो नक्षत्र जिस दिशामें है उनमें उस दिशा यात्रा शुभ होती है पूर्वउत्तरगतनक्षत्रोंमें दक्षिण पश्चिम-यात्रा तथा दक्षिणपश्चिमस्थ नक्षत्रोंमें पूर्वोत्तरयात्रा न करना इसमें परिघदंड उल्लंघन होता है॥ ३३॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिघदंड.

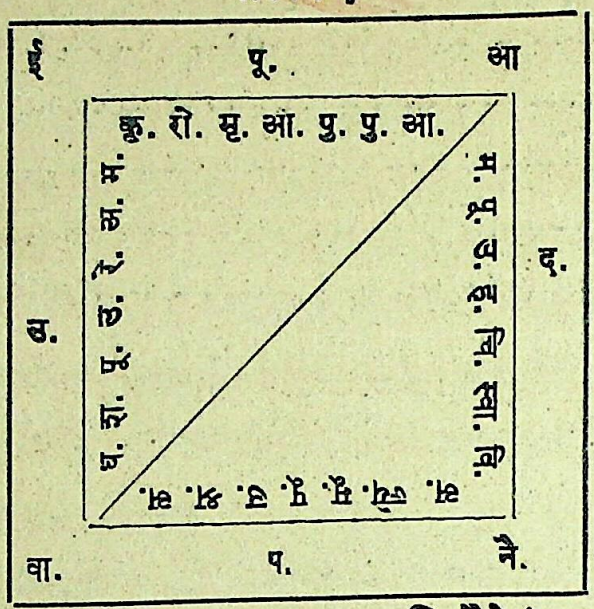

व०ति०—अग्नेर्दिशं नृपभयात्पुरुहूतदिग्भैरेवं प्रदक्षिणगता विदिशोथकृत्ये ॥ आवश्यकेपिपरिघंप्रविलङ्घ्य गच्छेच्छूलंविहाययदिदिक्तनुशुद्धिरस्ति ॥ ३४ ॥

विदिशाओंके लिये कहते हैं कि पूर्वदिशागमनोक्त नक्षत्रोंमें आग्नेय, दक्षिणोक्तोंमें नैर्ऋत्य, पश्चिमोक्तोंमें वायव्य उत्तरोक्तोंमें ईशान यात्रा राजाने करनी आवश्यक कृत्यमें परिघदंड उलंघन करके यात्रा करनी परंतु वारशूल नक्षत्रशूल न हों और दिग्लग्न शुद्ध हो १।५।९ पूर्व २।६।१० दक्षिण ३।७।११ पश्चिम ४।८।१२ उत्तर गतराशि हैं इनकी "शुद्धि" संमुख दक्षिणादि तथा इनके अंशादियोंकीभी होनी चाहिये ॥ ३४ ॥

इं०व०—मैत्राश्विपुष्याश्विनिभैर्निरुक्तायात्राशुभासर्वदिशासुतज्ज्ञैः ॥ वक्रीग्रहःकेन्द्रगतोस्यवर्गोलग्नेदिनंचास्यगमेनिषिद्धम् ॥ ३५ ॥

अनुराधा अश्विनी हस्त पुष्य नक्षत्र दिग्द्वारिकसंज्ञक हैं ज्योतिष जाननेवाले आचार्योंने इनमें सभी दिशाओंकी यात्रा शुभ कही है यात्रा लग्नसे वक्री ग्रह केंद्रमें हो तो न लेना तथा वक्री ग्रहका लग्न, नवांशक और वारभी न लेना यात्राभंग करता है ॥ ३५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इं०व०—सौम्यायनेसूर्यविधूत्तदोत्तरांप्राचींव्रजेत्तौयदिदक्षिणायने ॥
प्रत्यग्यमाशांचतयोर्दिवानिशंभिन्नायनत्वेथवधोन्यथाभवेत् ॥३६॥

जब सूर्य चंद्रमा उत्तरायणमें हों तो उत्तरपूर्वदिग्यात्रा शुभ और दक्षिणायनमें हो तो दक्षिणपश्चिमयात्रा शुभ होती है यदि सूर्यचंद्रमा भिन्न अयनोंमें हों तो जिस अयनमें सूर्य है उसके उक्त दिनमें जिस अयनमें चंद्रमा है उसके उक्त दिशा रात्रिमें जाना इससे अन्य यात्रा करे तो मरण होवे ॥ ३६ ॥

उ० जा०—उदेतियस्यांदिशियत्रयातिगोलभ्रमाद्वाथककुब्भसङ्के ॥
त्रिधोच्यतेसंमुखएकशुक्रोयत्रोदितस्तांतुदिशंनयायात् ॥३७॥

मुनियोंने शुक्र संमुख तीन प्रकारसे कहा है जिस दिशामें पूर्व वा पश्चिम उदय हो रहा है उस दिशा जानेमें (१) अथवा गोलभ्रमणसे दक्षिणगोल वा उत्तर गोल जहां हो उस दिशामें संमुख होता है (२) अथवा ककुब्भचक्र पूर्वादि कृत्तिकादि पूर्वोक्तदिङ्नक्षत्रोंमें जिसमें शुक्र है वह नक्षत्र जहां है उधर संमुख होता है (३) इन ३ प्रकारोंमें उदयवाला प्रकार मुख्य है जिस दिशा उदय हो उस दिशा न जाना आवश्यकमें संमुखशुक्रकी शांति सविस्तर वसिष्ठसंहितामें है उसकेभी असमर्थोंको दीपिकामें दान लिखा है कि " सितवस्त्रं सितं छत्रं हैममौक्तिकसंयुतम् । ततो द्विजातये दद्यात्प्रतिशुक्रप्रशान्तये ॥ १ ॥ " अर्थात् श्वेतवस्त्र श्वेतछत्र सुवर्ण मोती विधिपूर्वक ब्राह्मणको प्रतिशुक्रके दोषशांतिके लिये देना ॥ ३७ ॥

उ०—वक्रास्तनीचोपगतेभृगोःसुतेराजाव्रजन्यातिवशंहिविद्विषाम् ॥
बुधोनुकूलोयदितत्रसंचरन् रिपून्जयेन्नैवजयःप्रतीन्दुजे ॥३८॥

शुक्रके वक्र, अस्त नीचत्वगत हुएमें तथा युद्धके पराजित हुएमें राजा जावे तो अवश्य शत्रुके वश (बंधन) में हो जावे परंतु यदि शुक्रके वक्रादिमें बुध अनुकूल (पृष्ठ) हो तो शत्रुको जीत लावे एवं सौम बुध शत्रुको (प्रति) संमुख तुल्यफली हैं ॥ ३८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शालिनी-यावच्चन्द्रःपूषभात्कृत्तिकाद्येपादेशुक्रोन्धोनदुष्टोग्रदक्षे ॥
मध्येमार्गेभार्गवास्तेपिराजातावत्तिष्ठेत्संमुखत्वेपितस्य ॥ ३९ ॥

जब चंद्रमा रेवतीसे कृत्तिकाके प्रथमचरणपर्यंत रहता है उन दिनों शुक्र अंधा कहाता है देखा जाता है तथापि दृश्यफल संमुख दक्षिण होनेका दुष्ट फल नहीं करता और दीर्घयात्रामें यात्रा करके यदि मार्गमें शुक्र अस्त हो जावे तो उसके उदयपर्यंत उसी यात्रामें राजा रहे जब उदय हो तब उसे पृष्ठदिशा करके यात्रा पूर्ण करे ऐसे दक्षिण संमुखमेंभी है कि यदि मुहूर्तमें प्रस्थान करके अनंतर सफर पूर्ण न हुएमें संमुख दक्षिण शुक्र हो जावे तबलौं उसी सफरमें रहे जबलौं वामपृष्ठ होता है यदि ऐसेही मार्गमें बुधास्त हो तो दोष नहीं परंतु बुध उदय होके संमुख हो जावे तो दोष है पुनः अस्तपर्यंत मार्गमें रहे ॥ ३९ ॥

अनु०-कुम्भकुम्भांशकौत्याज्योसर्वदागमनेबुधैः ॥
तत्रप्रयातुर्नृपतेरर्थनाशः पदे पदे ॥ ४० ॥

यात्रामें कुंभलग्न कुंभांशक जाननेवालोंने सर्वदा त्याग करने यदि इनमें राजा यात्रा करे तो पदपद चलनेमें धन वा प्रयोजन नाश होवे ॥ ४० ॥

मं०भा०-अथमीनलग्नउतवातदंशकेचलितस्यवक्रमिहवर्त्मजायते।
जनिलग्नजन्मभपतीशुभग्रहौभवतस्तदातदुदयेशुभोगमः ४१॥

तथा मीनलग्न मीनांशकमें राजा गमन करे तो मार्गसे लौट आना होवे जन्मलग्नेश जन्मराशीश शुभग्रह लग्नमें हो तो उस लग्नमें गमन शुभ होता है, जो वे पापग्रहभी हों तथापि गमन लग्नमें शुभ होते हैं और जन्मलग्न जन्मराशिभी यात्रा लग्नमें शुभ कही है ॥ ४१ ॥

रथोद्धता-जन्मराशितनुतोष्टमेथवास्वारिभाच्चरिपुभेतनुस्थिते ॥
लग्नगास्तदधिपायदाथवास्युर्गतंहिनृपतेर्मृतिप्रदम् ॥ ४२ ॥

जन्मराशि जन्मलग्नसे अष्टमराशिलग्नमें तथा शत्रुकी जन्मराशि जन्मलग्नसे छठी राशि यात्रालग्नमें अथवा अपने जन्मराशिलग्नसे अष्टममें शत्रुकी जन्म-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशिलग्नोंसे छठे उनके स्वामी यात्रालग्नमें हो तो यात्री राजाकी मृत्यु होवे अथांतरोंमें जन्मराशिलग्नसे व्ययराशिभी अशुभ कही है ॥ ४२ ॥

शालिनी—लग्नेचन्द्रेवापिवर्गोत्तमस्थेयात्राप्रोक्तावाञ्छितार्थैकदात्री॥
अम्भोराशौवातदंशेप्रशस्तंनौकायानंसर्वसिद्धिप्रदायि॥४३

मीन कुंभको छोडकर लग्नवर्गोत्तम हो अथवा चंद्रमा वर्गोत्तममें हो तो यात्रा मनोवांछित देनेवाली होती है और जलचरराशि लग्नमें हो अथवा जलचरराशिका अंश लग्नमें हो तो नौकायात्रा (तरीका सफर) सिद्धि देनेवाली होती है ॥ ४३ ॥

इं०व०—दिग्द्वारभेलग्नगतेप्रशस्तायात्रार्थदात्रीजयकारिणीच ॥
हानिर्विनाशंरिपुतोभयंचकुर्यात्तथादिक्प्रतिलोमलग्ने॥४४॥

दिग्द्वारलग्नोंमें यात्रा शुभ धन एवं जय करती है दिग्द्वार १।५।९ पूर्व २।६।१० दक्षिण ३।७।११ पश्चिम ४।८।१२ उत्तरके हैं जो प्रतिलोम लग्न जैसे १।५।९ पश्चिम ४।८।१२ दक्षिण आदि हो तो हानि धननाश वा शत्रुसे भय होवे ॥ ४४ ॥

व०ति०—राशिःस्वजन्मसमयेशुभसंयुतोयोयः स्वारिभान्नि-
धनगोपिचवेशिसंज्ञः ॥ लग्नोपगःसगमनेजयदोथ
भूपयोगैर्गमोविजयदोमुनिभिः प्रदिष्टः ॥ ४५ ॥

यात्रीके जन्मसमयमें जो राशि शुभग्रहोंसे युक्त हो वह यात्रालग्नमें जय देती है अथवा शत्रुके राशि लग्नसे अष्टमराशि तथा जो राशि वेशि (सूर्य राशिसे दूसरी) हो तो वहभी यात्रा लग्नमें विजय देती है अथवा जातकोक्त राजयोग यात्रामें हों तो वह यात्रा जय देनेवाली मुनियोंने कही है ॥ ४५॥

उ०जा०—सूर्यःसितोभूमिसुतोथराहुःशनिःशशीज्ञश्चबृहस्पतिश्च ॥
प्राच्यादितोदिक्षुविदिक्षुचापिदिशामधीशाःक्रमतःप्रदिष्टाः॥४६

क्रमसे दिशा विदिशाओंके स्वामी कहते हैं कि पूर्वका सूर्य आग्नेयका शुक्र दक्षिणका मंगल नैर्ऋत्यका राहु पश्चिमका शनि वायव्यका चंद्रमा उत्तरका बुध ईशानका बृहस्पति दिगीश है ॥ ४६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तनुमध्या-केन्द्रेदिगधीशेगच्छेद्वनीशः ॥
लालाटिनितस्मिन्नेयादरिसेनाम् ॥ ४७ ॥

दिगीश यात्रालग्नसे केंद्रमें हो तो राजा यात्रा करे परंतु उस दिगधीशपर लालाटिक (वक्ष्यमाण) हो तो शत्रुसेनामें न जावे ॥ ४७ ॥

शा०वि०-प्राच्यादौतरणिस्तनौभृगुसुतोलाभव्ययेभूसुतः
कर्मस्थोथतमोनवाष्टमगृहेसौरिस्तथासप्तमे ॥
चन्द्रःशत्रुगृहात्मजेपिचबुधःपातालगोगीष्पति-
र्वित्तभ्रातृगृहेविलग्नसदनाल्लालाटिकाःकीर्तिताः ॥ ४८ ॥

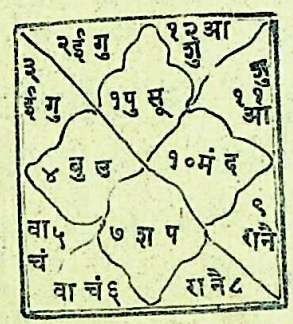

लग्नके सूर्यमें पूर्वको लालाटिक तथा आग्नेयको शुक्रके ११ । १२ भावमें होनेसे और दशम मंगल दक्षिणको ८ । ९ भावमें, राहु नैर्ऋत्यको शनि सप्तम, पश्चिमको चंद्रमा ६ । ५ में, वायव्यको बुध चतुर्थ उत्तरको बृहस्पति २। ३में ईशानको लालाटिक होता है लालाटिक दिक्स्वामीको छोडके यात्रा करनी॥ ४८॥

अनु०-मृगेगत्वाशिवेस्थित्वादितौगच्छन्नृजयेद्रिपून् ॥
मैत्रेप्रस्थायशक्रेहस्थित्वामूलेव्रजंस्तथा ॥ ४९ ॥
इं०व०-प्रस्थायहस्तेनिलतक्षधिष्ण्येस्थित्वाजयार्थीप्रवसेद्द्विदैवे ॥
वस्वन्त्यपुष्येनिजसीम्निचैकरात्रोषितःक्ष्मांलभतेवनीशः ॥५०॥

मृगशिरमें अपने घरसे दूसरे घरमें जाकर आर्द्रामें वहीं रहे तब पुनर्वसुमें ग्रामसे बाहर गमन करे तो शत्रुको जीतता है (१) तथा अनुराधामें प्रस्थान ज्येष्ठामें स्थिति मूलमें गमन (२) हस्तमें प्रस्थान चित्रा स्वातीमें स्थित रहकर विशाखामें गमन (३) ये तीन योग जय देनेवाले हैं तथा धनिष्ठा रेवती पुष्यमें चलकर अपने नगरके अंत्यमें एक रात्रि रहकर आगे जावे तो राजा शत्रुसे भूमि जीते ॥ ४९ ॥ ५० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनु०—उषःकालोविनापूर्वागोधूलिःपश्चिमांविना ॥
विनोत्तरांनिशीथःसन्यानेयाम्यांविनाभिजित् ॥ ५१ ॥

उषःकालमें पूर्व गोधूलीमें पश्चिम अर्द्धरात्रिमें उत्तर मध्याह्नमें दक्षिण यात्रा न करना प्रयोजन यह है कि सूर्य ८ दिशाओंमें आठों प्रहरोंमें रहता है वह सन्मुख न होना चाहिये ॥ ५१ ॥

अनु०—लग्नाद्भावाःक्रमाद्देहकोशधानुष्कवाहनम् ॥
मन्त्रोरिर्मार्गआयुश्चहृद्व्यापारागमव्ययाः ॥ ५२ ॥

देह १ कोश (धन) २ धानुष्क ३ वाहन ४ मंत्र ५ अरि ६ मार्ग ७ आयु ८ हृदय ९ व्यापार १० आगम ११ व्यय १२ भावोंके संज्ञा ये हैं इनमें शुभयोग दृष्टिसे अशुभ फल यथासंज्ञकोंका होता है ॥ ५२ ॥

शा०—केन्द्रेकोणेसौम्यखेटाःशुभाःस्युर्न्यूनेपापास्त्र्यायषट्खेषुचन्द्रः ॥
नेष्टोलग्नान्त्यारिरन्ध्रेशनिःखेऽस्तेशुक्रोलग्नेष्टनगान्त्यारिरन्ध्रे ५३

शुभग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० कोणों ५ । ९ में पापग्रह ३ । ११ । ६ में चन्द्रमा १ । १२ । ६ । ८ रहित स्थानमें शनि १० रहित भावोंमें शुक्र ७ रहित भावोंमें शुभफल देते हैं । अन्योंमें अशुभफल यात्रामें देते हैं तथा लग्नेश ७ । १२ । ६ । ८ भावोंमें मृत्युफल देता है ग्रहोंके भाव चक्रमें हैं ॥ ५३ ॥

पादाकुलकम्—योगात्सिद्धिर्धरणिपतीनामृक्षगणैरपिभूदेवानाम् ॥
चौराणामपिशुभशकुनैरुक्ताभवतिमुहूर्तैरपिमनुजानाम् ॥ ५४ ॥

राजाओंको यात्रालग्नसे वक्ष्यमाण सहित योगोंसे तिथ्यादि अयोग्य हुएमेंभी सिद्धि होती है ब्राह्मणोंको नक्षत्रगुण चन्द्रताराबलादिसे, चौरोंको केवल शुभाशुभ शकुनहीसे तथा शिवालिखितसेभी, अन्यजनोंको मुहूर्त्त शिवालिखित तथा उद्वेगादि वेलाओंमें सिद्धि होती है यहां ब्राह्मण द्विजातिके अर्थमें है यह पद ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तीनहूंका बोधक है तथा जिनको जो सिद्धिद (जैसे राजाओंको योग) कहे है इनमेंभी दिक्शूलादि मुख्य दोष भद्रा रिक्ता आदि पंचांगदोषविचार सर्वथा मुख्यही है ॥ ५४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यात्रालग्नवशाद्ग्रहभावफलचक्रम्.

भा.	सूर्य	चंद्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
१	अनेककष्ट	अनेककष्ट	अनेककष्ट	सुख	सुख	सुख	अनेककष्ट	क्षुधादिरोग
२	धनहानि	प्रियसंग	मृत्यु	धर्मादिला	पुत्रलाभ.	धर्मलाभ	बंधन	उत्पात
३	धन	आयु	जय	लाभ	कीर्ति	सौख्य	लाभ	लाभ
४	दुःख	वृद्धि	दुःख	लाभ	शत्रुनाश	भोग	हानि	क्षय
५	भय	शुभ	भय	सिद्धि	अर्थसिद्धि	शत्रुनाश	सिद्धि	भय
६	लाभ	हानि	लाभ	शत्रुहानि	सिद्धि	धनहानि	शत्रुहानि	जय
७	नाश	सुख	नाश	मित्रागम	स्त्रीलाभ	नाश	नाश	नाश
८	शत्रुवृद्धि	शत्रुवृद्धि	भय	नैरुज्य	रक्षा	अर्थसिद्धि	भय	शत्रुवृद्धि
९	अशुभ	शुभ	अशुभ	धनश्री	श्रीर्धनम्	अतिसौख्य	उपद्रव	उपद्रव
१०	जय	पुष्टि	राज्य	कामद	शुभ	राज्यलक्ष्मी	दीर्घरोग	वैरापनोद
११	जय	जय	जय	लाभ	कीर्ति	शत्रुक्षय	विजय	सौख्य
१२	कष्ट	शत्रुवृद्धि	मृत्यु	धनहानि	धनहानि	धनहानि	मृत्यु	कष्ट

मं० भा०—सहजेरविर्दशमगश्चन्द्रमाशनिमङ्गलौरिपुगृहेसितःसुते ॥
हिबुकेबुधोगुरुरर्पाहलग्नगःसजयत्यरीन्प्रचलितोचिरान्नृपः ५५॥

यात्रायोग । तीसरा सूर्य दशम चन्द्रमा छठा शनि मंगल पंचम शुक्र चतुर्थ बुध लग्नमें बृहस्पति हो ऐसे लग्नमें राजा यात्रा करे तो थोडेही समयमें शत्रुको जीतता है ॥ ५५ ॥

गाथा—भ्रातरिशौरिर्भूमिसुतोवैरिणिलग्नेदेवगुरुः ॥
आयगतेकेशत्रुजयश्चेदनुकूलोदैत्यगुरुः ॥ ५६ ॥

तीसरा शनि छठा मंगल लग्नमें बृहस्पति ग्यारहवां सूर्य हो ऐसे योगमें यदि शुक्र अनुकूल (पृष्ठगत) हो तो यात्री शत्रुको जीते ॥ ५६ ॥

गाथा—तनाजीवइन्दुर्मृतोवैरिगोर्कः ॥
प्रयातोमहींद्रोजयत्येवशत्रून् ॥ ५७ ॥

लग्नमें गुरु आठवां चन्द्र छठा सूर्य हो तो यात्री राजा शत्रुको जीते ॥ ५७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पङ्क्तिश्छन्दः—लग्नगतःस्याद्देवपुरोधाः ॥
लाभधनस्थैःशेषनभोगैः ॥ ५८ ॥

यात्रालग्नमें बृहस्पति हो अन्य ग्रह ११। २में हों तो राजाका जय होवे ॥५८॥

मत्ता—द्यूनेचन्द्रेसमुदयगेकैजीवेशुक्रेविदिधनसंस्थे ॥
ईदृग्योगेचलतिनरेशोजेताशत्रून्गरुडइवाहीन् ॥ ५९ ॥

सप्तमस्थानमें चंद्रमा लग्नमें सूर्य बृहस्पति बुध शुक्र दूसरे भावमें हो इस प्रकार योगमें राजा चले तो सर्पोंको गरुड जैसा वैसा शत्रुओंको जीते ॥ ५९ ॥

चित्रपदा—वित्तगतः शशिपुत्रोभ्रातरिवासरनाथः ॥
लग्नगतोभृगुपुत्रः स्युःशलभाइवसर्वे ॥ ६० ॥

बुध धनस्थानमें सूर्य तीसरा शुक्र लग्नमें हो ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो उसके शत्रु शलभ (टीडी) जैसे आपही उडकर अग्निमें भस्म हो जाते हैं ऐसे उड जावें युद्धभी न करना पडे ॥ ६० ॥

गाथा—उदयेरविर्यदिसौरिरारिगःशशिदशमेपि ॥
वसुधापतिर्यदियातिरिपुवाहिनीवशमेति ॥ ६१ ॥

लग्नमें सूर्य छठा शनि दशम चंद्रमा हो ऐसे योगमें राजा गमन करे तो शत्रुसेनाको अपने वशमें कर लेवे ॥ ६१ ॥

जलोद्धतगतिः—तनौ शनिकुजौ रविर्दशमभे बुधो
भृगुसुतोपिलाभदशमे ॥ त्रिलाभरिपुभेषु
भूसुतशनीगुरुज्ञभृगुजास्तथाबलयुताः ॥ ६२ ॥

लग्नमें शनि मंगल दशम सूर्य १०।११ में बुध तथा शुक्र हो ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो विजय होवे ॥ ६२ ॥

गाथा—समुदयगेविबुधगुरौमदनगतेहिमकिरणे ॥
हिबुकगतौबुधभृगुजौसहजगताःखलखचराः ॥ ६३ ॥

लग्नमें बृहस्पति सप्तममें चंद्रमा चतुर्थ बुध शुक्र तीसरे पापग्रह हों ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो विजय होवे ॥ ६३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुमुखी-त्रिदशगुरुस्तनुगोमदनेहिमकिरणोरविरायगतः ॥
सितशशिजावपिकर्मगतौरविसितभूमिसुतःसहजे ॥ ६४ ॥

लग्नमें बृहस्पति सप्तम चंद्रमा ११ में सूर्य १० में बुध शुक्र तीसरे शनि मंगल हो ऐसे योगमेंभी वही फल है ॥ ६४ ॥

श्रीछन्दः-देवगुरौवाशशिनितनुस्थेवासरनाथेरिपुभवनस्थे ॥
पञ्चमगेहेहिमकरपुत्रःकर्मणिसौरिःसुहृदिसितश्च ॥ ६५ ॥

बृहस्पति अथवा चंद्रमा लग्नमें सूर्य छठा बुध पंचम शनि दशम शुक्र चतुर्थ हो ऐसे योगमें यात्र करनेवाले राजाकी जय होवे ॥ ६५ ॥

प्रमुदितवदना-हिमकिरणसुतो बली चेत्तनौ त्रिदशपतिगुरु
र्हिकेन्द्रस्थितः ॥ व्ययगृहसहजारिधर्मस्थि-
तोयदिचभवतिनिर्बलश्चन्द्रमाः ॥ ६६ ॥

बलवान् बुध लग्नमें बृहस्पति केंद्रमें तथा बलरहित चंद्रमा १२ । ३ । ६ । ९ । ८ में हो तो इस योगकाभी यात्रामें पूर्वोक्तही फल है ॥ ६६ ॥

अभिनवतामरसा-अशुभखगैरनवाष्टमदस्थैर्हिबुकसहो-
दरलाभगृहस्थः ॥ कविरिहकेन्द्रगगीष्पति-
र्दृष्टोवसुचयलाभकरःखलुयोगः ॥ ६७ ॥

पापग्रह ९ । ८ । ७ रहित स्थानोंमें शुक्र ४ । ३ । ११ में हो इसे केंद्रस्थ बृहस्पति देखे ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो धनका समूह एवं विजयभी मिले ॥ ६७ ॥

प्रमिताक्षरा-रिपुलग्नकर्महिबुके शशिजे परिवीक्षि-
तेशुभनभोगमनैः ॥ व्ययलग्नमन्मथगृहे-
ष्वजयःपरिवर्जितेष्वशुभनामधरैः ॥ ६८ ॥

बुध ६ । १ । १० । ४ में शुभग्रहोंसे दृष्ट हो १२ । १ । ७ भावोंसे रहित स्थानोंमें पाप ग्रह हों ऐसे योगमें राजा यात्रा करे तो विजय पावे ॥ ६८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मणिमाला-लग्ने यदि जीवः पापा यदिलाभेकर्मण्यपिवा
चेद्राज्याधिगमः स्यात् ॥ द्यूने बुधशुक्रौ
चन्द्रोहिबुकेवातद्वत्फलमुक्तं सर्वैर्मुनिवर्यैः ॥ ६९ ॥

लग्नमें बृहस्पति अथवा ११ । १० में पाप ग्रह हो तो राज्य मिले तथा ७ में बुध शुक्र ४ में चंद्रमा हो तो मुनियोंने वही फल कहा है ॥ ६९ ॥

चन्द्रिका-रिपुतनुनिधनेशुक्रजीवेन्दवो ह्यथबुधभृगुजौ
तुर्यगेहस्थितौ ॥ मदनभवनगश्चन्द्रमावाम्बु-
गःशशिसुतभृगुजान्तर्गतश्चन्द्रमाः ॥ ७० ॥

छठा शुक्र लग्नमें बृहस्पति अष्टम चन्द्रमा हो तो यात्री राजाकी जय होवे अथवा बुध शुक्र चतुर्थमें चंद्रमा सप्तम हो तो वही फल है तथा चतुर्थ चंद्रमा बुध शुक्रके बीचमें हो तौभी वही फल है ॥ ७० ॥

गाथा-सितजीवभौमबुधभानुतनूजास्तनुमन्मथा-
रिहिबुकत्रिगृहेचेत् ॥ क्रमतोरिसोदरखशा-
त्रवहोराहिबुकायगैर्गुरुदिनेखिलखेटैः ॥ ७१ ॥

लग्नमें शुक्र सप्तममें बृहस्पति छठा मंगल चौथा बुध तीसरा शनि यात्रा-लग्नसे हो तो यायी राजाका विजय होवे बृहस्पतिके दिनमें सूर्य छठा चन्द्रमा ३ में मंगल १ में बुध ६ में बृहस्पति १ में शुक्र ४ में शनि ११ में हों तौभी वही फल है ॥ ७१ ॥

मंजुभाषिणी-सहजेकुजौनिधनगश्चभार्गवोमदनेबुधोरवि रगौ
तनौगुरुः ॥ अथचेत्स्युरीज्यसितभानवो
जलत्रिगताहिसौरिरुधिरौरिपुस्थितौ ॥ ७२ ॥

तीसरा मंगल ८ में शुक्र ७ में बुध ६ में सूर्य १ में बृहस्पति हो तो यात्री विजय पावे अथवा बृहस्पति शुक्र सूर्य तृतीय चतुर्थमें यथावकाश हों शनि मंगल छठे हों तौभी वही फल है ॥ ७२ ॥

शा०वि०-एकोज्ञेज्यसितेषुपञ्चमतपःकेन्द्रेषु योगस्तथाद्यौ-
चेत्तेष्वधियोगएषुसकलायोगाधियोगः स्मृतः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योगेक्षेममथाधियोगगमनेक्षेमंरिपूणांवधंचाथोक्षे
मयशोवनीश्च लभतेयोगाधियोगेव्रजन् ॥ ७३ ॥

पंचम नवम ५ । ९ केंद्रों १ । ४ । ७ । १० में बुध बृहस्पति शुक्रमेंसे एक हो तो योग हुआ दो हो तो अधियोग तीनही हों तो योगाधियोग होता है यात्रालग्नसे योग हो तो क्षेम अधियोग हो तो क्षेम तथा शत्रुवधभी आर योगाधियोग हो तो यायी राजा शत्रुको मारकर राज्य पावे । उक्त ३ ग्रहोंके केंद्रकोणोंमें पृथक् संख्या नाभसयोगोंके सदृश १०८ भेद हैं ॥ ७३ ॥

तोटक–इषमासितादशमीविजयाशुभकर्मसुसिद्धिकरीकथिता ॥
श्रवणर्क्षयुतासुतरांशुभदानृपतेस्तुगमेजयसंधिकरी ॥ ७४ ॥

आश्विनमासकी शुक्लदशमी विजयासंज्ञका है यह समस्त शुभ कार्योंमें सिद्धि करनेवाली है श्रवण नक्षत्रभी इसमें हो तो अतिशय शुभफल देती है राजाके यात्रामें यह विजय तथा सिद्धि (कार्यसिद्धि) देती है अथवा संधिकरीभी पाठ है संधि मिलापको कहते हैं ॥ ७४ ॥

व०ति०–चेतोनिमित्तशकुनैरतिसुप्रशस्तैर्ज्ञात्वाविलग्नबल-
मुर्व्यधिपःप्रयाति ॥ सिद्धिर्भवेदथपुनः शकुना-
दितोपिचेतोविशुद्धिरधिकानचतांविनेयात् ॥ ७५ ॥

चित्तकी प्रसन्नता, शुभशकुन, निमित्त अंगस्फुरणादियोंका विचार शुभ जानके तथा लग्नबल देखके यदि राजा यात्रा करे तो कार्यसिद्धि होवे अशुभ शकुन, निमित्त लग्न तथा चित्तकी अप्रसन्नतामें मरण वा धनहानि होती है शकुनादियोंसेभी चित्तकी शुद्धि प्रबल है विना चित्तकी शुद्धि, श्रद्धा वा प्रसन्नताके शुभलक्षणोंमेंभी न जावे ॥ ७५ ॥

वसन्तमालिका–व्रतबन्धनदैवतप्रतिष्ठाकरपीडोत्सवसू-
तकासमाप्तौ ॥ नकदापिचलेदकाल-
विद्युदनवर्षातुहिनेपिसप्तरात्रम् ॥ ७६ ॥

व्रतबंध देवप्रतिष्ठा, विवाह, होलिकादि उत्सव, दोनहूं प्रकारका सूतक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इतन कामोंमें इनकी स्वतंत्रोक्त अवधि पूरी हुए विना यात्रा न करनी तथा विना समय विजुरी वा वज्र, मेघगर्जन वर्षा नीहार (बर्फ) पडे तो सात रात्रि-पर्यंत यात्रा न करनी अपने समयोंपर इनका दोष नहीं ॥७६॥

वंशस्थविरा—महीपतेरेकदिनेपुरात्पुरेयदाभवेतांगमनप्रवेशकौ ॥
भवारशूलप्रतिशुक्रयोगिनीर्विचारयेन्नैवकदापिपण्डितः ॥७७॥

यदि राजाके एक नगरसे दूसरे नगरमें जाना अर्थात् गमन प्रवेश एकही दिनमें हो जावे तो यथावकाश पंचांगशुद्धिमात्र देखनी चाहिये नक्षत्रशूल वार-शूल, प्रतिशुक्र, योगिनी इतने दोष पंडित न विचारे यदि गमन दिनसे अन्य दिनमें गम्यस्थानमें प्रवेश हो तो उक्त सभी विचारने ॥ ७७ ॥

आर्या—यद्येकस्मिन्दिवसेमहीपतेर्निर्गमप्रवेशौस्तः ॥
तार्हिविचार्यःसुधियाप्रवेशकालोनयात्रिकस्तत्र ॥ ७८ ॥

यदि राजाका एकही दिनमें निर्गम प्रवेश (घरसे उठकर अभीष्ट स्थानमें प्रवेश) हो तो बुद्धिमान्ने प्रवेशकाल प्रवेशोक्त मुहूर्त देखना यात्रोदित मुहूर्त न विचारना ॥ ७८ ॥

अनुष्टुप्—प्रवेशान्निर्गमंतस्मात्प्रवेशंनवमेतिथौ ॥
नक्षत्रेपितथावारेनैवकुर्यात्कदाचन ॥ ७९ ॥

गृहप्रवेशसे नवम तिथि नक्षत्रवारमें पुनर्गमन वा गमनसे पुनः प्रवेश न करना ग्रंथांतरोंमें नवममास वर्षमेंभी न करना कहा है ॥ ७९ ॥

शा०—अग्निंहुत्वादैवतंपूजयित्वा नत्वाविप्रानर्चयित्वादिगीशम् ॥
दत्त्वादानंब्राह्मणेभ्योदिगीशंध्यात्वाचित्तेभूमिपालोधिगच्छेत् ॥८०॥

राजा होम करके इष्टदेवताको पूजके ब्राह्मणोंको नमस्कार करके जिस दिशा जाना है उसके स्वामीको पूजके अनेक प्रकार दान ब्राह्मणोंको देके दिगीशका मनसे ध्यान करके यात्रा करे ॥ ८० ॥

शा०वि०—कुल्माषांस्तिलतण्डुलानपितथामाषांश्चगव्यंदधि
त्वाज्यंदुग्धमथैणमांसमपरंतस्यैवरक्तंतथा ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तद्वत्पायसमेवचाषपललंमार्गेचशाशंतथा षाष्टिक्यं
चप्रियंग्वपूपमथवाचित्राण्डजान्सत्फलम् ॥ ८१ ॥
कौर्मसारिकगौधिकंचपललंशाल्यंहविष्यंहयाद्दक्षेस्यात्कृसरान्नमुद्ग-
मपिवापिष्टंयवानांतथा ॥ मत्स्यान्नंखलुचित्रितान्नमथवादध्यन्नमेवंक-
माद्भक्ष्याभक्षमिदंविचार्यमतिमान्भक्षेत्तथालोकयेत् ॥ ८२ ॥

नक्षत्रोंके दोहद कहते हैं । अश्विनीमें उरद चावल, एवं २ में तिल चावल ३ में उरद ४ गौका दही ५ गौका घी ६ गौका दूध ७ हरिणका मांस ८ हरिणका रुधिर ९ में पायस १० चाषपक्षीका मांस ११ में मृगमांस १२ शशेका मांस १३ में साठी धान १४ प्रियंगु (कांगनी) १५ घीका पकवान १६ चित्रपक्षी (तीतर) १७ उत्तम फल १८ कछुवेका मांस १९ सारिका (मैना) का मांस २० गोधाका मांस २१ शाल्य (शौलेका मांस) २२ हविष्य (मुद्गादि) २३ खिचरी २४ मुद्गान्न (मूंगकी खिचरी) २५ जौका सतुवा २६ मच्छीके मांस सहित भात २७ अनेक पकवान २८ में दहीभात है इन वस्तुओंका देश, कुलाचारके अनुसार खाना वा देखना सूंघना वा स्पर्श करना इस कृत्यसे नक्षत्रोक्त दोष नहीं होता ॥ ८१ ॥ ८२ ॥

अनु०—आज्यंतिलौदनंमत्स्यंपयश्चापियथाक्रमम् ॥
भक्षयेद्दोहदंदिश्यमाशांपूर्वादिकांव्रजेत् ॥ ८३ ॥

दिशाओंके दोहद । पूर्वदिशा जानेमें घी, दक्षिण जानेमें तिलमिश्रित भात, पश्चिम जानेमें मछली और उत्तर जानेमें दूध खाकर जाना इससे कोई-भी दुष्ट फल नहीं होता ॥ ८३ ॥

अनु०—रसालांपायसंकार्ञ्जिश्रृतंदुग्धंतथादधि ॥
पयोश्रितंतिलान्नंचभक्षयेद्वारदोहदम् ॥ ८४ ॥

वारदोहद । रविवारको शिखरिण, चंद्रको पायस, मंगलको कांजिक, बुधको काढा हुआ दूध, गुरुको दही, शुक्रको कच्चा दूध, शनिको तिलौदन खायके गमन करना ॥ ८४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व०ति०—पक्षादितोर्कदलतण्डुलवारिसर्पिःश्राणाहविष्यम
पिहेमजलंत्वपूपम् ॥ भुक्त्वाव्रजेद्रुचकमम्बुच-
धेनुमूत्रंयावान्नपायसगुडानसृगन्नमुद्गान् ॥ ८५ ॥

तिथिदोहद। प्रतिपदाको आंकके पत्र एवं २ को चावलोंका धोवन ३ को घी ४ यवागू (अमली) ५ हविष्यान्न ६ सोनेका धोवन ७ पुआ ८ बिजौराफल ९ जल १० गोमूत्र ११ जौ १२ पायस १३ गुड १४ रुधिर १५ मुद्गान्न खायके यात्रा करनी ॥ ८५ ॥

प्रहर्षिणी—उद्धृत्यप्रथमतएवदक्षिणाङ्घ्रिंद्वात्रिंशत्पदमभि-
गम्यदिश्ययानम् ॥ आरोहेत्तिलघृतहेमताम्र-
पात्रंदत्त्वादैगणकवरायचप्रगच्छेत् ॥ ८६ ॥

राजाने यात्रासमयमें प्रथम दाहिना पैर उठायके ३२ पैर पैदल चलना तदा वक्ष्यमाण सवारीमें आरोहण करना उस समय ज्योतिषीको तिल, घी, सुवर्ण तांबेका पात्र दान दे यथाशक्ति भूयसी देके गमन करना ॥ ८६ ॥

अनु०—प्राच्यांगछेद्गजेनैवदक्षिणस्यांरथेनच ॥
दिशिप्रतीच्यामश्वेनतथोदीच्यांनरैर्नृपः ॥ ८७ ॥

पूर्वदिशायात्रामें हाथी दक्षिणको रथ पश्चिमको घोडा उत्तरको मनुष्यों-की सवारीमें जाना ॥ ८७ ॥

पादाकुल—दैवगृहाद्वागुरुसदनाद्वास्वगृहान्मुख्यकलत्रगृहाद्वा ॥
प्राश्यहविष्यंविप्रानुमतःपश्यन्शृण्वन्मङ्गलमेयात् ॥८८

यात्रासमयमें देवताके पूजनगृहसे अथवा गुरुस्थानसे अथवा अपने शयनस्थान (आवास) से अथवा बहुत स्त्रीसंभवमें मुख्य स्त्री (पटरानी) के घरसे हविष्य यज्ञभाग हवनांतमें प्राशन करके ब्राह्मणके अनुमतसे ब्राह्मण इदं विष्णु० इत्यादि मंत्रसे प्रथम पैर उठाकर जानेकी आज्ञा देता है तथा मंगलशब्द गीतवाद्य कलशादि सुनता देखता गमन करे ॥ ८८ ॥

ग्रह०—कार्यार्थैरिहगमनस्यचेद्विलंबोभूदेवादिभिरुपवीतमायुधंवा ॥
क्षौद्रंचामलफलमाशुचालनीयंसर्वेषांभवतियदेवहृत्प्रियं वा ॥८९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यात्रामुहूर्त्तमें यदि कार्यवशात् गमनमें विलंब हो तो ब्राह्मणने यज्ञोपवीत क्षत्रियने शस्त्र वैश्यने मधु शूद्रने नारिकेलादि फल तत्कालमें चलाय देना इसे प्रस्थान कहते हैं अथवा सभीने अपने मनकी प्रियवस्तु प्रस्थान करनी ॥ ८९ ॥

मदाक्रान्ता–गेहाद्गेहान्तरमपिगमस्तार्हियात्रेतिगर्गः सीम्नः
सीमान्तरमपिभृगुर्बाणविक्षेपमात्रम् ॥ प्रस्थानं
स्यादितिकथयतेथोभरद्वाजएवं यात्राकार्या
बहिरपिपुरात्स्याद्वसिष्ठोब्रवीति ॥ ९० ॥

प्रस्थानका परिणाम कहते हैं कि अपने घरसे समीपवर्ति घरमेंभी गर्गाचार्य यात्राही कहता है तथा अपनी सीमा (सरहद) से दूसरी सीमामें भृगु कहता है तथा बडे जोरसे बाण जितना दूर जाता है उतने पर्यंत भरद्वाज कहता है तथा नगरसे बाहरही यात्रा प्रस्थान करना वसिष्ठ कहता है सभी ठीक है ॥ ९० ॥

व०ति०–प्रस्थानमत्रधनुषांहिशतानिपञ्चकेचिच्छतद्वयमु-
शन्तिदशैवचान्ये ॥ संप्रस्थितोयइहमन्दिरतः
प्रयातोगन्तव्यदिक्षुतदपिप्रयतेनकार्यम् ॥ ९१ ॥

प्रस्थानको कोई ५०० धनुष (२००० हात) अपने घरसे कहते हैं कोई २०० धनुष (८०० हात) कहते हैं कोई १० ही धनुष कहते हैं इससे कार्यवश समीप दूर मानना प्रस्थान गंतव्यदिशाके ओर रखना स्वयं प्रस्थान उत्तम है तदशक्तिमें वस्तुप्रस्थान है गमनमें प्रथम दिन थोडा दूसरे कुछ अधिक एवं क्रमसे दीर्घयात्रामें गमन करना ॥ ९१ ॥

स्रग्धरा–प्रस्थानेभूमिपालोदशदिवसमभिव्याप्यनैकत्रतिष्ठेत्सा-
मन्तःसप्तरात्रंतदितरमनुजःपञ्चरात्रंतथैव ॥ ऊर्ध्वग-
च्छेच्छुभाहेप्यथगमनदिनात्सप्तरात्राणिपूर्वं चाशक्तौ
तद्दिनेसौरिपुविजयमनामैथुननैवकुर्यात् ॥ ९२ ॥

राजा प्रस्थान करके दश दिन एक जगह बैठा न रहे नहीं तो पुनः यात्रा मुहूर्त्त पूर्ववत् करना पडता है ऐसेही मांडलिक (थोडे गांवोंका स्वामी) ७ दिन इससे इतर ब्राह्मण आदि ५ दिन एकत्र न रहे दैववशात् उक्त अवधि व्यतीत हो जाय तक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तो पुनः घर आयके शुभमुहूर्तमें यात्रा करे और यात्रादिनसे पूर्व सात रात्रिसे स्त्रीसंगम न करे यदि स्त्री ऋतुस्नातादि विषयसे ७ रात्रि पूर्व बंद न रह सके तो एक दिन पूर्व तौभी स्त्रीसंग न करे ॥ ९२ ॥

शालिनी—दुग्धंत्याज्यंपूर्वमेवत्रिरात्रंक्षौरंत्याज्यंपञ्चरात्रंचपूर्वम् ॥
क्षौद्रंतैलंवासरेऽस्मिन्वमिश्चत्याज्यंयत्नाद्भूमिपालेननूनम्॥९३॥

यात्रार्थी राजाने यात्रादिनसे पूर्व ३ रात्रिसे दूध न पीना तथा पांच रात्रि पूर्व क्षौर (मुंडन श्मश्रुकर्म) न करना और उस दिन सहद न खाना तैलाभ्यंग न करना शरीरशोधनार्थ औषधिप्रयोगसे वमनभी न करना इतने वस्तु यत्नसे निश्चय वर्जित करना ॥ ९३ ॥

गीति—भुक्त्वागच्छतियदिचेत्तैलगुडक्षारपक्वमांसानि ॥
विनिवर्त्ततेसरुग्णःस्त्रीद्विजमवमान्यगच्छतोमरणम् ॥ ९४ ॥

यदि यात्री तैलपक्व पदार्थ गुड और दोहदसे अन्य प्रकार दूध तथा पका मांस खायके गमन करे तो रोगी (बीमार) होकर लौट आवे यदि स्त्री तथा ब्राह्मणका भर्त्सन ताडनादिसे अपमान करके जावे तो इस यात्रामें मृत्यु पावे मृत्यु ८ प्रकारकी होती है केवल शरीर छोडनाही नहीं ॥ ९४ ॥

सन्तमाला—यदिमाःसुचतुर्षुपौषमासादिषुवृष्टिर्हिभवेदकालवृष्टिः ॥
पशुमर्त्यपदाङ्कितानियावद्वसुधास्यान्नहितावदेवदोषः ॥ ९५ ॥

मेषादि ४ महीने चैत्र पर्यंत यदि वृष्टि हो तो पर्वतातिरिक्त देशोंमें अकालवृष्टि कहाती है अथवा जिस देशमें जो समय वर्षाका नहीं उसमें यदि वर्षा हो तो यात्रामें दोष है परंतु वर्षा पडनेसे पशु तथा मनुष्योंके पैरोंका चिह्न पृथ्वीमें न पडे इतनी वर्षाका दोष नहीं जब चरणचिह्न पडने योग्य वृष्टि हो तो दोष है ९५

गाथा—अल्पायांवृष्टौदोषोल्पोभूयस्यांदोषोभूयान्जीमूतानांनिर्घो
षेवृष्टौवाजातायांभूपः ॥ सूर्येन्द्वोर्बिम्बेसौवर्णेकृत्वाविप्रे
भ्योदद्याद्दुःशाकुन्येसाज्यंस्वर्णंदत्त्वागच्छेत्स्वेच्छाभिः ९

अल्पवृष्टि अकालमें हो तो दोषभी अल्प है बहुतवर्षामें बहुत दोष

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है यात्रा न करनी यदि प्रस्थान कियेमें वर्षा हो तो दोष नहीं गर्जनसहित वर्षाकाभी यात्री राजाको दोष है इतने दोषोंमेंभी यदि आवश्यक यात्रा हो तो सुवर्णके सूर्यचंद्रमाके बिंब दान करके ब्राह्मणोंको देवे यदि यात्रासमयमें दुःशकुन हो तो घी सुवर्ण दान करके स्वेच्छासे गमन करे ॥ ९६ ॥

शा० वि०—विश्वाश्वेभफलान्नदुग्धदधिगोसिद्धार्थपद्माम्बरं
वेश्यावाद्यमयूरचाषनकुलाबद्धैकपश्वामिषम् ॥
सद्वाक्यंकुसुमेक्षुपूर्णकलशच्छत्राणिमृत्कन्यका
रत्नोष्णीषसितोक्षमद्यससुतस्त्रीदीप्तवैश्वानराः ॥ ९७ ॥
आदर्शाञ्जनधौतवस्त्ररजकामीनाज्यसिंहासनं
शावंरोदनवर्जितंध्वजमधुच्छागास्त्रगोरोचनम् ॥
भारद्वाजनृयानवेदनिनदामाङ्गल्यगीतांकुशा
दृष्टाःसत्फलदाःप्रयाणसमयेरिक्तोघटःस्वानुगः॥ ९८ ॥

यात्रासमयमें बहुत ब्राह्मण घोडा हाथी जो उन्मत्त न हो फल अन्न दूध दही गो स्त्री श्वेत सरसों कमल निर्मल वस्त्र वेश्या बाजे मृदंग आदि मोर चाष नेवला रस्सीसे बंधा हुआ एक पशु (चौपाया वृष बैल) मांस अच्छे वाक्य इक्षु ईख (पौंडा गन्ना) पूर्णकलश छत्री गीली मिट्टी कन्या रत्न पगडी श्वेत वृषभ मद्य पुत्रसहित स्त्री दीप्त अग्नि दर्पण सुर्मा धोया वस्त्र धोबी मछली सिंहासन प्रेत जिसके साथ रोते न हों पताका सहद बकरा अस्त्र धनुषादि रोचन भारद्वाजपक्षी सुखासन वेदध्वनि मंगलगीत गायन अंकुश इतने वस्तु यात्राके समयमें यात्रीके सन्मुख शुभ होते हैं तथा खाली घट पीछेसे परंतु भरनेको जाता हो वहभी शुभ होता है ॥ ९७ ॥ ९८ ॥

वि०—वन्ध्याचर्मतुषास्थिसर्पलवणाङ्गारेन्धनक्लीबविट्-
तैलोन्मत्तवसौषधारिजटिलप्रव्राट्तृणव्याधिताः ॥
पू नग्नाभ्यक्तविमुक्तकेशपतितव्यङ्गक्षुधार्ताऽसृक्
इत स्त्रीपुष्पंसरटःस्वगेहदहनंमार्जारयुद्धंक्षुतम् ॥ ९९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्पासंवमनंचगर्दभरवोदक्षेतिरुट्गर्भिणी-
मुण्डार्द्राम्बरदुर्वचोन्धबधिरोदक्यानदृष्टाःशुभाः ॥ १०० ॥

वांझ स्त्री चर्म अन्नकी भूसी हड्डी सर्प नीमक निर्धूम अग्नि (काष्ठ जलानेकी लकडी) हिजडा विष्ठा तेल उन्मत्त (बावला) चर्बी औषधी शत्रु जटावाला संन्यासी घास वैद्य नंगा तैलाभ्यंगवाला खुले केशवाला मद्यादिसे बेहोश पडा हुआ अंगहीन भूखा रुधिर स्त्रियोंका ऋतुकुसुम कुकलास पक्षी अपने घरमें आग लगना बिल्लियोंका युद्ध छिंका भगुआ वस्त्रवाला गुड तक्र (छाछ) पांगा विधवा स्त्री कुब्ज कुटुंबमें कलह वस्त्र छत्रादियोंका अकस्मात् गिरना भैंसाओंका युद्ध कृष्णधान्य माष आदि कपास वमन दाहिने ओर गदहेका शब्द बडा क्रोध गर्भवती स्त्री मुंडा हुआ गीले वस्त्रवाला दुष्टवचन अंधा बहरा रजस्वला स्त्री इतने वस्तु यात्रीको यात्रासमयमें अशुभ हैं ॥ ९९ ॥ १०० ॥

शा० वि०—गोधाजाहकसूकराहिशशकानांकीर्तनंशोभनं
नोशब्दोनविलोकनंचकपिऋक्षाणामतोव्यत्ययः ॥
नद्युत्तारभयप्रवेशसमरेनष्टार्थसंवीक्षणेव्यत्यस्ताः
शकुनानृपेक्षणविधौयात्रोदिताः शोभनाः ॥ १०१ ॥

गोहा जाहक (गात्रसंकोचन करनेवाला एक जीव) सूकर सर्प शशा इनका नाम लेना सुनना यात्रासमयमें शुभ और इनका शब्द सुनना इनका देखना अशुभ होता है और वानर तथा उलूकका उलटे जैसे इनका नाम लेना अशुभ देखना सुनना शब्द शुभ नदी उतरनेमें भयसंबंधी कार्यमें भागनेमें गृहप्रवेशमें संग्राममें नष्टवस्तुके ढूंढनेमें पूर्वोक्तशकुन शुभ अशुभ और अशुभ शुभ जानने राजाके दर्शनार्थभी यात्रोक्त शुभ शकुन शुभ अशुभ अशुभ होते हैं ॥ १०१ ॥

अ०—वामाङ्गेकोकिलापल्लीपोतकीसूकरीरला ॥
पिङ्गलाछुछुकाः श्रेष्ठाः शिवाः पुरुषसंज्ञिताः ॥ १०२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोकिला कबूतरी सूकरी (मैना) रलापक्षी (पिंगला) भैरवी छिपकली छछुंदरी स्यार नरसंज्ञक कपोत खंजन तित्तिरी हंस आदि गमनवालेके बायें ओर शुभ होते हैं ॥ १०२ ॥

अ०—छिक्करः पिक्ककोभासःश्रीकण्ठोवानरोरुरुः ॥
स्त्रीसंज्ञकाः काकऋक्षश्वानः स्युर्दक्षिणाःशुभाः ॥ १०३ ॥

छिक्करमृग पिक्ककपक्षी भासपक्षी श्रीकंठपक्षी वानर रुरुमृग इतने स्त्रीसंज्ञ और कौवा ऋक्ष कुत्ता इतने यात्रीके दाहिने ओर शुभ होते हैं ॥ १०३ ॥

अ०—प्रदक्षिणगताः श्रेष्ठयात्रायांमृगपक्षिणः ॥
ओजामृगात्रजन्तोतिधन्योवामेखरस्वनः ॥ १०४ ॥

रुरुरहित मृगपक्षी यात्रामें परिक्रमा करके जावे तो शुभ परंतु विषम संख्याक मृग देखने अतिही शुभ होते हैं ऐसेही बायें ओर गदहेका शब्दभी धन्य है ॥ १०४ ॥

अ०—आद्येऽपशकुनेस्थित्वाप्राणानेकादशव्रजेत् ॥
द्वितीयेषोडशप्राणास्तृतीयेनक्वचिद्व्रजेत् ॥ १०५ ॥

यात्रामें पहिला अपशकुन हो तो ११ प्राण श्वासा बाहर भीतर जाने आने पर्यंत ठहरके पुनः शुभशकुन देख जावे दूसराभी अपशकुन हो तो १६ प्राण ठहरना तीसराभी हो जावे तो न जाना ॥ १०५ ॥

उ०जा०—यात्रानिवृत्तौशुभदंप्रवेशनंमृदुध्रुवैःक्षिप्रचरैःपुनर्गमः ॥
द्वीशेनलेदारुणभेतथोग्रभेस्त्रीगेहपुत्रात्मविनाशनंक्रमात् ॥ १०६ ॥

प्रवेश । नववधूप्रवेश, सुपूर्व, अपूर्व, द्वंद्वाभय ४ प्रकारके हैं यहां सुपूर्व संज्ञक है यह मृदु ध्रुवनक्षत्रोंमें करना क्षिप्र चरनक्षत्रोंमें प्रवेश करे तो पुनः गमन होवे और विशाखामें स्त्रीनाश कृत्तिकामें अग्न्यादिसे गृहनाश दारुणनक्षत्रोंमें पुत्रनाश उग्रनक्षत्रोंमें अपना नाश होवे ॥ १०६ ॥

मं०भा०—अयनर्क्षमासतिथिकालवासरोद्भवशूलसंमुखसितज्ञदिक्कपाः ॥ भृगुवक्रतादिपरिघाख्यदण्डकोयुवतीरजोप्यशुचितोत्सवादिकम् ॥ १०७ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृतपक्षीरक्तरवितर्कसंख्यकास्तिथयश्चसौरिरविभौमवासराः ॥
अपिवामपृष्ठगविधुस्तथाडलोवसुपञ्चकाभिजित्तथापिदक्षिणे॥१०८
स्रग्धरा-लग्नेजन्मर्क्षतन्वोर्मृतिगृहमहितर्क्षाच्चषष्ठंतदीशावालग्ने
कुम्भमीनर्क्षनवलवतनूचापिपृष्ठोदयंच ॥ पृष्ठाशामृ-
क्षसंस्थंदशमशनिरथो सप्तमेचापिकाव्यःकेन्द्रेवक्रा-
श्चवक्रीग्रहदिवसविवाहोक्तदोषाश्चनेष्टाः ॥ १०९ ॥

इति श्रीमुहूर्त्तचिन्तामणौ यात्राप्रकरणं समाप्तम् ॥ ११ ॥

दोषसमुच्चय अयनशूल सौम्यायने सूर्येत्यादि मासशूल २ प्रका वृषादि ३। ३ राशियोंके शूलमें पूर्वादिशूल १ कार्तिकादि ३। ३ पूर्वा- दिक शूल यह कपालकंटक २ हैं, नक्षत्र वार शूल न पूर्वदिशीत्यादि, तिथि शूल नवभूम्येति, शुक्र बुध संमुख सितज्ञदिक्कपा इत्यादि वक्रास्त पराजि- तादि शुक्र वक्रास्तनीचेति, परिघदंड पूर्वादिषु चतुरित्यादि स्वपत्नीरजोद- र्शन, अशौच, विवाहादि प्रतिबंध, तपक्षतमोभुक्ततारा इत्यादि रिक्ता ४ ९। १४ रवि १२ तर्क ६ तथा १५। ३० तिथि, शनि सूर्य मंगलवा वाम तथा पृष्ठगत चंद्रमा, रवेर्भ इत्यादि महाडल, धनिष्ठादि पंचक अग्नि जिन्मुहूर्त्त दक्षिणको तथा जन्मलग्न जन्मराशिसे अष्टमलग्न शत्रुराशिलग्नसे षष्ठस्थान तदीश, स्वजन्मराशिलग्नसे अष्टमेश शत्रुलग्न राशिसे षष्ठस्वामी इतने लग्नमें कुंभ मीन लग्ननवांश, पृष्ठोदय राशिदिक्प्रतिलोमलग्न दशम शनि सप्तम शुक्र केंद्रमें वक्री ग्रह वा वक्री ग्रहका वार इतने पूर्वोक्तदोष यात्रामें अवश्य वर्ज्य हैं तथा विवाहोक्त दोष, "उत्पातान्सहपातदग्धेत्यादि" "सेन्दु क्रूर इत्यादि" पूर्वोक्तदोषभी वर्ज्य हैं इनमें मासदोष धनुरर्कादि यामित्र, दोष शुक्ररहितादि मात्र दोष नहीं ॥ १०७ ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्त्तचिन्तामणिभाषायां यात्राप्रकरणं समाप्तम् ॥ ११ ॥

अथ वास्तुप्रकरणम्।

गृहस्थीको श्रौतस्मार्तक्रिया समस्त अपने घरमें करनी चाहिये पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करनेसे उसके फल भूमिका स्वामी ले लेता है। भविष्यपुराणे। परगेहङ्कृताः सर्वाः श्रौतस्मार्तक्रियाः शुभाः। निष्फलाः स्युर्यतस्तासां भूमीशः फलमश्नुते ॥ इति। अतएव वास्तुशास्त्र कहते हैं।

शा०वि०—यद्गंव्यङ्कसुतेशदिङ्मितमसौग्रामःशुभोनामभा-
त्स्वंवर्गंद्विगुणंविधायपरवर्गाढ्यंगजैःशेषितम् ॥
काकिण्यस्त्वनयोश्चतद्विवरतोयस्याधिकाःसोर्थदो
थद्वारं द्विजवैश्यशूद्रनृपराशीनांहितंपूर्वतः ॥ १ ॥

अवकहडाचक्रके अनुसार नामराशिसे नगर वा ग्रामराशि २।९।५। १०। ११ वीं हो तो वह वास करनेको शुभ होता है और नहीं तथा जिसका नामाक्षरसे जो गरुडादिवर्ग जितनवां है उसे दुगुणा करके ग्रामनामवर्गसंख्या जोड ८ से शेष करना जो शेष रहे वह पुरुषकी काकिणी हुई ऐसेही ग्रामकी वर्गसंख्या द्विगुणकरके पुरुषनामकी वर्गसंख्या जोडनी ८ से शेष करके जो शेष रहे वह ग्रामकी काकिणी हुई जिसकी काकिणी अधिक हो वह धन देनेवाला होता है इससे ग्रामकी काकिणी अधिक नामकी न्यून अच्छी होती है "द्वार कहते हैं" ब्राह्मण ४।८।१२ राशिवालेको पूर्व वैश्य २।६।१०को दक्षिण शूद्र ३।७।११ को पश्चिम नृप १।५।९ को उत्तर घरका द्वार करना ॥ १ ॥

व० ति०—गोसिंहनक्रमिथुनंनिवसेन्नमध्येग्रामस्यपूर्वककुभोलि-
झषाङ्गनाश्च ॥ कर्कौधनुस्तुलभमेषघटाश्चतद्वद्-
र्गाःस्वपञ्चमपरावलिनःस्युरैन्द्र्याः ॥ २ ॥

नवग्राम वसनेमें विचार है कि सारी सीमाके ९ भाग पूर्वोक्त वज्रकेसे करके मध्यभागमें २। ५। १०। ३ पूर्वमें ८ आग्नेयमें १२ दक्षिणमें ६ नैर्ऋत्यमें ४ पश्चिममें ९ वायव्यमें ७ उत्तरमें १ ईशानमें ११ नवसे अकारादि वर्ग ८ हो दिशाओंमें बलवान् है जैसे अ० पूर्व० क० आग्नेय च० दक्षिण ट० नैर्ऋत्य त० पश्चिम० प० वायव्य य० उत्तर श० ईशान अपनेसे पंचमवैरी होता है जैसे पूर्व गरुडसे पंचम पश्चिम सर्प शत्रु इत्यादि जिसका वर्ग पूर्वबली है उसने पश्चिम द्वारमें न वसना ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इं० व०—एकोनितेष्टर्क्षहताद्वितिथ्योरूपोनितेष्टायहतेन्दुनागैः ॥
युक्ताघनैश्चापियुताविभक्ताभूपार्श्विभिःशेषमितोहिपिण्डः ॥३॥
स्वष्टायनक्षत्रभवोथदैर्घ्यंहतस्याद्विस्तृतिर्विस्तृतिहच्चदीर्घता ॥

भूमि गृहोपयोगी सम विषय त्र्यस्र चतुरस्र आदि अनेक भेदोंकी होती है नामनक्षत्रोंसे विवाहोक्त राशिकूटादि समस्त वरकन्याके सदृश देखना नामसे कल्पित नक्षत्रसे १५२ गुनना एक घटा देना जो ध्वजादिवास्तु अभीष्ट है उसमें १ घटाके८१गुनके जोड देने १७ और जोडने२१६से भाग लेना जो शेष रहे वह पिंड होता है ग्रहकर्तु अभीष्ट आयसेभी जैसे हो । पिंडमें दैर्घ्यसे भाग लेके विस्तार विस्तारसे भाग लेके दैर्घ्य होता है । उदाहरण—नीलकंठ-नामका अनुराधा नक्षत्र रोहिणीके साथ मेलापक देखनेमें इष्टनक्षत्र रोहिणी ४ वास्तु विषम तीसरा सिंह ३ वर्षमें १ घटाया ३ इससे १५२ गुना किया ४५६ इष्ट वास्तु ३ एक घटाके २ से ८१ गुण दिया १६२पूर्वोक्त४५६में जोड दिये ६३५इनमें२१६से भाग लिया २०३अथ कल्पितदैर्घ्य २९ से भाग लिया तो ७ विस्तार आया विस्तार ७ से भाग लिया तो२९दैर्घ्य हुआ महाग्रहके लिये इष्ट वास्तुसहित जो क्षेत्रफल है २१६ इसमें जोडके जो १ । २ । ३ आदि इष्ट है उससे युक्त करके समाभीष्ट महाग्रहका क्षेत्रफल होता है ॥ ३ ॥

आयाध्वजोधूमहरिश्वगोखरेभध्वाङ्क्षकापिण्डइहाष्टशेषिते ॥ ४ ॥
उ०जा०—ध्वजादिकाः सर्वदिशिध्वजेमुखंकार्यहरौपूर्वयमोत्तरेतथा॥
प्राच्यांवृषेप्राग्यमयोर्गजेथवापश्चादुदक्पूर्वयमेद्विजादितः ॥ ५ ॥

पिंड आठसे शेष करके जो शेष रहे वह ध्वजादि वास्तु होता है ध्वज १ धूम्र २ सिंह ३ कुत्ता ४ वृष ५ गदहा ६ गज ७ काक ८ ये वास्तुके नाम हैं ध्वजमें सर्वदिग्द्वार सिंहमें पूर्व दक्षिणोत्तर वृषमें पूर्व गजमें पूर्व दक्षिण द्वार करना समवास्तु निषिद्ध विषम शुभ होते हैं ॥ ४ ॥ ५ ॥

उ०जा०—गृहेशतत्स्त्रीसुखवित्तनाशोर्केन्द्विज्यशुक्रेविबलेस्तनीचे ॥
कर्तुःस्थितिर्नोविधुवास्तुनोर्भेपुरस्थितेपृष्ठगतेखनिः स्यात् ॥ ६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गृहस्वामीके जन्मराशिसे सूर्य, चंद्रमा, गुरु, शुक्र निर्बल अस्त नीचगत हों तो क्रमसे ये फल हैं सूर्यसे गृहेशका चंद्रमासे उसकी स्त्रीका बृहस्पतिसे सुखका शुक्रसे धनका नाश । दिननक्षत्र तथा ग्रहनक्षत्र सन्मुख होनेमें गृहमें वास न करना पृष्ठगत ये नक्षत्र हों तौभी योग्य नहीं चोरी (कुंमल) पाड आदिसे भय फल है अर्थात् वे नक्षत्रोंके दिग्विभाग पूर्वोक्तप्रकारसे पार्श्वगत चाहिये । कृत्तिकादि ७ पूर्व मघादि ७ दक्षिण अनुराधादि ७ पश्चिम धनिष्ठादि ७ उत्तर हैं ॥ ६ ॥

उ० जा०-भंनागतष्टंव्ययईरितोसौध्रुवादिनामाक्षरयुक्तपिण्डः ॥
तष्टोगुणैरिन्द्रकृतान्तभूपाह्यंशाभवेयुर्नशुभोन्तकोत्र ॥ ७ ॥

गृह नक्षत्र ८ से तष्ट करके जो शेष रहे वह व्यय होता है जैसे रोहिणी ८ से तष्ट करके ४ ही रहा यही व्यय हुआ इसमें ध्रुवादि शालानामाक्षरसंख्या जोडके पिंडमें जोड देना ३ से भाग लेके १ शेषमें चंद्र २ में यम ३ राजसंज्ञक अंश होते हैं इनमें यमांशक शुभ नहीं ॥ ७ ॥

अनु०-दिक्षुपूर्वादितःशालाध्रुवाभूद्वौकृतागजाः ॥
शालाध्रुवाङ्कसंयोगः सैकोवेदमध्रुवादिकम् ॥ ८ ॥

ध्रुवांकशालाविधिः । पूर्वद्वारमें शाला ध्रुवांक १ दक्षिणमें २ पश्चिममें ४ उत्तरमें ८ जितने दिशाओंमें द्वार हों उतने ध्रुवांक जोडने एक और जोडना ध्रुवादि शाला (गृह) जानना ॥ ८ ॥

पथ्यावक्त्रा-तिथ्यर्काष्टाष्टिगोरुद्रशक्रेनामाक्षरत्रयम् ॥
भूद्यब्धीषड्रदिग्वह्निविश्वेषुद्वौनगाब्धयः ॥ ९ ॥

दिक्षुपूर्वादितेत्यादिसे जो ध्रुव आया उसका शालाध्रुवांक सैक करके १५। १२।८।१६।९।११।१४ संख्यक तिथि संख्याके हो तो गृह नाम अक्षरत्रयात्मक होता है यदि १।२।४।५।६।१०।३।१३ हो तो द्व्यक्षर नाम ७ में चतुरक्षर नाम जानना यह ध्रुव धान्यादि अक्षर गिननेमें काम आता है ॥९॥

आर्या गीति-ध्रुवधान्येजयनन्दोखरकान्तमनोरमंसुमुखदुर्मुखोग्रंच॥
रिपुदंवित्तदंनाशंचाक्रंदंविपुलविजयाख्यंस्यात् ॥ १० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शलाओंके नाम। ध्रुव १ धान्य २ जय ३ नंद ४ खर ५ कांत ६ मनोरम ७ सुमुख ८ दुर्मुख ९ उग्र १० रिपुद ११ वित्तद १२ नाश १३ आक्रंद १४ विपुल १५ विजय १६ इनके नामसदृश फल हैं शुभार्थ लेने आक्रंदादि अशुभ छोडने ॥ १० ॥

उ०जा०—पिण्डेनवाङ्काङ्गजाग्निनागनागाब्धिनागैर्गुणितेक्रमेण ॥
विभाजितैर्नागनगाङ्कसूर्यनागर्क्षतिथ्यर्क्षखभानुभिश्च ॥ ११ ॥
अनु०—आयोवारोंशकोद्रव्यमृणमृक्षंतिथिर्युतिः ॥
आयुश्चातगृहेशर्क्षंगृहभैक्यंमृतिपदम् ॥ १२ ॥

आयादि.	आ.	वार	अंश	धन	ऋ.	नक्षत्र	तिथि	योग	
गुणक	९	९	६	८	३	८	८	४	८
भाजक	८	७	९	१२	८	२७	१५	२७	१०२

पिंड ९ से गुनाकर ८ से तष्ट किया शेष वास्तु, एवं ८ से गुनाकर ७ से भाग देके शेष वार, ६ से गु० ९ भा० अंश, ८ गु० १२ भा० धन, ३ गु० ८ भा० ऋण, ८ गु० २७ भा० नक्षत्र, ८ गु० १५ भा० तिथि, ४ गु० २७ भा० योग, ८ गु० १२ भा० आयु होती है विषम वास्तु शुभ सम अशुभ शुभवार शुभ पाप अशुभ पाप राशिनिंद्य धनाधिक शुभ ऋणाधिक अशुभ ३।५।७ तारा अशुभ गृह तथा गृहस्वामीको एक नक्षत्र मृत्यु करता है तथा राशिकूटादि विवाहतुल्य विचारना राशिगणना है कि अश्विन्यादि ३ मेष मघादि ३ सिंह मूलादि ३ धन अन्य नक्षत्र २।२ के १।१ राशि जाननी गृहकार्य सेव्यसेवक मित्रमित्रकी एक नाडी शुभ होती है तिथिरिक्ता अमा अशुभ १४ से पिंड गुनाकर ३० से तष्ट करके शेष तिथि होती है व्यतीपातादि दुष्टयोग अशुभ जहां हाथोंसे आयादिगुण शुभ न मिलें तो उनमें अंगुल मिलाकर क्षेत्रफल करना इसकी विधि लीलावतीसे जाननी ॥ ११ ॥ १२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शालिनी-गेहाद्यारम्भेर्कभाद्वत्सशीर्षैरामैर्दाहोवेदभैरग्रपादे ॥
शून्यंवेदैःपृष्ठपादेस्थिरत्वंरामैःपृष्ठेश्रीर्युगैर्दक्षकुक्षौ ॥ १३ ॥
लाभोरामैःपुच्छगैःस्वामिनाशोवेदैर्नैःस्व्यंवामकुक्षौमुखस्थैः ॥
रामैःपीडासंततंचार्कधिष्ण्यादश्वैरुद्रैर्दिग्भिरुक्तंह्यसत्सत् ॥ १४ ॥

गृहादि प्रासाद ग्रामादिके आरंभमें सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्रपर्यंत ३ नक्षत्र वृषके शिरमें दाह फल एवं ४ अग्रपाद शून्यफल ४ पृष्ठपाद स्थिरता ३ पृष्ठमें श्रीः दक्षिण कुक्षिलाभ ३ पुच्छमें स्वामिनाश ४ वामकुक्षि दरिद्रता ३ मुखमें पीडा सर्वदा होवे यह वृषवास्तुचक्र है प्रकारांतरसे है कि सूर्यनक्षत्रसे दिननक्षत्रपर्यंत ७ अशुभ ११ शुभ १० अशुभ होते हैं ॥ १३ ॥ १४ ॥

स्रग्धरा-कुम्भेर्केफाल्गुनेप्रागपरमुखगृहंश्रावणेसिंहकर्क्योः
पौषेनक्रेथयाम्योत्तरमुखसदनंगोजगेर्केथराधे ॥
मार्गेजूकालिगेसद्धवमृदुवरुणस्वातिवस्वर्कपुष्यैः
सूतीगेहंत्वदित्यांहरिभविधिभयोस्तत्रशस्तःप्रवेशः ॥ १५ ॥

कुंभेर्के सूर्ययुक्त फाल्गुन महीनेमें पूर्वपश्चिमद्वारा गृह शुभ होता है तथा ६। ४ के सूर्यमें श्रावण १० केमें पौषमेंभी पूर्वपश्चिमद्वार शुभ और १। २ के सूर्यसहित वैशाखमें तथा ७। ८ के सूर्य मार्गशीर्षमें दक्षिणोत्तरद्वार गृह शुभ होताहै ध्रुव मृदु शततारा स्वाती धनिष्ठा हस्त पुष्यनक्षत्र गृहारंभको शुभ है परंतु सूतिकाघरके लिये पुनर्वसुमें आरंभ श्रवण अभिजित्में प्रवेश कहा है ॥ १५ ॥

शा० वि०-कैश्चिन्मेषरवौमधौवृषभगेज्येष्ठेशुचौकर्कटे
भाद्रेसिंहगतेघटेश्वयुजिचोर्जेलौमृगेपौषके ॥
माघेनक्रघटेशुभंनिगदितंगेहंतथोर्जेनसत्कन्या-
यांचतथाधनुष्यपिनसत्कृष्णादिमासाद्भवेत् ॥ १६ ॥

उ० जा०-पूर्णेन्दुतःप्राग्वदनंनवम्यादिषूत्तरास्यंत्वथपश्चिमास्यम् ॥
दर्शादितःशुक्लदलेनवम्यादौदक्षिणास्यंनशुभंवदन्ति ॥ १७ ॥

पूर्णमासीसे कृष्णाष्टमीपर्यंत जो घर बनाया जाय तो उत्तरमुख न करना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमासे शुक्लाष्टमीपर्यंत पश्चिममुख शुभ नहीं होता शुक्लनवमीसे चतुर्दशीपर्यंत दक्षिणास्य न करना द्वारस्थान ८१ पदवाले वास्तुचक्रसे जानना शुभनाम भागमें शुभ अशुभमें कहा है ॥ १६ ॥ १७ ॥

अ०—भौमार्करिक्तामाद्यूनेचरोनेङ्गेविपञ्चके ॥
व्यन्त्याष्टस्थैःशुभैर्गेहारंभस्त्र्यायारिगैः खलैः ॥ १८ ॥

मंगल सूर्यवार रिक्ता ४ । ९ । १४ अमा प्रतिपदा अष्टमी तिथि छोडके धनिष्ठादि ५ नक्षत्र पंचक चरलग्न छोडके गृहारंभ करना तथा लग्नसे १२ । ८ रहित स्थानोंमें शुभग्रह ३ । ६ । ११ में पापग्रह शुभ होते हैं ॥ १८ ॥

इं०व०—देवालयेगेहविधौजलाशयेराहोर्मुखंशंभुदिशोविलोमतः ॥
मीनार्कसिंहार्कमृगार्कतस्त्रिभेखातेमुखात्पृष्ठविदिक्शुभाभवेत्॥ १९

राहुमुखचक्रम्.

	ईशान्यां	वायव्यां	नैर्ऋत्यां	आग्नेय्यां
देवालये	१२।१।२ के. सू. में. रा. मु.	३।४।५ के. सू. में. रा. मु.	६।७।८ के. सू. में. रा. मु.	९।१०।११ के. सू. में. रा. मु.
गृहारंभे	५।६।७ के. सू. में. रा. मु.	८।९।१० के. सू. में. रा. मु.	११।१२।१ के. सू. में. रा. मु.	२।३।४ के. सू. में. रा. मु.
जलाशये	१०।११।१२ के. सू. में. रा. मु.	१।२।३ के. सू. में. रा. मु.	४।५।६ के. सू. में. रा. मु.	७।८।९ के. सू. में. रा. मु.

देवालयारंभमें राहुका मुख मीनार्कसे ३ । ३ राशियोंके सूर्यमें ईशानादि विदिशाओंमें विपरीतक्रमसे जानना गृहारंभमें सिंहार्कादि ३ । ३ तथा जलाशयारंभमें मकरार्कादि ३ । ३ राशियोंके सूर्यमें वैसेही जानना प्रकट चक्रमें लिखा है इसका प्रयोजन है कि खात भूमिशोधन राहुके मुखसे न

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करना मुखस्थविदिशासे पंचविदिशा राहुकी पुच्छ है मुखपुच्छके बीच पीठ होता है पीठसे खात शुभ होता है जैसा देवालयखातमें मीनादि ३ चैत्र, वैशाखज्येष्ठमें राहुका मुख ईशान पुच्छ नैर्ऋत्य है तो विपरीत क्रमसे पीठ आग्नेयमें हुई इसीसे खातारंभ करना ॥ १९ ॥

शालिनी—कूपेवास्तोर्मध्यदेशेऽर्थनाशस्त्वैशान्यादौपुष्टिरैश्वर्यवृद्धिः ॥
सूनोर्नाशःस्त्रीविनाशोमृतिश्चसंपत्पीडाशत्रुतःस्याच्चसौख्यम्॥२०॥

कूप (कूआ) घरके मध्यमें अर्थनाश ईशानादि सृष्टिमार्गसे पुष्ट्यादि, जैसे ईशानमें पुष्टि । पूर्वमें ऐश्वर्यवृद्धि । आग्नेयमें पुत्रनाश । दक्षिणमें स्त्री नाश । नैर्ऋत्यमें गृहकर्ताकी मृत्यु । पश्चिममें शुभ । वायव्यमें शत्रुसे पीडा । उत्तरमें सुख होता है ॥ २० ॥

व०ति०—स्नानस्यपाकशयनास्त्रभुजेश्च धान्यभाण्डारदैवतगृहाणिचपूर्वतः स्युः ॥ तन्मध्यतस्तुमथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासाख्यरोदनरतौषधिसर्वधाम ॥ २१ ॥

कोठे (चतुरस्र घर) के पूर्वमें स्नानका आग्नेयमें रसोईका दक्षिणमें शयन (सोने) का नैर्ऋत्यमें शस्त्र (हथियारों) का पश्चिममें भोजनका वायव्यमें अन्नका उत्तरमें धनका स्थान करना पशुमंदिरभी वायव्यमें शुभ होता है दिशा विदिशाओंके मध्यमें कहते हैं कि पूर्वाग्नेयके बीच दही बिलोनेका आग्नेय दक्षिणके मध्य घृतका दक्षिण नैर्ऋत्यके बीच पुरीष (पायखाना) नैर्ऋत्यपश्चिमके बीच पाठशाला पश्चिमवायव्यके मध्य रोदन (गमी, शोक) का स्थान उत्तरवायव्यके बीच स्त्रीसंभोग, उत्तर ईशानके मध्यमें औषधीका, ईशान पूर्वक बीचमें अन्य समस्त वस्तुमात्रका स्थान करना ॥ २१ ॥

उ०जा०—जीवार्कविच्छुक्रशनैश्चरेषुलग्नारियामित्रसुखत्रिगेषु ॥
स्थितिःशतंस्याच्छरदांसिताकारेज्येतनुत्र्यङ्गसुतेशतद्वे ॥ २२ ॥

आयुर्योग । बृहस्पति लग्नमें सूर्य छठा बुध सप्तम शुक्र चतुर्थ शनि तीसरा गृहारंभ लग्नसे हो तो १०० सौ वर्ष घरकी आयु होवे तथा शुक्रलग्नमें सूर्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिसरा मंगल छठा बृहस्पति पंचम हो तो घरकी आयु २०० वर्ष होवे यह योगायु है ॥ २२ ॥

इं०व०—लग्नाम्बरायेषुभृगुज्ञभानुभिः केन्द्रेगुरौवर्षशतायुरालयः ॥
बन्धौगुरुव्योंम्निशशीकुजार्कजौलाभेतदाशीतिसमायुरालयः ॥२३॥

लग्नमें शुक्र दशम बुध ग्यारहवां सूर्य लग्नरहित केंद्रमें बृहस्पति हो तो १०० वर्ष तथा चतुर्थ गुरु दशम चंद्रमा मंगल शनि एकादशमें हों तो ८० वर्ष घरकी आयु होवे ॥ २३ ॥

अनु०—स्वोच्चेशुक्रेलग्नगेवागुरौवेऽमगतेऽथवा ॥
शनौस्वोच्चेलाभगेवालक्ष्म्यायुक्तंचिरंगृहम् ॥ २४ ॥

उचका शुक्र लग्नमें हो वा उचका बृहस्पति चतुर्थमें हो अथवा उच्च ७ का शनि लाभभावमें हो तो वह घर लक्ष्मीसहित बहुत दिन स्थिर रहे॥२४॥

अनु०—द्यूनाम्बरेयदैकोपिपरांशस्थोग्रहोगृहम् ॥
अब्दान्तःपरहस्तस्थंकुर्य्याच्चेद्वर्णपोऽबलः ॥ २५ ॥

गृहारंभ लग्नसे यदि एकभी कोई गृह शत्रुनवांशकी सप्तम वा दशम भावमें हो तो वह घर एक वर्षके भीतर दूसरेके हाथमें चला जावे परंतु यदि वर्णज विप्राधीशावित्यादि निर्बल हो वर्णेशके बलवान् होनेमें उक्त ग्रह उक्त फल नहीं करता ॥ २५ ॥

व०ति०—पुष्यध्रुवेन्दुहरिसार्नजलैःसजीवैस्तद्वासरेणचकृतं
सुतराज्यदंस्यात् ॥ द्वीशाश्वितक्षवसुपाशिशिवैः
सशुक्रेवारेसितस्यचगृहंधनधान्यदंस्यात् ॥ २६ ॥

पुष्य ध्रुव मृगशिर श्रवण आश्लेषा पूर्वाषाढा इन नक्षत्रोंमें बृहस्पति जिसमें हो उस नक्षत्रमें तथा बृहस्पतिवारमेंभी घर बने तो घरवालोंको पुत्रतथा राज्य होवे तथा विशाखा अश्विनी चित्रा धनिष्ठा शततारा आर्द्रा इनमेंसे जिसमें शुक्र हो उस नक्षत्रमें और शुक्रवारके दिन गृहारंभ हो तो अन्न धन बहुत होवे ॥ २६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इं०व०-सारेःकरेज्यान्त्यमघाम्बुमूलैःकौजेह्निवेश्माग्निसुतार्तिदं स्यात् ॥ सज्ञैःकदास्त्रार्यमतक्षहस्तैर्ज्ञस्यैववारेसुखपुत्रदंस्यात्॥२७॥

हस्त, पुष्य, मघा, रेवती, पूर्वाषाढा, मूल नक्षत्र मंगलयुक्त हो तथा मंगलवारभी हो तो घरमें अग्निपीडा पुत्रपिडा होवे और रोहिणी, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा हस्तमेंसे जिसमें बुध हो तथा बुधवारभी हो तो घरसुख तथा पुत्र देनेवाला होवे ॥ २७ ॥

अनु०-अजैकपादहिर्बुध्न्यशक्रमित्रानिलान्तकैः ॥
समदैर्मन्दवारेस्याद्रक्षोभूतयुतंगृहम् ॥ २८ ॥

पूर्वाभाद्र,उत्तराभाद्र,ज्येष्ठा,अनुराधा,रेवती,स्वाती,भरणीमेंसे जिसमें शनि हो उस नक्षत्रमें तथा वारभी शनि हो तो वह घर राक्षसभूतादियोंसे युक्त रहे २८

ज्ञा०वि०-सूर्यर्क्षाद्युगभैःशिरस्यथफलंलक्ष्मीस्ततःकोणभै-
र्नागैरुद्वसनंततोगजमितैःशाखासुसौख्यंभवेत् ॥
देहल्यांगुणभैर्भृतिर्गृहपतेर्मध्यस्थितैर्वेदभैः
सौख्यंचक्रमिदंविलोक्यसुधियाद्वारंविधेयंशुभम् ॥२९॥

इति मुहूर्तचिन्तामणौ वास्तुप्रकरणं समाप्तम् ॥ १२ ॥

किसीके मतसे द्वारचक्र है कि सूर्यके नक्षत्रसे चंद्रमाके नक्षत्रपर्यंत ४ नक्षत्र शिरपे लक्ष्मीप्राप्ति करते हैं एवं तब ८ चारों कोणोंमें उद्वसन घरमें कोई न रहने पावे फिर ८ शाखामें सौख्य तब ३ देहलीमें गृहपतिकी मृत्यु फिर ४ मध्यमें सौख्य देते हैं तथा ग्रंथांतरोंमें पंचांगभी कहा है कि अश्विनी, चित्रा, उत्तरा, स्वाती, रेवती, रोहिणी, द्वारशाखा, देहली आदिको शुभ हैं तथा ५ । ७ । ९ । ८ तिथि शुभ ११ । १२ । १३ । १४ मध्यम अन्य तिथि अशुभ हैं वारयोगादिभी शुभ लेने ॥ २९ ॥

इति महीधरकृतायां मुहूर्तचिंतामणिभाषायां वास्तुप्रकरणं समाप्तम् ॥ १२ ॥

अथ गृहप्रवेशप्रकरणम् ।

इं०व०-सौम्यायनेज्येष्ठतपोन्त्यमाधवेयात्रानिवृत्तौनृपतेर्नवे गृहे ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओ३म्

ओ३म्

ओ३म्

मु० रावलपिंडी मोटर ड्रेनिंग कम्पनी नः ३
सैक्शन नः ४
पास गोपीचंद मोटर ड्राइवर नः ३०३१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh